रागिनी भैरवी ताल तीन चौपई ।। ऊहां गेय

मायन गिरि जाई । भेटे हनूमान खगरा

ई । दुर्लभ दरस नैन भरि देखी । मानन

हृदय मोद अब शेषी । करि प्रणाम मा-

दिर सब बरना । सुनि हनुमान गरुड ।

मनबानी । प्रभुत सावद प्रेम रस मानी

म ध नि सं नि ध नि ध प म ध प

गा॰ भ॰ अर्ध्य पाद आदिक जोई घरमा । चलेसि अति

म ग रे सं म ध नि सं नि

थि करत सब करमा । अरु विहंग पति का

ध प म ध प म ग रे सं

रि सुई कारा । पूजन नाम शुभ आचारा ।

म ध नि सं नि ध प म ध प म

आये वेग ध्यान करि ताहो । राजे रमानाथ

ग रे सं म ध नि सं नि ध प

प्रभु जहो । ताही समय मोपि हनु शीला॰

म ध प म ग रे सं म ध नि

आये गान करत हरि लीला । द्वार पाल

सां नि ध पं म ध पं म ग रे
नहे चक्र निहारयो । हनुमत तास वचन उ

सां म ध नि सां नि ध पं
चारयो । कहो कृपाय काय मम स्वामी ।

म ध पं म ग रे सां
अग जग नाथ जनन अनुगामी ॥ सोरठा ॥

म ध नि सां नि ध पं म ग रे ग रे
वचन सुनत हनुमान वत्सल भक्त कृदेउ

सां म ध नि सां नि ध पं म ग रे
हत । भये तुरत भगवान राम स्वरूप अनू

ग रे सां नि सां
प तव ॥ रागिनी भैरवी ताल २ चौपई । अट

ग॰ भ॰ न करत इत उत मत भामा। मदित मेज पु

भत निज यामा। यह्यो नृप तिन जाने कि

नाही। उपजत हूली सोच मन माही। भाषी

म वदन मयुर रम मानी। सिय स्वरूप नि

ज धारि नवीना। राज कुं मोरे निकट प्रवी

ना। प्रेम प्रग साम पाव प्रभ जबही। हृक

णि मिये स्वरूप भई तबही। चक्र वचन पु
नि स्तुहिं बखाना। ईहो निष नव रहउ
सजाना। सोरठा। करहूं नवेदन जाय मै
तोरे उद्देश कपि। प्रभु अनुसासन पाय।
लेचल हौं तोहि संग निज॥ रागिनी भैर
वी ताल २ चौपाई। आम मान अह ज्वल

रा.भ. न सुभावा। देखि बचन हनुमान सुहावा॥
३
किंकर गनी तरेत सबीना। पहिरि सुभुजा
दल निज लीना। अंतर पुरहि मगुद पुनि
जाई। बारे बार बदन कपिराई। भाषन ल-
गेउ मोर कहो स्वामी। त्रिभुवन नाथ भक्त
अनुगामी। अस कहि प्रभु हरषि जब देखा-

अरमन नृप स्वामि निज लोचनो । मृदि जे

मन नील तन मोहा । भज आजान युगल

मन मोहा । सजल पुंडरीक है विजन । वि

न वनि वाक मानिन मन रंजन । बसन पी

त दसनन छवि नीके । स्मित भाव हास

भाव प्रिय जीके । श्रवण सावद शुक ज्ञान

ग॰ म॰ सुहावन। केम्बुग्रीव ललित मन भावन। आ

यत हृदय चरन जल जावन। कलन कीट

भव त्रास निवारन। छेदन घोर घोर बिनभा

बन। कच कुंचित जनु अलि गण लावन।

शेगरादि उर बनस्रज धारी। भृकुटी कुटि

ल धनुष छबिहारी॥ दोहरा॥ दिव्य अले

कारादि सब भूषन विभ वन नाथ। शोभि
त रमा स्वरूप वर वाम भाग सिय माथ॥
रागभैरवी ताल २ चौपाई॥ श्रम विचित्र श
भ रूप अनूपा। देखि दृगन भरि बलिभ
वि भूपा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नामा
दीन देख वत करत प्रणामा। लोचन सज

रा.भ.

२सं २नि २ध २प २ध २प २म २ध २प २म २ग २रे

ल गुरु जग पानी। हृदय हरष भाव गद गद

२सं २म २ध २नि २सं २रे २सं २नि २ध २प २म

बानी। कहत नाथ से हानि डर भंजन। क

२ध २प २म २ग २म २ग २रे २सं २म २ध २नि २सं

रुणा सिंधु जनन मन रंजन। कवन हेत नि

२नि २ध २प २म २ध २प २म २ग

ज दास से भाष्यो। आयस कवन दीन डर।

२रे २सं २म २ध २नि २सं २नि २ध २प

हाष्यो। सुनि अस वचन वदन हनुमाना।

२म २ध २प २म २ग २रे २सं २म २ध २नि

सादिर प्रीति युक्त भगवाना। पानि पान गा

हि निकट बिठाई । बहु बिधि कुशल पूछि

रघुराई । कर सपर्श नहि छूह कृपाला । की

नो बारबार जन पाला । सिय स्वरूप नब क

मनि आई । मोदक मेञ अमिय सम लाई

मेञत प्रेम प्रीति हनुमाना । दीन प्रबीन ।

कौन मनमाना । पाय पयूख सरस आहारा

रा.भ.

5

भा भरत मन पवन कुमारा। भोजन करत नाम रघुराई। बोले वचन भक्त सुखदाई॥ भोरठा॥ तब समर्थ हनुमान भा उतकंठित। मोर चित नाहीतें निज थान नेपैं पठवा पवन सुत॥ राग भैरवी ताल रूपक। चौपई॥ तब दर्शन इच्छा मन माँही। रहो ध्यान का

रन कछु नाही । अब तोहि देखि भक्त हनुमा
ना । पूरण भयो मोर मन कामा । औये भवन
निज जाइ पराई । मादित मोर अनुसासन पा
ई । तोरे सरव काल कल्याना । सेनत वचन
मोर हनुमाना । अस अनुसास पाय श्री रमना
नाय सीस मारत सत गवना । रह प्रभाव ह

रा॰म॰ हनुमान सहाया। मै सेतम सेत जन गाया। सोर

ठा॥ कल नल धरणि मकार धरम धेनु सुर॰

विप्र हित। धरहि राम अवतार बार बार कर

णा यतन। राम कृष्ण [illegible] हनुमान अक

विहंग पति आदि रुद्र। एकहि मूरति जान॰

यद्यपि धरहि अनेक वपु। करि करि सेवक

नि ध प म ग रे म ध नि

सेवा सम भाव विश्व जड राय। लागन कहे।

सं नि ध प म ग रे सं

मोहित करैं निज माया वश ल्याय॥ रागिनी

भैरवी ताल अथ विभीषण चरित्रम चौपा-

ई॥ अब अद्भुत मंगल सुखदाई। सेज्ज न

वल इक कथा सुहाई। किलष कलेस भी

न भव हरना। चारु भक्ति प्रद ज्ञान कृपा

रा॰म॰

ला। रामचंद्र अस दीनन पाला। मानि पुल
स्त कर पौत्र प्रवीना। रावन अनुज राम पद
दीना। पराक्रम निपुण वीर बल धामा। जहि
जग विदित विभीषण नामा। बैश्य वर्ग जाति
निज धर्मा। यावन सकल वेस नाजि कर्मा
सोरठा॥ चरण शरण गहि राम बेपुन जन्त

रिपु भाव गाहि। कीन समर संग्राम लेकवि

धेमन भ्रात वध। इह हित उर निज मान-

पै प्रवीन नहिं परि हह्यो भक्ति राम भगवा

न स्याद सुहावन मरवदा॥ रागिनी भैरवी

ताल चौपई॥ ऐसे नाम भक्त निय शीला।

प्रभृत तास भक्ति वर लीला। रामायण स्त्र

रा॰भ॰ विशेष प्रकाश। महो भनिन भाव विविध। प्रकाश। वरनिम हृदय भक्त भाव करनी। किलष कलेश शोक भव हरनी। राम चरन पंकज रति दायन। हृदय भक्त भ्रम तिमर पलायन॥ दोहरा॥ प्रकृ जोई लोक प्रसिद्ध नहि भक्ति श्रवण कलकीन। करत नकृ॰

पग सो सकल अघ कृपाल नवदीन ॥ राग

नी भैरवी ताल । ।चौपई॥ रहा धनउपे

न बहु भारी । समय एक सागर निधि बारी

लिये जात व्यापार समाज । द्रव्य युक्त पारि

एर जहाज । सो रुकि गयो काहू अस्थाना

माँघ अगाधि अगम जल खाना । लागान ।

रा॰भ॰ करन यतन मिलि सारी। एक एक कहे बद

10 न प्रचारी। यद्यपि तिनहिं कीन श्रम नाना॰

तद्यपि चल्यो नाहिं जल जाना। तब मो बैस

नाव पति जोई। अति सोदिग्ध विषत मन॰

होई। लग्यो करन चिन्तन जिय माहीं। अब

मोरे कछु सूजत नाहीं। दैव होहिं गति क

बन हमारी। बोहत भरि दृख्य जरत मारी।
सो कहि बिधि आपन हृदउ नाई। परि हरि
बलव हमह सखिदाई। एक प्रहष तब ब
चन उचारा। सुनहु वैस अस कथन हमा
रा॥ सोरठा॥ कबहू कि ईहै सुजान देहु
मनुज बलि यतन युत तब ईह बोहत प्या

रा॰भ॰ न करि हैं कछु मे आय नही ॥ रागिनी भैरवी

~~१०~~ ताल। । चौपई ॥ सुनत श्रवण अस बैसख

11 दीना । बोल्यो वदन वचन अति दीना । आन

ह्रे मनुज कवन कित जाई । बनी बात अस

मे जस भाई । मै बलि रूप आप निज धारी ।

पृवम ह्रे जाय मध्य निधिवारी । तब मोरे सु

न बांधव जोंही। तिन कहे कुशल सकल
विधि होंही। बोहत पाप द्रव्य गुन भारी।
होहिं सकल निज हृदय खलारी। सुनि प्र
म दीन वचन सब तेका। बोलेया पुरष ज
टिव तरे एका। तव कम सरऊ बूडि जल
स्वामी। मै भृत तोर दास प्रभु गामी। प्रस्त

रा॰भ॰ 13 12

ऊह रुज परम डाकोरी। वैस जाति श्रव चर।
हित कारी। बली भूत है पै निधि मांही। म
रहे बूडि तब कहहू न मांही ।। सोरठा ।। श्रा॰
ज काल मम प्राण पूरब ही रुज राज कर।
चाहत कीन पयान तातै चाहे न देस तब।
रागिनी भैरवी ताल। ।चौपई।। यरहे र

नाय सीस हित मानी । सेवक नाथ करम-
मन बानी । भलो कृपाल मरण अब मोरा-
दुरलभ सफल जियन जग तोरा । ताते त-
व जीवहु साव दाया । इन बोथव कर होहु
सहाया । रहे जवन पाकुल तब पासा । पा-
लन करहु जानि निज दासा । अस कहिहु

रा.भ. पुरष मति धीरा। पठयो मकार जाय निधि नी
रा। भाषत बदन जास इत थाना। रोक्यो भ
रि द्रव्य जल जाना। अब इह बली नृप मम दे
ही। मादिर होहिं उपायन तेही। है अकिंचन
मम स्वामि जहाजू। सहित द्रव्य निज सक
ल समाजू। अभिमन दसा देस कहे सोई।जा

१५

य सहज इह प्रापत होई ॥ सोरठा ॥ इस मे
कला नहि कीन राम राम रव रटत साव।
भयोमहा दधि लीन पर स्वारथ रत जढि
र सो ॥ रागिनी भैरवी ताल। ।चौपई ।उत
नहि सलिल निधि परना ।उत जलजाना।
ध्यान निज करना। विसमय तास देखि भ

रा॰ भ॰ ये लोका। पावसि कुशल विगत सब शोका

वीचन वेग जटिर नव पाई। लंक निकट श

पत भयो जाई। तहां नाम दनु जान निहारी

लिये संग निज प्रमदित सारी॥ सोरठा॥

कीन उपायन जाय भूप विभीषण अग्र त

ही। नेम्हत पद सिरनाय लगे करन विन

13 14 13

नी सकल ।। रागिनी भैरवी ताल । । चौपई

अधम कवन दनुज कुल केतू । भक्षण कर

न मनुज इहि हेतू । श्रवण दरस करि अस

रन राया । करुणा दृष्टि तिनहूं पर पाया ।

पारिनाथ पुनि लीन मंगाई । एक एक भूत

निकट बुलाई । सब कहं सहित प्रीति सन

रा॰म

14
14
15

माना। मंजुल पारितोष विधि नाना। दीन
प्रवीन मलिन मन होई। निज निज चले ह
रष जुत सोई। नाम वृद्ध कहे भक्त विभीषण
मंजुल प्रेम रुचिर मति तीक्षण। निज सेवा
मन लीन विठाई। करि पूजन भाव विन
य भलाई। अहो मधवा भागय बड मोरे।

दरशन देखि हृद प्रम तोरे ।। सोरठा ।। राम
वेद भगवान मेज्ञ स्वरूप अनूप सुभ । अवि
र भाव भयो जान मोरे मानस मद भरन ।
अब तव जठर सुजान प्रमुदित करहु नि
वास निज । मोर मदन हित मान तोरे सब
विधि होहिं सुख ।। रागिनी भैरवी ताल

रा॰ म॰ चौपई। नतर प्रवीन लोक पुरि राजू। करहु

सहित तुम सकल समाजू। हम सम्बदाय

तोर प्रन सरिहैं। इष्ट देव सम सेवन करिहैं

सुनि प्रभ वचन वदन खुल नाहीं। बोल्यौ

सुह भीत वस नाहीं। है गे परानि याम पन

जोई। राज काज साव हृदय न मोरी। एक

रा.भ. परेउ काम मन मोरे। पुरवहिं सो प्रभाद नृ
प तोरे। जहि जहाजते मै गिरि आवा। ईहो
आय नव दरसन पावा। नाहि मझार बहूरि
निज गवना। चाहूं सनइ सील गुन भवना
बोल्यो वृद्ध वचन अस जवंही। चारु दैतेंद्रा
मदित मन नवंही। पाट चैल कल मैलनक

रा॰म॰ लियो। दिव्य अमोल रतन इति मणियो। दी

16

न मयतन बांधि भज नासा। रघुवर भक्तनि

गुण गण रासा॥ सोरठा॥ अह ताहि भालर

माल राम नाम करि चिन्ह अस। तट जलधी

म विशाल लै आये दनुजात नृप॥ रागिनी॥

भैरवी ताल चौपई॥ नवल बुलाय मलिल

निथिताहीं। बोले बचन ब्रह्म गण नाहीं।
सुनहु निषुण पति भरत सनेहा। मैं निज
स्वामि नाम बर सद्दा। बिन्हु त कीन ताम्ब।
मन पही। रहा वृद्ध मम परम सनेही। रा
म नाम तहि सद्द प्रभावा। चाहत जहां जाट
र इह जावा। तहां देहु तब सहज प्रचाई। प

रा॰ भ॰ ति हारि बिलम बेग जल गाई। अस कहि रामउ

17

च्चारी। दीन प्रवाह हृद निधि वारी॥ सोरठा॰

भासे सर्ग जोइ नाम ब्रह्म सपरम सेभा घना।

विस्नु भक्त गुण राम नहि प्रभाव कर जठिर

सो॥ रागिनी भैरवी ताल ५। चौपई। असत

राज हज आरत जोई। होत तुरंत सक्रड ख॰

खोई। दिव्य नवीन काय कल धारी। बहो

प्रवाह जात निध वारी। बीचि वेग कर प्रेर

त सोई। रहा जहाज नाम पति जोई। ताहि

सेथि प्रापत भयो जाई। देखन लगे सकु

ल बिसमाई। कहत परसपर सेगि हमारा

जो बलि नृप प्रगाम निधि वारा। परयो ज

रा.म.

18

ढिर सोई ग्रानन गैही। भ्रम वश बहुरि एक
ग्रस कैही। डाविया दीन कठिन रुज सोऊ
इह सहि दिया तृप भूत कोऊ। करत पर
सपर ग्रस ग्रनुमाना। नभ संभ पय वृद्ध-
सजाना। ग्ररत यान जल पर चढि ग्रावा
उन कर हृदय ग्रत से भ्रम छावा। ग्रान कि

मोऊ जदपि जन पहा। बारय दीन जास ब
लि देहा। पूछन लगे कवन तव भाई। क
स गति ईहो जान जल पाई। बहु बचन ति
न कर सुनि रागा। अति प्रसन्न मन बरणन
लागा। अहो विपुल आश्चर्य पयारे। कहि।
प्रकार भ्रम उपज हमारे। मै मोई बहु दीन

रा॰भ॰ बल हीना। बली नृप भयो जल निधि लीना॰

19

प्रबल तरंग वेग तहँ पाई। पहुचो लंक नि

कट तब जाई। मारे ऊहां दनुज बल नीराण

गये लेन समीप विभीषण॥ सोरठा॥ सो

मोहि दृगनन देखि लागत सुमरण। राम

मन मनहु समाकर लेखि पूजो सुर सम

भक्ति जुत ॥ रागिनी भैरवी ताल   चौपई ।
अति मनमान प्रीति जुत कीना । दिव्य अमो
ल रतन राग दीना । बहुरि मचाक विद्र र
घुनाथा । मदन कीन मोर कल माथा । डा
र दीन पुनि सिंधु मझारा । अस प्रकार मु
ख वचन उचारा । इह नदीस जहे जर्वनचा

रा॰भ॰ हीं। देह पठाय ललित थल माहीं। अस कहि

२०

कीन दनुज पति ध्याना। कर स्पर्श संजोग ग॰

मजाना। अरु अलाप कल दरस प्रभावा। मै

मज राज कठिन गति पावा। बीचि अथाह

अगम जल राई। अना यास अस नास वि

हाई। इसे आय अब दरस नमहारे। पावा

बिगत शोक भय सारा ॥ दोहा ॥ यतना बि[भी]
षण यतना सो राम नाम सखि जोय ॥ जहिं
प्रसाद कज राज मम मिटो पाप वष सोय
रागिनी भैरवी ताल चौपई ॥ सुनि प्रभ
वचन हृद सव सारे । भये चक्र चित हृदय
सवारे । राम भक्ति जोई सावद सुहाई । बि

रा०म० बिधि प्रसंसि बदन समुदाई। निज निज हृद
य हरष अति छाये। चले सकल हरि भवन
सिधाये। इह बिचित्र बर भक्ति अनूपा। पाव
नि लोक दहन कलि भूपा॥ सोरठा॥ बिदत
सकल जग सोय अरु सदैव ऐसी रहो। भ
क्ति महात्म जोय श्रावद सुहावन सर्वदा।

इति भैरवी रागिनी भक्तमाल परिछेदः॥

ग·म·

22

रागिनी भैरवी ताल च ॥ दामोदर गति व
र्द्धन वेषा हरि निष्कुट वृंदा विपिनेशा राये
जय जय माय दयिते गोकुल तरुणी मंड
ल महीते वृषभानु दधि नव शशि लेखे
ललिता सखि गुण रमित विशाखे करु
णा करु मयि करुणा भविते सनक सना

भै. रा.
३८

तन वर्णित चरिते ॥ रागिनी भैरवी ताल
तीन ३ ॥ अरे मन किन बातन मे अटको ।
तजत सुभावन मटको । साध संगत और
कथा भजन को नाम सुनत ही मटको ।
निश वासर मनवारो ही डोले रूप देख क
र मटको । रंग रूप यह थिर न रहसी अंत

जाय भटकौं। तातें तोरे पाय परत हौं अब

चर चर जिन भटकौं। जो तू चाहे मुक्त

अपनी मेट मदनको षटकौं। दारा सुत

संपतको साती विपत परे नहीं छुटकौं।

अंत समैमे कोई कामन आवे जब जमदेगो

झटकौं। काम क्रोध मद लोभ मोह में।

भै. रा. आठ प्रहर रहे लटकौ। बारे बार तोहे सम

३५

झावें अपनी पूरी हटकौ। काल बलि ते

रे शिर पर खेले तिन सगरो जग गटकौ।

मानुष जनम बहोर नहीं पावे लाख तरे

शिर पटकौ। चलिये बेग विलंबन करी

ये भावलाव बेसी बटकौ। श्याम सुंदर।

को समरन करले धरले ध्यान मकटकों

परम पुनीत वृंदावन बसबो कालिंदी के

तटकों। विसुदास निहचै कर पावे दर

मन नागर नटकों॥ रागिनी भैरवी ताल

तीन च॥ एरी एक सपना मैंने देखा पो

हत पोहत परभात आज। मन सजनी

भै॰रा॰ मैं तो सों कहत ऊं ध्यान लगा मेरी बात सा

४॰ ज। झूंठ कहूं तो राम दुहाई सांची सों हो।

३ नन्द की बात। लाल लाडली बैठे परस्प

र हंस हंस करत बत रात। रवि ससि कोटि

बदन की शोभा जुगल मूरत लखि मद

न लजात। जवर ज स्याम शोभा सगा।

सागर जो ज्ञन मैं दामनि दर सात। श्रंगा
ग भूषन सोहत सुंदर बेनी निरष नागिन
सर मात। झलकन देख नाग मरका यो
लोचन पैं मिरग लोभात। कटिके हर
नासिका सुख श्रवनन के पल जात। न
ख ऐसे दमकत नागन से चमकत अधर

भै॰रा॰ न लालसे लगात । पीतांबर सारी पचरंग
५८
परीयासह रंग परीया रंग मेचवात । करमों
करजोरे अंगुरी मेरोरे अंग वाई तोरे लेज़े ।
भात । अंकन भर भर लेत लाल जु कुसम
सेज के रहे कुम लात । कर विनोद विहा
र विहारी मंद मंद मस क्यात । यह साव

देत नैंद उचट गई जागत भई तबन जनर

भ्रात। बिस दास प्रभ प्रिया बिन देखे निस

दिन कछुन सो हात॥ रागिनी भैरवी ताल

तीन ३॥ बालबार समझाय रही मैं मान।

मेरी कहीकों। सब डाव मों बीती सो बीती

यादन कर बर बार वहीकों। एक ब्रह्म।

भै. रा.
५२

देखो सब जगमें छोड कपट की गोठ गही। कों। जानकी दास सुमर श्रीरघुवर गई सो गई अब राख रही कों॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ३॥ राम गुमानी साडी पीरन बुझ दावो। तेरे दरस बिन व्याकुल रहदे जान की दास फकीरन बुझ दावो॥ रागिनी भै

रवी ताल तितारा ३ ।। मन हरि सुमरन सों ला
गरे सुरे और बातन सों भागरे । मानुष जन्म
वृथा कौं खोवे जन्म जात जैसे फागरे ।
या संसार रैन का सपना सोवे कहा अब जा
गरे । विषे बासना स्वाद जगत के सब जि
ने तन पागरे । विश्व दास सावजों वाहे ह

भै. रा.

५३

6

रि वरनन चित पारारे ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ३ ॥ कोई गुन्हा मै यारो कियेजी। क्यों हमसे दिल पै चलीयेजी। कौन लगा रि पुकान तिहारे जिन तुम कुवह काय दीयेजी। साच कहो तुम रामन मोहन। कितक मीर लावी है प्रियाजी। विस्नुदास

तेरी बरदी कहोंदीऐमान कीजे कठोर ही या
जी॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ३॥ बात
कहो मोची मोरे आज की रैन कहो जा सिधा
रे। अंजन अधर भाल महावर पीत बसन त
ज नीलांबर धारे। हार छुभे मोतियन उरकु
पर केकन पीठ प्रकट उभारे। सूर स्याम प्र

भै. रा. ४४

7

म बहोही जावो जाके तन मन प्रेम लगावे ॥
भैरवी रागिनी ताल तिताला ३ ॥ भलि रतियो
सखियो आज सुंदर प्रेम सों प्रेम ज्वरे जइरा
ई । मन मोहन बडभागिन पाए आज रंगी
ली रात सोहाई । सब विध आस पूजी मोरे
मन की अखिल लोक पति पीत म पाई ॥

कृस्नदास की इछ्छा पूजी छ्वतियो हरिके हाथ

छुवाई ॥ रागिनी भैरवी ताल तितारा ३ ॥

कृस्न नाम सुमरो मन मेरे कटे कलेश उदाव

पाप जरे तेरे । ब्रह्मा के ब्रह्म ईश ईशन के न

न मन जपले साफ सवेरे । यह संसार सार

एक नाम है तासों होय भव सागर पारवेरे

भै॰ रा॰ सूरदास सुमरन कर निसदिन आनंद होय

४५

8

शरण हरि लेरे ॥ रागिनी भैरवी ताल तिता

ला ३ ॥ आज सोहाग की रैनरी प्यारी क्या सो

वे मो मिलने की बारी ॥ आप ढोलवजाव

त बाजनवनरीठा पर ही मावलाजन। खो

ल घोघट माव देखेगा साजन सिर मो है

मेरुरा हात मोहे कगाना । कुमत आवनो घा

मोरे छेगाना । कहत कबीर हाथ दर्पन ली-

जे दरशन में फुलवा दीजे । अब मनमाने

सोई सोई कीजे ॥ रागिनी भेरवी ताल ति

ताला । ३ । मइयो बुलावे में जइहुं ससुरे ज

लदी में हमरा डोलिया कमरे । नैहर के स

भै॰ रा॰ ४६

व लोग छूटत है कहो करे अब कछु नहीं व
मरे। बिरन आव गये तरे लाग फेर मिल वहो
न जान कसरे। चलन हार भइ में अचानक
रहे बाहूल तोरी न गारी मु बसरे। मात महे॰
ली ताये अकेली संग नहीं कोउ एक न दस
रे। गावना चाला नरावल गो है जो कोउ रे।

विवा कुन हमरे। कहे कबीर सुनो भाई सा

धो सइयो के महल में बस इस जमरे ॥

भैरवी रागिनी ताल तिताला ३। जागा पिया

री अब का सोवे रैन गई दिन काहे कु खोवे

जिन जागा तिन मानक पाया हम बिरहा

न सब खोय गमाया। पिया चातुर हम मूर

भै॰रा॰ एव अनारी। कबहूं न पीया की सेज संवारी।

४७

10

में बोरी बोरापन कीन्हो। कहे कबीर सुनो

मान मनैया। तज अभिमान मिले गोर मैया

रागिनी भैरवी ताल तिताला। ३। समझ देख

मन मीयरवा आप ही होय कर सोना क्यारे।

साग सुका गेम का टुकडा फिका और सलो

ना क्यारे। पाया हो तो देले प्यारे पाय पाय।
फेर खोना क्यारे। गुलबोहा जो गुलको जा
ने तकीया और बिछोना क्यारे। कहे कबी
र सुनोभाई साधो सीसदीया तब रोना क्यारे
समझ बूझके देखो गुइया भीतर यह को
बोलताहै। बल बल जाउ अपनी गुरुकी।

भै॰ रा॰ तिन यह भेदकौं खोलताहै। आदममे वो आ

५८

पम माया जो सब रंगमें खोलताहै। कहत॰

कबीर जेंगेका सपना कहे न समकेवा बोलता

है॥ रागिनी भैरवी धीमा तिताला। ३। जोको

ई हरि रस जगावेगा सोई परम पद पावेगा॰

ध्रुवजी नाम सुन्यौं नारद सो बैठ तपस्याकी

न्ही। प्रभु दयाल भण जव बाधे पदवी अटल
दीन्ही। गजको पाव ग्राहनेग करो अई नाम
हरि लाई। छोडे धाम नजि गरुड मां बरे वे
गा ही लियो छुडाई। अजामेलने अंतसे सुत
योके नाम ज्यों लीनो। अघ फंदन काटे वा
ही छिन वैकुंठ वासदीनो। लाज द्रौपदीउ

भै॰ रा॰ तरन लागि हमरे कुस मुरारी। गाव लिजे

विदर आपनै की बढ गयो चीर अपारी। गान

का गई श्याम नामते औगण गाणो प्रभ ता

ई। मुग्ध पतावत नाम लयो जब वैकुंठ ठाई।

कुवज्या काशीकर वदली नी देह हे मोरे गा

री। चौरासी तें छूट गई जब नाम धरायो पा

री। कुंदन पुर कों आप पधारे रुकमनि कर

न सहाइ। भूप जीत कर रुकमन लाए ऐ

से हरि सुखदाई। बेलन के बेर जो खाए।

ध्रिनहीए नहीं आई। साचि प्रीत गोपाल पि

यारी सो बैकुंठ फुलाई। चरनामृत में जर

र घोलके राणे पठायो जाई। बिलपट कर

भै॰ रा॰ अम्रत कीनों मीरां पियो अघाई। जम प्रहला

द खंभ में बांध्यो ध्यान कह्यो बनवारी। नर

सिंह होय प्रकटे नारायन वेगाही लियो उबा

री। दो दल फूटो महा भारत में जहां टटोरी।

व्यारी। छेटा टूट परो तिन उपर रक्षा करी।

जउराई। धना बीज बो पना यनकों काक

रमटी कोई। तिलधरने कूं जागे नाही इतने गो
इं होई। साथ आय उतरे सेना के टहल करि
मन भाई। जन अपने के इछा कारन आपभ
इ हरिनाई। दास कबीरा लुकोइ डोलो वि
अन करि वढाई। बनजारा को भेष धर ह
रि वालदले पहुंचाई। नाम देव भोजन की

भै॰ रा॰ नौं नाम देव प्रति प्रतिज्ञा राखी मंदिर फेरयो ग

५१

14

उजि वाई। भक्त वछल लहरि माखी। विप्रने

मिल मसल कीनी जनने दास मनायो। सुम

रन करके संग चीरके कनक जनो उदे खा॰

यो। परजापति की पतनी लेके आवे पावक

लाई। भूल गए सुतराव लिए हरिणावेड

रागिनी भैरवी ताल ४। हे जे कृपाल दया
ल हम को तिहारी भक्त निज चरण शरन
ण करतार। इति अस्थाई। तेंही आद तेंही
अंत तेंही निरगुन तेंही सरगुन तेंही है
जगत आधार। इति अंतरा। एकही अने
क होय व्यापो है जगत में नाना रूप रेंग

भै. रा.
२५

नाम भेद बहुत प्रकार। कहूं जलथल कहूं
पर्वत कहूं पाखान कहूं सुर असुर। नाग
पशु पंछी कहूं रंग रागसागर होय कहूं
नर कहूं नार। रागिनी भैरवी ताल ५॥
कुटिल कुंतल कुंडल काछनी कांति कु
वलय भाषरे। इतिस्थाई। किंबे कुंचिता

यर ऊगुद कैोमदि ऊंदकै रव हासरे। का

न्ह कालिंदी क्हूल काननै ऊंजे ऊंजर राज

रे। किंवे कामनी ऊमोचित कामकोटि।

विराजरे। कनक किंकनी कंगनाद ऊंड

ला चित संघारे। केलि कोकिल कंठकका

फली हनत वेमरे। केशरी कटि केब्रु केदर

भै॰रा॰
२९

ऊंज के प्रार दामरे। कलिकाल कालीय क
वले केपित दामगोविंद नामरे॥ रागिनीभै
रवी ताल चार ४॥ नारनी श्री जमुना श्याम
कमल दल नैनी। इति अस्थाई। दरस परस
दोष दूर होतहै अघकाटन कोंछैनी। इति
अंतरा। सात समुद्र कों भेट करत है भक्ति

भक्ति की निशैंनी । श्रवन आण गुण गावत
प्रति वल्लभ कुं वांछित फल दैंनी । रागिनी
भैरवी ताल चार ४ ॥ अचल राज करो को
ट बरसलों चिरंजीव रहो जसुमति तेरो
लाल दरस देखि भए निहाल मैं जोगी सु
ख पायो मेरे जिय आनंद भयो उरन म

भै. रा.

२०

३

मातहै। जौलौं ध्रुव धरन तारो जीवे तेरो

राज डुलारो तोलो रवि ससि सुमेर गगन

पवन पानि लोमें चकोसी ग्रारबल होय

यह ग्रशीश देजातहै। डिम डिम डमरु

वजाय सिंगी नादकर साव से गाए महा

देव ज दरसन पाए ग्रलाव की छविनिर

ख मंद मंद मुस क्यात है । पांच वार फेरी क
र कछु श्रवण लागा मेच थर बैज नाथ कै
लास के वासी प्रेम मगन नाचे तोडव लासी
नकथे मातकड थुंगानिर तत अपनैं मन॰
भाव पात है ॥ रागिनी भैरवी ताल चार ष
बडे बडे नैंन ता मे लाल लाल डोरे कारे का

भै॰ रा॰ २८

रे भोंराको के मंडरातहै। अतरस चातर भणेहै वि

या के वसजाके दग देखे मेन खिंजन लजातहै

जोंलों देखि यत साखी तोंलों पाई यत खाखिदेह

के दर डाखते ह्र मिटे जातहै। लाल गिरिधर

पियनीकी नजर किये लाजके जहाज मानों

मोती भरे जातहै॥ रागिनी भैरवी ताल ५॥

नाथ अगाथ वहोत गण है साथ सुथ सुर नर
गुनी गंधर्व रव पव गण सिद्ध समार । काहू
न पायो पार कर याके विचार केवल अम्रत
रशिव श्रवण धार अंजनी नंदन कहे उचा
र सरस्वति तरन न लगी हिये में दोतं वाडार ।
छरव राछती मरागनी औडव खाडव के भेद

भै. रा.
२५

सुथमद्रा सुथवानी तानमें मकरी विना न जा
कै सुकानन आरा पार॥ रागिनी भैरवी ताल
चार।४। चातक चकोर चक्रवाक वेचरी क
कुल कोकला कलाप कलि कैकली ककम
ले। दलदर बिंड हेंड गेथ बेथ बाह मेदमेद
ललित लता विशेष विमले। हेदाबन मत्र

चलि तालि वालि प्रात यामा उद्योन म्दन्न व
मकरू यक्त रेएउ सकले। मंदर शिरोमणि म
केद भरविंड सख मेतरेण हेत नै वजाव।
जो वत मले॥ रागिनी भैरवी ताल चार॥४॥
छतम देनी परी सजनी प्यारे की मिहीवति
यो लागत मोहि अंग अंग रोम रोम रहीय

भै॰ रा॰
३॰
6

त सोहागण। प्रेम भरि रंग रूप रस भरि दोउ। की सोह करत हो मैं तो हे मेवा है चाहे वे मोहे मिलि है श्याम सुजाण होनी होय सो होण॥ रागनी भैरवी ताल चार। ४। करत फिरत मीत मेरे तेरो करता है राम गरीब निवाज इति स्याई। सप्त दीपति के लोक सकल।

मय भरतिहारे हिए किछत राज। लख

चौरासी जीव जौन जेते चराचर सबनकौ

काज। दास आस करन शरन आयो राखि

सबन की लाज॥ रागिनी भैरवी ताला ॥४॥

अचल राज करो कोट बरसलौं चिरं जीव

रहो राजाधिराज राजा रामचंद जोलौं धुव

भै॰ गा॰ ३१

धरन तरन पवन पानि गगन मेरु लोम की
सी आरबल होय मार्कंडेय आदि ऋष असी
म देत जोलो जग में भान इंद्र गनि गंधर्व कि
न्नर गावे नारद मुनि बैन बजावे ब्रह्मा वेद
धुन करे अमंगल सब दूर होवे डाव डेद फे
द। सिंगासन बैठे शुभ घरी शुभ दिन शुभ

पल महूरत शुभनछत्र साथ अम्रत जोग शु
भ चंद राग सार मन भयो आनंद ॥ रागिनी
भैरवी ताल चार । ध। सुंदर म्रग नैंनी काम
न ऋट्त मानति पति संग। भुजपर सीस क
पोल दशन मधु कुचपर कंचुकी तंग। जो
गन पर जोग मावते बोल अधरन पर रूप

भै॰ रा॰ कर रेग। यह भातन के खावदे खावले रेग ला
३२
ल वैज्ञकेल छेग॥ रागिनी भैरवी ताल चार
8
मेरी सुधलीजो तुमही सवेरी हरि गोपाल
तुम मत कीजो डेरी। मनइच्छा सबही पूर
ण करो हरिमोहे आसरो सरनहु तेरी। गी
ध व्याध गजगनिका अजामिलादिक पति

न तुमतारे काहे भूले हो हमरी वेरी। रागसा

गर प्रभु आसरो तिहारो चरण कमल मो चि

त उर फेरी॥ रागिनी भैरवी ताल चार।४।

अचल राज करो लाख वरस लौं कायम रहो

महमदसा अकबरसा पातशाह। साह के

सोहन कुछ तावन सब देस देस तें लीजो।

भै. रा.
३३
9

वि रात। अनेक जसन नौ रोज करोर करोर
होय ऐसेही जैसेंही सुभनछत्र जागे सब
इनियो के भय मनके काज॥ रागिनी भैर
वी ताल चार। ४। भेदन सुर सम सुरन के
पावे जब तब गुरुन की सेवा करे जीव ष
पैनेको। सोचे गुरुन सो सीखे जो आवे वि

घानी की लोकुं गुरुज्ञान ध्यान करवाङ्कुं को म

नमें नव गुणीयन कहे वाको ॥ रागिनी भैरवी

ताल चार । १। आज मेरे भागजागे पिय भोरही

मयलई । इतनी भई निहाल पिय तमपें वल

वल गई । तन मन प्रान तमही निस दिन त

मरे रंगरंगई । तानसेन प्रभु तम ववर लियो।

भै॰रा॰ मणि रस बस तिहारे भई। रागिनी भैरवी ताल

३४

चार ।४। बीतत हमपर जैसे हो हैंमें कहत हो

10

रावरे। कहे तजे और पहचाने हम जानत जहा

जावरे। रैन दिना मोहे कलन परत है लेबेले

लावरे। माहबहादर तुम बड़ेनायक हमसों

भएलड बावरे॥ रागिनी भैरवी ताल चार।४

तकत बैठे महाबली ईश्वर होय अवतार ॥

इति अस्थाई ॥ देस देस के सेवा करते है बक

सत के वन यार ॥ इति अंतरा ॥ जोई आवत ।

सोई फल पावत मन इछा पूरण आधार ॥

तानसैन कहे शाह जलालदीन अकबर ।

गुनिजनन के काज करन कों कियो करता

भै०रा०
३५

र॥ रागिनी भैरवी ताल चार।ध। राम मकाम
युरागत नास्व सदाबसी मैतनवे हरसैं। राज
मकाममन वासरमो रस नालाबसैं ईविये स
रसैं। राम रचौर सजालजहैहोजर विषनाहल
षेरमसैं। रागमैं स्यामल मै रविह्रामन सैं
रसलै वसके मतसैं। मार मवानी मराम म

रागिमी राम मरा ममबा रमसैं मातन मारी।
हूसै रमचेतनचै रमनैं हरिमा ननसैं। मास
बडे मरू नारिक छाई। इछा कारि नारू बडे
बसमे। मेरा रचै रमहमैं सानिबै मसबेनि स
मै सरचै रंगमे॥ रागिनी भैरवी चैराहक
नाल चैतार। पंच दस माथे गनि चतरादि

भै॰रा॰
३६

म दरिया। द्वादश क्लिन उन विचित्र पिंगा के

गरजत सप्त ध्याय तिरीया। सप्त स्वर तीन ग्रा

म इकईस मरछना बाईस स्रुत स्वरीया।

उरपति रपला गडाट प्रतित प्रनाघात क्षि

रीया। प्रातक खातक स्वरांतक प्रोउवषा

डव मे प्रण वैज करीया॥ रागिनी भैरवी

ताल चार।४। वेद वदन प्यारी बैठि सिंगा
र करन हेम चौकीमध्य प्यारी धरैं भूषन।
साज। निरत कार निरत सप्त स्वरन होतगा
नता विच प्यारी लीनी मीठीता नवजत सा
ज॥ रागिनी भैरवी ताल चार।४। भए रवि
उदै होत आएहो भैरवी में लागत भए रवनी

भै. रा. वस प्यारी । भैरवी तान मुरली में बजावें रि

३१

झावें वारी तियां रैन कें जावें नेंद डलाई ॥

13

इति चौतार धुवपद परिछेद: ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

रागिनी भैरवी ताल । सवैया मोहिबो मोह

नकी गतिको गतिह्री पढ्गो बैन कहा यौं पढ़े

गी । ऊप उठे जनकी उपजै दिन कहि मढै ग्रे

गिया न मढैगी । नैननकी गति गरूढ़ चलाव

ल केशवदास प्रकास चढैगी ॥ माई कहो पर

मायगी दीपति जो दिन ह्वै इहि भाति चढैगी ॥

रा·भै· रागिनी भैरवी नाल । सवैया । पाउ पैँ मन
हार करैं पलका परपाय दियो भय भीने । सोय
गई कहि केशव कैसे हूं कौरही कोरक सौंहन
कीने । साहस कै सषसौं सषछै छिन मै हरी
भाति सबै सषलीने । एक उसासमहीं के उसमे
सिगरेई सुगंध विदा करि दीने ॥ ॥

रागिनी भैरवी ताल । सवैया । यन्त्र भूपरि
लोचन लोलसो मेलि सकोड कटाछ की कोरक
की । सात माधुरि बानी बसी बनराई यो केशमोह
न नाम पछी । ऊब नेह नवैं नन लाज विराजति
बारगाहे चढें ऊर मछी । नवछी उति बालहिं
बालकना हनि अंग अनंग की फौज बछी ॥

रा॰भै॰ रागिनी भैरवी ताल । सवैया ॥ बोलीन है वे

झलाय रहे हरि पायपरे प्रकडो लिये ओडी । केसव

भेटिवेको भरि अंक कुदाइ रहे जक मै नहि छोडी ।

हथे विनै वकौं केतो कियो सिर चापि उठाय अंग

रुनि तोडी । मै भरि विन नजन चित्यो न रही गा

हि नैननि लाजनि गोडी । रागिनी भैरवी ता॰

२

सवैया । गौलैन बाल बुलावन हूं न षरेष लिषै
सब प्रेम परेषौ । आपन हाथ बिलोकि बिलो
कि करी नव केसव उहि वसेषौ । छोटी बडी बि
धि रेष लिषी जग आयु की रेष सकौन जलेषौ ।
प्रेमते बोल सह्यो न पर्यो अकुलाय कह्यो पि
य कैसी है देषौ ॥ रागिनी भैरवी ताल ॥

रा॰भै॰ सवैया ॥ आज मैं देषी है गोपसुता इक हो यत न

ऐसी शरीर की जाई । देषत ही रहिये दुति देह

की देषत औरन देषी सुहाई । एक ही वेक वि

लोकनि ऊपर वारों विलोकि विलोकति काई

केसव दास कलानिध वक हूजिय काम कि मे

रो कन्हाई ॥ रागनी भैरवी ताल । सवैया॰

3

कान्ह भले जू भली समुझाई हौं मोहि समुझको

जो उमह्योहे । केसव आपनो मानिकसो मन

हाथ पराय दै कौने लह्योहे । नैननसो मिलवौ

करियै अब वैनन कौ मिलिबौ नौ रह्योहे । जाइ

कह्यो तुम जैसो सखी सझु ऐसे गुपाल मै ऐसो क

ह्योहे ॥ रागिनी भैरवी ताल ॥ सवैया ॥

ग॰भै॰

4

हैयानि नंद मनोहर के सब आनंद कंद हिये उलहे

हैं । भौंह विलासनि कोमल हासनि औ सुबासनि

गाछगहेहैं । वंक विलोकनि को अविलोकि सु

मोह ह्वै नंद कुमार रहेहैं । एई तो काम के वान

कहावत फूलन के विधि मूलि कहेहैं ॥ रागि

नी भैरवी ताल । सवैया ॥ तोहिन गाय व

४

आवत नाचत बार अनेक सिंगार बनायो । जोहू मै आनकौ आनिवौ कछओपै तेरो नकुन भयो मन भायो । आवै महंन् करिको कीर भामिनि भा ग वडे वस नैंकरि पायो । कान्हसौं सुथे ज्ञवारु नि नाही सवारुनिहूं अब पाइ लगायो ॥ रागि नी भैरवी ताल । सवैया । आवत देषि लिये

रा.भै

उठि आगे कै केश आशुहि आसन दीनौ । आशुहि

पाइ पखारि भलै जल पानकौ भाजन लाइन वी

नौ । वीरा वनाइकै आगे धरे जब वै हरिकौ कर

वीजन लीनौ । वाहे गही हरि ऐसौ कह्यौ हसि

मैनो इनो अपराध न कीनौ ॥ रागिनी भैरवी

ताल । सवैया ॥ चितवौ चित चोपं हुलासं

5

हसै हो तुला पैने वोलै रहै तिन मौने । सौंह
अनेकनि आवहु अंक करौ रतिको अनि रैनकी
रौने ॥ षवा पैने षाडू वस्याइ विरी जन आईहो
केशव आजहो गौने । मोहन के मनको मोह
नी स्हकहो यहु पो सिष ईसिष कौने ॥ रागि
नी भैरवी ताल । सवैया । हिनके इन देष

रा॰भै॰ ऊजु देषौ सवै हित वात सवैा जहतनी मवरहीहैं।

6

यहतो कछु और वेहै मवसी अव मोंह करौवकरी

जनहीहैं। समझाइ करो समझी सव केसव हू

टी सवै हमसौं जकरहीहैं। मान कियो अपमान

करो नो हसो अवके हसिके कोरहीहै॥ रागि

नीभैरवी ताल ।सवैया। वैटी सषीन की

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सो भै सभा सबही के सबै तन माझ बसै । छूकै नैबा
न बस्याय कहै मनही मन केशव दास हसै । खेल
निहै इन खेल उनै पियचित खिलावति यौं बिलसै
कोई जानै नहीं इग दौरि कवै कितकैं हरि ग्रीखिन
क्लै निकसै ॥ रागिनी भैरवी ताल । सवैया·
केशव रायकी सौंह कैकै कछु पकन आवै मैं हो

ग.भै. उपरी । एकवितै मृगमकाय शैन उनवान कहै व

ड्ड भायपरी । चारु चकोर विलोचन भासि वहै

दिसतैं श्रेणरी पमरी । सखि आज गई होती गोक

ल हौं सवही मिलि देजको चांदकरी ॥ रागिनी

भैरवी ताल । सवैया ॥ हौं सुष पाइ सिंगार

रही सिष सीष नप सिष ते हे सिषाई । मैवडूनै उष

पाइही देखौ पै केशव केहू जटे वन जाई । दंडदिये
विन माथनि हू मेरा छूटन क्यों खलकी खलनाई-
देखऊ दैमऊ की ऊट कोटि मिटै न घटै विखकी वि
खनाई ॥ रागिनी भैरवी ताल । सवैया । के
शव औरनसौं रस राखि रह्यो रस काऊ सवै हमसौं
हैं । हौं मन मैले न जो लोकहू अब काऊहू बोलि

रा॰भै॰ वो बोल हँसौंहैं । देषहु यौ इक बार स कोचन आ

8

यस लोचन आरसी सौंहैं । आपहु वैसेंही साजसौ

आजु स भूलि गई पिय काल्हिकी सौंहैं ॥ रागि

नी भैरवी ताल । सवैया । वैदिकुनी व्रजनारि

नमै वनिश्री वृषभान कुमारि सुभागी । षेलनि

ही सषि बोपुर चारि भई नहि षेल घरी अनरागी

ट

पीकेते के सब बोलि उठे सुनिकै विस चातुरी आन
रि जागी । जानि न काहू कबै हरि के सब मारग ही
मरमी हग लागी ॥ रागिनी भैरवी ताल ॥
सवैया ॥ सुधी भूलि गई भूलए कियौं कान्हू कि
भूलेई डोलत बाटन पाई । मौन भये कियौं के
शव कान्हूसौं भेट भई कोऊ भामनि भाई । आव

रा॰भै

9

न इहै मग आए गयें कियौं आवेहिंगे सजनी सब
दाई । आयत नेद कुमार सवार सु कौन विचार
अबेर लगाई ॥ रागिनी भैरवी ताल । सवैया
केशव जीवन जो हम को निज जीव ज्यों ते अति का
पहि भावै । जापर देव अदेव कुमारनि वारत माई
नवार लगावै । ताहरि पै ते गवारि की वेटी सहा

घर पाय जंवाय दिषावै । झौंतो वची अव हासनि
है ऐसे और जुदेषै तो उतर आवै ॥ रागिनी भैरवी
नाल । सवैया । आषनि है लषवैन सषीनसौं ला
षहिये अभि लाषनियो है । कोमल हासनि नैन
विलासनि अंग सवासनि को मन मोहै । मूरति वे
न कियौं तुलसी तुलसी वनमै रति मूरति को है ॥

रा·भै

10

कुंज विराजति गोप वधू कमला जनु कुंज कुटी म
हमोहैं ॥ रागिनी भैरवी ताल । सवैया । पी
य पै रहे ते प्रीतम त्यौं कहि केशव के हैं नमै हगादीनी·
नेरी सखी सिष सौंषी न एकहू रोषहूं की सिषसी षि
जलीनी । चंदन चंद सरोज समीर जौं डारु देह भई
सषरीनी । मैं उलटी जु करी विधि सो कहु त्यौं पन

ह्वै उलटी विधि कीनी ॥ रागिनी भैरवी ताल·

। सवैया । आज कछू अँखियां हरि ओर

सी मानो महावर माहि रंगी हैं । मोहन मोहि

सी लागत मोहि इतै पर मोहन मोहि लगी हैं ।

मेरी सौं मोहसों मानहु वेगि हिये रस पेमकी री

ति जगी हैं । मेरे वियोगके तेज तवी कियौ केश

रा॰मे व काहूके प्रेम पगीहैं ॥ रागिनी भैरवी ताल-

। सवैया । केशव कैसेहूं एरव ग्रण मिलौ

मन भावतो भाग भयौरी । जानैको माई कहा

भयो कौहूं जो श्रेणीको श्राभ्रूक्षयोमट सौरी ।

नाकडू नहन ग्रजौ हसिबोलै नकू मेरो मोहन पा

य पर्यौरी । काठ हूतै रट मेरो कठोर इते विर

हौंतल हूंत जलौगी ॥ रागिनी भैरवी ताल ॥
सवैया ॥ औरियै आय उहां उनसौं यह भोजनके
अवहीं हम ऐंहें । ताकहुंतौ अवलौं वहराइकै रा
षी वहलाइ मन करिमैंहूं । वैठेकहां इनकी छिवा
केशव जाइहुनहीं कोऊ जाय जकेहैं ॥ जानतहौं
उन आषिनि तें अम्ह अंउमगे वहुलो ७निरैहैं ॥

रा॰भै

12

रागिनी भैरवी ताल । सवैया । ह्वलसे फूल
ह्ववास ऊवासमसी भाकसीसे भये भौन सभागे ।
केशव वाग मह्रो वनसौ ज्वरसी वढी जौन्ह सबै
श्रृंगरागे । नेह लग्यो उर ना ह्रसौ निस नाह्र व
री ककह्रू ग्रन्तरागे । गारि सो गीन विरी विरसी
सिगारेई सिंगार श्रृंगार सो लागे ॥ रागिनी भैरवी

नाल । सवैया ॥ लाडिली लीलिक लोरि

लरी कहुं लाल लके कहो अंगि लगायकै । आ

जुनो केशव कैसहु लैकपं लागन देतिन देषहु

आयकै । वेग चलो उठि आई लिवावन दौरि अके

ली चलौं अकुलायकै । भूलेहु गोकुल गाउमे गो

विंद कीजै गुरुर न गाइ बजायकै । रागिनी भैरवी

रा॰भै॰ 13

ताल । सवैया । गोप बडे बडे बैठे सुथाइनि केशव कार सभा सुवगाहीं । खेलत बालक जाल गलीनमै बाल विलोकि विकाहीं । आवन जानि लगाइ चहूं दिस घूंघटमै पहिचानन छाहीं । वेदसौ आनन काढि कहो वली स्जनहै कहूं नाही किनाहीं ॥ रागिनी भैरवी ताल । सवैया

होत कहा अबके समझे समझेन नैबे जबहे सब

जाए । एकहिं वेकविलोकनि माहिं अनेक अमो

ल विवेक विकाए । जान पर्यो न जनावहू जन

मावधि लौउ हि जानि है पाए । बात बनाय बनाय

कहा कहौ लेहु मनाय मनाय ज्यौं आए ।। रागिनी

भैरवी ताल । सवैया ।। भले हू सपेन है वि

रा·भै·
म·

14

नयो उह्नकान्ह कियो लवि लालव केनो । हा
हाकै हारिरहे श्रनिकेशव पायपरेनो परेई रहेनो·
हैंनोयहे नव हींकी विचारति होनो गुमान
कौं याही नो पनो । लामी लटै श्रन पानरि
देह जैनेक वडी विथी श्रोधैं नदेनो ॥ इति
रागिनी भैरवी नाइका नाइक समाप्तम् ॥

रागिनी भैरवी ताल । कवित । मकता मनि
न कीहै मक्र क्रौसी नाक दांत दाकौं दामनी ह
मनी वनीसी है । मोहनके मंत्रनके अषरांन की
सी रेष भ्रकुटी सुवेष भाव भेद कवि क्लौसी है ।
किन चनराई उझकीसी उझकेसे अरुजव मक
वौनो नैन जैसे उझकीसी है । केसो दास रूपकी

१०३

सी माला प्रेमकी सी माला आजलौ न देखी सुनि जैसी आज दीसी है ॥ रागिनी भैरवी ताल ।

कवित वेचल न हूजै नाथ ऐसरा न कूजै हाथ सोवे नेक सारिकाऊं सकतो सवायो ज् । भेद कयौ दीपउनि वेद मध देषियत दौरिके डराई आके हाथैं दिषायो ज् । सगाज मवाल वालवा

हिये विहारि दैकें भाषो ब्रह्म केशव सुमोह मन भायोजू । छल के निवास ऐसे वचन विलास सुनि सौगुनो सुरतिहू ते स्याम सुष पायोजू ॥

रागिनी भैरवी ताल । कवित । इत उत चाहि देष्यो जब कोऊ दिगनाहि बारबार जिय करहो हिये कस्यो भयोहै । अब लौं नो देषतिहो इहो क

रा.भै.

छूटनो नहीं अवहेंते देषियत उरउटनयोहै । रह

सि षिलन गई नोंने नेह भारी भई कियोयाने वा

ज भयो मरावर दयोहै । अंषनकी मेरी फाटन

सी आवनहै जानन हीं रीठ लागि केशो ऊंकि

गयोहै ॥ रागिनी भैरवी ताल । कवित्त ॥

सषदै सषीन बीच दैके मौंहै घाय के षवाय कहू

2

2

स्वाद वर कौनौ वस वस है । कोमल मृनाल का

सौ मल्लका की मालकासी बालिका जुडारी सौ

डि मानस किपस्तु है । जानै को विभान भयो के

शव सबै को बान देषौ आनि गान जान भयो कि

यौं अस्तु है । चित्रसौ जुराषी यह चित्रनी विचित्र

गति कहे यौं रसिक नप यामै कौन रस है ॥

रा॰भै॰ रागिनी भैरवी ताल । कवित । चंदकैसोआ

३

गा भाल भृकुटी कमान कीसी मैन कैसे पैनेसर

नैनन विलासहै । नासिका सरोज गंध वाहसे

सुगंध वाह दारयोंसे दसन कैसोवीजरी सौ हास

है । भाईकीसी ग्रीव भुजपान सो उदर अंग पंकज

सेपाइ गति हंस कीसी जासहै । देषीहै गपाल प

क गोपिका मै देवता सी सोनै से सरीर सब सोंधे

की सी बासै है ॥ रागिनी भैरवी ताल । कवि

त । प्रथम सकल सुचि मजन अमल बास जाव

क सुदेस केस पास को सुधारिबौ । अंग राग भू

षण विविध मुष बास राग कज्जल कलित लो

ल लोचन निहारिबौ । बोलनि हसनि मृदु चा

रा॰भै॰

4

नही चलनि बाह पल पल प्रति पनि प्रन प्रति पा
रिवौ । केशोदास सविलास करहु कप्रारि राधेह
हि विधि सोरह सिंगारनि सिंगारिवौ ॥ रागि
नी भैरवी ताल । कवित ॥ केशोदास स
विलास मंद हास जुत अवलोकनि अलापनि
कौं आनंद अपार है । बहिरनि मान अरु अंतर

नि सान धुनि रति विपरी तिनिकौं विविधि वि

वाहहै । छूटि जाति लाज जहां भूषन सदेस

केस टूटि जान हार सब मिटत सिंगाहहै । क

जि हाजि उठैं रति हाजि तनि स्वन घरा सोई तो

हरति सषि श्रौंक विवहा हहै ॥ रागिनी भै

रवी ताल । कवित ॥ तान को सो गान सब

रा.भे.

5

बल बल बीर कौसौ मान कौसौ मघ महो मोहि
मन भायो है । थल सौ अचल सील अनल सेव
लचित जल से अमल तेज तेज कौसौ गायो है ।
केसोदास बसन प्रकास के प्रकास तोष घर च
र घट घट घेर घनी छायो है । रति कौसौ रति
नाथ रूप रति नाथ कौसौ कहौ केसो राइ रूठ

कौन पहि पायो है ॥ रागिनी भैरवी ताल ।

कवित । बोली कोसो पान तोहि करन संवारि

बोई दर्पन ज्यौं तोही मांऊ मूरती सर्मनी है ।

तेरे मनोरथ भगी रथ रथ पीछे पीछे डोलत

गुपाल मेरो गंगा कोसो पानी है । तेरी तिय

देवताये पायो पति केशोराय पतिनी वऊन

रा॰भै॰

6

पति देवता बषानी है । ऐसी बातें कौंन जन मां नी सुनि मेरी रानी उनके तो मेरी बानी वेद की सी मांनी है ॥ रागिनी भैरवी ताल ५ । कवित्त कै थौ गढ काज कै थौ कल्यान सषा समाज कै थौ कछू आज वन वासर बिभात है । दीनांतें न सोय कियौ काज सो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध

किधौं उर अब रानतैं । स्रवि मैन देह किधौं मोहू
सौं कपट नेह किधौं देषिमेह अनिइरे अपि रानतैं ·
किधौं मेरी प्रीतकी प्रतीत लेन केशोराय अजहू
न आय मन ह्यौं कौने गानतैं ॥ रागिनी भैर
वी ताल । कवित । वंदन विट वउ कोमल
विमल दल ललित वलित लता लपटी लवंग

रा॰भै॰ 7

की । केशोदास नामै डरी दीपकी सिषासी दौरी डुरावति नील वास इति श्रंग श्रंगकी । पौनपनि पंछी पसू वासमै सवद सुनि जिन तिन चौंकि चौंकि चाहै चोप संगकी । नंद लाल श्याग म विलोकै कुंज जाल बाल लीनी गति नहि काल पिंजर पतंगकी ।। रागिनी भैरवी ना॰

कवित्त ॥ बार बार बोल्यो जब बोल्यो न विहंसि

तब बालक ज्यौं बोलिबे को कत बिललात है।

ज्यौं ज्यौं परै पायन त्यौं पाइन तें पीन भयो हौं तन

कहा किये अब मायन सौं गात है। केशोदास स

ब छांडि कीनो हठ हूं सौं हेत तोहू छांडि जिय

जिये बिन कहा जात है। ऐसे प्यारे पियहूं कौ

रा-भै-

माज्यो न मनायो मन ऐसी तोहि हरिपज की

छै पछितानहै ॥ रागिनी भैरवी ताल ॥

कवित ॥ श्रवन ज्यौ सुजस न कान नतो सुनि

यत जैसे केशोराय हम लोगन मै गायेहै । वे

सको विसारे सुधी काकज्यौं भ्रमन फिरै जूठे सी

ठे सीत षात ईठ डीठ ढायहै । हरि हरि करन है

8

दौरि दौरि गह्रो पाय जो नैन कठोर दौर जानि जिय
पायै है । काको घर गालवे को वस करो चन स्याम
वे हे ज्यो तुम प्रान मेरे घर आये हो ॥ गनिकानो भ
रवो माल । कवित ॥ देषति उरपि जात देषि
देषि निज गात चंपकके पात कछू लिष्योहै वना
इकै । सकल सुगंध फारि हरि काको मारि भति

रा-मै-

फूल माल गोरि डारी बीरा बगराइकै । लैलै टी

हसाम तजि विविध विलास हास केसो दास है उ

दास वली अकलाइकै । सेइकै सैकेन सूनो का

हजू सौं बोली ऊनो मोसो जोरे कर हूनो हूनो उठ

पाइकै ।। रागिनी भैरवी ताल । कवित ।।

लीने हम मोल अनबोली आई जायो मो हू मोहि

घन स्याम घन माला बोलि लाई है । देखो है रे ऊध
जहां देह ऊन देखी पैर देखी कैसे बाट केशो दासनी
दिखाई है । ऊचे नीचे बीच कीच कंटकनि पीरे पग
सारस गायेद मति ध्रति सुषदाई है । भारी यह का
री निसि निपट अकेली तुम नाही आए नाथ साथ
प्रेम जस ह्वाई है ॥ रागिनी भैरवी ताल ॥ ॥

रा॰मे

10

कवित । नैनन की अरुनाई बैनन की चतुराई गा
न की गुराई नइरनि डुनि चाल की । अपने चरित्रनि
के चित्रन विचित्र चित्र चितनी ज्यों सोहै साथ छवि
का अआल की । चंदके समान चारु चायसो चली
फिरति करैके निहारे मृगनैनन की पालकी ॥
की जैपै पान आगा प्यारे आईहै जु आई अलबेलि

रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ २ ॥ सखी

साम्हर है बडी दूररे। चलत चलत थकरही

मोरे साहब पायन पर गई छूररे। ऐसो रूण

ढंग सिखा नहीं नै हर कालेह वर मिल व

ह ज़ररे। काहे गुदर दोउ रंग बरोबर साव

पर वरसत नूररे॥ रागिनी भैरवी ताल जल

भै॰ रा॰
२४८

द तिताला। २। श्यामेर बंधु कौं यार्राई लौं रही
लोके मने श्रोर। जेखनी नैं खुनीपी रीती क
री लौं रही लौं श्रेक भोर॥ रागिनी भैरवी ता
ल तिताला। २। शिवतोइ कें बुलावे चलौं नी
गोरी मइयो। मम स्वरन श्रोर तीनग्राम मों
रागरंग उपजइयो॥ रागिनी भैरवी ताल २

नैहर वारु मल जाय हारे मैं कहा करूं रामा। मो
वनथी में कदम की छहयां सब साखी यन के
माया। बोलत समे गवन के लोगवा हाय प
मारे जात॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला॥ ३॥
परी परी मतवरवा मइडं भर भर मथवा पी
लावै। आप पीवै मइ को पीयावै दैया मोही

भै० रा०

२४५

लभावे ॥ रागिनी भैरवी ताल खिमटा ॥ मेरे डु
मरेकु कीया खराब रे हारे बेदरदी डुमनीया।
आगे आगे डुमरा पीछे डुमनीया बंगाले मैं बा
नल सरावरे ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ॥
फोखाक संभाल वे छाड माहि जर आमी सवे
रा। असी कमाउडे कोलवे मैं मोही तेरे नालवे

2

बाबुलदेसा चाकवे वीरन देसां चाकवे रहदी
महवत पाकक्षा ।। रागिनी भैरवी ताल तीन·
बल फिर करदीद निजारेदा आजोंदा मह
र महमद । (खुश गुजरी गुजरा न ग्रोवी मीयां
नाज परीदा एकन जारा ।। रागिनी भैरवी ता
ल तिताग ।। की मजाल माउडी वे जोकिस

भै॰रा॰ दी यारी दा नाम ले नाजानों की करेजा। दरस
२५०
वे खामीनों मैं जीवी सिपड़ जानदां णावे जिद

ड़ी दिखाणी मोड़ा जीडरेंदा॥ रागिनी भैरवी
ताल तिताला॥ दिन बहारों दे यार दा मानूं भे
देवे। महबूबों कोलों नैंडडें झांदे फम फम वे
ला गुल फुल मीयां गलशनों विच तेरे बुल॰

बुल बाग बहार गुलाला नाफरमानदे निरगा
में गुल खिल आय जीवे बरीयांकी जेंदे जम
जम जीवे माडा हमदम जीवे माडा हम दम
श्रोंदा जोंदा ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद ति
ताला ॥ तोडीयाद लगिवे माडा प्यारावें डूग
ने शेगरी किथेन लदीयां जेरा मीयाले बालावे

भै॰ रा॰

२५८

4

भैरवी रागिनी ताल तिताला ॥ महीवाला मोडी
खभरन लीतीवे। आप जादे वारीवें नामही
दे माडी खभर विसारदीतीवें ॥ भैरवी तिताला
तेज नजरा नजरी दीवे नैणा वाले करदा मी
घो। वसे वडर क्या खुवलगदा शोरी नामे।
खुदा ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ॥ सेगसे

ये हमारे बलाय बालम तोरें । ऊची ग्रटरीया

बेदन किवरीयां देखत जीय जवराय ॥ रागि

नी भैरवी ताल एकताला ॥ रावला मैंनु नवि

सारणा मे तेरी सौंवे । नपदी सवेंदी वारीवें

खटन गुजारीवें नु मैंनु नविसारणा ॥ राग

नी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ छैगीया मो

भै॰ रा॰
२५२

री मम गइ छीन । उमरी जीवन मोरे पीय॰
वर नाही एसी कर्मके हीन ॥ रागिनी भैर
वी ताल जलद तिताल ॥ सइयां न छुवो छु
तीयां वैरन भइरे । कहत निरंदर कि गर॰
वाला गावे लुटगइ डुलरी तिलरी ॥ रागि
नी भैरवी ताल तिताल ॥ कौन खेडा मैरी ।

जाननी बुतरे। छोटेछोटेनी चूला अधिक रसि
ले छवरस लियें नदान रागिनी भैरवी ताल
जलद तितारा॥ नैहरवा कस लजाय होरे मैं क
हा करू रामा। सोवतघी मैं कमदकी छइयां
सब सखीयन के साथ। बोलत सूने गावा हा
थ पसारे जात॥ रागिनी भैरवी ताल जलद

भै॰रा॰
२५३
6

निलाया ॥ परीपरी मनवरखा मझकुं भरभर
मधवा पीलावें। आपपीवे मझकुं पियावे दे
या मोही लुभावे ॥ रागिनी भैरवी ताल त्रिम॰
टा ॥ भैरे डुमरे कुं किया बिराबरें होरे बेदर
दी डुमनीया। आगेआगें डुमरा पिछे डुमनी
या बंगाल में बोनल पागाबरे ॥ रागिनी भैर

वी ताल तितारा॥ झुठी काया मायाका तू
क्या गुमान कर्ताहै। जोव काया मलमल
धोवें मोती नेरे मंगन होवे लोक कुटंब म
व ठाढेरोवे तन माटी में परताहै। मायापा
य भया अभिमानी इत वित चितवन तिवरी
तानी मंगन चाले कोडीकानी नोहक पच

भै॰ रा॰
२५४

पद मरता है। जोनकी साहसीं ई जन सोचा
जो साहब के रंग में राचा निर्भै होके जग में
नाचा सो भव सागर तरता है॥ रागिनी भैर
वी ताल तिताला॥ भैरवी प्रथंग जागें ब्रष॰
भवाहन डमरु म्दंग साज माधव रंग उमा
धव शंभु देवन के सिरताज॥ रागिनी भैर

वी ताल तिताला ॥ राम रस पिवत जन विरले
ऊठी भक्त म वाने कि नीबोलन बेंथ परे। सा
ची भक्त पपीहानेकी नीबोलन विन पकरे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि हरि हरि
उचरै ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ॥ फेर बे
सी वाजीरी सजनि वृंदाबन ड्रुम कुंजबनमें

भै. रा.
२५५

साची लाज गई सजनी। गुरुजन पुरजन सोव न छाडैं छाड दई लजनी। चांदनी रात छिट करहै तारे बहोत गई रजनी। सूरदास स्वामी तेरे दरस कुं चरन कमल भजनी॥ रागिनी भैरवी ताल तितारा॥ राम भजे तई बडा साह है नाह भजे तो है बडा चोर। तन मन धन क

छु थिर न रहेगा काहेकुं हू जीये एता कठोर।
नेई धनवंत नेई सुखवंता कृस्ननाम कहे सि
षा भोर। काम क्रोध लोभ मोहमें विषय वास
ना लागी डोर॥ सूरदास प्रभु सुमरन करले
नहीं तो जावोगे जमकी पोर॥ रागिनी भैर॰
वी ताल तिताला॥ रामकों जाने सोई धनधन

भै॰ रा॰ है। उत्तम चारौं वरन कहावत वाकौ जाने सो

२५६

उत्तम वरन है। उदै प्रसन्न कराव कहावे वा

कौ न जाने तो सब नीर थन है। ख्याल लगाय॰

भेष कर नानाभटकत फिरत मोहकी बन है

रागिनी भैरवी ताल तिताला॥ गावे ग्रुदर॰

मोहि सिखायो वाको जाने सो वारी कौं जन

है। अबहिं कछुउ न नितें बनही अबही कट

की कनी फोरतहो। अबही उरमोर उरोजन

हीं अबही कित अंग मरोरतहो। अबही कछु

मोहन भावनहीं हगतें हगजोरतहो। अधभा

न सता अवमान भरी अबहीं रसमें विछोर

तहो॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला।

भै॰रा॰
२५७

मारचले मेरे मरम कटारी। म्हड ममकाय बजाय बांसरी दिल्हीनावे बांके बिहारी। ई ध्रक लगाकर कित बलजोदा हम बिनको न करे दिलदारी। सांबली सूरत मनमोहनी मूरतरु परम गत नमन बलिहारी॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला॥ नहीं भूल

10

टी घ्यारियाद विहारी। घडी पल छुन मारी।
जिह नरमावे यार कौं नही ओदा मैहल ह
मारी। दिन नही चैंन रैंण नही निद्रा तलफ
तलफ मारी रैंण गुजारी। न्याजभरा ख्वाब
डावे खिलाजाह परमरा हसी दरस भिखा
री।। रागिनी भैरवी ताल जत।। मेरे माधव

भे·रा·
२५८

सौं परणाम उधो जाय कहो। काहेसौ चूक परीहै हमसे जो तजदीयो ब्रजधाम। सुनी· यत भई कुबजा पटरानी चलाय चामके धा म। येह बातें मोहन महरिकों अब बाहरी सें काम। जो बीतें तैसी सब कहियो जैसी महा वे राम। रूप रंग सम फेंगी वा दिन आय भेंटो

गी स्याम ॥ रागिनी भैरवी जत ताल ॥ तन दि

र नातुम् तना तन नाद्रद्द्द तु द्रद्द्द तनन त

नन । मिसाले आवले अणवायह का जिंदगा

नीहै जिसीके पांव पड़तेहै वीसी को गिरानी

है ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ कै

सी वंसी वाजी जमुना जुके तीरे । मुरली सुन

भै॰ रा॰
२५५

मन भई हौं बावरी सुधबुध गई है शरीर। मन॰
अंतही लगाय कही बोर आई। सिवकी गगरी
गं सालरे सरसक सम काल हेगार कहो बु
हरी कहा फार आई॥ रागिनी भैरवी ताल॰
तिताग॥ रैंवत आजबाल जशोयाकों। लल
न बिलोना ल्याई है लालपैं मचले फिरत औ

गन बैंदकौं । उठायलेत गिरि परत घरन ॥
परम रमन जाने ननकौं मनकौं । उठीहैरी
माय नेंदकीरानी राज करौं पालरकौं । नेंद
कैं वहीयो पकर देखरावत मैंनन मोंगतचे
र कलापैं नेंदकौं । कंचन थार वार भरल्या
ई पकरलेहो घरैं नेंदकौं । सूरदास बव ॥

भै·रा· देव गमन भए यह सावहोत ब्रजकी सावीन

२६०

सतकों ।। रागिनी भैरवी ताल जत ।। मोरे सई

योने पठई बुलायरे लोको सइयोंने पठई बुला

13

इ पठाय छुटा नर बाबुलदा आज ।। रागिनी

भैरवी ताल त्रिमटा ।। मिललोनी असिमधी

य महेलडीदे दे माडे गलबांह । बालपने में

खिलगमायो अब पीयर खिलदी चोहरे लोकों
कबीर लोचलो सबको उकहै मोहे अंदेषो।
और साहब मे परचै नहीं बैठोगे कैठोर ॥
रागिनी भैरवी ताल जत ॥ चिटीयो दर दफ
ाको वालीयो आसिगों मे बेज बचाईयो।बो
चन वाल्या सबी आवें वे मीया नेरीयो अंज।

भे॰ग॰
२६१

ओकौं भर आईयोकूं। दोषकी देवे प्रमाणवावे
मैंनु वहदनली कौं लाईयो। पया बिकूडा उन्हौ
दोस्तो नालों जदर जकम हारौं वाइयां। कारी
माच्चदे केटे मारी माडी भड़के जेरउके। ज्योंमें
वाल पवन गडडो शिरततीदे कडके। मामैंनु
लावनोंने दें दीवीर बोलें दे लडके। अन्नणावन

ण नदें दायो मङ्गयो जाणी जाणी मैंनु फड़के

ब्रुजि मतण लगे मोतण जाने ज्वललाई।

मैं जाणा मैंडादि बुरजोणे नसि विछिन आ

वो कोई। ज्वारीयांदे उपनाजण असो मि

र सिर वाजी लाई। कानु यार मिलें तेथी

वो देगी नहीं तो बोल सुमाई। पंच असाडे

भै. रा.
२६२

कोई पावन रावे असी लावें लोग हसाया
इश्कन गारत असि शिवदे पैर चलाया। म
धोवेंदी हथ्यों में हदी अंखियां कजल पाया
छके छबीले छैल पर वल्लभ रसिक कहा
या। राम फराककीनावीच बगला दरयाव
हूंदाया। हरवा इश्कचेंढो इन जग असाव

ल ग्रतण बहूण बजाया हू रबा। ढेडी ढेडी।
छाइयो ग्रंजनी घीयें स्हली बङ्ग्त सताया।
हूमहें मदी कैोन विचारे मइयें ग्रनु हाल व
न जाया हू रबा। खिलत वीवें पटीया ब्लें ग्रल
डे ग्रावन छेडजे ते दरद मिटावना नो रूट
डा साजन मेल। ग्रयत वीव उटङ्गा घरमतङ्गू

भै॰ रा॰
२६४

16

वे मैडा हाथ। वढे इस्कदे कैफ है उनतर शिरदे
हाथ। ईस्क खिन मेनाटवैं आवै वैठ उसास।
वस्म वोटमे शिर उडे पडे वाले खाबास। वल
नाहै रह नाही वलना विसवा वास। इहमद
सहे जहग पें कौन गेयावे सीस। तनकी त
नक सराय में किन झून पायोवे। सासनया

रागकुंच बाजत है दिन रैन। को रूप छबिदेख
के बिन न रहा एक ठौर। अहमद अपने मीत
की चह बिन बन कछु ओर॥ रागिनी भैरवी
ताल छपका॥ देखि उधो बजी कही बीन।
कान्हकुं ढुंढन निकसी राधिका सब साखी
यन मे रंग लीन॥ रागिनी भैरवी ताल छपका

भै॰ रा॰ नजानू रसिया कैसे होकेला गारी मैंना जानू ।
२६५
गोरा पारवती के आगें सुहाग मांगन गई श्रो
वो वाचेदन होकेला गारी मैंना जानू ॥ रागि॰
नी भैरवी ताल छपका ॥ मालू वाली हे अ
चरा में झालरी । जेहर तेहर अनुवट बीछुवा
उर मोतीनकी झालरी ॥ रागिनी भैरवी ताल

जलद तितारा ।। कान्ह बेसी बजाय मनले ग

योरी । श्रवण सनत मोरी सुधबुध बिसरी वि

न वनमें कछु दे गयोरी ।। रागिनी भैरवी ताल

जलद तितारी ।। देखो मोरी गुइयां मरके ला

खो गारी दीनी रे । अंगुरी पकर मोरा पौंचा प

कर लीनो बहींयां पकर रस लीनों रे ।। रागिनी

भै॰रा॰ भैरवी एकताल॥ अगीवेवि मइयो हीर रा केदा

२६६

कीमाण। लटक चाल चलैं देमडके यही मह

बुवे दीआण॥ रागिणी भैरवी ताल जत॥

मइयोरे मतबरवा मइकुं वारवार रजो। आप

पीवे ऊैर मइकुं पिलावे मानैं नहीं अरजो॥

रागिनी भैरवी ताल जत॥ अेबुवा परहु मर

18

डारीरे। सब रस पिया बनबन मिल बनबन।
प्राण मारीदेत मोहे प्यारीरे॥ रागिनी भैरवी।
ताल जत॥ सांवरे हो सइयां तुम सनला राल
मो राजियरा। तुम बिन मइकु सहावे टीढ।
ले गारवा मीत पीयरवा। निसदिन चरी पल।
छिन प्रान बसो मो रहीयरा॥ रागिनी भैरवी

भै॰ रा॰
२५८

ताल जत॥ तुम आवो मोरे सइयां लागी ऊं तोरे पइयां। भवन भवन के मीत पीयरवा छीछले गरवा अतही चतरवा सरजनवा प ग मैयां॥ रागिनी भैरवी ताल जत॥ सांवरे ने सरत। बिसारी मोरी रे। बिन देखे मोहे कलन पर त है आन मिलो गिरिधारी रे॥ रागिनी भैर

वी नाल जत ।। त्रे मेरा वे सोह मरजन यार ।
तुज विना मैंनू कल न पड़ेंदी विन दीठे माज
मवेरा ।। रागिनी भैरवी नाल तिनाल ।। प्यारा
वे करलाई इसकथरा नादे विछदा नीया । इ
कदि विती वारी वे हामल भरना मैडा सोना
जो भो मीत्यों माणीये ।। रागिनी भैरवी नाल

भै॰ रा॰

२६८

जत॥ जाउमर मीयो करदा फिरदानी मैंडा मइयो

मोहनी सुरतवे रसभरीअंखीयो माउडा दिल

फेट गइयो॥ रागिनी भैरवी ताल जत॥ सांव

रे तोरे सुंगे मोरे नैंन लजानी। मोहनी सुरत

देखले भानी लोक कहे दिवानी॥ रागिनी

भैरवी ताल जत॥ नैंनके नींदे कउ जागो मो

रेवा लम। मगरी रयन मोहे तलफत बीती मो
र भए गरलागे।। रागिनी भैरवी ताल जत।
कोयल बोले प्राद एक बगीयामें। उस बगी।
यामें एक फुललगेहै जो सइयो तोरी परीया
नै।। रागिनी भैरवी ताल जत।। सांवलदा मुघ
डा मैं नभोदानी भोदावै। माडीवल ओदानी।

भै॰रा॰ जोदावै। जानकीदास मोहनी म्हूरत नजर प
२६५
डी जबसें। वह म्हूरत गाल लगानेंनु जीयदानी
चाहदावे॥ रागिनी भैरवी ताल जत॥ मानले
मोरी अरजी गुमानीडामें नेंडे वारी राई सोब॰
लडा। दिलदा महरम कोई नही मिलया जो
मि लि सो गरजी गुमानीडामें नेंडें वारी॥

रागिनी भैरवी नाल जत ॥ रैन किथे गुजार रआ

ईयां मेरी यावे । तुज बिना मैं हवे वेकल रहंदी

वे बीबा तेंडे चेरंदी मैं चेरी यांवे ॥ रागिनी भैर

वी नाल जत ॥ रात प्यारे सो न बोली पछुता

नीवे । मइयां मोरां मैं मइयां की सजनी मइयों

के रंग मैं मानीवे ॥ रागिनी भैरवी नाल जत

भै॰ रा॰ कजरवा मैंन देऊ सइयां हो दगाबाज। गौरी के ओ

२७०

खन कजरा सोहे सांवरी के गाल पर पान॥ रा

गिनी भैरवी ताल जत॥ तूं झापी नाही मिल।

हावे भूल गइयां सथमैंडी नैन सोणा। तजजे

हा मैंनू औरन दिसदा तूं तो महरम दिलदारे

वे सोणा॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तितारा।

२२

कहांदी उनी कहोंदा दिवाणा विठेन करदा सा
घें जोर थिगाणा । धाकर गंज बारीवे लांवे
दा दाना पीरां देवे सात नैन पिरावे ॥ रागिनी
भैरवी ताल जलद तितारा ॥ रब फकीरां दी
पही गुजरानवे । भली बुरी सिर उपर सह-
दे शोरी गरीबां दी नभी मानले ॥ रागिनी भै

भै॰ रा॰ रवी ताल तिताला॥ कासे कहूं मैं दिलदी खबरजी

२७१

वे मरजी जासे दिल मानेवे। दिलदा महरम को

ई नहीं मिलिया जो मिलिया सो गरजी॥ रागि

नी भैरवी ताल तिताला॥ रांझे वेदी हों रहीयो

वे रांझे नैंडी गला मोडा मतुडा चाहे। भूल रा

या मैंडी सय बुय मारी टुक टुक कहेदा घोरी

२३

मीयां ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ॥ ऐसोरी।
कजरवा मोपै दियो डून जाय। इस कजरे से मो
री अंख लजायमा। नैन बैन सब मोही देगयो।
कजरा मोरा नैना लजायमा ॥ रागिनी भैरवी।
ताल विमटा ॥ सब हम्मा नदैहों बिना फूलनी
की नाफूलनी रे बिना फूलनी। बडे बडे मोती

भै॰ रा॰ गुंथावेला फुलनी वारी मारे नजर झाला ॥ रागि
२७२
नी भैरवी ताल जत ॥ अब कैसें लाज रही दई मो
री स्याम सुंदर मोरी बहियां गहेरी । बरबस आय
झटक लई चुनर मोती नल टूट गई अब ॥ रा
गिनी भैरव ताल जत ॥ सुनपरी वारी केकी॰
मैं बात मइ है मन मोहन बिन पल न रहु है । सास
२५

बुरी मनद हटीली सइयां के विरह जरे। मेरे तो
जीय में ऐसी वसत है जमुना में कूद परे॥ रा
गिनी भैरवी ताल जत॥ रांझा मैंनु गाली देन्दा
नीवे ननीदा सिखलाया। काट कलेजा वारी
वे हाजर कीता वे आखिर सन पराया॥ रागिनी
भैरवी ताल जलद तिताला॥ मोरी छोटी नन

भै॰रा॰ दियावे रन भइरे। काहेकुवार करतहो रंगीले
२७२
हमरे तो जिय कपट नाहीरे॥ रागिनी भैरवी
ताल जलद तिताला॥ भवानी तोरे मंदिर पान
चढैहूं। जो भवानी मोरे मनसा पूजे सोने के
कुत्र चढैहूं॥ रागिनी भैरवी ताल जलद ति
ताला॥ रात सइयासें नबोली पछुता नीरे। स

25

गारी दयन मोहे नलफत बीती भोरभए अलसा

नीरे ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥

मइयां मोरी डोली या लेआवोरे । चार कहार

मिल डोलिया लेआए मैं तो चली पीयाकेपास

रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ देखोज

मना में बाज रही बांसरी मैं तो पनिया भरन।

भै. रा.
२७४

कैसें जावो मोरी ननदी। बांसरी बजावत जिय॰

राल लजावत निकसत नांही जिय मांसरी ॥

रागिनी भैरवी जलद तिताला ॥ गोकुलमें कि

घरही है कन्हैया मइके गारिदीनी। बाबुल॰

किसें बिलकिसें भइयो किकसम नवैहो

रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ नमतन

२८

दिवना नदर दानी यलली यला यललले । दीम

दीम नना ननना नन नादेयिलिलि लिलाना ।

दिया दिया । थौं किटया गड़े नयि किंट कथो ।

थो यिलोगया ॥ गातिनी भैरवी नाल लिनारा

दीम ननुम नन दिवना दानीनाद्धदने द्धदने ।

नदार नद्धदानी । धतिली धतिली लाना नन

भै॰रा॰ २७५

म तादेर नादेर नातददानी ॥ रागिनी भैरवी ता॰

ल जत एक ॥ कदडे जोगीया हणा तेंडीवें रांक

णा यार । दर दरा मारुडा कोंं नही आयावे रांक

णा जोगी होंदा । कानन कुंडल गलविच मेंली

हीर हीर कहें रोंदा । चलो मइये आसि वेखणा ।

जइये रांझा हुली चढदा । हुली चढदा विल

२७

खिल हुसदा मैंनें लालन डुवदा चलो मइयो ब्र
सि वेखण चलीये रांझण देनी हटी उथ विको
दा दही विकोंदा सा सामन मानी खटी। चलो म
इयें ब्रमी वेखणा जाइये रांझणादे चौंवरें। ही
रनी माणी इटे ढोंदी रांझण ढोंदे गारे। चलो
मइयो ब्रमी वेखण जाइये रांझण देनी चेरें।

भै. रा.
२७६

इथे बैठके उमर गुजर गई रांझणा कीनांनी पेरें ॥ रागिनी भैरवी ताल जत ॥ छडदे जादीयो यारतें जेवे रंझेरा दरद दीदा । हे रांझा मैं हीयो श्राईयो यार नश्रायावेंखा मश्या प्यारा किन बिलमायो । मान दिलोदे अंदर कुछ नहीभा या किकरा माडे मजणावे नेंडे नाल राजीहूर

२४

या। रांफेदे सोहागादी असिवी रंग रलीयां। दम
सजणा नाल जिंद लगीयां मेंडी रोंदी जेद भलि
या। रागिनी भैरवी नाल तिनारा॥ नेदानी।
तेरा वालानीवे ऊंडी गलां मोसा करेतो भी मै
चुप कर हो रहियां। मनदी जमादा फिर याद
करी तकसीर मनों अपने मतांकि। होदिय वे

भै॰रा॰ बन जात वृंदावन वाट पकर हमारि झटकी।

२८८

लाज कि बात कहां लौं कहूं सखीयो समकाय

सवे सटकी। दधि मांखन षाय लूटाय दीयो।

चित चोहटमैं मटकी फटकि॥ रागिनी भैर

वी ताल तिताला॥ नम स्वारिन नार स्वारब

डिको उजान नना नमरे टरकी दसवी ससिलो

21

बनकौं जो चलो तुमके लकरो अपने हटकि
केल करो रमझेजन मैं दया मोसों कहैं भट।
किपटकी ॥ बेसरी जो बजी नंद नंदनकी म
नके उनजोर हीये घटकी। कुलकानत जी
वनकौं जो भजि हरि रिमता नांहि फिरौ भट
की। मोभान भेट भई सजनी सुधि भूलि गई।

भै॰रा॰
२७८

अपने नटकि। काविदेवि न यार सिया नटकी
चित्र वो हट में मटकी पटकी॥ रागिनी भैरवी
ताल धीमा तिताला॥ आवन हो रसके वसके न
म जोनन हो रसहोत कहा है। नेक रहो माथि भी
जन घो दिना दशाके अलबेल बेलेलला हो। त
न के मन वेरी दिन आवन ग्वालन के नम सेरा॰

30

सखाहौं। लैहौ कहा इन बातनमैं उरजायो ल

ला अबहिलरकारो। आईहो आजनई ब्रजमें।

कछुनेन नचायकेरारमचाहो॥ चाहतहो हम

सों छलके दधि बेंचन जाबो सोजानन पैहो

लैहौ चुकाय रुबे रस खानबे पाछेमनमे।

पछतैहौ। जो तुमहो जवडे घरकी अट लागी

भै॰रा॰
२७५

कहाहो जगा तिन देहो॥ रागिनी भैरवी ताल ज
लद तिताला॥ कहा करे मोरा गुइयां बलमल
रकै यां निकस गयों। अपने सइयां को मैं ढुंढ
न निकसी फूलपरे वहीं टईयां। बारे बालम॰
सइयां चीठी नभेजी रोवत हमरी बलैयां॥रा
गिनी भैरवी ताल जलद तिताला॥ मोवत नी

दीया जगाई अटरीया पीया बोलो नारे। आणत्र

बानक बोहरगाहीरी टरी हुन कुडी हे कटरीयो

जो पीया मोसें बोले नही मोरिहो रसकि कटरि

या ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तिताग ॥

न जानूं रि कहो भल आइ बिछुवा। हो जम

ना जल भरणजात रहिरातकि जागि भलाय

भै॰रा॰ आई बिछुया ॥ रागिनी भैरवी नाल थीमा तिता
२८०
रा ॥ सोबेरेकें मेरा जीय चोदा और नहि मेरे म
नमें भादा । लोक लाज कुल कान्ह तजि सव प
ही रुप मोहिचोदा । हतियों में अपने मेदर में
सजनी आयकर बंसी बजादा । चोंक पडि में
उपक करदे तेनें मन रुपलो भादा । रसिक

३२

रंग श्रेंग मेरा रंग राति बारबार मेरे प्रादा ।। रागि

नी भैरवी ताल जलद तिलरा ।। गुल लालें मे

राधा प्यारीरे जाहि जाहि में कान्हैया विराजे । चं

पे में चक्रभुज गुल मखमें बिहारि मेरे दमनेमें

गिरि वर धारिरे । गैंदामें गरुडध्वज चमेली

चक्र मेरे वेलामे बंसीधरवारिरे । चंक वरम-

भै॰रा॰
२८१

कहे बैजैनीमें बांकेबिहारी मेरे कवलमे कम॰
ली यारिरे ॥ रागिनी भैरवी तल जलद तिता
रा ॥ सपनेमें गरवाला गरहीमें बांकबरसक
हे मव लूटत रहि चोंक उठी अबसोंच रहि
रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ बिर॰
हियासैंन चलावेनैं णाल गावे कोई जिय

३७

लाचावे। वांकव रमकाहै वंसीया वजावे हेसि

हेसि गरवाल गावेते॥ रागिनी भैरवी जाल

द तिताल॥ जवतें भइमैंतो पीयाकि सोहाग

ण तवते चहे जीयगमने चलनके। कर सिं

गार मंदिर विजवैठी झामा लगी मोरे पीय

के वगाके। अव जीयचाहे गवने चलनके

भै. रा.
२८२

षोवी रहो दिन गरवाल गराके ॥ रागिनी भैर
वी ताल धीमा तिताला ॥ उमड घोरी घनकारी
बदरिया कैसि करुं घरमाहि पीयार । बोकबर
म कहे मोहेनी मूरत बिन देखे नाहि चैन जिया
रे ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ गोरी
बारारी जोबन बाढि पायलेरी । बोक बरमक

३4

है तेरोरी जोबन ऐसौं पीयकौं जिय ललचा॰

यरही ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला॰

मइयां ल्यावोरी जोबन वाकी मातिरे । वांक

बरस कहे आजहून आए पिया कैसे कटे दि

न रातिरे ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तिता

ला ॥ तेरीवेसीमयुर स्वर बाज रहियुन गाज ।

रही। वंसी वट कट निकट जमुना तट सम्म सुर
तीन ग्राम छुई॥ रागिनी भैरवी ताल जलद ति
तारा॥ सुघरा संभालरी सालवाली नें गोरिके
सब षपर सुघरा मोहे नें ना लगे मोहे प्यारनी
रागिनी भैरवी ताल जलद तितारा॥ रब्बा सा
डे भाग जागे प्यारा घर आया नि। मनमोहन

मोंहन मुड़बोलन अणीयो विच समायानी । रा

गिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ किनवेपर

वाहिवो मेरि जोन भलावे नैणावाले । दुखादे

नैन निजारेन्हू नरमदे शोरिमियां मावडावेष

ला जारह दियो वेकरार ॥ रागिनी भैरवी ता

ल जल जलद तिताला ॥ पावनजरानिशाके ।

भै॰रा॰
२८४

वलोकोया जावे प्राण चेवलो होयचके नो हो
वे निशि अवसान ॥ कमलो उदित होइये र
जनी प्रकाशे होईये और मो सिजावे नित्यान
रागनी भैरवी ताल जलद तिताल ॥ मोरि
कैसे कटे दिन रतीयां मइयांनि नन मईक्रं।
कलन परत। वेगले जावे कोउ मेरी पतियां

केवल तोरें बिलनहि आनी ।। रागिनी भैरवी

ताल जलद तिताना ।। कहा करुं कित जावो

मोरि दैया बारा करे जवानिक सोई जावो हि

त करके मैं सुख नहि पायो कोंन जतिते पि

त मोकिनि केवल मेरा डुखका दैवैया मोपैं

तो कछु बन नहि आवे ।। रागिनी भैरवी ता

भै.रा. ल जलद तिताला॥ निंद गई ली पिया बिन मोरे
२८५
सजनी कल सेवे कल भई सारि राति। चौंक

चौंक परे ख्वाब ख्याल में नागर मोहे आन ज

गाई कल से.। रागिनी भैरवी ताल जलद ति
३१
ताला॥ वेकल रहि तोरे बिन सारि राती बिर

हा गाई मोहे निंद कि माति। तमतो चंचल.

रागिनी भैरवी ताल ३ । अब श्रौर गजल कहिते

है ॥ ईकहि मिह वाको छोड मियां मनदेस [illegible]

[illegible] विदेस फिरे मारा । कजाक अजलका लुटे है दि

न राते बजाकरन कारा । क्या भैसा बधिया चैल

शुतर क्या गाने पला सिर भारा । क्या गेहूं चांवल

मोठ मटर क्या आग धुओं क्या प्रेमारा । सब ठाट प

रा॰भै॰ डा रहू जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥ २ ॥

रागिनी भैरवी ताल ३ । शेर गजल । गर है तु
लकखी बनजारा और खेप भी तेरी भारी है । अय
गाफिल तुझसे भी चढता एक और बडा ब्योपारी
है । क्या शक्कर मिसरी कंद गिरी क्या सांभर मी
ठा खारी है । क्या दाख मनका सोंठ मिरच क्या के

मर लौंग खपारी है ।२। रागनी भैरवी ना- ।
शेरगजल । नुक्षियाला देवैं लभावेजो पूरब
पछम जावेगा । या खूद बफा कर लावेगा याबा
टा बाफा पावेगा । बट मार ग्रजल्का रत्नेमैं जब
माला मार गिरावेगा । धन दौलत नानी नोता
का एक भवना पासन जावेगा ।३। रागिनी भै

रा॰ औ॰ रवी ताल । शेरगजल । हर मंजिल में अब सा
थ तेरे यह जितना डेरा डांडा है । जरदाम दिरम का
भांडा है बंदूक सिपर और कांडा है । जब नायक
तन का निकल गया जो मुल्कों मुल्कों हांडा है
फिर डांडा है न भेंडा है ने हलवा है ने मांडा है । ४ ।
रागिनी भैरवी ताल । गजल ॥ जब चलते

चलने रस्तेमें यह गौंन तेरी ढल जावेगी । एक
बधीया तेरी महीपर फिर चरने आसन आवेगी ।
यह खेप जो तने लादीहै सबहि मसोंमें बट जावे
गी । ये पुत्र जबाई बेटा क्या बनजारा न पास न
आवेगी ।५। रागिनी भैरवी ताल । शेरग
जल ॥ क्यौं नाहक बोझ उठाताहै इन गौंनों भा

रा॰भै॰ री भारीके । जबकाल लुटेरा आन पड़ा फिर हूनहै

थौगारीके । क्या साज जड़ाऊ जरजेवर क्या गोटे

थान कीनारीके । क्या घोड़े जीन सुनहरी के क्या

हाथी लाल अंबारीके । ८ । रागिनी भैरवी ताल

शेरगजल । जो वेष भरे ले जाना है यह

वेष मियां मन जान अपनी । अब कोई घड़ी प

ल सायनमें यह खेप बदनकीहै खपनी । क्या
थाल कटोरा चांदीका क्या पीतलकां फकनां फ
कनी । क्या बरतन सोने रूपेके क्या मटीकी
हडिया खपनी ।८। रागिनी भैरवी ताल ।
शेरराजल । मगरूर न हो तलवारों पर मत भू
ल भरोसे ढालोंके । सब पना तोडके भागेंगे

गा॰ भै॰ यह देव जलके भालोंके। क्या डिबे हीरे मोतीके
क्या ढेर खंजाने मालोके। क्या तुक चैना शाम शा
ज्यर क्या नावने थाल डुपालोके ८ रागिनी
भैरवी ताल शेरगजल ॥ कुछ काम
न आवेगा तेरे यह लाल जमर्रद सीमोजर। स
व पूंजी बाटमें बिखरेंगी जब आन बनेगी जोऊ

पर। क्या मसनंद नकिए मलकमकों क्या बौ

की ऊरसी नावेन कूतर। क्या माल खजाना म

लक मकों दौलत हशामत फौज लशकर। ५।

रागिनी भैरवी ताल शेरगजल ॥ यह धू

म यडका साथ लिये कौ फिरता है जंगल जंगा

ल। एक भभमरा पामन आवेगा मोकूफ ऊस्रा

ग॰भै॰ जब अन्न और जल । घर बार अटारी चौपाये का

खासा नैन साबे का मलमल । का बिलबनत

कीये रेशम के का लाल पलंग का रंग महल ।

१०। रागिनी भैरवी ताल । शेर गजल । कैसे

गुवन मकां वनवना है है खेमे तेरे नैनका पोला॰

ने ऊंची गाढी उठाता है यहां गो हमगाफ़ेने मह

खोला । क्या देनी खिदकरैद वन्दो का कोट कोश
रा श्रम मोला । क्या तुजे दैं न्हला नोपकिला का
श्री शादाहदी रगोला । ११ रागिनी भैरवी ना
ल शेरगजल । श्रब काल फिताकर बाव
कको यहरू बैल वदन काहांकेगा । कोई नाज म
मेंटेगा नेरा कोई गौन सिये श्रौर टांकेगा ।। हो

रा.भै. फेर अकेला जंगलमे नवाक कलहदकी फाके

गा। उस जंगलमे जब आहून जीर एक भुनगा आ

नन झंकेगा।१२ रागिनी भैरवी ताल शेर

गजल। यह पेंठ अजाईबहै दुनियांकी और का

का जिनस इकठी है। इहामालकी सोका मोठा

है और चीज किसिकी खेही है। ऊब्ब पकता है

ऊक्क बनताहै पकवान मिठाई पहीहै । जबदेषा
खबतो आखिरको नेलहा भाउन महीहै । गल
शोर बहला आग हवा औरकी चउ पानी महीहै ।
हम देख ञके ईस डुनियांको सबथोखेकीयसी
हीहै । कोइ नाजखेदी देहै सहेसकर कोइ नाखेन
ा डाबन षानाहै । कोई कपडे रंगे पहरगोहै कोई

रा॰भे

गढ़की ओर के जाताहै। कोई भाई बाप चाचा मामाको ई माती पूत कहताहै। जब देखा छूवतो आखिर कोम रिस्ताहैने नानाहै। गलषोर। कोई मेठ म हाजन लाखेपती जबजाजकोई पमसारीहै। य हां बाजा किसीका हलकाहै और खेप किसीकी भारीहै। क्या जाने कौन बेरी दैहै और किसने जि

नम उतारीहै । जब देखा हुवतो आखिर को दल्ला

ल नकोई व्योपारीहै ॥ १२ रागिनी भैरवी ता-

ले गजल । कोई फलके बैठे ममनंदपर कोई

रोवे अपनी दौलतको । कोई बोले अपना मुझसे

लो और मेराहै सो मुझकोदो । कोई लडताहै को

ई मरताहै झगडे हक और नाहकको । जबदेख

ग॰भै॰ ख़ुबतो आखिर को कछु लेना एक न देना दो १५

रागिनी भैरवी ताल शैरगजल ॥ दम्मा

ल नज़मी आ गिल है और फाजिल मुहल्ला स्याना

है। कोई आमिल कामिल दाना कोई मस्त सि

डा दीवाना है। नाबीज फतीला फाल फहूं

और जाडु मेनर लाना है। जब देखा ख़ुबतो आ

खिरको मवशीला मकर बखानाहै ४६ रागिनी
भैरवी ताल । शेरगजल । कोई लोटेहू
वे गलियोंमे तेयार किसीका खेराहै । तिनक
जीये उगाड़े रहेहै यह मेराहे यह तेराहै । जबदे
खो देखतो आखिरकोन मेराहै न तेराहै ४७ ॥
रागिनी भैरवी ताल शेरगजल । कोई टोपी

रा॰ भै॰ टोप बनामा है कोई बाघा फिरा अम्मामा है । कोई
साफ बरहना फिरता है ने पगाडी न पाजामा है ।
कम खोष राजी और गाफैका निनक जीया है हे
गामा है । जब देखा छबना आखिरकोने पगाडी
हे नजामा है ५८ रागिनी भैरवी ताल और
राजल । कोई बाल बफाप फिरता है कोई शिर

को छोटे मेड जाता है । जब देखा हिवनो आखिर
को सब छोड़ अकेला जाता है । २९ । रागिनी
भैरवी ताल शेर गजल । कोई रोता है को
ई हसता है कोई नाचे है कोई गाता है । कोई छी
ने झपटे ले भागे कोई शोम का डर दिखलाता है ।
कोई माल इकट्ठा करता है कोई झेजी जलफल

गा·भै·

गानाहै । जबदेखा हैवतो आखिर सबजगाउर
ला जानाहै ५· रागिनी भैरवी ताल ॥३॥ शेरगजल
कोई बेचे भंग सराब अफयूम कहीं हथ दही की
फेरीहै । कोई पल्ला सिर पर लानाहै कोई लादे
वै लसुकेरीहै । कोई झगड़े अपनी जागाह पर
यह मेरीहै यह तेरीहै । जबदेखा हैवतो आखिर

कौन तेरी है न मेरी है न तेरी है । ५१। गागिनी भैर

वी ताल शेरगजल । कही बलीटेकी घू

नी है कही खासी कउवकी घली है । कही चल

नी ब्राज पिरारी है कहिं त्रुल हावकी त्रुली है ।

तरकारी बैंगन मागरा ग़ड गाडा गाजर मूली

है । जबदेखा खबनो आखिर को सब विकरी दे

रा॰भै॰ खन झलीहै २२ रागिनी भैरवी ताल शेरराज

ल। कंही बात ग्रेटेरन टाट पराजी कंही दमरख

चमरख नकलाहै। कंही रोक रुपयेका खरदा

कंही कौडी पैसा येलाहै। कही कुटना खाज पि

टारीहै कही विकना खोट खेटोलाहै। जबदेखा

खूबतो आखिर कोने पीछी खोट नवरावाहै २३

रागिनी भैरवी ताल शेरराजल ॥ कोई शि

करा बाज उडाताहै कोई हाथमै रावके तनली

है । शरबाज कोइले वैठाहै और दौड किसीने उ

लनीहै । हैताव किसीके हाथोमें और नावनी

फिरन धनलीहै । जब देखा ल्हेवनो आखिरको

नेरेशाम मतन मतलीहै । २७ रागिनी भैरवी

गा॰भे॰ नाला ॥ ३ ॥ औरगजल । अबकिसका रंग उरा कहि
ये और किसका रूप भला कहिये । एकदमकी पैठ
लगी है यह अम्बोहम जावरचा कहिये । येऐसे रन
मा शंदे नारे जीर अबजा कहिये रेजा कहिये । क
कुवान नहीं वन आनेकी उप चाप भला है क्या क
हिये । गुलशोर बहुला आग हुवा औरकी वड्पा

नी महीं है। हम देख चुके उस उनिआंको सब थोरे

कीस टहीं है। ३५। रागिनी भैरवी ताल धीर

गजल। वटमार अजलका आपड़ेंवा टुक उस्को दे

ख उरोबाबा। अबशकब हाथो आवोंसे और आहे

भर्ई भरोबाबा। दिल हाय उदाकरजीने सेवबस

मन मारमरोबाबा। जब बापकी खोतिर रोनेथे

ग॰ भै अब अपनी खोनिर सोबावा । नन महावा ऊवडी
पीठऊई सोडेपर जीन धरोबावा २६ रागिनी भै
रवी नाल   शेरराजल । जव जीनेको नमक
खे मनदो श्रोरनेको महमानकरो । वैरागनकरो
रहमानकरो यापत्रकरो यादानकरो । ऊछल
नफ नहीं अबजीनेमें अब चलनेका मामानकरो

२७ रागिनी भैरवी ताल   शैरराजल । दिल

काटो अपना जीने से अब और गले को मन काटो

अब चाट फुनाकी इक चबखो और रहन किसी

का मन चाटो । अन छोडो हिस्से वावरेकी और

भाजी अपनी तमबोटो । नाकंद वछेरे कदत्तके

अब और उलनी मन छांटो २८ रागिनी भैरवी

रा० भै० ताल शेरगजल ॥ यह अब वजन कृदा उ
कला अब कोउ मारो जेर करो जेरकरो । अबमा
ल इकठा करनेथे अबननका अपने फेरकरो ।
गढ टूटा लशकर भागा तुका अबजानमैं हम
शें शेर करो । हम साफ लडाई हारतुके अब
भागनेमैं मत देरकरो । २९ । रागनी भैरवी

ताल शेरराजल । सिर कोपा चोटी वालऊ

प मरह पीला पलकैं ग्रानकुकी । कद देफा का

नऊप वऊरे ग्रौर ग्रांखें भीचु पलाय गई । ख्वाब

नींद गई ग्रौर भूख चटी दिल खलऊग्रा ग्रावा

जनहीं । जोहोंनीथी सोही गुजरी ग्रब चलनेमें

कछु देर नहीं । ३० । रागिनी भैरवी ताल ।

रा॰ भै

शेरगजल। इस पांव घिसटकर चलने से मत रस्ते
को हैरान करो। और पोपले मूंह से रोटी को मत
मल मल कर हलकान करो। अब आप डूब न
म पानी से मत पानी का नुकसान करो। कुछ
लाभ नहीं इस जीने में अब मरने से परहेज न करो
३। रागिनी भैरवी ताल शेरगजल समाप्त

अथ ततेताध्यायारंभः॥ जो जो तंत मय साज हैं अ
र्थात तार संयुक्त साज हैं उसको तत कहिते हैं सो
अनेक प्रकारके साज हैं उन में महती बीणा प्रधा
न एवं कालीन साजहै उसका वर्णन किया जाता
है सो बीणा दो प्रकारकी है प्रथम गात्रबीणा दूस
री दारवी बीणा जो गात्र बीणा है उसका वृत्तान्त
स्वराध्याय में कह दीया है कुछ दृष्टांत वास्ते कहि
ते हैं इस महती बीणा कों सब शास्त्रकार मनुष्य

के देह के सम समझते हैं जैसें देह में एक मेरुदंड।
होताहै जिसको पृष्ठवंश कहिते हैं तिसके स्थान वो
सका अथवा काष्ट निर्मित बीणाका दंड होता है।

अथातस्तन्त्राध्यायः प्रारभ्यते ॥ ततंवीणादिकंवाद्यंस्यादित्यमरः। दारवीगात्रवीणाच।
द्वेवीणेगानजातिषु गात्रवीणास्वराध्यायेप्रपंचिता। दार्वीबीणाःप्रोच्यंतेधुना।
तास्वाद्यामहतीवीणा तल्लक्षणम्। कोहलीये॰ दंडंवंशमयंकांतं वर्तुलंतम्ब॰
पुग्मकम् नवमाष्टस्वरस्थानेचात्रयत्नेनकारयेत् तस्मिन्दंडेसमसंख्यामोटनीसन्नि
वेशयेत् ॥

मनुष्य के पृष्ठवंश के जोड़ जो हैं उनके स्थान इक्की
स सारी बीणा में हैं जैसें देह में नाभी अर मस्तक।
येह दोनों स्वरोत्पत्तिः स्वरांत स्थान है इसी तरेंह।

इसके दो तूंबे हैं परंतु देहमें बीणाकी गति विपरीत
है बीणाकी सारों पर हेठ हाथ आवने में स्वरों की
ऊर्द्ध गती होती है अर्थात्। स रे ग म प ध नि ॥

दक्षिणे विन्यसेदन्यतन्तुद्वन्द्वं चोर्द्ध्वं क्रमात् स्वल्पवज्रमयीकार्य्या मोदिनी दंडरंजिता।
नंत्रवाग्रामयेत्सर्वा मोटनीचशनैः शनैः अस्यात्वष्टादशश्लोकासारिकापर्वसूरिभिः।

येह बीणाका दंड अति सुंदर नव मुष्टि पर मित गोल
चाहिये और इसकी येह सामान्य विधि ब्रह्मर्षि नारद।
निर्मित है इसको महती बीणा बोलते हैं इस बीणा

तं॰ ना॰
ध्या॰
२३

23

कों परंपरा में तीन लोहेकी अर चार पितलकी तार स
भ सात होतीहैं येही वाद्य भारत खंडके सभ तत वाद्यों
में प्रधान क्या अधिक तर जानते हैं क्युंकि इसके बजा

एतास्तन्तारवादिन्यालिष्टेतिपादिकोपरि मदनसचसिक्थसंयोगेन सुदृढीकृताः॥
महत्यानामवीणायाएतल्लक्षणमच्यते इति कोहलीयेवीणालक्षणम् ॥

ने वाले कोई कोई बिरले हैं इसका बजाना भी कठिन
है इस वाद्यके अग्र भाग में होनेकी और साजकी सम
धं नहीहै और सभ साज इस सें निकृष्ट हैं अब श्लोक

तिताग। ३। किस नूं कही रे मेंडी जाई दिलोंदी
गला। सीने दे अंदर झुके उठदी विरह मता
वे मैनू आई दिला। रात देहाडे कल नहीं पड
दी उस नूं वे विणदी चाई। वल्लभ पियकी प्रा
न पियारी वेगि मिलोरी मैनू धाई॥ रागिनी
भैरवी ताल तिताग।३। बहुत रहीरे पछिता

भै॰ गा॰ ई सजन बिन। मैंडा दिलबर हसिरहा है कोई

ल्यावेनी समझाई। कहोरे दसा सब मोडे तन

दी वरव रात दिन जाई। वल्लभ पियपर रीझ

रही हों उस बिन कुछ न सुहाई॥ रागिनी भै

रवी ताल तिताला। सुनदावी नांही फिरिया

द प्यारा मेरा। बिरहदी मारी मैं बनबन कू।

को वल्लभ करदा नाही याद ॥ रागिनी भैरवी
ताल विमटा ॥ प्यारी ना जानु जाइमा कारी
किया तन मन रस बस कर ज्यों लिया । नैन·
बान दिये उर मांही मने घायल वे मार किया.
रैन दिना तलफत जिये मेरा बिन देखे कल
नांही हिया । वल्लभ पिय पर किरपा कीजे द

भै. रा. रस दिखावे सुख पावे जिया ॥ रागिनी भैरवी। ताल विमटा ॥ प्यारी जान सफरी ज्यों तलफ हिया। प्यारी मिले सुख पावे जिया। महा क ठिन बीती निशा सगरी सुमरन करत बिहान किया ॥ रागिनी भैरवी ताल विमटा ॥ नहीं ज्ञान नहीं ध्यान एक तन मन धन सब ही

25

प्यारी तोहे दिया। प्यारी जियकी प्यारी बहु
भते समान नहीं कोई तिया॥ रागिनी भैर
वीराग ताल सुलफाक॥ तन तन तन तन
दिरना तदानी दोम्त। नादृड़ दानी तेदृड़।
यितला तेदृड़ दानी। मन रंगुबारजी में क
वी आवेजी हजारेजी में पास बैठा जिमें चाहे

भै॰रा॰
६२

जगा न दीजे यार ॥ रागिनी भैरवी ताल तिता
ा ॥ मित्र विछोहा अतही कठिन है ये जिन
हे कर तारी। जब सुधि आव प्यारे तेरी व
रषत हूं नैन वारी। काठ रूपे तन व्यापत॰
प्यारे जग बिछुरे मरे सार। वल्लभ पिय
अब मिलहौं प्यारी सदा रहूंगी लाग ॥रा

2 (3)

गिनी भैरवी ताल जत। प्यारी आवैने ह
मारी गलीरे होरी खिलनकों। केसर रंग
उडावे मनमान्यों फूली गुलाव की कली
रे। अवीर गुलाल की उमड घूमड में झूंय
ट चलीरे। प्यारे पियकी प्यारी वल्लभ अंग
सों अंग मलीरे॥ रागिनी भैरवी ताल तिता॰

भै॰ रा॰ प्यारी चलोनी निकुंज बने रंगाठनैं तत बित

त घिावर बजाय घने। सप्त तीन ग्रकइस॰

बाजसो छतीस छतीस गायन गुने॥ रांनी

भैरवी ताल लक्ष्मीताल॥ बारी बनवारी हे

दाबन माविपन सावापन करन रास गो

पाल। न्टनकारी फनकारी बजेगन घूमेंगा

कटधिधिक धुमतक चकटक तान ताधा ॥

रागिनी भैरवी ताल रुद्र ॥ मन मोहन मन
मानी याते तू प्रवीन सयानी । सुंदर वंदन
चंद्रकला लजानी तोसो नहीं तिया और ना
हीं तिहूं लोक मानी । तानसेन विरचित जी
वो पमीप्रीत रहों जोलौं जमन गंग पानी ।

भै॰ रा॰ रागिनी भैरवी ताल रुद्र ॥ मुरे पूपामा मोरे ज्यर
६५
तूं मन मोहन मेरे मन को प्यारे । तुम विन॰
२४
मेरे कू कल ना परत है मुरली टेर सुनारे ॥
रागिनी भैरवी ताल तिताल ॥ उठ भोर चल
कि यौं मेरे आंगन प्यारे कौन जियन सेगा॰
मरमानें प्राण होज । केवल चरन गति मेद॰

चन देख हग न मिले मेरो हीय रामिराए हो

ज। जोई करो त्रमनि उर अनत जाय सर॰

सरंग रस मन के भाए होज। जाहिकों भा

गताही अकला इलई अनत बिलमे जाय।

कहे मनल लचाए होज॥ रागिनी भैरवी।

ताल रूपक॥ बनाव्याह लेबल्या माई चेह

भै॰रा॰ मघीबनरी कों चरले आय। मनों मंदिर करे
६६
वाकों हमारो अपनों अपनों घर बसाय॥
रागिनी भैरवी ताल रूपक॥ आदेश कर गु
रुकों जो गुरुनके गुरुकों ब्रम गुरुकों तासों
सप्त स्वर तीनग्राम आवे स्वरभरकों। इकइस
मरछुना उनचास कोटतान मलाई संवाई

अलंकार बैजअभके चरणथरकों॥ रागि-
नी भैरवी ताल सवारी॥ फुलबन सेज बने
ऊ करिहूं सिंगार पिया मिले भावतो मोहे।
आज। गावोरी बधावा सषियन मिल सेरा
न सों मेरा जर रच्यो काज॥ रागिनी भैरवी
ताल सवारी॥ आहे नादरीम दीम दीम त

भै॰रा॰

न दिरनायललो ललो यला यला यलले न
नजे ग्राणाकेंता वेगात्तम वरकेया ववित्साद
ये मनवुडूं बावेंताबेरा ॥ भैरवी रागिनी ना
ल सवारी ॥ बेरखा मैनू ग्रामरा तुसाडा वे
रावले माडडी लाज। रैंन दिनामैंनु ध्यान
तुसाडा रहदा मेरा मीयो और नहीं कोईका

ज। चीनामस्ताना देगा आतस नजर करके

के आज वदमस्ती यस आतश महजर कार॥

रागिनी भैरवी ताल तिताला॥ माची कहो

हमसे मन मोहन आज कहो मारी रैन जगे

हो। रंग रंगीली अखियां कहुं देखिकौन रं

गीलीके रंग रंगे हो। मोतीयन हार सुभे उर

भै॰ रा॰ ६८

उर उपर याहीतें काहूके श्रेक लगेहैं। सूर॰

प्रणाम नम वहांही जावो तन मन काहूके श्रा

न पगेहैं ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ॥

श्राज सोहाग भली रतियां छतियां ब्रजना॰

थके हाथ छुवाई। मैं बड़भागिनहू तिहूलो

कमें तीनलोक पति पीतम पाई। देवसाव

स्रुति मनसौं न देखतसो देखत मेरो गातलो
भाई । कुंवरकौं बरबर जोर नसाई बसाई मे
रे तन सुंदरताई । एक नेकन भई बतियां ।
कितियां सखियन उसास समाई । रूप अनू
प सुधानिध राधासंग खेल प्रेम रंग रमाई ।
रागिनी भैरवी ताल पंचमषी ॥ तोडव रूपत

भै॰ रा॰

६५

३

पीनाकपनि डिमि डिमि डमरु वादित वर्णे।
जगदीश गज शृणोति शब्दं श्रुति पटल
धे पीयूषपाने। सुरर्षि सिद्धश्चारण गायक
यत्न रत्न विद्या धर पाने। सनकादिक स्तुति
सार विचारे मनिचारे राजऋषि समाधि ध्या
ने। नारदवीणा विद्या विशारद शारदा श्र

यति मांबिबुज पाने। यतः पति विस्टति स्व

गृहस्थाः गोविंद गोरी मन्निधि माने। स्याव

र जंगम गति प्रतिबद्ध सम्मिताकाप्ता जला

प्रायेष्टाने। सरी स्टपापित सर्पति सर्पे जड

वज गति जग हृती माने। प्रावेद उन्नम विस्म

पदापय कित चक्रधर वलाय माने। षट्‌प

भै. रा.

द निर्मित शिव कृति मारे प्रेमरंग कृतनित्य

स्नाने ॥ रागिनी भैरवी ताल तितारा ॥ राम

नाम जपले मन मेरे कटत पाप एक छिन में

मेरे । परंब्रह्म जगदीश गुसांई रसना रटले

सोझ सवेरे । धन जोबन कछु थिर न रहें

गे कोट उपाय करी बहु तेरे । हरके प्रभ

33

ग्रंतरजामि ठाकुर हम दास है नेरे ॥ रागिनीभै
रवी ताल तितारा ॥ पार करीबो बेडा पार क
रीबो रामा कठिन यार भव सागर की दीनदया
ल दशरथके लाला शरणागतकी लाद्दरी।
हैं। गीधव्याजराज गनिका नारी धीवरी गौ
तम नार तरीबो जानकीदास बोणेन्द्रषले

भै. रा.

माडी जिंदतेरे वारपरीहें ॥ रागिनी भैरवी ता
ल तिताला ॥ वार वार समझाय उद्धारे मनकों
नेंही रामकहे । विना भक्ति हरि जगत डाखपावे
त्रिरयमदंड सहे । जो चाहे श्रीराम नाम जप
ने। भ्रावसें। निवहे । वेदके। भेद गणान गणानन
के। जानकीदास येहे ॥ रागिनी भैरवी ताल.

३४

जत ॥ बारबार समझा वतहूं तोहे मानले रे म

न मेरी कहीकूं । डाव साव सों सो बीती याद॰

न कर वर वादहीकूं । एक ब्रह्मदेखो सब ज

ग में छाड कपटकी गांठ गहीकूं । जानकीदा

स सुमिर श्रीरघुवरको गई सो गई अब राख॰

रहीकूं ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला

भै॰रा॰ गावते हरिकों जश प्रानीतें जगममें धनधन

७२

गुनी ग्यानी। सोई सुविद्या सोई बडभागि जिन

३५

की प्रीत राममों लागि। सोई पंडित सोईदानी

मिठे वचन सबन सों बोले तेजन जगमें विर्भ

डेलीते कुलमंते परमसुग्यानी। प्रभु पद र

तिमन वच क्रम जिनकी चरन धूलराव शि

र तिनकी जानकीदा परम हित मानी। कुस
गुमानी मेरे मनवसदावे। इस जंगमें बारी ओर
नहीं भंदा निसदिन उरविच वही लसदावे।
वही ध्यान वही मान वही सब वही तन मन य
न कुटंब वसदावे। ज्ञानपति परमेश्वर ओह
रि नंदनंदन मृदुभाव हसदावे। षान पानज

भै॰ रा॰ ग बीच नहीं नादा श्रौर सवन दिल विचनहीय

७२

मदावे। कृसन रसिक रंग मवन रसीली गावन

36

हरि हरि जमदावे॥ रागिनी भैरवी नाल तिना

ग॥ राम गुमानी माडी पीजरन हृकदावे।

तेंडेरे दरस विन व्याकुल रहदे जानकीदास

फकीरन बुकदावे॥ रागिनी भैरवी नाल ति

ताग ॥ राधे बेणी कीन लीनी चोर। चंचल च
पल नार एक सुंदर अबही गइ याही ओर।
हारा मोय बतावो प्यारी बिनती करूं करजो
र। जानकी दासकी आस पुजावो निरखे छ
गनकी कोर ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला॥
धणामसुंदर गिरिधरी बनवारी धन बेसी के

भै॰रा॰ रबजावरे। जैसी बजाई वादिन प्यारे तैसी तान

७४

सुनावरे। ग्वालबाल सब सखा संगले मेरी गा

३७

लियो बिच आवरे। जानकीदास रसिक ब्रज

मोहन भुजभर कंठ लगावरे॥ रागिनी भैर

वी तालजत॥ कुकंगे कुकंगे वडी पार ल

गाय दे माई। गहरी बीन दियो वारी नाव पुरा

नी आनगडी निज यार। मैंतो जीय नूं वेनेराम
मझाय रही। वारवार जीय रामा तन नांही सम
झ समझ पछुताय रही। जानकीदास स्याम॰
वे दरदी वारवार बलिहार गई॥ रागिनी भैर
वी ताल तिताला॥ यारदा मावड़ा मैंनूं भांदा
नी भांदावे मोवल माडी वल आवंदानी जांदा

भै. रा. ७५ ३४ वे। जानकीदास मोहनी भव ननज पडी जब

मे वो मूरत राल लगाणेनू जी चोदनि वाहेदा

वो। वेसी वजावदा छेला जोरनागर नेद कि

शोर। विन वेवे कलन परत है क्या मबुका

भोर॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला॥ वेरी न.

तेरी नतेरे वकी तेरी गली मो क्या फेर लेंदेहो

ज्यों नम चाहत चाहत मावन सो नम माव
न नेकन पैहों। केमके राजमें भ्रमनहीं वरी
श्राई ववाकी सो बूंद नदैहों। टूटेगी हो रह
जावगा कों नव नेदजसोदा समेत विकेहों
रागिनी भैरवी ताल जत॥ री नेरे माथ ला
गे मोरे नैन कहा करु कछु वननहीं श्रावे

भै॰ रा॰ बीत जात सारी रात॥ रागिनी भैरवी ताल प

कताग॥ नैनावो तैंडा जालमजोर। मायल

कर मानू ज्ञायल कीता ख़ुदा लीना चित्तचो

र। रैंनदेहा मैंउ ध्यान नमाडावे सोना न

ही नहीं सब ओर। जानकीदासनि मानैं॰

न रावले शामिल नंद किशोर॥ रागिनी

३२

भैरवी एकताल ॥ प्यारा वे सोना सोबल यार
तेडे दरस बिन कल नहीं पडदी रैन देहा वेक
रार । दरस विखाजा माडी आस पूजा जा मैंत
ज पर बलिहार । जानकीदास नि मानेनूर
खले दे अपना दिदार ॥ रागिनी भैरवी एक
ताला ॥ मिल जाना हो प्यारा नंद किशोर । वे

भै॰ रा॰ घनजर भर ग्रायलकीग्रावो के नैंनादी कोर। ते
डे दरसबिन फिराबे दिवानी ढुंढदी फिराव
हूं ग्रोर। जानकीदास वेष तुसी हरषा जैसे
वेष चकोर॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला॥
वे सांवलडा यार लागि नो ग्रोर निभाना। ते
डे मिलननू सब जग छोडा बिनदीदीयांदा

दिवाना ।। विनदेवेवारी नैंनादी करी वरमोवदे

दरसदियो समिलावना । प्रेम रंग मगदानीवे

नित नित नेहड्गवे मनभावना ।। रागिनी भैर

वी तालद तिताला ।। रघुवर मेडा मेनु पारलगा

यदे । भवजल थलदानिवे पारनमिलदाभ

वदे पार परौचायदे ।। रागिनी भैरवी ताल ति

भै॰रा॰
१८

तारा॥ पावन नाम तुमारो रघुवर मोसे पतित॰
कु तारो। जल थल वल वहूं दिस मन वपटन॰
सब हत्या दोष निहारो। प्रेम रंग रंगे तन स्याम॰
के लगानन रङ्क पियारो॥ रागिनी भैरवी ताल
तिताला॥ बेडा पार लगायदे मेरा मोंझी वाला
मोंझीधार मैं वयार वहावन मन पत वार फेरादे

मन गुरुकों गुन लगान सकनहै समदम देउदे
लोयदे। प्रेम रंगाभव सागर उतरन निजपद।
प्याह पंभायदे॥ रागिनी भैरवी ताल तिताल
सुमिरन राम सुमिरन सुमिरन जो साधन का
म साधन साधन जौं। जगत जो धाम जगत
जो जगत जो भगत जो नाम भगत जौं। मनकर

भै॰ रा॰
७५

सामनतनकरमकरजोलगततनदामलगतन
लगतनजोँ। निसदिन जामनिसदिन निस॰
दिन जो रंगतनन चाम प्रेम रंग रंग ननरंगतन
जोँ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥ प
धुप चले ब्रज कुंजबने व्रजदार मनोहर वेषा
धरे। रंग समझायेन धैवत रागा विभोहित देव

नदैत्यनरे। मानमणाक्के रेग्राँ विलछ्वले सक
ले हरि त्रुपवरे। विन वियोगी जनास्मरे उस
हा किं सकजालमरे। तिजैया तिजैयग त्रेत्रेड
ग गडदो गडदो केल विलास रायावरे॥ रा
गिनी भैरवी तालथीमा लितारा॥ कुसलाल
प्राणगानतेरी गावबाज अपनें जनकेरी।

भै॰ रा॰ अशरण शरण तुमे जग जानत नाम दीनदया
ल दया करहै री। उन्ह जो औरनकों समर्थ हे जा
के नाम कटे भव वेरी। कृष्ण रंग प्रभु प्रणत
पाल मानि तरीये कटाक्ष कमल दृग फेरी।
रागिनी भैरवी ताल धीमा त्रिताल॥ भलो
भली भांतहै जो मेरे कहे लागीहै। मन राम

नामको सुभाय अनुरागिहै। राम नाम मोदक

सुधा सनेह पागिहै। पायपर लोष लोन द्वार

द्वार मांगिहै। रामनामको प्रभाव जानजूडी-

आगिहै। सहित सहाय कलिकाल भीरु भा

गिहै। राम नाम कल्पतरु जोई जोई मांगि

है। तुलसी स्वारथ परमारथ लोगिहै॥ राग

भै.रा. हरि नाम भजो जिंदगी थोरी। अवसर बीत पीछे
८१
पछुतैहो जमपुर जैहो गरे फंदगी। निस बास
र हरिनाम उचारो तजो मन का कपट गिंदगी।
रागिनी भैरवी ताल जत॥ कृस्न भजो तो है कु
सल डहाई और न उजो तो है सहाई। द्रोपद सुता
की लज्जा राखी दुबन राजग्राह प्रान छुड़ाई॥

44

ऐंभकार हिरणाकुश माऱ्यो प्रहलाद भक्त हित आई। शंखचक्र गदापद्म लिए हरि आपनें जनकी औरर निभाई॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तितारा॥ टपा। भोला भोला मखडा जानि यारदा एक पल नहीं भुलदा की करां दिल डवदावे मीयां। रानदेहा मैंन ध्यान न समाउंदे।

भै॰ रा॰ मीयो नसी हरीहरी केरों हकदा मीयो ॥ रागिनी

८२

भैरवी नाल रूप ॥ तैंडे भवे कालीयां वे आडि॰

या हानि वे नैनां दी नोक सेभाल आडा हानि।

तैंडी । वह मस्त म्रगाव मद पेवनाव गिरहदा॰

दशावरावये आफनाप तैंडी ॥ रागिनी भैरवी

नाल धीमा तिताना ॥ कोकिवां वाले मियावे विर

हदी मारन कमलावे । मैंननीदा कोउ नजेंाम

नदे हालवे ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिता

रा ॥ सांवरे हो मुरली वाले हों रावरे हों कान्ह ।

प्रेम उमगी उमगाई नेक भली विन जाइ हो ।

प्रान ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥

विडोदा परवेला भला मियांवे मान्ह् चका ।

भै. रा.
८२
46

जवें जवे भेदा कोईवे। विछोड़ु सजुवे लेवला।
हिडवे मियां सानु चाकजवे नाद कोई ॥ रागि
नी भैरवी ताल धीमा एक ॥ सानु भेदी गलि
यांवे सोनैंदी सानभे। जावेनी काइवे मडले
झावे मियां राफे विना जिंद वेकलियां। सानु
रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ नैंनु सम

जाय मरि दिलबरवे खिनकारन लोकों दियो
वदियो महेंदे । इस्कदी गलो ममदानाही ना
दम हाल सुनायके हन्न ।। रागिनी भैरवी ना
ल यीमा तिताला ।। सांवलियांदे जोर महो
बत इस्कदे नाल मोड़े लगादी । इस्क लजा
करवे छुटदाबी नाही मैंडा मीयो नेरे रावे ।

भै॰रा॰ नेंही रहंदी भला मियो ॥ रागिनी भैरवी ताल
८४
धीमा तिताला ॥ जालम जारियां वे रह्या जारी
यां दे ना दे नाल रुजा यो दीटीयां जमानेंदी क्रु
डियारीयां । मनों कर उमति थड़ेनू भावनामा
डरी गली न कैंयां नेंही छ्रांव दारीयां । लाल ।
बीरा हाथ मल्ल छड़ीवे वां कोई नेंनदीछ्रां न

मारीयो । तू तबीब दिलदा साडे मोरी मियो म

हीदे योग चलहेगी साडी इस्कदी बिमारीयो

रागिनी भैरवी ताल धीमा तितारा ॥ दिल म

जनूकीता हमफरे मस्त हो कव कुमहरोव ।

मेरेरां लैली मदहो पीसे घोरी नेजि मदमल

व लव । आप अभरि नयली ॥ रागिनी भैरवी ।

भै॰रा॰ ताल धीमा तिताला॥ नई नई नणन्दो जमीं भरीए
८५
मोंज गुदा जिसके नफ़के हरे कदम में दमसा
ज मिये। नणदके तिही सदायनाई मे बोलेपी
री हर दम बोले परी परी॥ रागिनी भैरवी ता
ल धीमा तिताला॥ रांफेदे नाल करार मेरा॰
वे कीकरां जी नहीं लगदा मेरा। रांफेदी ह
X.8

रत मेरे मन पर वसदीवे मियां राफेदे नालक
गर मेरावे कीकरां जीनहीं लगदा मेरा। रांफे
दी सूरत मेरे मनपर वसदीवे मियां राफेदे।
नाल मन पगदावे आशाव उसे मतजान जो
बदनाम नहोवे। दीवाना वोहीहै जिसे आरा
म नहोवे। रवाते गनिगाह उसोषकी गरद

भै. रा. मरहे वाकी तडफा करे विसमिल ज्यों अगरका

८६

म नहोवे ।। रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला

तकके चलाई साहेू मेंग विरहीने नैंवालें सि

ये । दिलतें आलगी प्रीरी दिल रहगया उव

कके लाई सिये ।। रागिनी भैरवी ताल धीमा

तिताला ।। दोनैंनादेनी आगेवे सपाई उमैंरा

मियोंतू राजी रहना मेरीयो । आपन आवे वारी

वे नालिव भेजें मेरा मियो साववमे मलना·

नवे सेपाई उमेरी जोत ।। रागिनी भैरवी ताल

धीमा तिताला ।। मस्ति महेरामें जा मस्ति कीजि

ए पिजिए पियाला मदहो धी का मस्ती । मन

म अपनें अपनें दिलमें धोरी है हजर मोजूद ।

भै॰रा॰ हस्ती ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला । तैंडे
८२
मिलनदा चावबे मैं नू आपियारवि मियो डव
दियो बदनामी कूल तैंडी । तैंडे कारमें सब ।
कुछ छडिया वरिवो विनदामो दि अन मो
८०
ल तैडी ॥ भैरवी रागिनी ताल धीमा तिताला
मई मात भूल कौ गयावे महिदे चावन वाक

आप छुडजांदे नाल मैंसिदे पोरी मिये माहिब

उडीकानियांवे पैंडे दियां नी उड देवाकवे ॥१०॥

गिनी भैरवी नाल धीमा निलारा ॥ आमिल रो

जा जानवे आमिल मैं तो नाडें सदके कीनीया

र गुमानिडा । आशाकनें माशुक करम करे

माडरी जान इस जग विच जोवन महमान ॥

भै. रा.
८५

रागिनी भैरवी ताल तिताग ॥ होवे ढोला मन परचोदियां केरा सियालेदी जाडियां । ओखि- ल दाडीयां भौंवें मटकौंदी चिलचट जांदियां- वेढो ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताग ॥

5

मला कोई बतलावण मैंनूं इस्कदा फंदा केहा कर छूटदावे । आप काडलगी लडनेरोवे मि

ये कविते दरसवेषावन मैंन्नू ।। रागिनी भै
रवी ताल थीमा तितारा ।। सोनावे दरदिया
रवे मानुतो रहदा नेडा प्यारवे नजविन घो
री मैं नुकल नाहीं पडदी माडीलेदा केयों न
हीं मारावे ।। रागिनी भैरवी ताल थीमा ति
तारा ।। टपा टपका रमदी गोट प्रेमकी हुट

भै॰ रा॰ पीवे सोई जाने। इस्कदा गुलफल घोरी खुश
बो ओदी जब वढ़जोदी दमदी ओर। मियावे
छुडकेयां चलानेंनी नैनां नकदी छुपकीनी।
भट पई नैंडी चाकरी विडोदी घोरी जोजोदी
मैं नेडा भला॥ रागिनी भैरवी ताल जलद।
तिताला॥ नाकर फेडा विंडोंदे कोलवे हुगाल

वसैं देवो मीयां। प्रोरीन्ह नो वदमामल होहोवे॰
कोदि विच माघेों मन बोलवे॥ रागिनी भैरवी
नाल धीमा तिताग॥ किवीन्ह मैंडड़ा दरदग
वोवी यारवे। रोजन मैंडा वारीवे मैंरा फेरिवे
मेरी मियां तेरी भलाई मैला जीवी जीवीन्ह मा
उड़ा दरद गावोवी यारवे॥ रागिनी भैरवीनाल

भै. रा.

५२

धीमा तिताला॥ चिरा हे पैदा बे वाल मजी वस प

या की सीदे प्रोरी सिर तेरे। हे पैदा माणा वे सो

णा वस पइयां वे मैं तेंडे माणा। जी नहीं लगदा

प्रोरी की करे वहाणा वे॥ रागिनी भैरवी ता

53

ल धीमा तिताला॥ लाला लडके भडके फग

डके ग्राए भोर भए मेरे चटके। डग मग पग

ढिग घरत घरन परबात बनावतहो चढे च

ढे ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तितारा ॥ जा

वोनी समझावो उसनू कोई प्यारा तो साडे ना

ल नहीं मिलदावे । तज विन जिंदमैंडी वेक

ल रहदी घोरी ल्यावोनी समझा उसनू को

ई ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तितारा ॥ मा

भै॰ रा॰
५२

हियावे न माहियावे की गुजरी माडी हालवे।
बीच पंगुरादीवे पईवे न रफेदी मेरा मियो मड
पइ दमनाइ ॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा तिना
रा॥ लालावाला जोबन कीसीदावे रती रह॰
जा जोबन वालावो। गुलवी लाला बाग बहो
रोवे गुल विना फरमानिदावे दाग जिगर।

54

विचका लाला ।। रागिनी भैरवी ताल धीमा ।
तिताला ।। रांझा मैंनूं नविसारी मैंनो नेडे सद
के कीतीयार रामानीडा । एहि गला पंजाबमें
डी दिलविच कारियो मानू नविसारियो ।।
रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ।। सईयांदे
मरदानवे हूंदी नावन मकान चेरल नन ।

भै॰रा॰

५३

पंजतनपाकदीवेजारत चालियागेमन सक

लजहोनवेहलतन॥ रागिनी भैरवी ताल

धीमा तिताल॥ मानिवे वसंत यारवेवी राजी

री दाशिरदेवन आया नूरीजरीदा मोने हरी

वे। म्रावडा नेडा गवहारीदा शोरी मोना जम

जम मुबारक बादिवे जानि॥ रागिनी भैरवी

ताल धीमा तिताला ॥ लाईयांवे मैंनु लाईयांक
ईयां नतेरा मैला लाईयां । रंफा नकत हजा
रांदा मोइयांही गसियांलेदी जाईयां ॥ रागिनी
भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ मोना मोना ल
गांदा मावड़ा जानी यारदा फ़ालि साज़वेष
वहारदावे । प्रोरी हजार गुल लाला नाफर

भै॰ रा॰ मानदिवे मदके कीती मदके जोदि प्यारदा ।

५५ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ जालम

माखडा परीदा पायाते तो जोर लगदा नरहे

दारवे । प्रीतीदे सरदार यार परियांदा करगा

ईयां परियां शिरघे साया ॥ रागिनी भैरवी ।

४६

ताल धीमा तिताला ॥ केकीं वे घाण जोरदिवे ।

रंफेटा तेंडियांवे। रांफाग मिलिया मैंनुंवे स
बडाखभूलिया घोरी फुली वेगान समादि।
यांवे ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तितारा ॥
मिरजा जानवे जिंद तोलाई झून नैंडडे नाल
दिटनी जोरेदा मेलाडेला घोरि मियांगरि
वैंदा रावले मान ॥ रागिनी भैरवी ताल धी

भै॰ रा॰
५५

मा तिनारा ॥ मावड़ा सोनेदा परीपैर कर पाया
वे । भलिलवादी घोरियो रोंदी सेन ॥ रागिनी
भैरवी नाल थीमा तिनारा ॥ जानि जिये रातें ।
वाज़ माडा भूलदा नाही मान्नूलें विसे वाल
रोवियो लगा घटके भटकदा दिलकीताकों
ल तैंडे नालवे ॥ रागिनी भैरवी नाल थीमा

57

निताश ॥ ठगा ठगी ले नैंना तेरे लैंदे माडे दिल
नू भलाकु । एकनो दिलबारिवेते ठगालीता
वे मियें उजे नहींदा मिलनू ॥ रागिनी भैरवी
ताल धीमा निताश ॥ दिल नहीं लगदावे माडा
हजनूवेषो तोजिवें । वे मियें हसी जींदा रहि
ये लाबिबरम लों ब्रदा रगन पार उतार ठेडा

भै॰रा॰ पाणि पिवें ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तितारा

५६

मिलनाहो तो मिलजाढोलन क्यों छुडेलावे ।

माडी में वेष छुकि तेडे नितदे वायदे खनवे रं॰

का विरह सानु रहदा ॥ रागिनी भैरवी ताल

धीमा तितारा ॥ वो मियां जानि रब तेंडा भला

करे कबि ताे श्रामियां माडडे कोलबा । बंदि ।

58

होवे तैंडे विनदा मो दिगुण मीत गले लगावे

दा मान देई मड बोल ॥ रागिनी भैरवी ताल

धीमा तिताला ॥ जा लेवे दरदां नाल पाले मन

मेरे मदारंग अल्हावाले। दोसि किते कया है

मैं पैड शामन के विषदान डाले मैं किसगुण

उसनूं समझावे दरद मेरी गल नहीं मानदा

भै॰ रा॰ अपनी तो आपजानैं परवोकी सोदा भला बुरा न
ही मानदा ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिता॰
रा ॥ महोबत लगिवे मियां कीकरां मैंडे नेडे ।
नाल वसी जानदा नाही । महमद शाह पिया॰
सदा रंगीले जोर धिगाना मैं ठगी ॥ रागीनी
भैरवी ताल धीमा तितारा ॥ मैंनूं चाव ज्ञनेरावे

59

नैंडे वेपरवाहीदाबो मैंडे सांईयो। कहांकहे किन जा

उ सधीरी दरद अब तो इस्कने घेरा। यादलगि

नैंडे मियें तूबी करदा यादके नाहीं। दरद कया

हूयया राते जोर दलगारे बांही॥ रागिनी भैरवी

ताल धीमा तितारा॥ तूंही जानदा मेंडाहाल

अपनें जियेकी बीथा। तुमबिना मैं कासे कहूं

भै. रा. तूही समल छतपाल ॥ रागिनी भैरवी ताल थी

५८

मा तिताल ॥ वेषन कारन यारन्ह दिल लगा.

दिल लगा यारन्ह की दूइयां डुंगी बीच यल्हा पु

राना इस्कदा मोई मजापार लगा रोफन गले

लगले ॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा तिताल ।

६०

वेडा बदनामिवो मैंन्ह मैंडा मयान्ह मलारदा

वे । वेल चमेली दमनाम रुवा गले फुलोंदा हार

दानिवे ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥

छडके नजानावे मैंनू मेंरा महरम यार सया

ही । रैंन देहा मैंनु ध्यान तुसाडा नेहडा गला

ने निभाही ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिता

ला ॥ प्यारेदि कोई ल्यावो षवरां जो वनजोंदा र

भै.रा.
५५

खिमाडा अवरां। रैंन गुजरे मान्नू उडिकोनि खिडे
ये दिन गुजरे मैंन्नू कहरों वेजवरां॥ रागिनी भै
रवी ताल धीमा तिताला॥ वेदरदां दा वाली नूंमा
डावो सवाजी मोडेवे। कोई किसिदा वालिवे।
कोई किसीदा मेरा मियां असनि मानिदा नूंस
रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥ चंपेदीडा

लियोवी बांवह्ारोंदे नाल भलियों वेरव मिले

नोमैं वारियो। मघड़ा नैंड़ा वारीवे म्रजब बह्मा

रदा घ्रोरि मियों कोनां मोहे ह्नंदे वालियो॥रा

गिनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥ दिरदिर

दिम ग तन न न न तन न न यल लल यललल

लले। लगाहै इधकप्यारे काजिगर मैं छूट।

भै. रा.
१००

ना नाही मिलावो साईंकुं अपना एहि जीवन ह

माराहै ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला।

मैं जानु मेराजीव जानैं लोक दिवानैं क्या जा

नैंवो। कासे कहूं आलिकोई नजानैं मेरी दि

लदीदाद खुदा जानैं ॥ रागिनी भैरवी ताल

धीमा तिताला ॥ सांनैं किन ल्याईयावे मैंनु

६५

मेरा भली नैंना वाले मियां। जेरा खियाले मैंनू
चोरी गईयां मेरा मियां चकवीवा नैंना वाला मि
यां॥ रागिनी भैरवी नाल धीमा तिताला॥ आमि
लवे प्यारा सांवला मैं उडे मैं बीचलां मे नाना।
लना उडे। नेन विंदेदा वारी मैं नावे देंदा मैं
डा कुब्बा मटके कीनी जिंद मैं उडे॥ रागिनी भै

भै॰ रा॰ रवी नाल यीमा तिनारा ॥ सान्नुवी कारन लिती
२१
फकीरी गरज नहीं कछु तेरी यांनि मेरियां ।
मालड साला मैंडे मनहीं भावे कर्म लिखि सा
डे कारम कारियां ॥ रागिनी भैरवी नाल यीमा
तिनारा ॥ केहियां रमजां लाईयांवे मैंनू मेडा
प्यारा मनमोहन सांवलावे । इशक लगा तेंडा
६७

वे कितबल छुटदाहो नमहरम घर कान्हाई ॥

रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ कोवोंनू

मे भालवे छाउमही चरडामिसवे । रावे ऐसीते

माउडी कोलवे । यारि वीरेवालियांवे वाबुल

माडा वाक छोउमैंही ॥ रागिनी भैरवी ताल

धीमा तिताला ॥ यार नालवे दिलदार नालवे

भै. रा. मियो आस कानु तलब दिदार नालवे। हतिमो
१०२
ना पैरी मोना गल मोनेदा मोना नाल मोनाआ.
रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ।। आपको
म्हारे डेरे वो मन मोहन नंद दे गुमानी छैला
यारवे। कोहम तुहार करान्हारे मायवाकि।
नालिना मोना करलेयो सब प्यारवे।। रागिनी
६४

भैरवी ताल धीमा तिताला ।। तोड़दे कुरबान की

ती सोने नू आनमिलामि । बस रही तोड़े सूरत

मन परते मैंडी जिंद बुसकर लीनी ।। रागिनी

भैरवी ताल धीमा तिताला ।। लाला नाफर मा

न इषकदे जगुमे पीछे रमनाइवे बाबुन घोरी

आपदिन बहारदे इषकन कीतामार ।। रागी

नी भैरवी नाल थीमा तिताग ॥ सोनियादि वहा
रवे माडे नाल कित मैंडे यारवे । बिन वेकल ।
न परदी मनवे मैंडे प्यारवे । रागनी भैरवी ना
ल थीमा तिताग ॥ मेंदावे माडा दिलनू मह
रम यारदे निजावेदि मगाजे । वेषने सोरी डू
न विते रमफनूज नैनादियां गमफो ॥ रागि

नी भैरवी ताल धीमा तिताल॥ दर दिम तदीम

तदीम तम ननन ननन ननन ननदिरना नन

दिरना ननदिरना दानि दानि देस्त। नाइदते।

इदतनन नदी यनरे। नदी यनरे नाइद ननन

दिरना दानि॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा ति

ताल॥ बोल मैंडे नाल बोलवे प्यारा बोल मैंडे

भै· रा·

१·४

नाल बोल मैंनो नेरी सोवे। एक लरादे शांमें दो
लरादे शृं भारनदे शृं तोल रोकन मैंडा वारी
वे मेरे भनदी लोकोंदी जोरवे॥ रागिनी भैर
वी नाल थीमा तिताला॥ ईश्क लाल महोबत
सब जग छेडा क्या अपना क्या बिगाना। लप
वाल चलेवारीवे मडके नवेवे मेरी जान परि

66

महलू वेदी आन ।। रागिनी भैरवी ताल चीमा ।
तिताला ।। की बहोरां दे नाल चेपेदी डारियां ।
क्यारियां । खिल रहियां गुल जारियां । हो हावे
वे घन जारा तो मैं वारियां । केवडा वे पाव मे ।
ली गुलाब फुलर अपनी उमंगा से जव प्यारा
मिले तो वेदि यारियां ।। रागिनी भैरवी ताल

भै॰ रा॰ धीमा तिताला ॥ नाजा महरम नाजावे कवीमो

१॰५

माउडे मनमान गलावे आजा । तुघोरीदी क

मम मत कर समक रमक दिलजा ॥ रागिनी

भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ जोथे चलो उथे

ले चल मैंनू मैंनू मैंबी चलां तेंडे नाल मैंडा ।

67

प्यारा । महोबत लगी तेंडे साथ घोरी मियां

ज्यों भामि त्यो पाल मैंडारा ।। रागिनी भैरवी ।

ताल तिताला धीमा ।। हे आपी नाहीयो मिल

दावे भूल गई सभ मैंडी तैनूं सोणा । हुज जे

हा मैंनूं हारन दिसदा हतो महरम दिलदा

वे हे ।। रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ।

मेरा महीं वालीयो वे मियो । मेहीं दे कारन-

भै॰रा॰
१०६

वे चाकमेहो डाके मीयां ब्हदा ब्हदा कर पाली॥

यां॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥ मेंदी

यां देनी वेले न मेड़ा सांईयां। आन मिले तां मैं

जीवां वे। म्हणनी हीवे तेफा नकतर फावेंदा

सांई चाकमेहीदा मफीवालावे॥ रागिनी।

भैरवी ताल धीमा तिताला॥ आदम आदम।

68

आदम दमदे दम बिना नाही किसी कमदे। कि
भरवासा मैंनु जीददीदा प्यारा पजोगी जरा
विच रमदे॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिता
रा॥ कोई गुन्हा मैं थांको कीयो छे मानू बता
य दो साय बा राजा। कोटा विदेशां थांने हूंदी
वो देशां थांसो लगणो छे म्हाको काजा राजा

भै॰ रा॰

८)

रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ माथीआ

महान् माथवी भंगाणा हम परदेशी लोगवि

गाणा । इस गलीयों बिच छोदानी जांदा आप

ना मेरा आपना विगाना सो विगाणा ॥ रागि॰

नी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ नाम लै लीदा

केयों लीना मजनु मीयां महरा महरा आप म

69

स । चीना आशक सदे जाएके हरदम मेरव

द होशानजन्न सहस्तमे गोयद सबाराव वा

द रगोस्त ॥ रागिनी भैरवी ताल यीमा तिता

रा ॥ भलीयां माडी यारनी तोडे हयो विच

खुबदा झुला । हयो मेदी किये जेत रहदा

रनी ग्रनीमे ॥ रागिनी भैरवी ताल यीमा ति

भैरवी १०८

नि तारा ॥ प्याले का उठ पीवे प्याला । प्यारी को
नशे में अवह का फिरे मस्त प्याला ॥ रागिनी
भैरवी ताल धीमा तितारा ॥ नामदा नामदा
नामदा मैं नु आमराई भोदावे मैं नु । नज वि
न मेडा ओर न कोई प्यारी नहीं नई जवदा ।
रागिनी भैरवी ताल धीमा एकतारा ॥ राली

70

योवे मोगोदि मैंनु भोंदी। वाज पी यार मैंडा द
रद नजोन सिवे मियां राफादे नाल रहोदीवे
कलीयोवे। जावोनि कोई मडलेआवो खब
रो रोके विना नही भलीयो॥ रागिनी भैरवी
थीमा एकताग॥ देवोरी मोरी गुइयो कज
रवा देवपोनो हिलालि वारिवे भ्रजवमोहा

भै० रा० वदीदेव ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला

मीपाई मारी अरज सुन जाइ होजाने वाले सी०

कबकी मेठारिठारि अरज करे श्रेग इतनी अर

ज मोडी मोनवो ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा

तिताला ॥ वे नजारा महरम नजा मीयांवे तेडी

वला लकवी तमाडा मोन । तेन ग्रोरी एक ।

समहट मत करन जाण्यारा । लगाणावे की
तानी कोल करार ॥ रागिनी भैरवी ताल यी
मा तितारा ॥ राहरी नदीया वारीवे थेलडा ।
पुरानामेलोला गावे बेडा पार । तोडे विछु
डेमे सवेन नआवे को। छोडचला परदेश।
समलमाके साजने दिल नजाण विशा । नेस

भै॰रा॰ हा मना मदवैक मोतु असनाए विष्रा नेस्ल॥ रा

११०

गिनी भैरवी ताल थीमा तिताला॥ वामेल ये

गो नाल वे कमली अपीला याती पछतावण

लगीयांगी मतवे जीवे लाव बरसहो तू मेडा

माईयो॥ रात देहा मरोबत मावमाडी लगा

72

रहदा ध्यान तेडावेजी॥ रागिनी भैरवी ताल

थीमा तिताला ॥ लाखा तेडा तुमदा दिल विच
गुमेंानीडा यारमीयां । वेपिजे हातेडा रंगाविरे
गीला मोणा ओवेंा विन वेवि मानु कलने प
उदा मेबल मेनु भायाति ॥ रागिनी भैरवी ।
ताल थीमा तितारा ॥ खिडा मला ओवेंादी ।
फांको । रखा मिलामी मोणा यारमिले । आर

भै॰रा॰ पहर मेनुं वे ध्यान तुसाडा मेरा मीयां मोला क
रे तुसी जीदा रहीवो पहिमें रा दियां दो हाई
मेरा यार ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ॥
माही डाढरा वजावदा ओ मेनु । रैंदी नैंडी या
द तेरी मोरो मानी डाहो तुतो दिलवर हजार
दा ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ॥ जाति ।

जीय राते वाज्जवे मीयो गोडे महरम दानी किर

स भालवे। म्रावीयो लडषट करीभटकदा।

दिलकीस कल फरे पावबे मीयोबें॥ रागिनी

भैरवी ताल धमार॥ म्रनीबे मीयो नेनी दगा

भरा मारा। ज्ञायल कीता साडे दिलनु मीयोइ

प्राक लगा प्रारीयें दगा लीना॥ रागिनी भैर।

भै॰रा॰ वी एकताल ॥ किन फूकीयांवे मीयां तैंडे कों

११२

नों वीच एही गला फूठीयां सचीयां मेदरवारी

वो ध्यान नमाडा टो मीयां नाहक मेडी जिंद न

टीयां ॥ रागिनी भैरवी ताल एक ॥ जाडकीता

वो मीयां तरी पलछिन नही कटदी । नजवि

न जिंद वेकल रहदी ई शाक लगा टवालिता ॥

74

रागिनी भैरवी ताल धीमा ॥ मैंनो तैंडी बात न
मानि तुसी आमिल मोहन नेंददे गुमानी ।
रैंन दिना मैंनु ध्यान तुसाडा वो स्याम एक घ
री पल छिन कलन परत जानी ॥ रागिनी भै
रवी ताल धीमा ॥ जींद मैंडी कुरबांनवे मीया
तैंनु कीतावे जार । तुसाडी वेदियां भली नहीं

भै॰रा॰
२२३

लगदी ग़ुरा मीतर मान ॥ रागिनी भैरवी ताल

धीमा तिताला ॥ काफ़ी दमे भेनमन रावण।

तैंडी जुदाई मैंनु भली नहीं लगदी इस डानि॰

ये विच कोई नहीं अपना ॥ रागिनी भैरवी।

ताल धीमा तिताला ॥ दिन बहारों दे भोंदे वे

महबूबे तानू जम जम। गुल फुल मियो गु

लशन विच तेरे बुलबुल बोले। चह चहो बा
गबहारो गुलालो नाल मानदे नरगस। शो
री बाग बहार यारकी शोबन कारन हमकू
रंग बरदीजे॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा
तिताला॥ कैंजी पीवो प्याला मजन इसके
फीयतका कीजे नशा प्यारे। चडताजी तवे

भै॰ रा॰ गनैंमेरा मीये चलीयो सकार सहरो गलनूस

११४

जदे सहू। हमा ग्राहून सहेरो सरे छूट निहाद

चरक फसरे मनफिदाहे राहे विसियारमेही

ख्वाद॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला।

मिलजा जानि मिलजावे ग्रसी तेंडे सदकेकी

ती। घोल माई मैंडा सोवला आजा॥ रागिनी

16

भैरवी ताल जलद तिताला ॥ दीर दीम तदीम

तूम तनन तनन तनादीरना तन दीरना त

न दीरना तन दीरना दानि दानि दोस्त । ना

द्रदते द्रदते तनन तदी यनरे तदी यनरे ।

नाद्रद तनन दिरना दानी ॥ रागिनी भैर

वी ताल धीमा तिताला ॥ हीर रो घेदा कीमा

भै. रा.

११५

एगवे अनि वैवो मइयों मेडीये। लट चालचले
वारीवे मड़के नवोव मेरी जान पही मरह।
वारी अंान। चलि नैंएगनू भालवे मीये जा
लम जटीये पंजाबदीवे मेरा मियो। ज्ञते।
वोदा इघाकज जेगणीयालेदी जटणी रवें
गें विरमाय॥ रागिनी भैरवी ताल झप॥

हावे मानु भाटियो जटीया भोंवे कालीयां त्रु
ञर वाले नैंडे मावपर मोहे फमक रही का
नैं विच वालीयें ॥ रागिनी भैरवी ताल तिता
रा ॥ हीर रांफेदानुवे मईयो वेषोनी । मावः
त मांई मुह्ला काजेवोहोषी किकरेगा को
ईवे हीर ॥ रागिनी भैरवी ताल तितारा । जि

भै॰रा॰ न जावे बालमसे जडीयां मुतडीन्ह प्रानके ज
२२८
गाई। हाहा करु तोरे पड्यो पडुपती करत।
निठुराई॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा तिता॰
नितादनजारा नैंनादा तेंडा बला लगादा मैंउ
टुक मुखडावे स्वामी। प्रेजन सुमार भवे प्रु
विरही अखियों निमाणिदे चरन आमी॥ रागि
78

नी भैरवी ताल धीमा तिताला ।। प्यारा वे उ

र श्याम सवेरे खायगया गमतेडावे गुमा

नीडा । उठ प्रीति मिल जावतकरि पम्हल

करी कबाभी फेरा गुमा नीडा ।। रागिनी भै

रवी ताल धीमा तिताला ।। तेंडी याद मैंनु ह

रदम दिल में तुज विन नहीं कीसी नाल न

भै॰रा॰ मदे। गुजर गई गुजरान घोरी मियो होयजो

२२०

गी इस जगमें रमदे॥ रागिनी भैरवी ताल॰

धीमा तिताला॥ आवो सजन हिल मिल जु

ल रहिये जिगमें जिवन थोरारे बलमा।

बसिह मोरे बारि हमि बमारे जिय मोराम

न तोरारे बलमा॥ रागिनी भैरवी ताल धी॰

७१

सईयो वेलीयो वे डरमन जाव उसदे लोग।
बिगाने। मीनत करदी मैं खडीयो मोणावे
सोई करे मड आवे॥रागिनी भैरवी ताल।
धीमा तिताला॥ बस कीनावे जिंद मेंडरीनू
सनवे जाल यार। नेह लगाकर भूल क्यों
गया मेरा मीयोंकी ऊईयो जिंद मेंडरीनू॥

भै॰ रा॰ रागिनी भैरवी ताल थीमा तितारा ॥ मेरा मज

११८

रा लीजोजी सिपाइडा अपने गलेसे दोनें णा

दे। सलामदरस्से करना मज्ज दर है मेरा दि

ल चाहे तो मन रेंगली ॥ रागिनी भैरवी ता

ल थीमा तितारा ॥ तारण बालावे आमरा॥

मैंनू तेरा। देवी मुराद मेंडीवे मुसकल करो

९०

आसा नरबजी पीर मेरा ॥ रागिनी भैरवी ना-
ल यीमा तिताला ॥ भेद बिसाडे दिलनू मह
रम यार दे निजा वेदा मजे । वेख ते पोरी ऊ
गाबी ते रम वाइयो नैंणा दियो मजे ॥ रागि
नी भैरवी नाल यीमा तिताला ॥ राबीनू चल
न राहमैं ते तोडीले बोबलाई । जेगा मियाले

भै॰ रा॰ दी जालम जटी मैंनु विरमाई ॥ रागिनी भैर
११५ वी ताल थीमा ॥ मैंतो मनदी रहदीयो मान॰
अपनें विंडादी दो नैंणादीमें । छुंचेरवाले वा
ल तोडे सावपर सोहै पलको नीरभो वेक
मान ॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा ॥ माहि
यारदी वेवी बहारन्हूवें मैंभूलगईयो रब्ब
८

हारनू जोमैं जानती कितबल फूलखिले ना
मे जानती गुलजारनू ॥ रागिनी भैरवी ना
ल यीमा ॥ उस परीदा नामलेले दिल दिवा
ना हो गयो । ज्यों गया मुलके अदमको मो
वहीका होरहा फेर उसे ईस मुलकमें उस
वार आना हो गया । ज्यों लिखो किसमतका

भै॰रा॰ घोरी होनाया मोहो गया ॥ रागिनी भैरवी ना

१२॰

ल थीमा तितारा ॥ साजन सानू मिल मैंडे ।

ईलाही वेके मजरोंनू दिल ममफाकी वेक

दरोदे नाल जागीरन सारी । मैंबी याणी वा

री नेहकी जाणा साजी गला सबी ओलव आ

खी भला ॥ रागिनी भैरवी नाल थीमा तिता॰

45

महरवान हो मीयो होवे मोडे रतीयन लगा।
दा जीयरांते कहदियो मोडे माहवांने वे
मेरा रब्ब जानदावे ॥ रागिनी भैरवी नाल।
घीमा तिताला ॥ होवे मैंड़ कीसींदे नाल रा
म नां ही सायवा मैड़ डाढेदे नाल। प्यारीयो
वे नहीं रेदियो निराविियोवे मेरीयो आपछड

भै॰रा॰ जोदावारी नालमेहींदे। आजज किती ईन रोके

१२१

दी कटियोनी मेरीयो॥ रागिनी भैरवी ताल:

धीमा तिताला॥ साथीडा विलेमा वे राजी रह

णा मोडा। ढेकदी फिरें दिवारी ऊई दवोणी

आंण मिलावो मोडावालीडा साथीडा॥ रागि

नी भैरवी ताल धीमा तिताला॥ रखावे मोडि

८३

जिंदड़ीदे नाल जाहोनवे । मदतहो वीस हरउ
ल ग्राल ममदत प्राणमरदानवे ॥ रागिनी भै
रवी नाल पीमा तितारा ॥ मोंडे साधीडे नूलग
वो हो मोंडे माहीडे नू लगावो । हाय रंग भर
महदी मेडे वालेउ लगावो रंगफेदी । हरतेव॰
ग्रजब करे प्रोडलहाते लाल बनावो ॥ रागि॰

भै॰गा॰ नी भैरवी ताल चीमा तितारा ॥ अमी वेव नैं

१२२

एगतु भलेआ हावो। ते फेदी सूरत सब जगा भो

दी मेरा मियो लह सकल हनि भोदा ॥ नैंणा

वोरीदा जोरीदा नलाइयेवे योमेनीडा होवे॰

8x

दरद नही मेगा पसव लहारी सदा सूथ विस

राई अत भुवन मोडी ननकमनक सुनत।

श्रवण मुरली मुकटाई सम सुरत गतमत
सुध विसराई ॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा
तिताला ॥ तेरन जग माईं माईयावे सम
क मन मोईयो । यह उनी यादा मेला ठेला
कोई कीसीदा नाही यावे ॥ रागिनी भैर
वी ताल थीमा तिताला ॥ माहिडा यार मे ।

भै॰रा॰
१२२

तेरीयां तेरियांवे गुमानी यार दिलबर। ले
चल मैंनूं तेंडडे नाले जिंदडी वारि वारी फे
रियां॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला॰
वेमे छोलीयां जोलिदा नी गुमानी मियांवे
किकरां मेडा बसनंही चलदा मजकवेनीमा
णीदा॥ वेमहरम याणाहां माणावे महरम

40

याणेमे वारी मोडा रतीपन लगदा जीयरा
कहदीयो मोडे सायबानूवे मोडा रब जाणा
देहीयरा ।। रागिनी भैरवी ताल धीमा तित-
यारवा मोडा दोस्त मिलामीकी कीकरी ।
जनही मोनदावे । सजन सांईनूं मिली मो
डे ईलाहीयो वकस सजणानूं गल समझा

भै. रा.

१२४

वीवे कदरोंदे नाले जाणि निसि सारी । मेवि-

ग्रायोंगा वारिवे नेह किजाणें मीयें सचि

गलें ओवीमे वारी ॥ रागनी भैरवी ताल

धीमा तिता ॥ मैयोनि माहीं जोंदावे माहि

दावाव वालि माडि ओविल ओदा सरमोदा

जोदा सर नेहडा तसा कित गुण लायो ॥

रागिनी भैरवी ताल धीमा तितारा ॥ वेमियो
नैंडे सावेडें दिलेवों वलईयांत्र । वितानखेन
हा जावैंदा मोईयो हिरसियालेदी जाईयांत्र ।
रागिनी ताल धीमा तितारा ॥ नकीया लगा
या पारदा जोरा जोरिभों पत्र पलकों नीरव
ला दीयो ॥ घायल मायल करकेवो अपनो

भै॰रा॰
१२५

नैंन खुमारीयें देखत नालीयें डोरेखा वसेला
दीयें॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा तितारा।
रैं दडियें तैं दडियें तैं दडियें मैंनु जादडियें।
न्हवे मोणा मोलडीयें नी चतडीयें छुदडि
यें निकतडियें जीदडियें दीतडियें कुरवा
नडियें नी वे मोणारे। पलके दडियें लटके

९८

दडीयो कमके दडियो झलके दडियो भौंवा
तीरचले दडियो मरटके दडियो हसेदडि
यो लसेदडियो माडे जीय बसे दडियो ॥
रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ मेत्र
सभाल भला मेडे रोकीया मेत्र । इशाकादा
वे नसा आशिक तुहोया जोरवे मेत्र । कैफी

भै॰ रा॰ यत दिवगलो माणा लेवीवे झुचपल मदसा॰
२२५
रीयो होइयो वेकमाल ॥ रागिनी भैरवी ता
ल थीमा तिताला ॥ जानेवाले यारवे जे तूजो
दा तैंडी नाल जींदजोदीयो मनजोणानेडे
हि निवोणा झुचपल कुकदीयो सरसोदेयो
वे ॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा तिताला ॥

९३

जिसदा दिल बेकरार उसनु कहे सने नाल।
कद होंदा करार। भला मैनो आपी समझा
दियो सन मेरा अचपल एक अनारसद बि
मार॥ गरी बोदि आयबुरी होंदीबी नजांण
वे नादानवे नजांन मेरा प्यारा। जिसनू ल
गजेंदी वलो अचपल यही नो किसा सारा॰

भै.रा. रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥ तोईकि

१२०

रीयाद रखा दरदन किता साडे हालदा वेसे

भालन। अचपल फंद विच फंदे गईयां मे

डि सुरज तज तोई॥ रागिनी भैरवी ताल।

धीमा तिताला॥ दिल मेडा खोवे से करा।

टोना करोतो कीकरो। ईस दीन मनी वारि

९४

वे वगदी नाही अवपल किनबल अंषोनी

मेजीयरोनी ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताल

लाल झुमेन अलह मलादा मोजदा दिल।

विच कम समफकै पाल। हाल कल वेरे

न उसकी चीटी अोकान घोरीउ सान्हूवीदे

ष माल ॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिता

भै. रा.

१२८

रा।। ईयाकरीम यारहीम तेडे कारण मेडी
नेगाह वाहीये तोंहोंवी निसार मेडो। तेडि
वें परवाहीयो मो मैंडाजी डरेन्ह वडारा फुर
रहीम वे.। रागिनी भैरवी ताल चीमा तित
ला।। साहब कुमाचा जाणोजी सावंरहको।
साचा सो श्रीर कहेतो क्या माज।। एकमारे

९५

एक ओ रहे एकनकों वो देन सबी देदन भया

वोन साहब ओर के सैन एहवोनू कछ ओ

रक एक कहि एक हूए रहे ओर एक करो

रन देत सोचत सोच करु तो दिल में नित।

यह टानू ॥ एक बीज मे क्या क्या उपजे ओ

रेंसेनि देखडाल फूल फल पात अचपल

भै॰रा॰ कयां श्रौर बखान् ॥ रागिनी भैरवी ताल थी

१२५

मा तिताला ॥ मतवाला जोबनदी मदावे ई

घे रहणा सांवलडा बांके नैंणांवाला चाल

चलत वाला। गज चाला बेसीदी तोनहुना

वो नंद लाला ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला॰

दमका सब जा दमसे ताना दममे श्रानादम

96

मे जाता। अपना नगारमे कोई नही दिसदा

रब सो नेह करो दिन राता॥ रागिनी भैर।

वी ताल धीमा तिताला॥ सनहुरे लोगवा

ननदीया हमी मान करारई। निसदिन

मई कुडवर भइले पीयाबिन मन जोगा।

वा॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥

भै-रा- गावरे कान्ह मनमेरो लीनोरे। अबेन वजानि
१३-
कसी करी मवकव कफकी हो अजान॥
रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥ मेतो
कफंदीवे फेदातेरीयावे मेडेदोणियोवे।
आपन अविवारी नालिवभेजेवे नपेडमे
न कदी तेरीयावे॥ रागिनी भैरवी ताल धी
१४

मा तिताला ।। दिलबर मैंडडी गली लमिक

र फेरा वहाल दिलोदा वारीने किसनु स॰

नावो मेरामीयो चुपरहदे लाचारीयो ।। राग

नी भैरवी ताल यीमा तिताला ।। वसकिती

वे गीदमैंडरीनू सनवे जालिम यार । नेहल

गा करवे भूल कौंगयो मेरामियो किङ्गङ्गयो

भै॰रा॰ वेरे मेओनू ॥ रागिनी भैरवी ताल पीमा ति

१२१

ताला ॥ हमतो तेंडे वेंवणवारे हमतो तेरे दे

खनके गरजी मरजी जेसि कीजिये । करो

जो कुकम करो होवेंदगी हमतो गुलाम॰

तिहारे नजरकों देख महारे । ऐसा नजान

मुफे मजोण दान मोही हमजिंद करे कुर्बा

९४

न गुजरके देखन वारे ॥ रागिनी भैरवी ता

ल धीमा तिताला ॥ नारण साई अलावे म्ह

गा नेनी इस जगमें वारी कोई नहीं अपना

मज वेगारी वोदा अला ॥ वेखोनी यह कोन

होदावे । महीयोदा रखवाला अखी लगा

दा मरमोदा जोदावे । चोरीसो शरमान वेष

भै॰ गा॰ रंजोदा कमली यारपियेगणवे॥ रागनी भै

१७२

रवी ताल यीमा तिताला॥ यारे मन यला य

लले दिमतकतान दिरना झाताके दीम तन

तनूम कुनवे वफाई। टुक खुदासे डरणा

रे मेणायारे मन। दिलब खिन जलफक

मेदे तो वसणमवर मनजका जोर मकुन

९१

दिल ग्रिकस्त। एमविनेन करदे एमकसे

रन कोसे मन्नर मण हमीको श्रामको ह

हे तोगसे एमया॥ रागनी भैरवी ताल थी

मा तिताला॥ जादूगर मनवे मीयो संगा

विरहदीवे जटीयोंदावे मीयो। घोरीन्नूकी

इशक लगाकरकी नवल चला मारगोंगा-

भै-रा- १२२

रागनी भैरवी ताल धीमा तिताला।। प्यारे दे
मन चाव आने रे जो मिलजामी साजु सांझ
सवेरे। सोई साडा साजु आन मिलामी ओम
रतो नाल साजु सांझ सवेरे।। रागनी भैरवी
ताल धीमा तिताला।। सोणआवो साजु मिल
जा साडा राम नहीं विदा सोई बेगमानीडा

100

सोईदे नाल नित अरज मैंडडी असरतो नाल

प्यारा असमाना। होवे खूब परीवे मैं हात

परी नैंनन सोहे नेरे गातपरी। लगे सोसे नें

उें मोतीयांदी माला सो कहि दिलदेवे तूसा

य परी। तेडी भूवे कालीयांवे अडिया नैंना

दी नोंकसे भाल। बिन वेषे कलन पवे जयों

भै॰ रा॰
१२५

भामी लेगा पाल ॥ भैरवी रागिनी ताल धीमा
यार फोंवोवालीयोंवे पगायाथामतेरा मैंने
दीसे। मेहीदे कारनवे छडचला मीयोंरो॰
फा कोन सोहे छेदे वालीयो ॥ रागिनी भैर
वी ताल धीमा ॥ वोमें वारीवा मेवारी मेवा
री मेरा मीयोंवो मेवारी मेरा मीयो। नैंनज

101

टी देतरकस तीरकलेजे कारीवो मीयां। रा
फण हुवाहे फकीरवो सीयालि मेरा मीयो
रागिनी भैरवी ताल थीमा॥ माझुडा वाल
म याणामे तेरी सोमो। कस मनबीदी मत।
मानले धोरीकी हूईयां डूण नेडे ग्रागे॥
रागिनी भैरवी ताल थीमा॥ भवहमनतो

भै॰रा॰ र कलियां फसले नौबहार वे रसभरीये मदि

१३५

योमीबोलालादे चार दाग जिगर पर मली

ए शोक रेग। हजार गुल नैणांदी निरगस

कहू बिन चोरवे ॥ रागिनी भैरवी ताल यी

१०८

मा तिताला ॥ जीवोजोनी षोसो महो रोम

डोलगो वे मसीनां गा पुनदा दिल हूइयां फु

ढीयेवेले वेले खले पाया ।। रागिनी भैरवी

नाल थीमा तिताग ।। कवदा गाह रजोवन ।

दानीके रेग नही मिलदा साडे नाल सइये

दिलबोंदा लेलर नग नैन । मजेमे मेकबी

कोबार नजेकोलीमें भलेगा ।। रागिनी ।

भैरवी नाल थीमा तिताला ।। वेमीये विरही

भै॰ रा॰ दि जानदी माडे दिलांदा लफे नहीमोनदा।

१२६

जोत्त वलावारीवे वलन नदेशो मेरा मीये।

पलडा लडा पकडे मेखडी यानी ॥ रागनी

भैरवी नाल थीमा तिताला ॥ याहर दा मेनू

खावडा भोडा वहारदा इयापार ॥ महकर

हीहेह गूलसनेये पोरी वहका फिरेमस्त

103

हूल चहकरहीहै ।। रागिनी भैरवी ताल धी
मा तिताला ।। मीयां कुड कौं चला नैणी नै
ण तकदी चुपकीती वे । भटपई चाक चा
करी विडेदी धोरी जादि जाणादि नेवाभ
ला ।। रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ।
वे माहीयावे नैंणीमारवे यह मुराद मोरी

भै॰रा॰ वे। वे माही यो आवण आमपुरी मानु होवी

२२८

ने दाद मंगी ।। रागिनी भैरवी ताल थीमा

नेड्डे वेवण दी थांगवे मेरा। वड्डे खाना

री रावोनू वरदांवे मोणारव म्हणले माडी

वोग ।। रागिनी भैरवी ताल तिताला थीमा

आयानी मभालवो रो फण थारा कि इईयो

105

तेन्दू यार। हीरनी मानीउकी पुछदा पीरु
दिलदी डूइयो सार॥ रागनी भैरवी ताल।
थीमा तितारा॥ आज बजाई कान्हबांसरी
निकसत नही मेरो प्रांन सांसरी। बेंसी ब
जाय मेरो मनहर लीनो बहोजात मेरेनैणा
आंसरी। मुरली धुन सुन भई हूं दिवानी वि

भै.रा. कलभई। गडीहीये मेरे फासरी रसिरंग र
१२८
मवस करलीनी लग गई मेरे मन प्रेम गे
सरी। आज बजाई कान्हबांसरी निकसत।
नही मेरो प्रान मोसरी. आज॥ रागनी भैर
वी ताल धीमा तिताला॥ जो मरजी मेंडी या
रहीवो जो सोई सोई मेनु कहणा आरजीम

105

रजी। मावी कहेणा ह्णविरहना थोरी मीयां
मलीनही छुटदगरजी। कासे कहूयार दिल
धरजी दिलदा महरम कोइ नही मिलिया
सब जग देखा कोई नही अपना जो मियां
मोई अरजी गरजी॥ रागनी भैरवी ताल
जलद तिताला॥ विरहेदीनोके मेसदीया

भै. रा. नैंडी फोलां बोलीयां। कवीनां आनमिली र
१२५
बदा डा नही ता राहत के दियां॥ रागिनी भै
रवी ताल चीमा तिताला॥ बला कोई बनला
वना मेनु इशकदा फंदा कीं कर छुटदा
वे कोई नतीनू छवारी वे लडते नेडये मी
यों कयातु दरसवेवावणा॥ रागनी भैरवी

106

ताल धीमा तिताला ॥ मयोणि वेलियांवे उम
नजा वसदे लोग विगोणे । मीत्रतकर दिवा
नीवे पईयां नरपड दिवो मीयां रव करेन॰
सी मतडआवे ॥ रागनी भैरवी ताल धीमा ।
तिताला ॥ केहा जाउडा कीतावे दिलतुक
र दनजांणें दरक दरमीयां । वेवणानूं मू

भै॰रा॰
१८॰

रत्नाकजी मेरा इश्क लगा मनलीता दिल
नूं॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥
वल उठ करदी दनिजार मियां दिदनिजा
रेदा श्रोवदा जोवदा मियां। बाग बहारोनी
वे वेखणावलीये हो मीयो मेंडा दिलबर श्र
वदा जोवदा मीयो॥ रागिनी भैरवी ताल

107

धीमा तिनाला ॥ करना होयसो करले प्यारे
नहिलो जनम जात दिन रे नम वारे । सवारी
उमर बीतजइहे छिन पल मोह विन सहो ॥
जारे । धन जोवना कछुथिरनहीरे चेतना
होतो चेत सवारे । मन रंगसभुमत भूल ज
गत संग काहेकु सिर परलेत नभारे करना

भै॰रा॰ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ।। माघीआ

२५२

मेरा ओर निभाणा हम परदेशी मलक बि
गाणा । इस गलियें विच ओदानि जो दाशे
री अपना सो अपना बिगाना सो बिगाना ।।
रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ।। देख
दिदार यारादा पर बेले परावाय लेपयों ।

108

खिदा खिरा पयचान पीरी मीयां मोई गनि
मत ईमान प्यारोदा ॥ रागिनी भैरवी नाल
नितारा थीमा ॥ किजाल मांदीवे मीयांजो
कीमदि यारीदाले विमडडे नाल नजानूं
नावन जानूं किकरवे । म्हावे खिं तेडा ।
मोबरीयां मैंडी जाने जिदडी दिलवोनी मै

भै॰रा॰ डाजी डेरे॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा तिता॰
१५२
कदी मिलजाना यारन दोणा नज कारण
ग्रत सावणाणा। जोगन लिखी मे ङोनप
गी सब संदर रूप निमाणा॥ रागिनी भैर
वी ताल थीमा तिताला॥ जाड डाकमाल
की नवे इसक लगा मेंडाजीन रमेंदा हाल

107

जिगरपर बीनावे ॥ रागनी भैरवी ताल थी
मा तिताला ॥ कोन गत भई मोरी आनन मि
ली पीय मोको । उन बिन कलन परत पल
छिन कैसे रैन बिहाय आ नन मिले पीया
मोकों ॥ रागनी भैरवी ताल धीमा तिताला
मारी चलाको छोडी चलावे मजनु इश्क

भै॰रा॰ गरीबां कीं मीयां। ईयाबिदा जद सुनमेरी।

१५२

दा हे फिरयाद मेरी मीयां॥ रागनी भैरवी ता

ल यी मा तिताला॥ बिंदा दा पर बेलावे भला

मीयां वे सानु चाकचाक जबां भांदा कोईवे

आदानी जांदा साडा ज़रवे शोरी लगी म्हो

बतपाक॥ रागिनी भैरवी ताल यी मा तिता॰

110

ला॥ पचत्व रेगम श्रेगमसन गाईये गुनीयनम

रजन नरी काईये। मनमेमसकोचन नलाई।

धाकिटक थुमकिट तक गिदिगन धेतलो

धेतलो धेतलो धड्दी मद्दद्दद्द दीम चत॰

सारेगमपधनीसानीधपमगरेसासारेसारे

गरेगरेगमगमगमपमपमपधपधनीध

भै॰ रा॰ नी धनीसा॥ रागनी भैरवी ताल धीमा तिता॰

१४४

चतुरंग सबे मिल गावो गुनी नरना देवट

ख्याल सेरगम द्रमो देयनी देदेया द्रमो दे

देया। धध पपपप धनी नीनीनी सासासासा

नीनी धधपपममगमरेसा त्रकटतकता॰

धकटतकतायागेदीनतानानधात्रकटध्र॰

कटथेनानानाविकक्रकेकेयानाडायाया
थीयायानाडयानादीयायानडयानाति।
दिवनेया॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा॥
केहि छुडी गलो करदा माडेनाल मीयो
वे समीतो नालव तेडे मीयो। लकाविना।
होरन दिसदा विनवेवि नाही चैनजीयो।

भै. रा.
१४५

रागनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ होवेढो
ला मनपर चोटीयें। आवे लडेंदी मोचे
मकोंदी चित चटजादीयें होवे ढोलाम।
रागनी भैरवी ताल धमाल ॥ जिस घडीतें
डे फंद विचपईयां जवसैयां लगा तेंडेयां
न। जबतो तोरेदावमें जायके फसे सैयां

112

द हमग्राहके नाकनाही कैसे करे फरीग्रा

द॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा तिताला।

ग्रायानी मेंडा प्यारा रुम रुम रुम रुम

के वाला मोहना मोहना नी सावलडा। सा

वली सूरत साडे मनपर बसदी मनदीग्रा

स पुजायानी प्यारा रुम॥ रागिनी भैरवी

भै॰रा॰ ताल धीमा तिताला॥ द्दना द्दना त्ढम ननउद

२५६

नत्ढम् ननननन उद नत्ढम् ननननन ननन॰

ननत्ढम् नाद्दद्द नदानि नदानि ननत्ढम्

द्दद्द नदानी नारे दानि नारदानी नारेदा

नि त्ढम् नन उदन त्ढम् नन उद ननननन॰

नुत्ढम् हेदर चन्बरंग बनायके रागरूपा

113

सिरुपध्रतित्रिवटेतिलानागोसरिगमचत्रः
रेगधाकिटतिकत्रिकटतकधुमाकिटनगा
दितिकडानृगिधिगनधात्रम त्रमननननः
नत्रम सारेगमधपमगाधनीनीधनीनीसा
गसानीधपमगसारेसारेगरेमगरेगमप
धनीधनीसानीधपमगरेसा॥ रागनी भैर

भै॰ रा॰ (१४७)

वी नाल थीमा तिनारा॥ दोनेएा देनी जागे
वे मणंइजात राजी रहणे मेरीये। नैएा॰
नमाडे वारीवे वरकीदीनोकोंवे मीये ३
धाकदे नाल माजु वहणा। नशोरी नमा
न भलावे जीतरसोंदा नेहलगा करकी
माज दहणा नेरे॥ रागनी भैरवी ताल॰

114

थीमा तिताला ।। बालम याणा नाल साडा
दिल लगीयांवे । कमलीने आपिलायांणि
पछतावणा नेहु लगीयांणि जाल ।। रागि
नी भैरवी ताल तितारा थीमा ।। वोमें किक
रो मरजी ज्यौ सोई तेरी मरजी नवां जह॰
जोत दोल सोई मलामते मेरामीयो आपा

भै॰ रा॰
१४८

करेंगा तेरी गरजी॥ रागनी भैरवी ताल धी
मा तिताला॥ आदम आदम आदम दमदा
इस दुनीयां विच काई नही कमदा। नहि
भरोसा घरी पल छिनदा नचेन दिलजो॰
गी होकर रमदा॥ रागनी भैरवी ताल धी
मा तिताला॥ चल फिर करदी दनिजार॰

115

देखो दागांदा महरम दमदी। मीरांवे ग

जरी बुजरान ग्रोदरींदे भालपरींदे एक

नजारदे॥ रागनी भैरवी ताल धीमा ति

ताला॥ माते नैंणांदी भलीयांवे मीयां। नैं

ण लडेंदे लड लडजांदे गमजां माते नैं

णांदी वालीयां। उठ घोरी मिलजावतच

भै॰रा॰ लना भले बुरेदि दिदवी करवी करना ॥
१५५

रागनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ नेह

लगाकर किन रसोंदा देवी तेरी बालन

दाना । इस गलीयों विच आण जाणा ।

कुछ तो समझाया नदोना । बागा वहां॰

रेदा रामकी हन तो सोणयो रयो बे तेंडे

116

कारन। चमन बनाया वलशोरी मणणा
वीयावे।। मबुवाकीडडारीकोयलबोले।
कोयल बोले शब्द मनावे पछवकीनेरी
वारी। मनबटा बिछुवा पायल बाजेच
लनेकी गतिदीवे।। रागनी भैरवी ताल
थीमा छप।। देवि मोरी गइयो मयीक

भै॰रा॰ लावन गावीनीरी वर जोरी मोरी दथरस

१५०

चाबिनापर हर वालि नीरी ॥ रागनी भै

रवी ताल जलद तिताला ॥ आवतही देग

गायमो पीयमोरे । अनगीरे ननजारे ॥

रमपागे होबन लागी मोर ॥ रागनी ॥

भैरवी ताल झप ॥ तेनाते दना नन दि

117

रना नदर दानी। नादना झरी मदा मदीम
ननन उदन निलानान दिरना देरदानी
रागनी भैरवी नाल थीमा निनारा॥ अरज
करी मान मान मोणा नाल मैंडी। जिम
दिन मोला मैंडा हाकिम होवे फजलक
रीनो मैंनों बी निहाल॥ रागनी भैरवी ना

भै॰रा॰ ल रूप ॥ यारो सुनी तेंडी भवो कालीयांवे
२५२
चेदा जैड़ तैडे मावबेवावणावे सुरतदा ।
जिन करो मान ॥ रागनी भैरवी ताल धीमा
तिताला ॥ तान दिर नदेनी दीम दिरना दी
म योर मलालि यलालि यली यलल लले
यितिलिती लानाददतिलातालले तिली

लाना नदेना। खिदवाहु दर्शिराहाके आ
मी दीरवकील बलके फमान दारदोमिली
ला निली नाल नललले॥ रागनी भैरवी
ताल थीमा निताला॥ गावे काजी कजा
ककी करवांवे। इमविडादीवे मनसा।
गावे मीयो गंफा कोंलों मे राजी॥ रागनी

भै. रा. भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ दिलबरी यो.

१५२

नालवे मजाणा यारा मेनो फंदी यो वेदी

यो तेरी यावे । और किसनु में जाणदी वी

नाही यो वे तेरी तो शरमादी यावे ॥ रा रा.

नी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ आगमा

नी यो र प्रेमे तेंडे गोल रती ॥ तजविना

119

मैनु कलन पईंदी आयरती ॥ रागनी भै
रवी नाल यीमा तिताता ॥ पमनु भदयो
भवकालीयां नेह्वार वाल सोणा मराव
विवा करही कोनो वालीयां ॥ रागनी भै
रवी नाल यीमा तिताता ॥ मीयां मेनुछ
डकेया चला नुणी नाल नकदी नुपकी

भै॰रा॰ तीवे वट पर खिडे चाकरी करी करदे शो
१५२
री जो जो दावे ताडा भलो ॥ रागनी भैरवी
ताल धीमा तितारा ॥ चक मानुकों दे
दाजवावबे मेते मर जुकीते ञुशेरीव
120
बीते जानद गुनामया मेरी उमदी झीती
लगारही तेनूकी होय घावाव ॥ रागनी

भैरवी ताल धीमा तितारा ॥ आदमी बन

आया टोला आदमी बन आयावे । हाबिल

काबिल किसका बेटा आदम किसीदा॰

जायावेआ । बलिहारी मै जिसजाउ पर

दा दा गोद खिलायावेआ ॥ रागनी भैर॰

वी ताल धीमा तितारा ॥ तकेंगे रोदीया

भै-रा- १५४

नी हीरे रांजनो कर चाकर तेरो। तनफक
दा डावदा गाहक घोरी चषरह दयाथीरे
थीरे ॥ रागनी भैरवी ताल थीमा तिताल
चाह करे वाकी चाकरी कीजे नाह करे वा
को ना मन लीजे। आचवो चाहेना को आप
ऊ चाहीये आपहन चाहेनाकों आपऊन ।

12

वाहीये॥ रागनी भैरवी ताल धीमा तिता॰
प्यारे भोरही गाइ स्याम सुंदरनैं बंसी बजा
ई। सप्तस्वर तीन ग्राम ले मधुर मधुर येव
न तरह लाई॥ रागनी भैरवी ताल धीमा।
तिताला॥ श्री माहीड ढगा वजार दाश्री मे
नेरेदी तेंडी श्रामा तेंडी ग्रमानीड नसी।

भै॰ रा॰ शोरी दिलवरह जद शोरदा॥ रागनी भैर
१५५
वी ताल पीमा तिताला॥ लपाए वसंतल
म मकदी जंग प्यारे नेजामदा नशोलीमा
मह हदयाइयामाई। जदवेली चढीचद
रवासें मदारंगीले शेब्रुया मोराई॥ राग
नी भैरवी ताल पीमा तिताला॥ यारोदम
122

अदम विचआया जद आदम नाम धराया

आतेही जगविच नामधरायो खावेडाव

दे फल पाया। गदरी बंध बोकरावे शि

रपर दुनियादार कहायो। दुनियादारि

लावि प्यारि भारि बोज उठाया गैठरि फे

क बोकादि शिरते जाहाके नहो समाया।

भै॰ रा॰ रागनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥ मातें नें

१५६

णा बालियांवे मियांनें णा लडांदे लडभिड

जांदे गमजां। घोरी न्हैभी नो रती समझमी

योकी इश्यो उणान्हूं विरमातें॥ रागनी

भैरवी ताल धीमा तिताला॥ बालिनी ज

123

टिवे नैंडी बालियांथा जिंदबालियांवे। म

खडा तैंडावे बागबहारां नींवे संदभीनी नो
डी पटीवे तेंडी वाली ॥ रागिनी भैरवी ता
ल थी मा तितारा ॥ समक मियांवे दिलबर
मेणाहावे अशाकदियां हांहां रमफां । शो
री रमफ नजारे वाले मैंभी मस्ताक उठ
दियां हांहां रमफां ॥ रागनी भैरवी ताल

भै. रा. धीमा तितारा ।। प्राणि मैंडा नाज करेंदा ना
१५७
जके नाज मियां कम कम । हराव पेचव
बीजरीदा धोरीनू जेवदे दा कम कडेदा क
म कमीदा कम कम ।। रागनी भैरवी ताल
धीमा तितारा ।। जानैं वाला सौंणावे मेरा
124
वी माथा निवाहीवे मैंन वलि चलनाल मे

णावे। तज जेहा मेन कोई नहीं अपना मैं

डा मोणा किसनु सुनावे माडा हाल सोणा

वेजो॥ रागनी भैरवी ताल धीमा तिताला।

तूं आपी नाहीं मिलदा वे भुल गई सयमा

डी सजना। आवडी यो मानु मिला देवी

नाहीं यो आपी सरमो दियां वे भुल गई यां वे

भै॰ रा॰ रागनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ पाल
१५८
ना गाढ्हे रेव छैया । अगर चंदनकी पल
नौं बनाउं फुलत क्रस्न कन्हैया । मतियन
को पलनौं बन्योहे संदर रतन जडैया । ह
रदासप्रभ पलना फुले जसुमति लेत
बलैया रेव ॥ रागनी भैरवी ताल जलद

125

तिनारा ॥ मेरा राजवेमी वालावे काहेके ।
प्रीत लगाई । प्रीतलगाय चले मधुवनके
छाडन लाज नआई । दौलत छोड डनि ।
ये छोडि छोड दिनि पातसाई ॥ रागनी भै
रवी नाल थीमा तिनारा ॥ पार करेवे बेडा ।
पार करेवे बेडा बी औगुण मावे दावे । मा

भै॰रा॰
१५५

वत सोई तैंडि आस पुजामि वो हरगाहे कि लाज करिवे ॥ रागनी भैरवी ताल तिताला ॥ यार खड़ावो दिलदार खड़ावो हूरतदा मतवाल खड़ाहो । तैं मेरापारा दिलदा महरम तैंडे मिलननू मसताक खड़ावो ॥ रागनी भैरवी ताल तिताला जलद ॥ लैली लैली

१८

करदा फिरे मजनु आपी लैली हो रहा। आ

पि लैली आपि मजनु आपि लैली दि वेरियो

मजनु ॥ रागनी भैरवी ताल जलद तिता॰

मेरे पामरी पियान आए। क्यारे करे करे

कछु वसन हीं आवे निकसत नहीं जिय

सामरी ॥ रागनी भैरवी ताल जलद तिता॰

भै॰ रा॰ कईयो रमफा लाईयोवे मैंतो मेरा महरमया

१६०

र सिपाई। रैन देहा मैंतो ध्यान लगाउंदा या

मरा लगाहै तज तोई॥ रागनी भैरवी ताल जलद तिताला॥ भेंडा हाकम कूईयो।

माडिकी तकसीर मैंतो कमलिनी कूईयो

माडीकी। अम्मानि मारेवारि वाहूल फ

127

डके मियो वीरन देदा मान्नू यीर ।। रागनी भै
रवी ताल जलद तिताला ।। मैंनो नैंन्नू ओव
दि रहदी रोकणावे । छुछदी फिरें दिवारि
वे मिलदा विनाहीं मेरा सोणा सदके कि
ति जिंद मेरी ।। रागनी भैरवी ताल जलद
तिताला ।। वलो यन हमरि वारी रे हमरिवा

भै॰रा॰ रि तोउन कुं कलियारे। लेहगा नेंडा चुमतु
१६१
मेरा पुरपटनैं दिसारी। अनवट गाछादे बि
छुवा मेंगादे पायलकी भनकारी॥ रागि
नी भैरवी ताल जलद तिताला॥ फूलबगि
यो में कग गुग जाऊंरे। बेलचमेलिकामे
वगालालगाडे चुनचुन कलियो बनाऊं।
128

रागनी भैरवी ताल जलद तिताला ।। मैंनू
वस किता निवे नैंणा वाले मेवा । छोरी
दा दिलवे माल किता इश्क लगाय म
न लीतानी ।। रागनी भैरवी ताल जलद
तिताला ।। आवोरे मोरे मईयो डोलियाले
आव । चोक पुराउ मेंगल गाउं पियामि ।

भै·रा· लनको चाव ॥ रागनी भैरवी ताल जलद ।

१६२

तितारा ॥ ऐसी तालव सोणा दिदारदी । जि

न गलोंथे वारी छुपके माधौ आसि चाकर

तोडे प्यारदी ॥ रागनी भैरवी ताल जलद

तितारा ॥ जानि यार गवक नजावे । हू

ब गइयो माडे दिलविच सूरत जोबनजा

129

तैहे राव अवरु बलान जावे ॥ रागनी भैरवी
ताल जलद तिताला ॥ दिलनु कैसे समझा
वे जानि यारदी । नैंह लगावारिवे नजर न
छोदा मेरा मियां महरम नसाउडी नपाई ।
मेडा यारदी ॥ रागनी भैरवी ताल जलद-
तिताला ॥ छोडचलावे वदनामि करके ।

भै॰ रा॰ घोरिघोरि ओदा वारि छिप २ यहदा नाहक
१६२
नैंहडा लगामी॥ रागनी भैरवी ताल जल्द
तिताला॥ हमे कान्हैया को मनावोरे मगह
री गवारन। हमे कन्हैया जडी कदमकी छ
ईयां मुरली बजाय मनमोहोरीम॥ रागनी
१३६
भैरवी ताल जल्द तिताला॥ दादवे मेंडी दि

ल भरेंदें दा कावी तो मैं ला मेरा काजीवी हो

मी पंडकरा फोरी याद वे ॥ रागनी भैरवी।

ताल जलद तिताला ॥ सोणा वीरे बालीया

नी वो मियो। औन्हें को गलकरि नाल मेरा

रंगदे हालन्नु मैंनु हस हस सावबे वेला।

मि सोणा वीरे बालीया णीवो मियो सो०॥

भै॰ रा॰ रागनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ रबफाकि
१६४
रोंदी पहि गुजरानवे। भलि भूरि शिर उपर
जलदे घोरि गरिबों दामानवेर ॥ रागनी भै
रवी ताल जलद तिताला ॥ की हुइयो माडे
हालदि ततवीर मोन्पावे मियो। इश्कोंजा
लबारिवे किकर छुटदा हाल नहीं तावि

131

रह तकदीर ।। रागनी भैरवी ताल जल्द ति
ताल ।। मैं तूना बिमाणा रोंफोवे मैंतेंडे मद
के कितीवे गुमानीडा । तिवे भरके तिभा
ईकेला रोंफणा बोले हो लगदे तिवे जिगार
विच विमारणा ।। रागनी भैरवी ताल तिता
ला ।। केवर जोर लगणा नै तिदा । उठ दियाड़

भै॰रा॰ कोवारिवे कुकों नैनावाले वमनहीं चलदा

२६५

दिलभर यावदा ॥ रागनी भैरवी ताल जल्द

तिताला ॥ विरा वेवेदावे जालमजी । शिव

नेरे विरावेयवाया आया भलावेची । पचरे

गि शिववित्रा सोहे विवरंगि वाइमाला प

क रंगिलाखवपटका सोहे लालाखवडा मतवा

137

ला। कोनदा हूंदा वाला मोतियांदि माला

१ मवनरी मन भाया॥ रागनी भैरवी ताल

जलद तिताला॥ सोवत नदियो जगाई छ

टरियो पिया बोलो नांही। मगरि रैन मो

हे तलफत बीती मरद्ध खाय कटरियो॥

रागनी भैरवी ताल जलद तिताला॥ दाग

भै॰ रा॰ दिलो चित देगयो जानि। जेगल ढुंढावारि
२६६
वे वेलावि ढुंढा मेरा मियो ढूंढत ढूंढत
भईहूं दिवानी॥ रागनी भैरवी ताल जल्द
तिताला॥ तेरे जोबनानें धूम मचाई। स
खि तेरे जोबनानें धूम मचाई॰ उमरो जोब
न सावन भोदों नदियो जोर वहाई स॰॥
133

रागनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ कहो ॥
कहे मोरी आली नहीं पाप बनमालि केन
केज बन बिचन डोरत फुंदत भई हुं बिहा
ली ॥ रागनी भैरवी ताल जलद तिताला
रो केउ मनाव चलियो हीर अकेलडी म
नदी मरादे एजावो नि मोई मेंडे रबाजिथे

भै.रा. गे कहाँ तिये होवे माडि मैलडी ।। रागनी भैर
वी ताल जलद तिताला ।। नैंएं झेताल गाय
कीहि वीर आइरे । मालूम रम के हाभि झेगि
या शिरकि गागर कहितोर आइरे ।। रागनी
भैरवी ताल जलद तिताला ।। एमैं कैसे के
मनाउ अपनें बालम क्रेंवो तो रुसो हजापवो

१६८

134

ग सोईजाय। बालिवेश भोलाई शोकरे गजों
ज्यों मूल फाउ त्यों त्यों डलजोईजाय॥ रा
गनी भैरवी ताल जलद तिताला॥ होवे दि
लबर मैंडडी गली कर फेरावे। हाल दि॰
लीदा वारि किसनू सुनावे मैंडा सियो ब
प रहदें लाचार भलावे॥ रागनी भैरवी।

ताल जलद तिताला ॥ गागरिया चटकाई
राम मइयो मोरिरि। कहत लेलि मजन्हूंकि
कसम नंहीं त्वाने कि वहीयो पकर फक
कोरि मइयो मोरि मैं टाडि करत निहो॰
रिरि ॥ रागनी भैरवी ताल जलद तिताला॰
माफ जिमे काहियो मेरो जैसे जैसे किम॰

135

ना। प्यारे बिनामानेको इन सके प्योकेमि

लविहौं तिसना॥ रागनी भैरवी ताल ज

लद तितारा॥ कैसैंके समझाउं अपने।

मोबलक्के ज्यौंज्यों बोलाउ त्यौंत्यों रुसो

रुसो जाय। रसिक रंग पिया मनकेभ

वनवा उनबिन जिय तरसाउं॥ रागनी

भै॰रा॰ भैरवी ताल जलद तिताला ॥ पनिया भरन

१६५

कैसें जाउं मोरे रामा सिरतें उतालिनि गग

रिया मोरि रामा प॰। बाट घाट मोहे रोकत

टोकत काउ किन मानु मैंतो होउंगि तोरि

रामा पनि॰ रागनी भैरवी ताल जलद ति

ताला ॥ महबूबों दि गल मानले जानिमेरा

136

वे। मवडु नेडावारी बागावहारो शुभरंग

न् त्र पचानलेजो॥ रागनी भैरवी तालज

लद तिनारा॥ देगया मोहे मैंनमें गारी र

मकि रसिली पीतकि प्यारी। लकफुप

केवो नो दो रोहि ञावे सनों मोवियो यह

विनती हमारी। मरारे व्रजमेंहै वो मोहन

भै.रा.
१७०

शोकरे देखा चतर बिलारी ॥ रागनी भैरवी
नाल तालद तिताला ॥ आमिल मैंडडे नाल
मोहनावे । तेंडेकारण जिंद तपदि रहंदी र
शाक तुसाडा पाल ॥ रागनी भैरवी नाल ज
लद तिताला ॥ जाडडारा जालम जोर दिखा
नि रहंदी । किसरे सियालिनें जाडडाकिता

137

रोकण हिवदी ओर।। रागनी भैरवी तालज
लद तितारा।। आनंदि माई पीयाकों देहो
मिलाय। नैंन विधावे वारि जेबडे राजादिन
दिन जोत सवाई।। रागनी भैरवी ताल ज
लद तितारा।। महबूबांदि गलों मालैंण
जानिमेरा। हम हम सावितोडा भला मैंनु

भै॰रा॰
२७१

लगदा। भावडा तोडा वारिवे वागवहारे
दा मियो पचरंगागु हे पचानले जानि मे
रा॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला।
मेराणावे मियो कि कुइयो माडे दिलोदि॰
ननवीर। इश्राकदा फंदा वारिवे कूटदा
नाहें मेरा मियो हाल नहीं नावीर॥ रा

138

गिनी भैरवी ताल जलद तितारा ॥ जान बे

दिल रोका भलावे मैं तु हिरनी मानीन्ह आ

मिल बिडेन्ह। अब रा संभालवी मालबालि

न्ह: बडी बडी अंखियां कजरा मोहे छूघटमे

मसकानी ॥ रागनी भैरवी ताल जलद ति

तारा ॥ है कोई राम दिवानि चलो पल छूट

भै॰रा॰ वारि। आगे चलि जैमें मेगल हाति बीच में
१०२
मस्तानी॥ रागनी भैरवी ताल जलद ति॰
अखोनिकों कजरा देके काजियरा मारडरी
हों। बडि बडि अखियन कजरा है तिरीछि
१३९
त बन मोहे मारडारी हों॥ रागनी भैरवी ता
ल जल जलद तिताराः॥ मैं वलन रहिली

मगवारा मन जरलागी । मारीरे ममगाई ब
हियेंरे लचक गई छुट परे मोरी खेगुरियो
कोन गवारि खेगुरियो कोन गवारा मन॰
रागनी भैरवी ताल जलद तितारा॰ प्यारी
प्यारि वतियो करके जीवरालो भायलिनो
लाव करि पिया एकन मानि मनभाव

भै॰रा॰ होके बुलाय लीनो ॥ रागनी भैरवी ताल
१०२
जलद तिताल ॥ मौलासे मैं मगदी रह
दिश्र मानवे। भला जानवाले तेरे मरम
दिश्र मानवे। उठ गया वारिविष वरमालि
ती मोलावे श्रोनवे ॥ रागनी भैरवी ताल
140
जलद तिताल ॥ बडी बडी श्रोवियन कज

गादिनो घुंघट में मुसकानरी । गोरे मुख

परबेंदिया मोहे घुंघट मे लजानरी । रा

गनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ मस्ता

न कोई पूछैवे यारनि जिसनु इशक ।

जिसनू कनाणाकेहा घायल मायल फि

रै दिवाणी नैन मोड़दे नाल रनेवे । लगा

भै॰रा॰ इश्ाक छुटी ममलत विमरगइयो पैजेम
१७४
नै जिनान्ह इमक तिनान्ह कनणकेहा ॥

रागनी भैरवी ताल विमटा॥ वैमी मनते
ही श्रेग वाभे लग गईरे मोक्के मनायदेवे
मी मनादे माव वेषलादे छेदा वन दोरी
मैं गइरे॥ रागनी भैरवी ताल एक॥ रैन

काहि जागे तुम आए मेरे बालम । सगरीर
यन मोहे तलफत बीती भोर भए गएला
ग॰ रागनी भैरवी एकताला । केसी बाजि
बेसी जमुनातीर । मुरलिकी धुन सुनभ
ईहौं बावरी सुध बुधाई है शरीर ।। रागनी
भैरवी ताल जलद तिताला ।। छेगीयामो

भै. रा.
१०५

रि मशाक गई साज। इस झेगियोमै लाल-
लगो है खुबान गावो हाय ब्रज राज॥ रा
गनी भैरवी ताल जलद तिताला॥ सेगसो
वे मोरी बलायरे बलम तोरे। उच अटरि
यो चंदन किवारियो देखन जिय अवरा
यरे बलम तोरे॥ रागनी भैरवी ताल।

जलद तिताला ॥ गवना लेआए रे पिया मोरे । चार कहार मिल डोलिया लेआए आए बराति लेगए ॥ रागनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ कन्हैया मोरे जमना में कूदए रे । कूद पताल काली नाग नाथ्या फन पर नृत्य करे ॥ रागनी भैरवी ताल जलद

भै-ता- तिताग॥ मुरली वाजीरे कन्हैया तोरी। मोव

१७६

ली मूरत देख सखि मन भए राजिरे। जहा

पनात जुग जुग जीवो रैयत राजीरे क-। रा

गनी भैरवी ताल जलद तिताग॥ व्याह

न आया माला डालि वनिकावन्ना। मुम-

कना शिरमेहरा विराजे हीरा लगे मोति-

१४३

१४३

पन्ना। सोणा बेदरदि यारवे माउतो रहदा

नेडा प्यारवे। तजविन थोरी मैंनु कलन

ही पउदी माडी लैंदा कैंा नहीं सारवे॥

रागनी भैरवी नाल जत॥ जबतम हम

ने एक सरूप हमरा तुमरा एकही रूप

जब श्राया काया में सोसा तुम भए ठाकुर

भै॰रा॰ हम भए दासा॥ रागनी भैरवी ताल जत।

१००

कहत प्रहलाद पिता सों मेरे तो नाम आधा

र। आगड़ बगड़ पांडे कहा पढावे हम तो

पढ़व राम नाम। बिन हरि भजन मझ।

कहो कैसें जगजीवन विश्राम। पड़त प

ढावत पंडत याको कहो न्टपन सो जाय

144

सबलर कनकों पढवो भलानों तासिरदेंग

बजाय। इतना बचन सुना ज्यों भ्रमर पतवो

धो खंभसो लाय। खड्ग निकास ठाड भ

यो ऊपर कहों हरि तेरो सहाय। ओधर पी

ता सुजानहीं तोकुं जल थल व्यापत राम

सोमें तोमें खरग खंभमें को करसके संग्राम॥

भै॰रा॰ नरसिंह रूप धरयो हरि जबही निकस्यो खे
१०८
भा फार। हिरना कुश को उदर बिदार स्
रदास को उबार॥ रागनी भैरवी ताल जत
मदमत बारो पिय जागे न जगायरे। पई
यो परत हूं बिनती करहुं जागत नहीं मई
यो मोरे जगायरे। सोवत है सावनीदन स

145

रव नर मोहन गर बोलगन मोरा जिय नर

मायरे ।। रागनी भैरवी ताल जत ।। मोरीश्री

नकी रीत न जानिरे । सगरी रयन मोसेन

लफत बीती मइयो नदर दपहानिरे ।। रा

गनी भैरवी ताल जत ।। ह्य मारि मोरी

मइयो विसराय डारीरे । उनसों मेरा नल

भै॰रा॰ गतहै चरनकी मेलेहौं वलहारीरे॥ भैरावी

२०५

रागनी ताल जत॥ कैसे नप्रीत लगाई मे

रा सब हैार पियारा। प्रीततैं संसार बनोहै

प्रीत छाड कहो जाई नहीं वासो छुटकारा॰

1A6

विरह अगनमैं जरतऊ निसदिन वाहीतें

चिनगी लगाई जो दिनहो अंगारा। साह

व आपवचो नही प्रीतमो प्रौर कैसें वचारैर

हे कोउ कैसें न्यारा। आद अंत सब प्रीतमे

वोयो फेर यह कैसें बुराई अरे मावारे मा

प्रीत लगाय मावमूंद काजम पीउजो क

रत निठुराई मेरी करो सहारा॥ रागनी भे

रवी ताल जत॥ योका योंकी जनमजात

भै॰ रा॰ मन जाग कहा रहा सोई रे। चार दिनाकी जी
१८॰
वन जगमें अमर भया नही कोई रे। अपनें।
अपनें सबब स्वारथके मातपिता सुत जोई
रे। सोते इनकी संगत करके व्रथा अव
स्था खोई रे। येह सब सपनेंकी संपत छि
नमें जात बिछोई रे। तासों अबही चेत बा

वेरे उरवहीये मिल यो ईरे। गुरु कृपा करने

हे बतायो रावो नक्कक्क गो ईरे। छवनाय

क हरिनाम भजे विन मुक्त कबहुं नहीं।

होईरे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ कजर

वादेके हम पछुतानी। पियबिन कौन।

सिंगार कजराकौं जब हममी वईटानी।

भै॰ रा॰ एक दिन श्रेविये मोरी ब्रिजवारी श्रोषय जा

१८१

नके कजरादी नातिडेपेसासरि सानी। क

रिएले उरिये कों कर भरिए जीयही जिय॰

में मानी। काजम पियाके अपनें में पाउ।

मेरे गुण श्रोगुण जानी॥ रागनी भैरवी ता

ल जत॥ बैटरहेते नरहे ढिग बैठे जोक

148

ङ्गे जाउं तो आगेही धावे। सोपरङ्ग सपनेंमें स

तावे चोक उठो हम केट लगावे। मृन रङ्गे

तो रहे घट भितर बोल उठो उरमोह समावे·

सेग मगरार रहे निशि बासर होत पभातो

होतन आवे।। रागनी भैरवी ताल जत।। मे

रो मन लागो राधारवनसों। जगमें औरक

भै. रा.
१८२

छू न सोहावे छोडी प्रीत सबि और सबन सों।
तन मन धन अर सब कीनों नेह लगायो सु
न्दर घनसों। हरी हरी पल छिन निसदिन
रस रटना राधाकृस्न कहो मैं प्रनसों। वह वृं
दाबन वह बंसी वट वह जमुना तट कुंज
न बनसों। वह गिरि गोवर्द्धन तरहटी मान

मी गंगा राधा कुंडन मैं। वह नंदगाव वहव

रसानैं चरन पहाडी वह महावन मैं। वह

गोकुल है धाम हमारा वल्लभ रंग रंगयामैंरे

गन मैं॥ रागनी भैरवी ठुमरी॥ परबत वो

म मेंगाव मोरे बाबुलनी कामडा छबा वो

री। मोनादीना रूपादीना बाहल दिलदरि

भै॰रा॰ १८३

योवरी। हाथिदीना घोड़दीना बहोत मन

चावरी। डोलीयो फंदाय पियाले चलेहै त

व संग कोइ नहीं आवरी। गुडी खिलौना ता

कमैं रहे गए नहीं खिलनकों दावरी। नीज़ा

मदी डोलीया वहियां पकर चले पवि होंनी

के पावरी॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ मेरो

मनडोलगो हरि चरनन सों साखि अब मोपें

रहो नहीं जायरी। निशावासर मोहे कलन

परत है बिन दरसन तरसायरी॥ रागनी भै

रवी ताल जत॥ मेरी लगन लागि प्रीतमसों

सजनी यह डाव सों मैं जाय कहों। निसदि

न मरके कल न परत है बिन देखे पीयाके।

भै॰रा॰ मे कैसे रहों ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ तन

१०४

मन धन मोहन पें वारों मोहे कुंडन बिन क

छुन सोहात रे । घरी घरी पल पल छिन॰

छिन निसदिन जग सम सखि मोहे जात

रे । कुंडल चमके वट भ्रकुटी मटक अत

मकुट लट अटकी हृया पीत पट बंसी वट

कट जमुनातट मधुर मुरली सुर सुहाते रे।
श्रवण सुनत सुर नर पशु पंछी मोहे जमु
ना नीर उलट बहत भए ऐसी बंसी बजात
रे। राग रंग सुघंग अंगमें बजात सुरन से
पूरन गत मत सो राग सागर प्रभु आनमि
लो हरि नाम बिन जगनहीं भातरी॥ राग

भै. रा. १८५

185

नी भैरवी ताल जत ॥ तुम जागो मोरे बालम रयनीया बीती जातरे। भोर भए नैहरको जाना छुटीहै मोरा साथरे। करो चैनकी रतियो बतियो मिलेन पेमी जातरे। अब मरबीते। मिलन नबनीहै होजइहै परभातरे। कहत कवीर राम सुमरन करो नातो फेर पछुता

तेरे ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ बंसीयोंका

है कै बजाइ सोवत जगाइ मोरी नींद गंवा

ई। चौंक उठि घरमों चलि जल उमगे दोउ

नैंन ऊंज ऊंज पूछ सखिकौं न बजावत

बैन कोउ तो देहो बताई। बंसीहो रंगील

गि बैथन कियो शरीर नंद महरको ला

भै॰ रा॰

१८६

186

डलो हरे हमारा पीर। यह ठाव महलों नजा
ई एक कहे सनरी सखि छोटी जातअही
र कहवे को मन मोहना है गोबडोवे पीर।
हर हर करे छल हाई। मोर मुकट सिरप
र धरे गर डारे बन माल त्रिभंगी जाड भरो
दोवन रूप विशाल। ढूंढे इनही पाई मों

किन जाउंपाउं पणामकौं दीज्यो मोह्न बताय।

दास नारायण चरण नर रहे सदा लपटाय

अबतो दरस दोवाईसो॰ रागनी भैरवी ताल

जत॥ वटियावे लाडल बनरा मेंदल भीनी

रात। वोकोई प्यारो कवर कटारो वोकोई

नेरो साथ। सिरमोहे जरकसी चीराशवज

भै॰ रा॰

१८७

187

कमाही होत। मोहन वन रावन छन आया।
कोटिक कामल जात। स्याम स्याम दोहूंक
वि उपर राग रंग बलि जात॥ रागनी भैरवी
ताल जत॥ सांविरी आज बेसी बाजी है बन
में। सन धुन विरह भई तन मनने। नाजा
उकछु जादु कियो है मेरो मन सांविरी ह

रिज्यों लियोहै तान वान कस बंधो लियोहै। मरवस आलीमैं ज्यो दियोहै। मुकट लटक पीतांबर कट नट। भोहे मटक टाडे बेसी। वट नट। बृंदाबन कुंज नव नवारी। छवि निरष त राग रंग बलिहारी॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ छैल छबिला रंग रंगीला सा

भै॰ रा॰

१८८

188

म सुंदर है गातरी। पांच बरष के मनमोहन॰ बाढ़िट लेगे रवा मन के भवनवा सुंदर चतुर सुघर नंद नंदन बोलत मधुरी बानरी। रुन झुन रुन झुन पैंजनी बाजत पग नूपर सु नही पुन छाजत ठुमक ठुमक पग धरत धरन पर नंद जशोदा मन मानरी। बालली

ला ब्रजकेल विहारन सुरनर मुनि वसम
प निहारन परब्रह्मसि सरूपनि रष छवि
गयसामर बलि जातरी ॥ रागनी भैरवी ता
ल जत ॥ विरहकी तोनें सुनाइयो नहीं ।
बंसी बजाइयों नहीं गाइयो नहीं मेरेमन
के लोभाइयोहीं । बंसीकी धुन सुन भई।

भै॰ग॰

१८५

189

ह्नो बावरी बोलत पुन सखि कहे आवरी बिर हकी जरी जेऊ गइयो नहीं। बृंदावनकी॰ बिपनमें चलकररी वेसी सुनो मनमोह॰ नकी संदर स्याम कमाल दल नैंनाहों। बे सी अधर धरी स्वावैना इंद्र बधु सब बस॰ करी बिसराइयो नहीं॥ रागनी भैरवी ताल

जत॥ वेदरदी मोपें यह डाव महीलो नजाय

इश्क दे कारनमेंतो मरदी कर आपसे ल

वेगाल म्हूल कपरेग आशक गरजी॥ राग

नी भैरवी ताल जत॥ भोरभई लआईल मो

र पारे किन जागल सवरतीयोंरे। भईकई

अवथवद कनउ विरम रहे बोल लफूटिव·

भै॰ रा॰
२५०

190

नीयोंरे। अधरन अंजन भाल महावर उरनख
दीह लख्यौ नीयोंरे। डग मगात पगधरत धर
न पर हमसों करत सोच नीयोंरे। वही जावो
तहां रैन जगेहो जिन सिखलाई मनीयोंरे।
राग रंग तुम भूल परेहो कहो सिख यहल
नीयोंरे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ सेदर॰

स्याम कमल दल नैंनमें नन नैंननमोहीरी
छिन छिन घरी घरी पल पल निसदिन मन
मोहन वाढीढ लंगरवा चकरस हर लंगरव
न वारी नट नागर गुण आगर मागर जिन दे
खो तिन ओ हीरी। वेसीरी वयाय रिझायया
य के गाय गाय बजवनि ता सबही हमकस

भै. रा. १५८

कर वस कर नेद नेदन निराव निराव छवि
जो हीरी॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ भोरभ
ए उठ जाग मेरे प्यारे कहा नींदमें सोएरे। स
वही वेस प्रकारथ खोइ महा मोहमें मोहेरे।
जैसी करनी वैसी भरनी दर्पनले मुख जोहे
रे। बारबार औसर नहीं पैहें ब्रथा उमर को

घोहेरे । हरिमेंगान हरिस्मरन कीजे दयादी
न ता सब मोहेरे । हरि भजलीजे विल मन
कीजे हरि बिन जगमें कोहेरे ।। रागनी भैरवी
ताल जत ।। मैंतो रही खटरीया निरखतरीव
नबारी गिरिधारी के आवनकी । हरि बिन
कछु मोहे कलन परतहै घरी घरी पलपल

भै॰रा॰ छिन छिन निसदिन जबते मनक सनि मन॰

१५२

192

भावकी ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ बनवारी

गिरिधारी मोहन मन डालीए जानरी । ऐसो

मेत्र पढो बेसीमें छिन पल जगनसो हातरी॰

मन मोहनवा स्यामसुंदरवा रागरंग वलजा

नरी ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ सुनहो वात

मोरी साथीय सहेलरी। पियाके देशमें तो च
लीहूं अकेलरी। को जानें मिलना कब होरी
य हनेरवा मेरा दिन दोई पियाले डोलीयो।
उवारमे आए। बाजन वहो विय सकल ब
जाए। बाबूल विदा करो मोहि वेगी। द्वारे
की चारकरे सबनेगी। सइयांका देश वहो

भै॰ रा॰ तनगीचाना। अब छूटा नैह रहमजाना।
१५२
कागतरा ही मोरी मसरारी। ज्यों पूछे क
छु बुध विहारी॥ रागनी भैरवी ताल जत॰
घहरे जौवनवा मोरा दिन दसरे कहारे
कहे कछुनहीं मोरावमरे। चोलीया मेली
चुनरीया पुरानी काले जरहूं सावी अब

मरुहरे। पियाले डोलीया गवनवाके आप मे

ग लीए नेगी मरवमरे। बुध विहारी मैं चेरी

नमारी औगुण हारी के अवके वक मरे॥ रा

गनी भैरवी ताल जत॥ कोकरी मोरी नैया

पारकरो। गुण नही एक औगुण वहो तेरे

कोटी नइया वडभार करे। विनादीपकको

भै॰ रा॰ उ पारन जैहों खिवनवारे। कैयार करो गावे गुद

१५४

रमेरी नाव तेरे कर आपन जानन भाव करो।

194

रागनी भैरवी ताल जत॥ अलबेला वे छैलाने

टके गुमानी तेरी बात मेरे मनमानी। तही।

जीवन धन तही तनमन तही रोम रह्यो रे

जानी। अलबेली का जीय रामा नेना आन।

मिलो अलबेला मेरा जानी तुही जीवन धन

हैं प्रानी ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ मनरे

इहां नहीं कछु तेरा यूंही कहत मेरा मेरा ।

किसकी मेढी और किसका मंडप फूटा ज

गत बावेरा । कौंन कौंन इहां आईके बसग

ए बहोरन कीनो फेरा । धन माया सपनेकी

भै॰ रा॰

२१५

195

सेपतनतापर गरवच नेरा। कोउ नरावि चरी प

क चरमे जब आवै अंत वेरा। अपाहपनाकेह

यह वोनी ज्यों तूके प्रभ केरा। ज्यों तूका सो

पार उतरगया वढ मन गुरुके वेरा मनरे॰

रागनी भैरवी ताल जत॥ पसीयाकोपक

र मेंगावोरे दारु लगीरे करेजवा अरे हो।

मङ्गवा की दारु लगी करे जवा ङ्गवा की फांक

कुसावोरे दारु। आवो सइयां हमी हमी गवेला

मी भोर कैसे होगानि नवापी॥ रागनी भैरवी

ताल जत॥ मोरे बाबूल दीनों गवन वारे।

मैं तो चली हूं सइयां के नगर वारे। मिल ला

री मोरी माखीय महेलरी। फिरन होईये मि

लनवारी। नैहरमें हमवेसरा माई मासुर भए
है चलनवा। न्हाय धोयके बस्तर पहरे शीत
ल तिलक चंदनवा। चारकहार मिलउ डो
लीयो लेआए हिल मिल लगी रोवनवा। उ
ण श्रीउणामीं मे एको नहीं कहा कहो पी
य मनवा। कहत कबीर सुनरी डल हन॰

पीयके घरले चरनवारी मेरे ॥ रागनी भैरवी

ताल जत । समझ बुझके देखा गुरुयो भीतर

यहकों बोलता है । बल बल जाउं अपनें गुरुकी

जिन यह भेद बताया है । आदम में वो आपी

आप समाया है जिन ढुंढा तिन पाया कहे क

बीर सुनभाई साधु कपटकों भेद खोलता है

भै॰रा॰
१५७

१९७

रागनी भैरवी ताल जत॥ जब तलक सीने मेंद
मया दाग दिल जलता रहा बेचिराक यहघर
हुवा मालिक जोया चलाता रहा॥ रागनी भै
रवी ताल जत॥ चेत नामको अबही सवेरा।
है कोई जगमें देखो तेरा। इधर उधर जीयका
है भटकावत है कोई जगमें देखो तेरा॥राग

नी भैरवी ताल जत ॥ हारन जीके मूलन पीय
को आनंद होय काज मन केरा। सूरत लगा
यके बटके घटही में देखो उरनही सोई नि
पटहै नेरा ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ कछु
के न गए समझाय मोरे लाल जोबन हमसे
विदा मोरे। काहेके हाथ लिखों मैं पाती का

भै॰ रा॰ हूके साथ संदेस बोरे लाल। अबकी बार मिल
१५८
ले मोरे प्यारे राखो मरम हमारी बोलो॥ राग
198
नी भैरवी ताल जत॥ नीत नइ रे नइ प्रीत न
ई। नइ सखी नइ कान्ह नइ प्रीत भई॥ सांव
रे साथ विकानी सइयो मैं तो भई हौं दिवानी
मेरे मन वसी मोहनी सूरत लोग कहै बौरा

नी। वालनी ग्रलवेलीनें कीनों विहा लरी।
झोकेकी फकाई देख गोयाके मनमें लगया
ई विरहा की भाली॥ रागनी भैरवी ताल जत
मैं तोगाही कूं भूलीह्वे गईयो। ईस नगरीकी
सगरी गलीनमें कैसे है भूल भलैयो। ईधर
उधर जी मत भटकावे पीया नमिल गरवही

भै. रा.
१५५

यो। बांह गहेकी लाजतो कीजेहादी परे मोरे प
इयो॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ सइयां बोली
नो बोलो न नदीयां कीं बोले। अपने मेहरकी
मैं कहा कहौं सजनी बाहुली मोनीयन नोल
न॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ मही के जानदे
नै हरवा राम दिनवा च्यारीरे। साहु जीके ए

2199

तवान नदग्न्के विरना ज़दा सन चोली योंभी

जे रैन पसीन वा राम दिन ।। रागनी भेरवी ।

ताल जत ।। वार करे जवाकों विरहा सतावे

रे । कासे कहूं मोरा जी तरसत हैया सवे दर

दी कोउ जाके ला वेरे ।। रागनी भेरवी ताल

जत ।। राज डलारा वनरा व्याहन आयारी ।

भै॰रा॰ या सवना मेरा जोबन बारा बनवारी के मन
२००
भायारे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ बगीया
मे ढूंढन जोउरी चलो मे लागा है। या सघी
या वगीयां मैं मिलें गे वरजोरी गर वोल यां
उरी च॰ रागनी भैरवी ताल जत॥ अतीए म
इयाने मोरी खबर नलीनी रे। उस विनमैं तो

२५८

जरत मरत हूंया मभैं यादनहीं कीनीरे ॥ रा
गनी भैरवी ताल जत ॥ विरहा चैंन देतन म
इकों ग्रालि जीय ववरा वतहैं । पीतकी जो
कोउ नाम लेतहै पास पीया याद ग्रावत है
रागनी भैरवी ताल जत ॥ वीरारेवटोईयासे
देसा लेता जाइयो । पूरव जाइयो पछम जा

भै. रा. इयो नेम धरम मों रहियो। बिलाबाय गयो गो

२.१

री को बदन बाराम गोरी कौं छीजे जो बनबा

लाही की क्रूरति बनन की नारी ता पर दम

के इश्रगी यारे॥ रागनी भैरवी ताल जत। जिं

दडी दे नाल बेकरार वे मेरा मियां। अंदा जां

दा दम किसनू आवे जी रहदा बेकरार वे मे

रा मियो ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ मेरीवारी

नीदिया जगा दई रे। एक तो नीदिया रसकी

रसीली छतीयो मइयो नें लगाय लई रे ॥ रा

गनी भैरवी ताल जत ॥ जानि तोरे आगे मो

री अंखियो लजाई। छोटे देवरा मोरी गोदी।

के विलया अंगना में वालन फिर फिर जाय

भै० रा०
२०२

२०२

जानी ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ गोरी जायरी
वदन वास मैं टेरी। गोरे वदनकी छबहै नि
राली छूंघटमें म्हाव फेरेरी ॥ रागनी भैरवी
ताल जत ॥ जानि तोरे रंगमें मैं मानीरे। वो
ह पकर पीया लेचले हो कोउ नहीं संग सा
थीरे ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ कीती वे

परवाहीयांवो मेरी जान भलावो नैणा वाले। प्या
मे नैणा नजारेनू तरसदे घोरी मियां डुक म
खडा जावे षलाइयां भला। म्हारी जैसी जैसी रा
माले। रामालेरे कृस्नालेरे वैकुंठे सुख धामा
दे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ जैसी रामा जे
श्रीकृस्ना संदर मूरत स्यामारे। हेदा बनकी।

भै. रा. कुंजगलीन में मिल गए हन स्यामा रे। रामा बी

२०२

नारे कुसा बी नारे पायो अचल विश्रा मारे ॥

203

रागनी भैरवी ताल जत ॥ गोपी नाथ प्यारे र

जा तोरी रे। दरसदेखावो तपत बुझावो विन

ती सुनो प्रभ मोरी रे ॥ रागनी भैरवी ताल ज

त ॥ श्री स्यामा प्यारी देउरो नें बंसी हमारी वो.

इस बेसीमें मेरा प्राण बसत है सो बेसी गई।
बीरी रे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ स्यामसा
मा करदा फिरे कृस्ना आपही स्यामा हो रहा।
प्यारा। आपही स्यामा आपही कृस्ना आपही
रिझावन हारा प्यारा॥ रागनी भैरवी ताल
जत॥ मोरी बेरनन नदीया जगाय गई रे।

भै॰ रा॰ नींदकी माती सोय रही किंफक उठि ग्रटला
२॰४
य गई रे ॥ रागिनी भैरवी ताल जत ॥ ग्ररज
20
करी सोई सोगे ताल साउी । निशा दिन तेंनूं मैं
खेउी उसीको करम करी तो मैं होंबी निहाल
साउी ग्र॰ । रागिनी भैरवी ताल जत । मइयां
नें मोकुं गारी दीनी गोकुल मैं रम रम रही ग्रे

राम डुहाई गंगाकी किरीयां मइयों के पइयों। परी रहींगे। डव मैं हरिकों सब भजे स्वाव मे भजे न कोय स्वावमे हरिकों भजे तो डवका हे को होय॥ रागिनी भैरवी ताल जत०॥ पवन करलागी गइयो उमगत वदरा वर सत मेहा भींजे मेरी सारी रे दैया। विलोपी।

भै. रा.

२०५

205

या वेदन किवडी याव रोटवा मेलाडीरे गुइयो।
चमकत बिजुरी बरसत मेहा अरे जानमीजे।
गी मोरी सारी रे ॥ रागिनी भैरवी ताल जत ॥
गोरीया सिंगारवा करके मइयां कुं बिरमा यो।
आज जानको ढूंढन नीकसी सो ननीयो गर
वाल गायो रे ॥ रागिनी भैरवी ताल जत। मोर

भए नम श्राप मन मोहन कहा बनवत बातेरे।

वेदन मान विराजत नववपर सबही चिन्हलावा

तेरे। विन गुन माल मरगजे वागे मोहन चंदर

गा तेरे। पोंथी के ग्रभ वहांही जावो नहो जगे

सारी रातरे॥ रागिनी भैरवी ताल जत॥ वैनी

गेथ कहा कोउ जानैं मेरीसी तेरी सौं रायै। वि

भै॰रा॰
२॰६
206

व विच मेत पित राते मोहत फूलकों करिसके
निहारी मों राधे। वैहे रसिक संवारन कोमल
करक कई मों राधे। हरिदास के स्वामी स्यामा
नाव लों गयनहीं सों राधे॥ रागिनी भैरवी ना
ल जत॥ मोर मकुटकी लटककी चटक म
न देख निपट लोभाय गयो। नंद किशोर श्री

१२८

र केजनकी नैनन सैन बुलाय गयो ॥ रागिनी
भैरवी ताल जत ॥ मेरा रांझा मियो नजामी प
र देषा मेरा मारु ढोलान । रंफेदे कावनवे क
मलीनी झूरयो ढूंढ फिरी चहूं देषा बाबुलफ
डके वारि वीरन भांदे कुटे लंबडे केस ॥ रा
गनी भैरवी ताल जत ॥ मेरा मारु ढोलाक

भै॰ रा॰ ही गया परदेस जंगल ढुंढा वारी वे वेलावी ढुं
२०८
ढा मेरा मियां ढुंढ फिरी चहूं देश ॥ रागनी भै
२०७
रवी ताल जत ॥ अरी मेरा प्यारा मिलेतो मैं पं
ज ननकी बल जाउं । पंजतन पाक उवाजदे
नोशाको दोना चडाउंगी ॥ रागनी भैरवी ताल
जत ॥ जान जान प्यारा कैसो कर आवे चैन । दें दे

मीयो वे कल परे दिन रैन ॥ रागनी भैरवी नाल

जत ॥ नजर नही आदा प्यारा मेरा वे दिल है

दो वेकरार । ववरु आधीन वारी वे याद विच रह

दे नित रहदे तेरा ध्यान माउ ॥ रागनी भैरवी

नाल जत ॥ ऐसी नाल व मोएा दिखरदी । जे

न गलोषे वारी वे छुप कर ओ देवो मियां ग्रसी ।

भै॰रा॰ चाकर मैंडे प्यारदी ॥ रागनी भैरवी ताल जत।

२०

208

नकदी रहदी राइयांदे सोणा मैं तोन॰ हरगया

वारीवे खबरन लितिवे मियां मौला मिलावे॰

मेंडा साइयां। आयोजि आज मेहारे डेरेवे। तोडे

कारन मेंडी जिंदडी नपेदिवस पईयां झगा ते

रेवे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ वेखो जानी॰

यारवे वागवहारां तेरे कारन वारी वाग लगाया

वे मिंघा विच महलवोदा वेगलावेवो जानीया

रावे इशाक कीनाहै जहारा ॥ रागनी भैरवी ना

ल जत ॥ कोई आन मिलावोनी वेसीवाल स्या

म पीयारेनू । मेंद मसकावन वाकी विन व

न सोहे मईयो मैंनू दरस दिषलावोनी ॥ राग

भै॰रा॰
२-५
209

नी भैरवी ताल जत ॥ सोणा मैंडा माहीडा की तक
सीर । दिलदी दरद वारीवे कोई नहीं पुछदा ग्र
मी कीं भुला मि साईडा ॥ रागनी भैरवी ताल
जत ॥ मैंडी जान सुजान सोजान बैन बजाव
रे । मैंन प्यारीदासिन मैंडा साहबा ग्राज रहो म
हारेडे काजरे ॥ रागनी भैरवी ताल जत। तोक

ण मैंडे जर आयोनी मैंडी सइयां उसदे रोकण

दी मैं ले खुबलाईयांदे मनदी मुरादे भरणवालि

मैं ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ असीं नैंडे मिल

नेदी रहंदी मुश्ताक भला मैंडा मोबल यार।

नैण देहा मन ध्यान तुमाडा आन मिलो साडे

यार ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ वालीयां किन

भै॰रा॰ जमकाईयो मेरी योवे। कौनो विच करन फूलमो

२१॰

२१०

है मेरा प्यारी हडा भरी वेकलाइयो॥ रागनी भै

रवी ताल जत॥ मजाग बोले नाही मैंडी फरी

यदवे। मबसे छोडी लगी लड तैडे ज्यो भावेत्यो

पालवे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ मोई तेडा

भला करे वो के नैणा वालियो। नैणादी वर॰

खीवारीवे भौंह कमान तिरछि कर मके मारी

या ।। रागनी भैरवी ताल जत ।। रांझा मैंनु ।

प्यार करेदा मैं रांझे दे लायक नाहियां । रांझा

मेरा वारी मैं रांके दि राझा मैंडा प्यारिया ।। रा

गनी भैरवी ताल जत ।। जिंदडिदे नाल बेक

रारवे मेरा मियां । जिंदनो तेंडे बसपई नाहक

भै॰रा॰ इश्काक लगा कर झूठ विसारवे ॥ रागनी भैरवी
२११
नाल जत ॥ मैंनो भूलीयां विनाहीयां मैंडा रो

2।

झणा नीवे । हुन गया वारीवे खबरन लीती॰

मोला मिलावे मैंडा माईयांनी मैंनो भूलीयां॰

रागनी भैरवी नाल जत ॥ बल खायगयो ।

गोरीका बदन बाराम गोरीका छिजे जोबन

वा। जालकि झरनी बनन किनारी तापर तोरे

निबवा जानगो॥ रागनी भैरवी ताल जत। सो

ण यार बेदरदी आमिलवे। जो नन कहनजो

दा सांईही रमीयालीदेका मिलवे॥ रागनी भैर

वी ताल जत॥ जाने वाले यार आमिलवो मे

डी जान। जोन जोदे तोडे नाल जिंद जोदीयारो

भै॰रा
२१२

212

फाग मेंडा प्रान ॥ रागनी भैरवी ताल जत। तै
ने कैसि जगाई सारी रात बलमा। क्यारी कर
कितजाउं साविरी पलकन लागी परभात ॥
रागनी भैरवी ताल जत ॥ मोई मेंडा राफा के
ती कब मे हूर। आपन आवे ना लिख भेजे आ
मिल मेंडउे हजूर ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥

कोयल बोले सबज रंग बगीयामे। इस बगी
या मै लाल लगे है देखन को जीय लगीया।
सबज रंग बगीया मे कोयल बोले सबज रं॥
रागनी भैरवी ताल जत॥ ३हवाकि डारिडा॰
रि कोयल बोले। तेरे कारन वे बाग लगाया
सिंचत मालि क्यारी क्यारी ३हवाकि डारिडा॰

भै॰रा॰ रागनी भैरवी ताल जत॥ अंबूवा परा कूमर डारी

२१२

213

री। डारि डारी कोयल कुहुके कुहूकलागे वा

की प्यारीरी॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ रोफ

ण मो मैं गलई सजनी छोडा सक जहानवे।

बाबुल वैन भई सब छोडे जोडा रोफण सां॰

घ परवानवे॥ रागनी भैरवी ताल जत।तद

रदानी दीम ननन नन दिर नादरतूंदर दिरदि
रदिर नदारनद दानी। नादरद्ददंत्रे द्ददद येत
ह्ला युम किटनकथा॥ रागनी भैरवी ताल ज.
रात मइया मैं नबोली पह्मतानीरे। म्हनीयोरी
मेरी मीव महेली मइयो मोरे निपट म्रयोनी
रे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ यह डाव महो॥

भै. रा.
२७४

214

नहीं जायवे वेदरदी मोपें। इशाकदे कारनमैंनो

मरदीवेवे। कडियो सहरे बेगाल म्हुलक लं

घावगुज रान। परी परी दैया श्रोकरंग श्राश

क गरजीवे वेदर॥ रागनी भैरवी माल जन॥

सोवरेन मैं मिलनें चलीयां नीन्येनें णा लगे

वे। साथी महेली हिल मिल चलीयां हाथ्यवंपे

दी कलीयोंवे ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ सोव

रेन में मिलने चलीयो नीन्येनेंणा लगेवे। रसि

यो वेदरदा में पनीया नजरई हूरे। चर मेरा हूर

गागर सिर भारी जमनाकी रेती में खडीरे ल

नै हूरे ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ सँयोंरात

नेरे गये लागमें बडी चेंनसों सोइरे। उठिहात

भै·रा·
२१५
215

मलमल पछ्तानी नींद वैन सब खोइरे। राग
नी भैरवी ताल जत॥ जम जम जीवे मेरा सांव
लानी मेरा· तेरे सुरतदी मैं वारवार गई तुज
विन मेरा रावलानी मैं॥ रागनी भैरवी ता·ज·
करवटीया सइयो नैंणा लगाय जालम जोर
रे। सगरी रयन मोहि तफत वीती इतने में हो

गई भोरवे क॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ हमर
ही उमरीया ताकवी सइयो के आवनकी मन
क मनी। घरी घरी पल छिन कलन परतहै
निस दिन मगमें फोकनरी ह०। रागनी भैर।
वी ताल जत॥ सविकही भगवान चावत ह
घनी। यामन जानौं वाल हप तज मागर सि

भै॰रा॰

२१६

216

ध्रु जिनकी यो मथनी। खिलत गेंद गिरो जमना

में बैठ पताल काली नाग नथनी। पुसमपाल

हारि ग्रह अपनें लेउ बढाय रुकमनी। अजम

हेश जाको ढूंढन थको भूल मत जावो कि॰

यो एक कथनी। गावे गुदर मत बालक जानें

के समारे के मगाहे हथनी॥ रागनी भैरवी ता॰

जत ॥ रयनीया भईली भोर रे तुम आयोरे कन्हैया

तरखा । हम सों अवध बद अनत विरम रहे कवन

तिया मन हरवारें ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ वा

कें दरसकों जिय लल चावें । मनमें रहें औरन

जर नआवें । हाफिज अधीनवा सों केसें बनआवे ।

बात सुनावे और गात छिपावें ॥ रागनी भैरवी ।

भै॰ रा॰ ताल जत॥ हरि सों ध्यान भूला यारे बाबा। हरि

२२७

मैं हरिकी सुमरन करले जिन यह भेद बताया

217

पांच चोर तेरे संग लागा है चोर चोर धन खाया।

जो जागा सो माण कमाया सूता सो प गमाया

कहत कबीर सुन भाई साधो हरि सुमरण चित

लाया॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ काहे दियो

उखेले मोराहीयरा। छरी पल छिन मोहे कलन

परतहे जान वाह तोपे तन मन जीयरा॥रागा

नी भेरवी ताल जत॥ उमगे जोबन नहीं आए रेम

इयो। मेरात जान पीया सपनें में देख भोरहोत

नहीं पायोरे॥ रागनी भेरवी ताल जत॥ बैंदीया

मोरी कन्हैया लीनी छीन। जमना के तीरे तीरे

भै० रा०

२१८

218

नंदकोरी लाला लाडो बजावे बीन ॥ रागनी भैर

वी ताल जत ॥ ईडरीयो मोरी कन्हैया लीनी छी

न । ग्वाल बाल सब सखा सहेली बन मैं बजा॑त

बीन ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ उन बिन स

जनी कैसें कटे दिन रतीयो । विरह वियोग मो

में सहेन जावे पीयाकी सुनायो मइक्कु बतीयो०

रागनी भैरवी ताल जत ॥ सोतेमैं नींद उचटगई

रतीयो मैं नाजानू पीकीयर गयोरे। आपन आ

वे नालिख भीजे पतीयां मैं कैसे पठऊं संदेसवा

जान सोते मैं ॥ रागनी भैरवी ताल खिमटा ॥

इन्न जारी मैं मेरी तोजानगइरे करके नदांन ते

री दोली मैं। झांकन निरषत सब निसबीती।

भै॰रा॰ कवननवलनीया विरमाय लईरे ॥ रागनी भैर
२२५
219
वी ताल विमटा ॥ मोरे मईयांनें चकवाक सों
प्रीत करी । अपनें सें मफक विगानी करी । जो
मैं जानती मादी नकर निपेसी दोसी सो मैं जि
य सोजरी अ ॥ रागनी भैरवी ताल विमटा ॥
वनरे कें कहियो बुला ले मफे क्या दिल से ब

सकों भूल परे । उमगो जोबन अब रहत है नहीं

मदन सतावे तेरे पाय जो परे ॥ रागनी भैरवी ।

ठुमरी । उन बिन सजनी कैसे कटे दिन रतीया

रे मो बिरहा बियोग मोसे सहो नहीं जावे पीया

की सुनावो मरकें बतीयां रे मो० । रागनी भैर-

वी ताल बिमट ॥ बिरहा की मारि सताई यो ।

भै॰ रा॰ नहीं जराइयो नहीं। सास मोरी मोदे ननद दे दे दी ता

२२॰

२२०

नें बालक का जीय राज राइयो नहीं ॥ रागनी भै

रवी ताल विमटा ॥ ने मोरी नींद गंवाई चरावला

नें मोरी रे। मोनें हुपे दांन कला वनानी इश्राक

दे तार लगाई। सगरी उमर मेरी वरावेनीक

तियां साहब मान बढाई। साह हुसेन फकी

ररवाणा विन मसलन उटजाई ॥ रागनी भैरवी।
ताल जत ॥ विरारेवटोइया संदेस लेना जाइयो
रे। पूरबजाइयो पछमजाइयो नेंकन जरसों आ
इयो ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ जनीवाके प
कर मेंगावोरे दाहलगी करेनवो। महबाकी।
डारिकारि लगनहै प्रेबुवाकी फांक चखावोरे

भै॰रा॰ रागनी भैरवी ताल जत॥ मइयो कैसैंनी काला॰

२२१

गारी मैंना जानू। रसियो मइयो मेरे मनही मैं

221

बसदा मदा मारी मारी रतियो छतियो गरवोमे

रेला गारे ना॰। रागनी भैरवी ताल जत॥ मेरी

कैसे कटे दिन राति मइयो बिन मईक्रो कलनप

रत वेगल जावो कोउ मेरी पतियो वेचल तोरे

बिन कलन हीं आनी ।। रागनी भैरवी ताल जत ।।
कहा करुं कित जाउं मोरी दैयारी वारे करे जवा
नी क मोई जावे । हित करके मैं मावे नहीं पायो
कौन चरीते पीत मैं कीनी चंचल मोरा डाबका
देवैया मोपें तो कछु बन नहीं आवे ।। रागनी भै
रवी ताल जत ।। मन मोरा बस कीना बंसीवाले

भै॰ रा॰
२२२

222

नैं मान करे नामानैं। ऐसी बजाई बेसी बादन बानैं

मन हरलीनौं कारी कामर वालेनैं॥ रागनी भै

रवी तथा पराडी ताल दादरा॥ बिसरत नाहीं य

ह बोकी ओढ नपट साज मटकन कटलटक

न लट। झूमन झूलन झमक भूषन मझन

श्रवनन नैनन की लाज खटकन खटहटकन

हट। हेरन माव फेरन टेर निजन राम माधीनके

मेराके काज झटकन पटमटकन झट॥ रागि

नी भैरवी ताल विमटा॥ अलके विथुरी उनला

नीलली देवी चली यहजानगली। वमन के

मम लग जेमधावत हरि केवकी दली मली।

अरुन नैन जंराम निरषवह अरसानी छविल

भै. रा.

२२२

223

गि भली दे ॥ रागनी भैरवी नाल काफी ॥ उन बि
न कल नहीं एक घरी कहो कैसे बिते दिन रात
साखी अब । बेग मिलन की रीत हमारो गिनगि
ने रैन बिहात । अब कछु है फिरफिर बात भांत
सब । सपने में कछु देखा पर बसन सावन कीय
गात । सुंदर छबि चौंक परत जन राम फफक

फेर वचन न कहो जान घरी नव ॥ रागनी भैरवी

ताल काफी ॥ नवललली एक जातरी लचक

न यह मगमें हेरन हसन बसन तें छिन छिन

बन ठन छबि दरसा तरी ॥ चंचल पग पगमेंन-

उफ कन वह प्रटलात निरख जिन राम किया

सो ध्यान मन फसनों उग मग मेंन ॥ रागनी भै

भै॰रा॰ रवी ताल छिमटा ॥ गोरे गोरे अमल कपोलन पर

२२४

224

हूनी झुत अलकन रेख सरसत। लपट पटात मख

बैन सगबगे नैनन मैं नई छबि बरसत। कछु प

क अधरन परत बललन परत कछु कछु नई

दरसत। यह निरखत हूप जनराम ललिको।

श्रेचर खोल पवन परसत ॥ रागनी भैरवी ता

ल तिमरा॥ दिन दिन नैंनन और मन की वान
नई टरमत। दोष उन्हैं नाही बिछुरन मैं निशा-
दिन नहीं टरत घूरत तिहूं अह अन जल बरषत
मन नित उमजन राम रहत जापै अन अकुला
त सो मिलवैं कौं तरमत॥ रागनी भैरवी ताल
तिमरा॥ बेबल मन अटकौ यह चित बनरा

भै-रा- कौरनमैं। बैथ केंत्रुकी कमन फिर देषन म।

२२५

225

न उरफाय लियो वहमशाकन ग्रेरा मोरनमैं

फफकन माव फेरन मटकन हेरन लषजाय

फसो बरबम इन विन चोरनमैं। श्रवनन लो

लकपोलन पर डोलन निरष नजन रामश्र

यरनकी ओरनमैं॥ रागनी भैरवी ताल विमदा

गोरी तेरे गोरेगोरे गालनपरमोंथे मगोंय मनी ल
टलटकत। नई सूरतसमेट फटपट घटपटी
यह बात मावी तो हनाहि डरयाही देखत ला
लन मन अटकटत। जबतें देखलियो जनरा
मेको छवि निशदिन छिनछिन गिनगिन
कर तेरी गलीनमें नितनित भटकत॥ १११

भै॰ रा॰

२२६

226

नी भैरवी ताल त्रिमटा ॥ गोरी तेरी बानट गोरी ॥ परी फिर फिर मुसकात । बाट बटोही चलन न पावत अटक रही नहीं जात । मान कहि जन नाम श्री अबहै यह जात ॥ रागनी भैरवी ताल त्रिमटा ॥ घडी हमके बोले घडी होवे खपा पे मैं बेदरदी की दोस्ती क्या । मेरा कहा न मान

न नाहीं तेरे तुमे मेरे होवेगा क्या • रागनी भैर

वी ताल विमटा ॥ इन जारी में हाय मेरी जान

गइरे करके नदानी तेरी दोस्ती में • आप तो मर

यो मवन मेंगमोवे मेरी गनन नै रैयो विहान

भइरे करके । रागनी भैरवी ताल विमटा । मो

रे मइयांनें वकवे किसी प्रीत किया अपने मेंम

भै॰रा॰ मझको विगाना किया। जो मैं जानति प्रीतन॰
२२७
करति नाहक दिल ज्यों मैंने दिया॥ रागनी भै
रवी ताल विमटा॥ दरवज वाट दिया लागे ला
मइयो हमारे विदेश गइला। वांकी डुमनिया
कौं कोउ समझावे नैना में नैना मिलावेला॰
रागनी भैरवी ताल विमटा॥ मेरा दिल ज्योंघ्या

मो चरां बन हवा मैं नैं जानू जनीयो जाडु किया

जाडु कियारे टोना कियारे विन बनमैं मन

जो हरके लीया मैंन जानू · रागनी भैरवी ता

ल विमरा। बंसी वालेनें मेरोमन हरलीनो

रे लेचलो ब्रजके बंगलमैं। गोकुल ढूंढु बृ

दाबन ढूंढो ढूंढ फिरीहूं जंगलमैं · बंसी ·

भै॰रा॰ रागनी भैरवी ताल एक। मलावे देसीवाला

२२८

२४८

मावडा तेडा जोर। चेदहृरज सौं सदके कीत

वारैं कामकरोर। मनव्याकुल ननसीयल न

नाहि नैननवाही ग्रोर। बुय विहारी मैं बलि

हारी जलदी कीजे गोर।॰ रागनी भैरवी एक

ताल।॰ यह कहीयो नायकामथनमे करे जो

बनके तैयारी। केहम सब मिलकरवे आवेंगे

करे नेरिबोछौं नरदारी ।। रागनी भैरवी ताल

जत ।। चमकता माथे पैवे नावता तिहे हमेसे

नावते है क्या तेरे नैना भिरे है मस्त मतवारी॰

चले है चाल ठुमकमेव जे तेरे बिछुवे फाफ

न पडे है चोंक सब साजन मन बिछुवनकि

भै·रा· कनकारी। वमनमैं इष्णाकसा मसान होगा·

२२५

229

वागवेरमीयाकैमैं ममथन किसी ह्वेगारु·

मे ग्रोचाहेमे कयारी॥ रागनी भैरवी ताल ज

न। वेसीया काहेकुं वजाई हे कान्ह वेसीया

वजाय मधुर सुर वम कीनों मेरो प्रान· तेरी

वेसीया ग्रम वम कीनों विसरगायो ग्रहज्ञान

उर प्रेगाना नमोहाई है कान्ह बसी · तेरी बेसी
यें बासकी हमब्रज जुवती जीव · बेसीयामें
कछु जाद पढत हो साचीकहो मेरपीउ ग्रथ
रही रहत लगाई है सदा बेसी · यह बेसीया
बेरन भई बेथत सकल शरीर सपवे दरदि
हूसमेबरे आविर जात शरीर हेरत लेत ·

भै॰रा॰ २३ 230

बुलाई हे मोहे॰ यावजको वसवो सबछाडेक
रे सबर परवास॰ बांकबरस कहे रायागोरी
करो यहा तुम रामयह बजरहो छैला छा॰
ई है तुम वेसी॥ रागनी भैरवी ताल जत। नै
णा काहे को लगाया नैणा लगाय परदेस
चले॰ नैणा लगाय चले हरदेसी साणो ज्नु॰

स्याम सुजान तुम बिन देखे कलन परत है त

लफत है नित प्रान जीयरा काहेकं लगाय

नैणा॰ हेम निज देग कम गत ले बांकी कि

या वलाकि पिव॰ अनी दारयह तनय पाय

मीर फेंकवेय लीयो जिन मैना काहेकं च

ला नैणा॰ तब नहि पीर भई कुछ हमको

भै. रा. अब हउ भयो कलेश तमे ह्वारको जानन नैना

२३१

23

को हैलाको नदीयों उपदेश विरहा हमको

घातायो. वोक वरम कहे राधा व्याकुल करत

कुस्म सों वान कुशीन भई फिनमें अनगोरी.

स्याम वरन भयो गात ऐसी मुरलि काहेकुं व

जायो. रागनी भैरवी ताल जत ॥ धनियाल

षिन पठाई है मईया कवि निठुराई मवत विस

राई मोरी॰ विरह व्याकुल किनें राधाके रटत

रहत नित पिय निरदइया खबरन लीनें॰ न

लफतहै मेरो जीव किन मो नन विल माई।

मोरे मईया कवि॰ मैं पतिया लेषिडूं सावी निर

खत करे नवार॰ लेमाषी भाजव लेखनी क

भै॰रा॰ र सामिर बिरह अनुसार बिरहा मनि बौराईक

२७२

232

रि॰ धनीयाल पेटलई बिन अेकको दियोउ

यवके हाथ॰ ख्रबर मेंदेसा सब लिख्यो ह्नयह

नलिख्यो जौं साथ यह डाव कहीयो जाईक॰

गयोउ लेगा दिनो हरिसायउ यहडाव कहोक

रजोरी॰ नवनकी जानी ननिजनी यहीयवा

ति जान्यौ लखी पतीयो कारी ऊठ चले क्रमक
न्हाई है मइयो व॰ आप लाल ठाडे भए गाथानि
जग्रहद्वार गाथा नम मम आणपीयारी नम॰
हि प्राण आधार भजभरी लियो है गाई है क॰
बोक बरस कहे गाथा स्याम दोउ करे एक मे
गराम॰ जो यह ध्यान करे छिदेलहे वृंदावन

भै॰रा॰

२३२

233

बास मरलीकि पुनब्रज काइहे गइयो क॰। रा

गनी भैरवी ताल जत॥ बेसी में जाउ काहे उ

डे मेरा मोहना जेत्र मेत्र कर मन बसकीनें॥ म

युर तोन सुनाय सामनें मोह लीयो मेरो प्रान॰

प्रान ध्यांन मन में नही सजनी रटत रहो ति

न कान्ह कौन तेत्र पढदानो मेरे मोहना॰ म

नमतेरा माने नही मदन मस्त गंभीर • दो हरि
ने हरिपरी प्रेम जंजीर प्रेऊपादे दे हारी मेरे २
मूक नाल पटनर भयो हेसा कहे न जाय • बांधे
पिछली प्रीत के कंकर तुग तुग खाय इन मो
तियन पववारी मेरा • मारी पमर जाइये छूट
परि जंजाल • ऐसा मरना को भला दिनमें मो

भै॰रा॰ मोवार मरणे की गत न्यारी मेरे॰ भवरा बैठे उ

२२४

23A

लपर कली कली रमले॰ कांटा लागा प्रेमका

वार फेर जीय दे लगवाड प्रेम कटारी॰ प्रेम कटा

री मारके रह्यो कबीरा सोय॰ मरणे की गत श्रो

र है घायल की गत श्रौर घायलके पलमारी

भै॰ रागनी भैरवी ताल जत। जाउ काहेको की

यारे सांवरे मुरली वाले यार॰ जंत्र मंत्र जादू टोना

कर कर वेधा तन मन हीया सांवरी सूर माधुरी

सूरत मरवस में सब दीया वेग दरसदे पीयारे सा

वरे॰ दया करो गुनदइके सबको दुःख फे पीरद

इ बनाइ सो मोहनी माही न सूरत॰ धरीजात

नहीं धीर घाव लगे हृदय कारी॰ घाव लगे

भै॰ रा॰ काहे हिरदे मैं कौन बसे ठाकुर मोर॰ कहो तो कहो

२२५

बन तनही मोसे चुप रहो बालम थोर अबमान

235

ले दई के मोवरे॰ एक नजर दिखलावो सूरत के

मैं तो बलिहारी॰ नित संग रहो सजनी सुंदर॰

रूप निहारी मोकुं बीर हसलावे॥ रागनी भैर॰

वी ताल जत॥ काहेकुं प्रीत लगाईरे ज्यो प्रीत

ऊधाय परदेश गवनकीनौं। अचल राग केवजा
केदीनौं हमकें ब्रजकौवास। हमकू जोग क
रनकू कूंजन कबजाकौं कैलासकवनसे मेज
पठाईरे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ जस अ
पजस दोउ होतहै ऊधो कबडेक अपसरणा
य मोने ख्याय माटी भईहाय कछुनही आय

भै-रा- विधि मे नाह बसाई। कहे करे सो नीतहै मनव
२२६
मनकी बात- अचल मेरु ध्रुव नाटरे टरेन पुरु
षका साधसोई जगत हत बडाई रे- एकवेर द
या करहु गोकुल पर बेसीरे हो वजाय- श्राम
सश्राम लगि गोपालकी इनकों देहों ज्ञयाय-
नव ब्रज नवधाई सोवत जागत ध्यान ध्यान॥
2236

मैं अब कराहू हरिजोग॰ बेउदर मेरी दिनना ब्या॰
कुल ब्रजके लोक दरसनदेहू देखायरे उधोश्री
न लगाय ॥ रागनी भैरवी ताल जत ॥ बेटकका
हेतु कियारे सांवरा ज्वलफा बारायार॰ मानो
लटकी नागनीरे बासकीयो सीस॰ ना छबिमे
रे उरबिचलहरे कैंया जीउं जगदेषा॰ अब मोरेजी

भै. रा. यकुं जिया बझेरे सोंवरा जलफो. जंत्र मंत्र एको

२३८

237

नही लागे करहारी सब जोग. ब्रला ईस्क छुटे

नहीं र छुटे न करम के भोग मोर मन कुं चाहेरे

सा. जब सुध आवे तिरछी चितवन लहर देत

तन गात. लोग कहें ब्रज कहा भयोरी ब्रज ब

तमाषा होत. अब गुन बेद बोलावो सो. एक

सभावकी औषध नाही जानतहै सब कोय ·।
छूटन कबहूं तनसरीरे दाग विरह तनधोय ·
कोटिन करो उपायरे मो· गावै गुदर छबि मो
हनि लागीकारी घाव· एक साखी सबसे क
है रूपकर भेद बताया· मोहन ग्यान मिला·
उरे मो· रागनी भैरवी ताल जत। जगमें बा

भै॰रा॰ टत यारी अरे मन मोनत नोही। देषो जग व्याव

२३८

238

हार यह इंद्र जाल विस्तर। अेतन आवे काम

कछु होतही ये मैं माल भ जले अवय विहान

रि रे। भजन हेत येह स्रभग जनम पायो नर

अव नार। विषम वासना पर हरी भूलों सब।

जेजार सो सब स्रत विसारी रे॰ हरि पद रत॥

बिन जगत उदासी होवे हरिभजन सो होय। जी
वन नर जगायन सोई प्रेम लगा चित सोय।
दिन दिन आनंद कारी रेम। बहोत गई थोरी
रही अजहू सूरत संभार। सर्व जीत हरि स्म
मरन बिन कलमे नही उधार। फिर कहत प्र
कारी॥ रागनी भैरवी ठुमरी॥ अबे मनकहो

भै॰रा॰ रे भलाने राम सनेही बिसरे। जो बिसरावन
२३५
से हितकारी दृढ उपदेश करे। छिन छि
239
न खबर लेत मंतनकी करमर चाप धरे।
नित उठ संग कीयो विखीयन को तीनो॰
ताप जरे। काम क्रोध मदलोभ मोह बस
मायाही करत मरे। संदर वदन कमलद

ल लोचन दोवन पनिन नरे । आट मास गर्भ
मे पाल्यो ताकी सयन करे । राम दीनके बे
धन काटे करुणा मील भरे ॥ रागनी भैरवी
ताल जत ॥ जाइ टोना काहेकुं कीयारे राव
रे हो बेसीवारे कान्ह • नडफ नडफ वाहू मे
गवीने बीतगई सारी रैन • कहा कहु कछु

भै॰ रा॰ बस नही मेरो बिन देखे नही चैन। अरी बाक

२५०

बिरह मतवारी सावरे हो॥ रागनी भैरवी॰

240

ताल जत॥ मेहेदी क्या पहरना बूंद पड़े रंग

जाय आशा करी क्या मारना फड़क दीए मर

जाय। सावड़ा काहे कू छिपाय रे सा॰। राग

नी भैरवी ताल जत॥ सोना होतो कसराखु

वारी मोतीराखे पारीय वाला जोबन कैसेरा
खे दिन दिन मैला होय विरहा काहेकों म
नायारे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ कित गा
ए कुवर कन्हाई मोरी आली सरन भलाइ
सय विसराई। नैंन मैंन देहमे खुला हम।
आइ ब्रज मांह। उन हरि हरि हमसे एसी

भै. रा.
२४१

कौनी कहाड गए बन मोह। मोरी आली अब
हम कितेही जांही। वा कान्हा सो परम के
जरत आज लो देह। इन मन मोहन ऐसो।
कीन्ही भलो निबाह्यो नेंह। सय बुय सब
ही गमाई मोरी आली क. हम हरि कों ढुं
ढत फिरया बन आधीरेन। प्रान हमारो

लेगए सखी कलन परतहे चैन। लोक वरम
मकाई मोरी आली करी निठुराई है।। रागा
नी भैरवी ताल जत।। भगानन का नैनों क
मकावे पापहरके रूप देखावे। सोनापह
र टिकावे गला डाले तुलसी की माला तिन
लोक तल जावे। धरती वरम प्रेबरथावे मे

तुक ताल बजावे। कपडा पहर कर गधा नाचे

ऊंट बिस्हर पद गावे। बैठा सिंघ जो पाय पले

टे ह्रुंस मिलोरी लावे। ससा ससी मंगल गावे

भैसा ग्रंथ बनावे। रथ चढे मछरी फलतो

रे कछुवा बीन बजावे। ससा ससी मंगल

गावे भैसा ग्रंथ बतावे। कहे कबीर सनभा

ई माधो जाको भेद बतावे ॥ रागनी भैरवी ता
ल जत ॥ सईयो मोसे जिन बोलो रागरीया
गई फुटरे। हाहा करत हूं पईयां परत हूं सा
री सरक गई छूटरे। आकके तो जले बारी।
जंगल सब जल जाय। पापी जियरा ऐसा ज
ला बारी तिस में आहन समाय ॥ रागनी भै

भै॰रा॰
२४२

रवी ताल जत॥ वास नहीं वहां वैसव करी न
हो नवमीये वामडीयो। जीभडला जपमाला
न करे तेजी भडलीवा मडयो। माम्डमासैंह
मरन नकहो यमणा तणानैं सामडीयो॥ म
णो नरसैयो भोरेमारी मावडली दशामासडी
यो॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ मोरे मडयो

के जोबनवा करत जोर भरी एही सूनी सेजमें
करत सोर। नासकी अंगीया मसकन लागी
उमगी आए दोउ बनके तोर। यह दोउ जोब
ना सईयां कों खिलो नाहक हवो छीपाउ य
ह अंग के चोर। सारी अवधमें बैठ गमायो त
डफ तडफ जीयभयो ऊ भोर। जोगी न होके

३११

भै॰ रा॰ मैं भसम चडाउ पीयके मैं ढुंढ़ बनकी ओर।गा
२४४
वे गुदर प्रीतम बस नाही जनम गमायो क
ही मोर मोर॥ रागनी भैरवी ताल जत॥मोरी
नइरे लगनी या लागीरे सांवरे कन्हैया सोमैं
पागीरे। सो तनके संग उमड़ भयोरे वैरप॰
रेमन वागीरे। ता बिच उती अचानक आई

नैंन मिला कर भागीरे। जाकर भेद कही मो

तन मे तम मे प्रीत प्रभ त्यागीरे। जाकेहर

न प्रभ बाहीर तरे हमरह बेचरनन लागीरे

गावै गुदर यह भाव उनी कों पानीमें लावे

भागीरे॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ मैंतजे

में प्रभु ग्रहो विदेशी कौन ग्रौर के होई स

भै॰रा॰ दुनीयां में रहणा नाहीं छुडि होके वोके हों।

२४५

ग्रेनेही तुम रोणें लागे क्या कुछ छुटा तुम॰

245

24

245

में वहां हों। सहूवे परयाद करोगे अचपल १

हो के नंही वहा के हों॥ रागनी भैरवी ताल

जत॥ जाग पीयारी अबा कि सोवै। रैन गई

दिन काहे खोवै। जिन जागा तिनमाणा कया

२२५

या। हम बिरहिन सब सोय गमाया॥ पीया च
तुर हम मूरख अनारी। कबहूं पीयाकी सेज
न संवारी। मैं बोरापनकी नेंभर जौवन पीया
अपनों नचीनों। कहत कबीर तन मन रम र
हीये। तज अभिमान हरिमान हरि शरण ज
ईये॥ रागनी भैरवी ताल जत॥ मोला ड्डमक

भै॰ रा॰
२४६

2~~46~~
~~270~~
246

बजावै सनौंजी हेवान। छेराग छतीस रागनी
नाना रंग उपजावै। सप्त तिन वारी इकईस सुथ
सुर मुनि ध्यान लगावै। जानकी दास वारी ह
रकौं निरषत हरष हिय सुख पावै॥ रागनी
भैरवी ताल जत॥ देवीदा भवन सुहामणा
सुजनूवी दरस दोखावणा। पान मिठाई ते

री जागत चलीयें मोली मोजो मोगे मोई पा
वण। विच पहाड़ें विच बसना न्हें मोडभो
लीयें मोजो निशदिन वजन वया वण। ड्रे
म वेग दामन्हू ग्रामन्हे माडी मोली मो वरण
कल परमो वण।। रागनी भैरवी ताल ज
त।। नैन वेलैंदी क्वावाले जावो ग्रणी भला

भै॰ रा॰ गोरी पनी फेदाय डोली मैनु लेचल बिडेनू॰

२५७

किनबल कुकु मनावानी॥ भैरवी ताल जत

कमलामनि कमलनयनि कमलमाधिकम॰

लपदी कमलकरनधारिणि श्रीमहाताम॰

नानी। कमलबिडे वामकरैं कमलामनभेट॰

यैं शाक्रादिक देवनको मावमशोभदानी॥

२२७

२२७

ननकें संगाति होऐ सिजरि जैसे दिपक वाति।

रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला॥ मोसें रमा

हि अटक कान्हैया तोहै जानतहों नंदके नट-

घट। लपट झपट कर हूनरफ कत वटकत

हौ शिर मटकि वटक॥ रागिनी भैरवी ताल

जलद तिताला॥ मत कोई करियो गुमानरे

भै॰रा॰
२८६
286

छैलावडे २ छत्र पति गण है अकेला कालके हा
त करमो नरहत है बाल तरुन विरध सकेला ॥

रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ जटी ते
रे जाड नैणा जुलम करे देनी ॥ भर भर बाण
वारी विरह के मारे वे मियां आसक चोट सहे
देनी ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥

वाकी भौंहैं नैंणा कारे रैंदे मनवारेनी। एकनो
जटी तेरे नैंन रसीले भर भरवा कौं मारेनी॥
रागिनी भैरवी ताल जलद तितारा॥ आया
री मेरा गौना लेनेकुं। लजे जेहा मानु ओर।
नहीं सदा मैं लजको चायानि॥ रागिनी भैर
वी ताल जलद तितारा॥ जननी मैं नजोउवि

भै० रा०
२०७
287

न राम। कपटी कुटील कुबुध कुचाली आगला॰
गो तेरे राम। सुरनर मुनि सब दोष देत है भ॰
लौं न कीनौ यह काम। राम लछन सीय बन॰
कौं सिधारे न्रपति गए सुरधाम। प्रात होत ह
मई बन जैहै वे सब उरहै के काम। वारम्वार वि
नती करौं मैं नीकौन किये काम। रघुवर वर

न कमल नयन बिन मोरी नही बिस्राम। तु

लसीदास प्रभु तुमारे दरसकु भए बिधाता वा

म॥ रागिनी भैरवी ताल जत॥ सांवलियां भा

वकों भुषो। दुरजोधनकामेवा त्यागो साग बि

दुर घर षषो। सिवरीके बेर सुधामाके तंदुल

बरबर मही छुको। राजके काजके काज पिया

भै॰रा॰
२८८
288

दोयाये किये गादे हूको। करमाबाईको खीच
खोयेगये लावे खावे गिन्यों नसको। वेदके उ
रनबनिथ राजे अहीर डेयर हूकों। भोला सह
स्वपुत भाट पटरानी कुबजा नाही नसको।
मरमीकों सामी सामलिये खोसर कबहूं न
हूकों॥ रागिनी भैरवी ताल जत॥ कान्हा तेरे

झै लेमे हारी। उयही व्रत मावन मेरे झोर मि
टाई मारी। या मारग जिनजावो कुंवरजीडे
नैनें रावें उुवारी। झवीहारी झोर विहारीकु
टी विरजकी नारी। राय झोगान नेंकु वकड
वोया यहो विलो विड मारी। झनदोषेन दो
प लगाडे कुडी विरजकी नारी। वेनोब्रज।

भै॰रा॰ को ठाकुर कुमजीके प्यारी बलिहारी। नरसैयो
२८५
कौं स्वामी सामलियो मानले बिनती हमारी
289
रागिनी भैरवी ताल जत॥ बार बार बीत गई
भईरी। आबकी डार कोयल एक बोले स
मक समक पछताय रही। जानकीदास।
आस चरननकी गरे सोगरे अब गाय रही॥

रागिनी भैरवी ताल एक ॥ नेना वाले मियां हे
कीते लाड साडे हाल दिलां दिवो । इप्कलगा
के मन लेगया ध्रोरी झावीन मैंडी जिंद खिलो
दीने ॥ रागिनी भैरवी ताल एक ॥ राम राम
राम कहुरे मेरे मन । दुख हरन सुष करनं
विल चरन गहुरे मेरे मन । जगमें जो जनम

भै॰ रा॰

२५०

290

पाय साथ सेवा रङ्गरे । काम क्रोध लोभ त्यागा ह

रि के चरन रङ्गरे । ऊंची नीची बात कहे सब की

सम सहूरे । ऐसी धर्म कामतें सम पीतल चर

न लहूरे ।। रागिनी भैरवी ताल आडाचौताला ॰

गदाय बाद शाह सफतला राय । किसीदर

स्याम मैं कुनम पेशरवाहे अजब कारे सनमश

कल माज गाए ॥ रागिनी भैरवी ताल एक ॥ तोरे
रंगमें मैंमा तीरे । बांह पकर पिया लेचले कोई
मेगान माधोरे ॥ रागिनी भैरवी ताल जत ॥ तैं
ड़े दरशनकी बानपड गई मोकुं । बाट चलत
मोही रोकत टोकत सुंदर वाकी आनपड ॥
रागिनी भैरवी ताल जत ॥ काजर नदैहों मैया

भै॰ रा॰ दगाबाज। गोरीके मुष पर करा मोहे सावरी के

२५१

नैना लाज॥ रागिनी भैरव ताल जत॥ अमीना

२११

लव सोणा दिलावदी। जिंद लगी तो वारी चुपक

र रहणा आशाक रहदे तैंडी प्यारदी॥ रागिनी

भैरवी ताल जत॥ नेईके देव लल छायरे जि

यरवा। सुंदर बदनी मृगलोचनी रेनिसदिन।

लागे तोहि मोही यरवा ॥ रागिनी भैरवी ताल

जत ॥ परीलाज बरे नभई । कैसे कर देखन

पाउं स्रंदस्यामकों पलाज कहे यह नेह कहा

है नेह कहे यह लाज जरोरी ॥ रागिनी भैरवी

ताल आडाचौताला ॥ आहे नाद्र दीम तदम ।

तरी यनरे तदर दानी । त्रम ननन नारे दानी

भै. रा.
२५२
292

नदी यनरे ते ननननन नन आहे दोस्त यलले।
यल यलले॥ रागिनी भैरवी ताल सवारी। व
रजो मोरी वहियां गहे कान्हाई। छेगन विच
फवरन नित नित आय। लगर ढिट काहो।
नहीं मानत याय याय लपट गही री। कासे
कहो यह वतियां सनाय माई॥ रागिनी भै

रवी ताल सवारी ॥ परे मैंने जागि सारी रात ।
भोर भए पिय आय मेरे । कहांथें रति मानी
उन बिन सुधबुध भूली मेरी पियकों सावदे
खत । जब छिन लछन जबंही पहिचानि ।
प्यारे मैंने बैन बिनोरी ॥ रागिनी भैरवी ता
लजत ॥ गुनी गायन चतुरंग गावोरी । गावे

भै० रा०
२५२
293

रेग चारिसो। सविगम त्रिवट तिलाना। सानी
नीसानीपममममरेगममपपरेसारेसासारे
गमपपनीसानीपपमगरेसा। सानीसानीसा
नीसानीसानीपललोम पललोम पली पल
लल ददददद नन नन दीम दारा दीम दीम दी
म ननन ने किटि किटि ताकिटि किटि किटि

थेकिटि। किटिक्रोंक्रोंतक्रोंत थुमकिट थाथा

थाथाथाथा धींनें क्रोंक्रोंक्रों थुमकिटत क्रो

रागिनी भैरवी ताल तिताला॥ पनीया नधी

वोरी नदातसे मोराजियरालो मैंडरैरे। कुक

र कुइयो पताल जलपानी भरत भरत मोरी

कमर डरे॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला॥

भै॰ रा॰ बांसरी बजाई जाउ डारारे सावलियानैं। सुन

२५४

२९५

री सषी मैं क्या कहूं तोसों कौन मंत्र पढ डारे

सावलीयोने बांसरी बजाई जाउ डारारे साव।

रागिनी भैरवी ताल तिताला ॥ सोसों बोल

दा केंा नही बोलियां किस वेलेदा मैं वडी

योवे। तैंडी सूरत मैंडे मन विच्च वसीयां ब

सि हाजर बेटी तेरीयां किस बेलेदी मैं खडीयां

मोसे बोलदा ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला।

मो मोरे मइयां भीजे लाल लहरी यांरे। चम

कत बिजुरी बरषत मेंहा भीजे मोरी लाल चु

नरीयांने। अटरीया पिया बोलौं नाहीं मोव

ते नीदी जगाई। हमरे बलम मोरी कदरनै।

भै॰रा॰
२१५
295

जानी मरीइ डरीइ नाहीं॥ रागिनी भैरवी ताल
तिताला॥ बोलन लागी चिरियां चे भए फजर
बाबाजे राजखा हरि सुमरनकी विरियांचे।
सोवत सोवत सब निस बीती चेत पिछली
विरियांचे॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला॥
मुरली बजाई भली मनमोहननें। मुरलीव

जावत सब रंगभीनें कलन परत त्वरी पलछि

न तनमें ॥ रागिनी भैरवी ताल जत ॥ लावा

नैंडा त्रुभदा दिल विच गुमानीडा यार मियां

वेपाजेहातैंडा रंग वेरंगी सोणा आवा आवो

दी फंक खुबदा ॥ रागिनी भैरवी ताल जत

रावलेदा वन नाल मौला वारे मियां। चरणा।

भै॰रा॰
२९६
296

लगेदी लाजन नाउ जो चाहे करो पाल ॥ रागि

नी भैरवी ताल जत ॥ बालियां किन कमका

ई मेरी यांवे। बाबूलदी वेरीवरनदीवे तेरी मा

मैं नहीं रवांदियां ॥ रागिनी भैरवी ताल जत।

पलमें होत विहान मोकों नीकों सोवनदे।

निपट मेराजागी बलमा तोरे ऊमाहे सबनो

मोरी सिव मानले ।। रागिनी भैरवी ताल जत ।
सईया तोरे आगे मोरी अंखियो लजानी । छो
टे देवरा मोरे गोदके खिलौंना उन बिन रहीला
नजाय ।। रागिनी भैरवी ताल जत ।। नजारि
या पिया निराखे नाही सोवत काहेके जगाई
जो पिया हमसे रार करोगे मरीहूं नटरीहूं फज

भै॰ रा॰
२५७
217

रिया ॥ कन्हैया तैंने पनघट घेरीवे पनियां कै
से के जाउं । बाट घाट रोकत टोकत बहियां
पकर झकझोरी ॥ रागिनी भैरवी ताल जत
मैंनु तो तलब दिदारदी यारदी भलावे मैंनु॰
ना कोई बोलावा रीवे ना कोई पुछदा बोमि
यो घोरी नवरंगीला मैंनु प्यारदीवे मैंनु तो॰

रागिनी भैरवी ताल जत ॥ छदड जादीददा ।
मेडा मावल माइयो । मेहरइयो आइयो यावन
आया कवीनो करजा माडे फेरीयावे । लकरी
जरकौंयला भयो कोयला जरभई रावपापी
जिय राए माजरौं कोयला भइ नराव ॥ रागि
नी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ दिल जौंरो ।

भै.रा. दे नाल गुजरात आइयांवे बीबो। सगरी रयन मा

२५८

218

नु तलफत बीति भोरभए साजु गवला इयावे

बीबांदि॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताल

सोवते नु मनावन चलो मावी हे संग सहेलडी

सयो सावी मिलवी मायकें लावो बिन दिहे।

कलनोइ न साव॥ रागिनी भैरवी ताल जत॥

तैं दडीयो रे दडीयो मैंनु यादडीयोनि वेमौनियो
लैवेदडीयो लैंदडियो घुनडियो बलैंदडियो
करैं दडियो एछेदडियो नीमाउडीयो हालडि
योनीवे जोलडीयो नीजतडियो किनडियोनी
ज्ञतडियो जिंददि तडियो नीकरवानडियोनी
वे। ओविडियो मरमैंदडियो नालगाडेदडियो।

भै-रा- नीनी दडियो जावों दडियो मवरोत डियो नीवे

२५५

२११

रागिनी भैरवी ताल जत ॥ मोला ताजु वेगी

रवे चेगेनेणा वालीयोवे। नेंडे मवतदामें भ

प दिवाणा चाल चले मनवालीयोवे मोला-

रागिनी भैरवी ताल जत ॥ रवले माजुमाल

वेसीवाले मोंणा। विनदीठे मैंजुहि कपल।

कलन बिन वेविहो विहालवे ॥ रागिनी भैरवी
ताल जत ॥ सावल जो दे विदेश में तो बावरी ।
नी हरयो । जंगल जंगल फिरदी दिवानी क
र जोगनदा भेश ॥ रागिनी भैरवी ताल यमा
र ॥ आज रसमसे आएजी मेरे गेह कहो तौंड
गन उयामसें पनायरत होनैंन रंगीले रसीले ।

भै.रा.
७००
300

इतही बनावतहौ अब बरबानें देखौ पागपेच
मोरे छीले। सब तिम सूरत रंगमें रातें नातें
कपट करतहो मनमोहू नरहै मोनगामिले।
अब रसे प्रीत रीत ब्रजनियजू कहांसीखे हो
कुल बल जात छबीले॥ रागिनी भैरवी जत
ताल॥ आएजू आए भोन पीयारे रूपछके रस

बस मतवारे । जामनी जगे परे भामिनी मेरा
ग रयेंन समसें अरुन नैंन निहारे । पीकली
क शोभित कपोल अंजन अधर चम बुंदन ।
लछाय छबभारे । ब्रजनिय मदन देव अज
ल करले भोरही इत भले प धारे ।। रागिनी ।
भैरवी ताल रेंखता पस्तो ।। दादरका बीदडा

भै॰ रा॰ दि मेनो यरो। बिदरद होना नही नजरमे फि

२०१
301

रकि करौं तेमरे नहीहै आवे कोंउ जीयो याम

रों। व्रज नियवे जोरहोय के मेने पीर हरों। इश

क रेग रेग मुरतके रेग से रहौ नित भरों॥ रा

गिनी भेरवी ताल थीमा॥ मोंण्ण वेसीवाल

डेवे प्यारा। जौत फलज करी मेंडा माइयो।

कूकदी फेरी दवारी नजरन ओदा साडी सर

न विसारीयेवे ॥ रागिनी भैरवी ताल थीमा-

सोएण चीरेवालीयेवे सोएण ओन्ह कुगल क

री साडे नाल । सदा रेग सवारी हेसहेस सव

वे खलासीज्यों भामीत्यों पालसों ॥ रागिनी-

भैरवी ताल जत ॥ सोवरेदे नाल सान्ह हिलि-

भै॰रा॰ मिलि रहिये। सुंदर स्याम चरण चित दइये।
३॰२
302
जो हम है सो स्याम रंग रंगीये। और दे नालना
ही चित लाइये॥ रागिनी भैरवी नाल जल
द तिताला॥ नाल दोलन दे हिल मिल रही
ये। ए जगजीन मिठा बोलनावे ढोलना॥
बोली चुनी मान माप्याने भेजी औरपढे ह

वा ढोलनावे ढोलना ॥ रागिनी भैरवी ताल
जलद तिताला ॥ हो नैणां वालियो माहु म
ख वेपलावो । रैन दिना मैंनु कलन परतहै
तैंडे वेखणदे चावबो हो ॥ रागिनी भैरवी
ताल जलद तिताला ॥ जोगण मैं होइयो
मीयो रांफेदे उसी नाल । जोगी रांफा जोगण

भै॰ रा॰ हीरे इश्कदा पया जंजाल। जोगाण ऊठ झयोनी
२॰२
303
इतजे विडादे वासते पैसे मोहीणी मोनीयादे
वासते। तावत हजारो वारी सब सईदे विडो।
देवि नव बल रासतेवे॥ रागिनी भैरवी ताल
चौमा तिताला॥ मेहर नजर नाल आसा व
लवेवीया किनी नेंडि वोरीण किसवेलेदी

मैं क्रे कदी खिडियो झाग हइयो वेदीनें डिया

रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ खिस-

खिस कीटटियो वायु आवे बलम मेरे जानी

टटियाके ओट मेरे नैंन लगी है हेदर नूपल

भानी ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला

बगेलवा किटटियो वायु आए बलमादेखिड

भै॰रा॰ रानी। टटियो बोयु मेरे नैंन लगे हैके कलकडी

२॰४

304

यामारी॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तितारा॥

मेरा विंडावे जीव लावतर सजिवा लाक्बर

महो तेमाडा माईयो। रात देहा महोत

तसाडि लगा रहदा ध्यान तेंडावें॥ रागिनी

भैरवी ताल जलद तितारा॥ काहेको जगाई

वे रातके उनींदे नैंन। नामें बोली नामें चाली

विरहा आन सताइवें काहेकें॥ रागिनी भैर

वी नाल जलद तिनारा॥ विरेवाला यारमेरा

वे मन लेगाया मेरा प्यारावे। साडे दरद बारी

किसनु सुनवे मेडी जिंदडिनु डावदेगया विरे·

रागिनी भैरवी नाल जलद तिनारा॥ हीयावे

भै॰रा॰ २॰५ 305

माऩु चाहीयो नहीतो सावल साई चाहियो सावन्न साडे वारी गोकुलदे सोईयो राधेकी रन कीरत दी जाइयो ने । इहीतो सावल साई चाहीयो वे ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ लाईयांवे मैंनु लाइयां कहीयां न नेयाकेली लाइयांवे मैं रांकेन्न नावतहजा

रे दाइयो हिर सियालेदी जाइयो वे मैंनुला·
रागिनी भैरवी ताल जलद तितारा ।। सईयो
ने वेडरन जामी वसदे लोग बिगाने ।मिन
न करदी वारीवे पायन पडदा मैंडा सौंणा
रवकर मड ग्रामि ।। रागिनी भैरवी ताल
जलद तितारा ।। मोलामिलावे मेरी श्रोर ।

भै॰ रा॰

२॰६

306

तुसी माथदे रखावे। तेरी कसम मैं उदेत दि

ल रंग हद्दवे करार और तुसी न मिलने के।

डाव उसके सव मे सहे भला अनेजी मेव हजी

ना रहे ॥ रागिनी भैरवी ताल जत ॥ यारदा

वे निजारा दमदा मैं तो साडे नापंगी मेंडा मी

यो। दे दिदार जमाल करदे तें डे मिलणा

वाव मदमदा अदारंग मैंडीगलो नहि माना।
दावे॥ रागिनी भैरवी ताल जत॥ अब मेरा
मरा कहे टेरों। मेरे मनलागो उनहीसो सी
तापति पदहेरों। चरन सरोज अवण मन
मेरो पुज अंकुश सावकेरों। तोनसेंन अभ
नमबहो नायक इनतरब पर फेरों॥ रागि।

भै॰ रा॰
रू॰७
307

नी भैरवी ताल मध्यमा तिताला ॥ कैंजी पी
वे प्याले सजन अतके फी हदकान सोहे
वे प्यारे । उदो तसैंन लोगोंदी बदनामी स
ह देवे ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला ॥ फे
र कहदा मेड वेखिलिया । आवंदा जावंदा
हीय डावदे लाड दीत उमनुमे इहा कददी

बलिया॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला॥ को
न गत भइली मोरी आनन मिले पीयामो
को। उन बिन कलन परत जरी पलहूकेसे
बीके रैनबेहाय मोको॥ रागिनी भैरवी ता
लजलद तिताला॥ जाउ डारा कमाल कीना
वो इश्क लगामैंडा जीतरसो दय ग्रब जिया

भै॰रा॰ २॰८ 308

रपर बीनावे ॥ रागिनी भैरवी ताल रूपका।

रात सईयो तोरे रारे लागमें बडी चैनसे मोरई

रे। बाला पनेमें खेल गोमायो मराउ मरय

ई खोइरे ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद तिता॰

उठी हाथ मलमल पछ्तानी रैन चैन सबब

होइरे। अब पछ्ताए कहा होतहे अब अनसे

ख्वाब योइरे ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद ति॰
मजन मकारे चल बसे मोसे प्रछी बात ।
सोवत सो रोवत उठी पाटी परकत हाथ ॥
रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ बेदरदो
दी लगादिल एवे कि जाने इश्कां दारा जा
लम । उदेत उनमोत नहि मीले तेन यारकर

भै· रा· वेग मिलजा ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद ति·

३·५

30

टपा टपका रसकी गोट प्रेमका छुटपीवे सो

इ जावे । इश्का कदा गुल फूल षोरी मीये खुश

बुश्रोंदी जव वउजोंदी दमदी श्रार ॥ रागिनी

भैरवी ताल जलद तिताला ॥ विरदा जानी या

र वेमेतो मरदीया वोदी मैंनेरा फकफकफ

कक नैंगादा लिर । घोरीदे मैंत्रु रवदेविमीजां
दे रानि कुक कुक नैंगादा नीर ।। रागिनी भै
रवी ताल जलद तिताला ।। विहागीवे मारि
रान नैंत्रु नैंडे काहणवे लोकोंदी वेदीया म
हदैं । जागदी जागदी झणकि श्रोवि लगाइ
घोरी गलोंदीया मोंयो मयोंणी ।। रागिनीभै

भै॰रा॰ रवी ताल जलद तिताला॥ मीयांवे छुड कें॰

३१॰

310

चला नैंणी नैंण तकदी चुपकीती। भटईच

क चाकरी खिंडादे घोरीजाण दियां तेडा भला॰

रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला॥ दो नैंण

वे णोखेनी आगेवे सपाईडा तेराजी रहणा।

मैं रीया। आपन आवे वारीवे नाल कभैंजे मे

रा मोणा स्हाव बसे सुलतान ॥ रागिनी भैर

वी ताल जलद तिताल ॥ हावे ढोला मनप

रवोदीये हाहावे जेगासी यालेदा जटया ॥

हावे जेगासे यालेदा जटयो हावेढो ओविल

डेदी भोवा मटकेंदी चित चढ़जादीयाहो

रागिनी भैरवी ताल जलद तिताल ॥ देंदा

भै॰ रा॰ कैंा नहि दादवे साहब मेरें वेरें नदि नामैंनु
२११
३१७
ध्यान तुसाडावे किसनाल करें फिरियाद
वे॥ रागिनी भैरवी ताल जल जलद तिता॰
अजब तेरे कि बातें हे जो हमसे तुमने दिल
लगाया फेर वे वफाई कि। समझले तु अ
पने दिल कि बातें हम सानु करनि हुसाई॥

रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ।। आडा
वे मस्तु कोइ पुछदे जिनां दे इश्क कीता
हडकेहा । घायल मायल हुन्दी फिलदी ।
दिवाली सांईं दे नालरत । लगदा इश्क छो
री मसलन उचर गइयां पजमतो ।। रागिनी
भैरवी एकताला ।। किनक कियावे मिया

भै॰रा॰
३१२
312

नैंडे कोनो बीच पही गाले फटीया मडीयो
बीच पगरादीवे पाई तरफेदीयो मीयो मुर
पइयो दमना हीयो ॥ रागिनी भैरवी एक
ताला ॥ इस हाल में कछु लैले खबर मेरी
तुम साहब मे चेरी तेरी । हाल हवाल की जो
खबर तमीवार करा अबनाव अज मेरी ॥०

रागिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ झम
झम झमके बालीयां मीयां दमके रंग व
मके । झारमोहै पलु जरजरीदा दिलजु देख
त भली लगदी बालियां ॥ रागिनी भैरवी
ताल जलद तिताला ॥ तुसी वोरी सोवती ।
यां के मेंगरे जाव जवसें सइयां मोसे मिल

भै. रा.
३१३
313

के बिछुरे गए तबतैं सिरी कृती यावे ॥ रा

गिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ दरक

दि आइयो रेजानी मैंनु दरस वेवाजा तुज

कारन वातरी जोग कमाया सोणा दिलदी

तपत बुझाइयो । तुज बिन देवे मोहे क

लन परत है आकर हित सों लगाइयो । स

रसाइ ममभाइ करकर अचपल पीयचर आ
इये। रेजानी मैंनु दरस वे वाजा दरकादि आ॰
रागिनी भैरवी ताल थीमा तिनावा॥ तेडीभ
वे कालीयावे आउवा सुणी नैनादी नोकस।
भाल। वहे मस्त सविव मदपेचनाव गिवहे
दा दयावनामपे आपतव॥ रागिनी भैरवी ता

भै॰ रा॰ ल तिताग॥ तेरी ग्रावजाया मेरो मन हरलीनो

२१४

314

देवतही मन दसर यललवा। हौंतो भई बाव

री मी ग्रवडार दायो पढके कछु कलवा। फे

रिहो मेंगालय वदन विकता न दवसवे पुर।

गुरुजन बलवा। गम मरबे छवि देवाविव

भई कलनपरत हरीहरी कुन पलवा॥२

रागिनी भैरवी नाल तिताला ॥ समक खुफव

रविज पीयारे आषाक होकर सोणा क्यारे

पाया हैाय सोकरले सोदा पाय पाकर खे

ना क्यारे। गुल बरहारज्या गुलही पहचाने

काटकाट फिर बोना क्यारे। हावा हावे

गमका टुकड़ा फीका रस और सलोना क्या

भै॰रा॰ रे। साहेसेनफकीरसाइदासिसदिया तब
३१५
315
रोना क्यारे॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला।
दिल लाया तैडे नालवो वसी जानन जान
मीयां म्हावडा वेवाणानूं जी तरसे मैंडा वब
रूआयीन कीमता याव॥ नैंन करें देसेंन
रवाहे होवे हो दिल किताबे बैंन। ववआ

यीन नाल पीतलगा कर यारहागा लगेउदाव

देन ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला। किउ

र आवे चैनलेहव पियरवाके बिनदिठे में

उजानी। ववरु आथीन तैंडीयाद विरह

दी कलनापरे दिन रैन ॥ मैंनुभी लेचलना

ल में तेरीया जिंदीति वेहाल मेरीये। वव

भै. रा. क आयीन वारीवे कलनपरेदी नित रहदा।

२८६

316

वारी सब ध्यान तेरीयेवे ॥ रागिनी भैरवी

ताल धीमा तिताला ॥ स्थ काहे मोरी पीया

ने बिसराय डारीरे। बबक आयीन स्हनो मो

रे बालमने हा लगाय हरी हम मन हारीरे

पीया काहे मोरी पीरन जानीरे। बबक आयी

न तोमे मों सो कहि प्यारा ते मोरी नैं कन हो।
मानी वे।। रागिनी भैरवी ताल थीमा तिताल
मैंडा जिंददी नैंडे परवारी वे असी विरहदी।
कारी वे। बबक आयीन दीदे ड्रूण नैंडे नीर
निग हलगाकारी वे।। रागिनी भैरवी ताल
तिताला।। जीयकी पिया मैं तोसे कहियो।

भै० रा०
३२०
317

ने मोरी नेंकन मानीरे। समझ सोंचले मन में

सइयो मेरी डेमकहो नीरे। ववरु ग्रयीन ग्रव

मन लागो तो सों हम मोरी नेंकन मानीरे ।।

रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ।। वकस

गुन्हो मोर आलानैंडि वेदिहइयो। तेरी करी

म मके हि रहि तेरे हात निवाह मेरीयो।। रा

गिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ वक मग्रुम

हो माइ ग्राला तेंडि बेदि होइयो । तेही करीम

मेतहि रहिम तेरे हात निवाहमेरीयो । कोंा

मोण मैंडे प्यारा हूते हूते नाल रैन गुजारे ।

ग्राग्राक जिंदवार फेर डारे रंगभीने यह क

हे कहे हारे । नहीं उरहे दिल डावबनवारे सि

भै॰रा॰ २१८ 318

र चलदे नित करदे आरे न्यारे ॥ रागनी भैरवी॰

ताल जलद तिताला ॥ मेने नैंडे खोलीखा नि॰

कीतियां जिंद कुर्बान ॥ मालया कर मानुषा

यल किता सनवे महबुब सजान ॥ रागनी

भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ मानु तलबदी

दार यारदि मेजुत । जेगासियाले नीवे तेकरा

रोकण मिलीयो आविंदीदी मातु प्यारदीयां
रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला ।। सोना
यार मिले मैंडा रवावे मिलामी । आठ पहर
मानुवे ध्यान नमाजवे मियां मोला करे त
सी जिदा रहीयो यारि मगादि उहाई सों ।। रा
गनी भैरवी ताल धीमा तिताला ।। पमन मेरे

भै॰रा॰ स्याम महारोरी गुईयो मलिकी पुनमत भइहू
३१५
३१९
वावरि मनमटको कोउ लाव कहोरी दैया

पमन॥ रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला

मोवलीयोंने जाउ डगर मेरा वाज्र वेद खिल

राउ बुलि जायरेमो। जाउडाला नरोग भला

कितारे ब्रजराउ लिउ लिजायरेमो॥ रा॰

गनी भैरवी ताल यीमा तिताला ।। बगीया
मैं फुल नजाउरी चलो मेला लगा है । इस
बगीया मैं पिया मिले गे हंस हंस गरवा ल
गाउरी चलो ।। रागिनी भैरवी ताल यीमा
मन साचे इ सुमरन करले हरिके चरन
चितराखले पमनमा० काहे के भटकनाफि

भै॰ रा॰
३२॰
320

रत वावरे हरिके चरणोंसे धरले एमनसा॰
रागनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ मोई
मैं मचा पाय जद अपना इशाक लगायारि
गुइयो मेसा। दुनीया दौलत माल खजाना
नाहक भरम गमायारी दई मेसा ॥ कोई॰
दोजग विरहदा केगना एरीमैंतो डाडी वि

रहकी मानिरेकों। इश्काकोदे नाल छोवे मा
डी लगादि। इसक गनेमे लालगेहे हीराल
गे मोति पन्ना रगुइया कोईदी॥ रागिनी।
भैरवी नाल थीमा तिताला॥ मावरीयादि
जोर महोवत इश्काकोदे नाल छोवे माडी
लगादि। नेहालयाकर मेरु भूल कोंगया

भै॰रा॰ वे मेरा मीयां तेरे रवि नही रहदि भलावे सो॰
रागिनी भैरवी ताल यीमा तिताला ॥ वेनि
जा रे नैंणादा साई भला लगदा सजणा साई
भला लगदा प्यार नैंणा तेडडा नदोणा।
आविनू समझावे दिलबर होंदा होंदा कोंा
नही दम दम दा गुजारवें ॥ रागिनी भैरवी

३२१

321

ताल पीमा निताल ।। बीबेवे मोडि डावे।
दि कोहोदीये बालीये गाडी हौले हौले।
छेड बिबेवे मा। कणका पकीयेवे चर
काम्मनी। आपना घरदे वारी आमादिजा
प जीपे वेविवे उपे लोकपराप चहू ओर
वेलेवे लडी निकुकाप मनू लेवल आपने।

भै. ग.

३२२

322

नाल बिबेके मैतेडे नाल रासिजड़ईयो। बोल

पपिहारि तसोंवन आपहू औैर मोर बोले

हूकक्षनाए राह तसमाफरानू त्र्रर भैंज बी

वे झुक रहियो चंपेदी डालियो। पड्दीयो

भ्रूपाने साडा जीय डोलेंदेर बरकहैं असी

सामहाके कैदेई हुये साडीजीयेयडकैंदे।

ञामिल हीरे दे नाले रोया वेरा वहनैंडे नाल

राजी हूइयां ढोले वग दयो ॥ रागिनी भैर

वी ताल धीमा तिताला ॥ ज्यों ज्यों ज्ञन ग

रजे त्यों त्यों जीयराल रजैं दीयां वीवीवेतें॰

डी वाटडी खडी जोवां सोणा हिरनाल दि

ल पगीयां । एकतो प्रेथेरी हूजे राति का

लीयो मानकरैंदे नरकै णवालीयो। आमि
आमिवें तू मैंडा चेंदा चोलीदा लडकन मैंडे
सीने में वेया ढोलणदे चलाणेवे बरादी
यो। छूरीयो माडे दिलदे अंतर माणुले ल
गदीयो णी बुरीयो। केय बिछोडे हूझेंवे
ण कालियो खडी निक्केकेदी मैं चंपेदीआ

लीयां साडा दिल लगा मैंडे नाल बाबे मैं

झुक रहियां विरहोटी डारियां गावि हो ॥

रागिनी भैरवी ताल तिताला ॥ साकी अप

ना पिया मैं पाया । सचा ईशक लगाया ॥

री गई यों मैं । काम क्रोध मद लोभ मोह

सब दूर ही डार बहाया । योवन जागानवि

भै॰रा॰ हरत निसदिन हरचरणन चितलायारी।

३२४

३२५

हमानंदमै रंगरहीहूं यह गुरनके भेद ब

तायारी। साबी अपना पिया मैं पायारी॰ स

रागनी भैरवी ताल तिताला॥ धुन मन ब

रन सहायरी गुईयो बंसी बजावै बांकमा

हडा। सप्त तीन एकईस मूर्छना लागडे

टापजावै। सुर नर मुनि सब विव श्रमपैहै
शिव सनकादिक सुख पावै। कुस्मानंद मैं
मगण भएहैं मुरली रसिक सुनावैरी॥१॥रा
गनी भैरवी ताल तिताला॥ वीवांवे मेडी॰
वातडियो सुन जाइयो छैलडा वांकडा ति
खडा नि कडा सांवलडा मोणावे माडीवा।

भै० रा० नैंदड़ी सूरत साडे मनवश गइयो रंगडोच०

३२५

325

गड़ा मोहड़ा ढोलणा बीबोवे ॥ रागिनी भै

रवी ताल एकताला ॥ परी गुईयो सपने क

रमकी पोंव पित मानो जैसी शाम । हमत

मदै क्या समझावें असी सब काइकोदो०

ष ॥ पितकारि एकताई रे मैं क्या जाणू ।

बे कदर बलमा मोरे कदर न जानी आशि ।
क छुनमैं पाई । पिय प्यारेको नखरा लगा
य रावती । मेरा कहा एक मानत नाही ठा
डी रहो माला जपती ॥ रागिनी भैरवी ता
ल एकताला ॥ अरी परी गुईयो लागी क
लेजे फांस निकसत नाही मेरी सांमरा । मैं

भैः रा॰ ननकनभए यथुंह नन मन भयो सकामए

२२६

326

रागिनी भैरवी ताल तिताल॥ एरि भैजीदा

हडा पिलावे वांका मारुडा। सोनैंदा सरा हि

मीनैंदा प्याला रामिबल गावै नीक मारुडा

रागिनी भैरवी ताल तिताल॥ जाउरें सोव

लीयो नैंणा वालीयो। तेरी ज़ुलफें सोहैं।

हेचर वालियां नैंडी वोकि भौंहें मके मारियां

नैंडी लटक चाल परवारी मोबल परवारी।

मोबल वार गाइ नैंरि चितवन तिरछी मके

प्यारी मा गाइ॥ रागिनी भैरवी ताल तितारा

रंग रंगावे गुले अतर चमन मेल किनावि

ल गया नाफरमा मेरे मनमे। गुले लालगु

भै.रा.
३२८
327

ले नाफरमाह जारा गुले हमहे गुले मोगान
कान जारा। वोतो आपि हजारि दिलबर हैज
रीबागवीच गुलशान शोगुलदारा। नूरदे।
नूरदेरवा नूरदे मलानूरवी देवि नबरतदा
प्यारा। लेकिन जिको ननमे लागी सो इजा
नी मा गरिबका जैडा बस गया मेरे ननमे।

रागिनी भैरवी ताल तिताला ।। रानीकोरा॰
रानिकोरा रानीकोरारे । रानी गोरा रानीभो
रा रानी चोरारे । रंग रंगके रंगमे रंगभोरारे॰
रानि कलियो रंगरलीयो रंग भोरारे । रानि
जागे रानिपागे रानि भोरारे । रानीमोने जा
ए नींदके भोंरारे । इन गलीयो मलियोरे ।

भै॰रा॰ छब लागै बलियांरे लियां मलियां भौरारे॥

२२८

328

रागनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥ हे सखि

सब घुघामको आई कहा करौं जिय थिरन

रहाई। सोवत चौंकारि परि पलगा सो तल

फ तलफत मारि रैंन बिहाइ। नाकोइ एसो

वेदन कहौं सुनाइ। छबिनायक जो आन

मिलावै ताके दोउ करले उभलाई ॥ रागनी
भैरवी ताल तिताला ॥ आवो पियरवावेग
दरसदेका तरसावे मोहेरे । तलफ तलफ
त कैसे कटै निसदिन जवसे गए विछोहा
रे । कहा करु कछु वसनही मेरो माहेजीए
पिरजहोहेरे ऋवनायक करकृपा मिलो

भै॰रा॰ जो नैनन राखे लोहेरे ॥ रागनी भैरवी ताल

३२५

जत ॥ मिथ्या जनम जात जगमांही । जो स

329

ब लाग भ्रमतहों निसदिन सों साबज्यो त

रबरकी छांई । अबहू चेतहेत कर हरिसों

सुर नर मुनि जाको ध्यान धराई । छबि॰

नायक मेघ्रोबमिटहै अभै करेंगे गाहेदाउ

वोही। हालीयानाल कर यादरवाकी दम

बदमनिसदिन घरिघरि पल छिन हरद

म। टेढी जाति विवरा पैंडरवहि गावेला

ज शरम। सुमरन कर हरिका दमबदम

जामेरहै तेरी लाज शरम। घरी घरी पल

पल छिन छिन निसदिन मनन विसारो

भै॰रा॰ रो हरदम॥रागनी भैरवी ताल जत॰फार
३३०
330
सी॥ छेनवाज महोरि वामहर आमिवटल
वहरमद। रंग आमे जव छविकरदमरुये
गलेहविला लेरा। मेपाशावर आराजेवंबो
शतर अवीर गुलालेरा। अजमपनावाव
मंदेशाकी मोममेवो साकिनारामद। होरि

वामहहहग्राजि ॥ रागनी भैरवी ताल जत ।
कल ककुज्यों ग्रायगयारे नमेमे वैटवै
ट कुछ मोंही लहर मेरे मनके ग्रंदर । च
लागया गुनमे ग्रपनि उम परिके ग्रंरके
ग्रंदर । देवाकमापतनन ननके ग्रंदर ।
हमकडामकाया जोरथाबिलवनकेग्रं

भै॰रा॰
२२१
331

दर दिलकों मैंज भइ देखि करवदनके से
दर ॥ रागिनी भैरवी ताल जत॰ ॥ धनब्र
री धन पल धन है महूरत धन धन आज
की वेली । धन बृंदाबन बंसीवट धन ज
मना करत हैं केली । कृस्नानंद रंगमे रं
ग गई रही हू आप इकेली ॥ रागनी भैरवी

ताल तिताला ॥ अब लागरहे अचेत चेत
मन छोड जगतकी आशारे । अहतन अ
पना अचलन जानैं ज्यों फूल जान बना
सारे । सुत बनितामों नेह कीन्हो पहिरे
मलमल खासारे । कोट जतन करकर
धनजो रख्यो संगन जैहै सांसारे । बहुविध

भै॰रा॰ चुन चुन महल बनावत करछ इहाकीला
३३२
332
मारे। सोसब मिथ्या जान बाबरे पलपल
टेमो मारे। एक आवत एक जावत चल॰
ले यह जग यहो तमा शारे। छबिनाय
क हरिनाम भजन बिनहोयहै जमपुर
आधारे॥ रागनी भैरवी ताल तिनाला॥

बांसुरी कान्ह याने बजाई आजरी। तनक
मनक सुनत सुधन रही तन विसरगाइ
गरह काजरी। छुटे संजमावान पान औ
र छुटी गुरुजन लाजरी। जब नायक सु
घरन बस निसदिवस कीने ब्रजराजरी।
गोना बंगला रागनी भैरवी तथा बरवार

भै॰रा॰ ताल तितारा ।। श्रोर श्रीगोकुलो वासी केमीं
२२२
333
नैं बजावो वासी लमी श्रेतरे बजावो वासी
श्रामार श्रेतरे पश्रिलो श्रासी । हूडा यमए
र पाला मुवि मृडमयु हासी । एक श्रनेग
श्रायेग हूये कदवेर डाले वासी । वेएउरवे
नीर हैये एमवग्र वासी । गोकुल हराइता

रजमनारकुले आमी ।। रागनी भैरवी ताल
तितारा तथा बरवा ।। अरे हो काला आमा
रमनतो मानैंना । एकतो चिकनो काला
गले सोकर माहाइ कीनो मनन कैं सब
दीनो मनके घारण आयो कुमररंगदीन
जन ।। रागनी भैरवी ताल जत ।। मिलवे

भै·रा·

२२५

86
334

कौं मेरा जाय चाहै रे तुम आन मिलो मेहा
रे प्यारे। कहा कहु कछु कहन सकत हूं
इतनी अरज मारी मोनो तुम आन मिलो
रागनी भैरवी ताल तिताला॥ मियां मेतो
चाल पहचानी रे तेंज नजर थें जानी मी
थें। हमने पापन दहन में तेरे उपनामत

मामजेभीशेलभीनें अपनातो कीयाका।
म नमाम ।। रागनी भेरवी ताल तिताग
सोवरें माइहे दिवानी तेरिरेजो बनाकीमे
फ सवेरे फुठाफिरिहु अजवालीन होदा
वनकी। कहा चाहत उमन्नो ददरदीकीाव
वर नरावे जो काहू वनकी कवी हलाह।

भै॰रा॰
२२५
87
335

लकवीहै अमनतया मन पुछ इन चितवन
की॥ रागनी भैरवी ताल तिताला॥ तेरी
चितवनके मैंवारी वाकें रेमरे पैया। या
मयतेरे देवत चितवन वरछी लगीजे
मैकीरीवे॥ रागनी भैरवी ताल तिता
ला॥ गारवोलागायले मइयां तनमानोवी

नमानेगी। मेरे पीयानैं मैं ध्यान लगाहै ब
र बसे बहीये ककफोरदानेगी। रागनी
भैरवी ताल तिताला॥ होरेवीबो वैरजबा
डेकाजाना छाडदे हो जदी रजबा। रज
बाडेदी जालम जदीये जाय बसा बजे।
बाडे मौणावैरे॥ रागरागनी भैरवी ताल

भै॰ता॰
२३९

तिताग ॥ रागणजी मैतो गिरीधरका गुणगा

स्यो । तमहारो ज्ञान चरनामृतरो नितउठे

वलजास्यो । गुरु प्रताप साथरी मेंगतस

हजीही तरजास्यो । मीराके प्रभु गिरिध

रनागर चरणकवललिपटास्यो ॥ राग

नी भैरवी ताल तिताग ॥ मदके जादायाङ्ग

336

CN

ण नैडें चेसाबला यार । बेसी बजावदाडा

यल चोवदा करदा सानु प्यारदे ॥ रागनी

भैरवी ताल तिताला ॥ कोयल बोले घा

बद्ह बगीयोंमें । इस बगीयां मे फूल

लगेंहे जो सइयां नो पगीयोंमें ॥ रागनी

भैरवी ताल धीमा तिताला ॥ चीरेबालाया

भै॰ रा॰ र मैंरा मन लै गयो है । दरद साडा वारी कि
२२०
सनु सुनावे मैंडी जिंदडीनूं डावदे गया ।
रागनी भैरवी नाल थीमा तिनारा ।। आ
ला मैंडी जानवे तैडडें कारन लानवै ।
इत महूबुबांदी बात बर्णोदीवे मियापही
राले मैंनो चेगी बैठे लवैगन यारवे ।।

अथ महिम्नाख्य परिच्छेदः रागिनी भैरवी ता- गी॰ ता॰

महिम्नः पारं ते परम विदुषो यद्य सदृशी

स्तुति ब्रह्मादीना मपि तद वसन्ना स्त्वयिगि

रः। अथा वाच्यः सर्वः स्वमति परिणामा व

धि गृणन्। मम प्येष स्तोत्रे हर निर पवादः

परिकरः।१। अतीतः पंथानं तव च महिमा

ग॰ म॰ वाङ्मन सयो रतद्व्या वृत्त्यायं चकित मभिधत्ते

श्रुति रपि सकस्य स्तो तव्यः कतिविध गुणः

कस्य विषयः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः

कस्य न वचः ।२। मधुस्फीता वाचः परम म

मृतं निर्मित वत स्तव ब्रह्मन किंवा गपि सु

रगुरो र्विस्मय पदं मम त्वे तां वाणीं गुण क

थन पुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेस्मिन्पुर

मथन बुद्धि र्व्यवसिता ।३। तवैश्वर्यं यत्त

ज्जग दुदय रक्षा प्रलय कृत त्रयी वस्तु व्य-

स्तं तिसृषु गुण भिन्नासु तनुषु अभव्याना

मस्मिन् वरद रमणीया मरमणीं विहन्तुं-

व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ।४।

ग.म. किमीहः किं कायः स खलु कि स्वपायसिम

वने किमा यातो याता स्तृजति कि स्वपा दा

न इतिव ग्रत कौं सर्यो त यान वमरङ्खो

हत यियः ञत कौंयं कोत्रि न्मावर यति ।

मोह्राय जगतो । ५। ग्रजन्मानो लोकाः कि

म वय ववेतो पि जगता मथिणनारे किं भ

व विधि रनाहृत्य भवति अनीशो वा कुर्या द्भु
वन जनने कः परिकरो यतो मंदा स्त्वां प्रत्य
मर वर संशे रत इमे ।६। त्रयी सांख्यं योगः
पशुपति मतं वैष्णव मिति प्रभिन्ने प्रस्थाने
पर मिद मदः पथ्य मिति च रुचीनां वैचित्र्या
दृजु कुटिल नाना पथ जुषां नृणा मेको ग

रा॰ म॰ म्य स्त्व मसि पयसा मर्णव इव ।७। महोक्षः ख
ट्वांगं परशु रजिनं भस्म फणिनः कपालं चे
तीय त्तव वरद तंत्रो प करणं सुरा स्तां तामृ
द्धिं दधति तु भव द्भ्रू प्रणि हितां नहि स्वात्मा
रामं विषय मृग तृष्णा भ्रमयति ।८। ध्रुवं क
श्चित्सर्वं सकल मपर स्त्व ध्रुव मिदं परो ध्रौ

व्या क्षैवो जगति गदति व्यस्त विषये मम।
स्तेय्य नासि न्नुर मथन नै विस्मित इव स्त
व जिह्रेमि त्वो न विल नत हृष्ट म्नावरता
ए। नवै म्षर्य्ये यत्ना घड परि विरंचो हरि
रयः परिक्षेते याता वनल मनल स्कंयः
वपुषः नतो भक्ति श्रद्धा भर गुरु गणाङ्गो।

ग॰ म॰ गिरिश यत् स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्ति

र्न फलति ।१०। अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवै

रव्यतिकरं दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्ड

ू परवशान् शिरःपद्मश्रेणी रचित चरणां

भोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुर हर ।

विस्फूर्जितमिदम् ।११। अमुष्य त्वत्सेवा स

4

मधि गत सारं भुज वनं बलात् कैलासेपि त्व

दधि वसतौ विक्रम यतः अलभ्या पाताले।

अलस चलितां गुष्ठ शिरसि प्रतिष्ठा त्वय्या

सी द्ध्रुव मुप चितो मुह्यति खलः ॥१२॥ यदृ

द्धिं सुत्राम्णो वरद परमो च्चै रपि सती मध।

श्चक्रे बाणः परि जन विधेय त्रिभुवनः न त

रा.म. चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयो र्नक

स्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनति १३

अकांड ब्रह्मांड क्षय चकित देवासुर कृपा

विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः

सकल्माषः कंठे तव न कुरुते न श्रियमहो

विकारोपि श्लाघ्यो भुवन भय भंग व्यसनिनः

नः। २४। असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवा-
सुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य
विशिखाः सपश्यन्नीश त्वामितर सुर साधा
रणमभूत स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु
पथ्यः परिभवः। २५। मही पादाघाता द्व्रज
ति सहसा संशय पदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुज

रा॰म॰ परिघ रुग्ण ग्रहगणं मुहुर्द्यौ दौस्थ्यं यात्यनि
भृत जटा ताडित तटा जग द्रक्षायै त्वं नटसि
ननु वामैव विभुता ।१८। वियद्व्यापी तारा ग
ण गुणित फेनो द्गम रुचिः प्रवाहो वारां यः
पृषत लघु दृष्टः शिरसि ते जग द्वीपा कारं ज
लधि वलयं तेन कृत मि त्यने नैवो न्नेयं धृत

महिम दिव्ये नववपुः ।९। रथः सोणी ये

ता पात धृति रथेंद्रो यन रथो रथांगो वेद्रा

कौ रथ चरण पाणिः प्रार इति दियतो ले

को ये विपुर त्राण माडंबर विधि विधेये:

कीडंत्यो न खिल पर तंत्राः प्रभ पियः १०

हरिस्ते माहत्वे कमल बलि मादाय पदयो

ग.म. र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलं ग

तो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा ।

त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगतां ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां

क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते

अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं

क्रतौ यज्ञो बधो हठ परि करः कर्म सजन :

२ क्रिया दत्तो दत्तः कत्र पति रथीश त्त

न भूता मरीचिण मार्त्विज्ये प्राण द स द

स्याः स्वर गणः कत्र श्रेष्ठ स्तनः कतष

फल दान वाम निनो अवे कर्त्तः क्रत्ज्ञा

विपुर मभि वाग यहि मावाः । २ । प्रजा

गा॰ म॰ नाथे नाथ त्रसम मभि केस्वो उहि तरे गा

ते गेहिहृतो रिर मयिष्ठ मृष्णसा वष्णा य

नु ष्णाणे यांते दिव मपि स पञ्चा कृत ममे ।

त्रेमेते ते यापि त्यजति न म्लना व्याथ रभसः

२२ स्वला वाणा घोमा भत यत्तुष मह्राय ।

त्ला वत पुरः लक्षे दृष्ट्वा पुर मथन पुष्णा

8

युध मपि यदि स्त्रैणं देवी यम निरत देहार्ध
घटना दवैति त्वा मद्धा वत वरद मुग्धा
युव तयः २३ श्मशाने ष्वा क्रीडा स्मर हरपि
शाचाः सह चरा श्चिता भस्मा लेपः स्रगपि
नृ करोटी परि करः अमंगल्यं शीलं तवं
भवतु नामै व मखिलं तथा पि स्मर्तॄणां ।

गा·म· वरद परमं मंगल मसि।२४। मनः प्रत्य क्चि

त्ते सविध मवधा यात्त मरुतः प्रहृष्य द्रो मा

णः [illegible] प्रमद सलिलोत्संगित दृशः य

दा लोक्या ह्लादं ह्रद इव निमज्ज्या मृतमये।

दधत्य न्तस्तत्वं किमपि यमिन स्तत्किल भ

वान्।२५। त्वमर्क स्त्वं सोम स्त्वमसि पवन।

स्त्वं हुत वह स्त्व माप स्त्वं व्योम त्वमुधरणि
रात्मा त्व मिति च परिछिन्ना मेवं त्वयि प
रिणता बिभ्रतु गिरं न विद्म स्तत्तत्वं वय
मिह हि यत्वं नभवसि ।२६। त्रयीं तिस्रो
वृत्ती स्त्रिभुवन मथो त्रीनपि सुरा नका-
राद्यै र्वर्णै स्त्रिभिरभिर्दधत तीर्ण विकृति तुरीयं

गा॰ म॰ ते धाम ध्वनिभि रव रुंधान मणुभिः सम
स्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्यो मिति पदं

10

२८ भवः शर्वो रुद्रः पशु पति रथोग्रः सह
महां स्तथा भीमेशाना विति यद भिधाना
ष्टक मिदं अमुष्मि न्प्रत्येकं प्रवि चरति दे
व श्रुति रपि प्रियाया स्मै धाम्ने प्रणि हित

नमस्यो स्मि भवति वपुष्याडु भावा दनुमि
न स्मिंदं जन्मनि पुरा पुरारे नैवाहं क्वचिद
पि भवेंते प्रणा नवान नमन्त्मकः संष्ठ त्व
नतु रहू मत्रे पानतिमा न्महेषा ते तव्यो।
नर्दिद मपराय हय मपि। २९। नमो नेदिष्ठा
य प्रियद वद विष्ठायच नमो नमः स्तोदि।

ग्रा·म· ष्ठाय स्मर हर महिष्ठायच नमो नमो वर्षिष्ठा

य त्रिनयन यविष्ठायच नमो नमः सर्वस्मै

ते तदिद मति सर्वायच नमः ।३०। बहल र

जसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमोनमः प्रबल

तमसे तत्संहारे हराय नमोनमः जनसु·

खकृते सत्वो द्रिक्तौ मृडाय नमो नमः प्रम

हसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमोनमः॥३०॥

कृश परिणति चेतः क्लेश वश्यं क्वचेदं क्व

च तव गुण सीमो ल्लंघिनी शश्वदृद्धिः इति

चकित ममंदी कृत्य मां भक्ति राधा द्वरद च

रण यो स्ते वाक्य पुष्पो पहारम् ॥३१॥ असित

गिरि समं स्या त्कज्जलं सिंधुपात्रे सुर तरुवर

ग. म. शाखा लेखिनी पत्र मुर्वी लिखति यदि गृही
त्वा शारदा सर्व कालं तदपि तव गुणाना ।
मीश पारं नयाति असुर सुर मुनींद्रै रर्चि
तस्येंदुमौलेर्ग्रथित गुण महिम्नो निर्गुण
स्येश्वरस्य सकल गण वरिष्ठः पुष्पदंताभि
धानो रुचिर मलघु वृत्तैः स्तोत्र मेत च्चका

र ३४ अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्प
ठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः स भ
वति शिवलोके रुद्रतुल्यः सदात्मा प्रचुर
तरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ३५ दी
क्षा दानं तपस्तीर्थं होमयागादिकाः क्रियाः
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीं

ग॰म॰ महेशा न्ना परो देवो महिम्नो ना परा स्तुतिः

13

अघोरा न्ना परो मंत्रो ना स्ति तत्वं गुरोः परम ३८

कुसुम दशन नामा सर्व गंधर्व राजः शिशु

धर वर मौले र्देव देवस्य दासः सगुरु नि

ज महिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात् स्तवन मि

द मकार्षी द्दिव्य दिव्यं महिम्नः ३९ स्तवर

मुनि पूज्यं स्वर्ग मोक्षैक हेतुं पठति यदि मनु
ष्यः प्रांजलि र्नान्य चेताः व्रजति शिव समीपं
किन्नरैः स्तूयमानः स्तवन मिद ममोघं पुष्पदं
त प्रणीतं ३९ श्रीपुष्पदंत मुखपंकज निर्गते
न स्तोत्रेण किल्बिष हरेण हरप्रियेण कंठ
स्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भ

ग॰म॰ वलि भूतपति मैंहेशाः। ५०॥ इति रागिनी भैरवी

महिमाख्य परिच्छेदः॥ ॐ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

14

रागिनी भैरवी ताल। ४ श्लोक। मेघै मेंदुरमं

बरं बन भुवः श्यामा स्तमाल द्रुमै नंक्तं भी

रुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय। इत्थं

नंद निदेश तश्चलितयोः प्रत्यध्व कुंज द्रुमं।

राधा माधवयो र्जयंति यमुना कूले रहः के

लयः ॥ १ ॥ वाग्देवता चरितचित्रित चित्त स

ग·गी· द्मा पद्मावती चरण चारण चारण चक्रवर्ती
श्री वासुदेव रति केलि कथा समेत मेतं क
रोति जयदेव कविः प्रबंधम् ॥ २ ॥ यदि ह-
रि स्मरणे सरसं मनो यदि विलास कलासु
कुतूहलं । मधुर कोमल कांत पदावली
शृणु तदा जय देव सरस्वती ॥ ३ ॥ वाचः

पल्लव यत्युमा पति धरः संदर्भ शुद्धि गिरां ।
जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूह
द्रुतेः शृंगारोत्तर सत्प्रमेयरचनै राचार्य गोव
र्द्धनस्पर्द्धी कोपि न वि श्रुतः श्रुतिधरो धोयी
कविक्ष्मा पतिः । अष्टपदी । रागिनी भैरवी ता
ल ॥ प्रलय पयोधि जले धृत वानसि वेदं

गी.गो. विहित वहित्र चरित्र मखेदं केशव धृत मी-
न शरीर जयजगदीश हरे ।१। क्षिति रति विपु
ल तरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणि धरण किण
चक्र गरिष्ठे केशव धृत कच्छप रूप जयज
गदेश हरे ।२। वसति दशन शिखरे धरणी
तव लग्ना शशिनि कलंक कलेव निमग्ना ।

केशव धृत सूकर रूप जय जगदीश हरे ३

तव कर कमल वरे नख मद्भुत शृंग दलि

त हिरण्य कशिपु तनु भृंग केशव धृत न

र हरि रूप जय जग दीश हरे ।४। छल य

सि विक्रमणे बलि मद्भुत वामन पदनख

नीर जनित जन पावन केशव धृत वामन

गी॰ मन रूप जय जगदीश हरे ।५। क्षत्रिय रु
धिर मये जगदप गत पापं । स्नपयसि प
यसि शमित भव तापं । केशव धृत भृगु॰
पति रूप जय जगदीश हरे ।६। वितरसि
दिक्षु रणे दिक्पति कमनीयं । दश मुख॰
मौलि बलिं रमणीयं । केशव धृत रघुप

ति रूप जय जगदीश हरे ।७। वहसि वपुषि

विशदे वसने जलदाभे । हल हति भीति मि

लित यमनाभे । केशव धृत हलधर रूप ज

य जगदीश हरे ।८। निंदसि यज्ञ विधे रहह

श्रुति जाते । सदय हृदय दर्शित पशु घाते

केशव धृत बुध शरीर जय जगदीश हरे ।९

रा॰गी॰ म्लेच्छनि दहनि यने कल यसि करवाले। धूम

केतु मिव किमपि कराले। केशव धृत कल्कि

शरीर जय जगदीश हरे।१०। श्री जयदेव क

वे रिद मुदित मुदारे। शृणु सुखदे शुभदे भ

वसारे। केशव धृत दश विध रूप जय जग

दीश हरे।११। रागिनी भैरवी ताल पेलाक॰

वेदा नुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्बिभ्र
ते दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं
कुर्वते। पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारु
ण्य मातन्वते म्लेच्छान्मूर्छयते दशाकृति
कृते कृष्णाय तुभ्यंनमः। ५। रागिनी भैरवी
ताल ।अष्टपदी॥ श्रित कमला कुच मे

गी.गो. डल धृत कुंडल। कलित ललित वनमाल
जय जय देव हरे।।१।। दिन मणि मंडल मंड
न भव खंडन मुनि जन मानस हंस। जय
जय देव हरे।२। कालिय विष धर गंजन
जन रंजन यदु कुल कमल दिनेश। जय
जय देव हरे।३। मधु मुर नरक विनाशन।

गरुडा सन। सुर कुल केलि निदान जय जय

देव हरे।४। अमल कमल दल लोचन भव-

मोचन। त्रिभुवन भवन निधान। जय जय

देव हरे।५। जनक सुता कृत भूषण जि-

त दूषण समर शमित दश कंठ। जय जय

देव हरे।६। अभि नव जलधर सुंदर धृत मे

गी.गो. दर श्री मारव चंद्र चकोर। जय जय देव हरे ७

श्री जयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्व

ल गीतं। जय जय देव हरे। ८। रागिनी भैरवी

ताल श्लोक॥ रामो ल्लास भरेण विभ्रम।

भृता माभीर वामभ्रुवा मभ्यर्णे परिरभ्यनि-

र्भर मुरः प्रेमांधया राधया। साधु त्वद्वदने।

6

स्थामय मिति व्याहृत्य गीतस्तति व्याजा।
उद्भट स्त्रेबित स्मित मनो हारी हरिः पाण्डवः
अनेक नारी परिरंभ संभ्रम स्फुरन्मनोहारि
विलास लालसे मुरारि रामा उपदर्शी यता
सौ सखी समक्ष पुन राह राधिका। ७॥ वि
सेषा मनुरंजनेन जनय मानंद मिन्दीवर।

ग· गी· श्रेणी श्यामलकोमलै रुपनयन्नंगै रनंगो-

त्सवं। स्वछंदं ब्रज सुंदरी भिरभितः प्रत्यंग

मालिंगितः शृंगारः सखि मूर्तिमानिव मधौ

मुग्धो हरिः क्रीडति।६। नित्योत्संग वसद्भु

जंग कवल क्लेशादिवेशाचलं प्रालेय प्लव

नेछयानुसरति श्री खंडशैलानिलः किंच

स्निग्धरसाल मौलि मुकुलान्यालोक्य ह
र्षोदया उन्मीलन्ति कुहूः कुहूरितिकलो-
त्तालाः पिकानां गिरः ॥९॥ अष्टपदी रागिनी
भैरवी ताल । चंदन चर्च्चित नील कले
वर पीतवसन वन माली केलि चलन्मणि
कुंडल मंडित गंड युगस्मित शाली १ हरि

गी॰गो॰ विहरति हरिरिह सरस वसन्ते। नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि जनस्य दुरन्ते॥

गी॰गो॰ विह सरय वधू निकरे। विलासिनि विलस

ति केलि परे॥ १॥ पीन पयो धर भार भरेण

हरिं परि रभ्य सरागं। गोप वधू रनु गाय

ति काचि दुदंचित पंचम रागं॥ २॥ कापि

विलास विलोल विलोचन खेलन जनि

त मनोजं। ध्यायति मुग्ध वधू रधिके म

धुसूदन वदन सरोजे ।३। कापि कपोल
तले मिलि तालपितं किमपि श्रुति मू
ले । चारु चुंबन नितंब वती दयितं पुल
कै रनुकूले ।४। केलि कला कुतु केनच
काचिद मुं यमुना जलकूले । मंजुल वं
जुल कुंज गतं विचकर्ष करेण दुकूले ५

गी.गो. करतल ताल तरल वलयावलिक लित

कल स्वन वंशे। रासरसे सहनृत्यपराह॰

रिणा युवती प्रशशंसे।६। श्लिष्यति काम

पि चुंबति कामपि रमयति कामपि रामां॰

पश्यति सस्मित चारु परामपरामनुगच्छ

ति वामां।७। श्री जयदेव भणितमिदम॰

ञ्जन केश्राव केलि रहस्यम। वृंदावन विपिने
चरितं वितनोतु शुभानि यशस्य। ८। रागि
नी भैरवी ताल। । विहरति वने राधा साधा
रण प्रणये हरौ विगलित निजोत्कर्षा दीर्षा
वशेन गतान्यत:। क्वचिदपि लता कुंजे गु
ञ्जन्मधुव्रत मंडली मुखर शिखरे लीनादी

रा॰गी॰ नाप्युवाच रहः साखी।१०। कंसारि रपि संसा

र वासना बंध श्रृंखलां राधा माधाय हृदये

तत्या^ज ब्रज सुंदरी।११। इतस्तत स्ता मनु सृत्य

राधिका मनंग बाण ब्रजखिन्न मानसः कृ

तानु तापः सकलिं दनंदनी तटान्त कुंजे वि

निष साद माधवः।१२। रागिनी भैरवी ताल

10

ग्रष्टपदी। मामियं चलिता विलोक्य वृते
वधू निचयेन। सापराध तया मयान नि
वारिनाति भयेन।२। हरि हरि हता दरत
या गता सा कुपितेव। किं करिष्यति किंव
दिष्यति सा चिरं विरहेण किंधनेन जने
न किं मम किं जीवेन गृहेण।३। चिंतया

ग·गी·

मि नतदाननम कुटिल भ्रुकोप भरेण शो-
ण पद्म मिवो परि भ्रमता कुले भ्रमरेण।
तामहं हृदि संगता मनिशं भृशं रमयामि
किं वनेनु सरा मितामिह किं वृथा विल-
पामि।४। तन्वि खिन्न मसूयया हृदयं त-
वाकलयामि तन्नवेद्मि कुतोगता सि नते

नते गुनयामि । ५ । हृष्पसि पुरतो गता गत ।
मेव किंविदयासि । किंपुरे बहु संभ्रमे परि
रंभणं न ददासि । त्वमपता मपरे कदापितः
वे हृशं न करोमि । देहि सुंदरि दर्शनं मम
मन्मथेन दुनोमि । वर्णितं जयदेवकेन ह
रेरिदं प्रवणेन किंदु बिल्व समुद्र संभवरो

गी·गो· ह्मिणी रमणेन ।८। पाणौ मा कुरु चूत साय
क ममं मा चाप मारो पय क्रीडा निर्जित वि
श्व मूर्छित जना घातेन किं पौरुषं । तस्या ए
व मृगी दृशो मनसिज प्रेंखत्कटाक्षाशुग·
श्रेणी जर्जरितं मना गपि मनो नाद्यापि संधु
क्षते । ९ । हृदि विलाशता हारो नायं भुजंग

12

मनायकः कुवलय दल श्रीणी कंठेन सा ग

रल द्युतिः मलयज रजो नेदं भस्म प्रिया र

हिते मयि प्रहरन हर भ्रांत्या नंग क्रुधा कि।

म धावसि।८। रागिनी भैरवी ताल।

अषपदी ॥ वहति मलय समीरे मदन मुप

निधाय स्फुटति कुसुम निकरे विरहि हृद

गा॰गी॰ य दलनाय १ सखि सीदति तव विरहे वनमा
ली। दहति शिशिर मयूखे मरण मनु करो
13
ति। पतति मदन विशिखे विलपति विकल
तरोति। २। ध्वनति मधुप समूहे श्रवण मपि
दधाति। मनसि वलित विरहे निशि निशि
रुज मुप याति। ३। वसति विपिन विताने त्य

जतिललित धाम। लुठति धरणि शयने ब

हु विपलति तव नाम।४। भणति कवि ज

यदेवे विरहि विलसितेन। मनसिर भस वि

भवे हरि हृदयत सुकृतेन।५। गगिनी भै

रवी ताल श्लोक॥ पूर्वं यत्र समन्नयार

तिपते रासा दिना: सिद्धय त्ससितेव निकु

गी·गो· जमन्मथमहातीर्थे पुनर्माधवः। ध्यायेत्त्वाम

14

निशं जपन्नपि तवैवालापमन्त्रावली भूयस्त्व

त्कुचकुंभनिर्भरपरीरंभामृतं वांछति। १५

विकिरति मुहुः श्वासानाशाः पुरो मुहुरीक्ष

ते प्रविशति मुहुः कुंजे गुंजे गुंजन्मुहुर्बहु

हु ताम्यति। रचयति मुहुः शय्यां पर्याकुले

हरीत्तते मदन कदन क्लान्तः कान्ते प्रियस्त

ववर्तते।।११।। तानिस्पर्श सुखानितेच तरला

स्निग्धा दृशो विभ्रमा स्तद्वक्त्राम्बुज सौरभंस

च सुधा स्यंदी गिरां वक्रिमा। सा बिंबा धर

माधुरीति विषया संगेपि चेन्मानसं तस्यांल

ग्न समाधि हंत विरह व्याधि कथं वर्त्तते १

ग.गी. मासकृतमितमाकुलाकुलगलद्धम्मिल्लम
ल्लासितभ्रूवल्लीकमलीकदर्शितभुजा

25

मूलार्द्धदृष्टस्तनम। गोपीनां निभृतं निरी
त्य गमिताकांक्षश्चिरं चिन्तयन्नन्तर्मुग्ध
मनोहरो हरो हरतु वः क्लेशान्नवः केशवः २
यमुनातीरवानीरनिकुंजे मंदमास्थितं।

प्राह प्रेमभरोद्भ्रान्त माधवं राधिका सखी।
वसंते वासंती कुसुम सुकुमारै रवयवै र्भ्र
मन्ती कान्तारे बहु विहित कृष्णानु सरणं।
अमंदं कंदर्प ज्वर जनित चिंता कुलतया
वलद्बाधां राधां सरस मिदमूचे सहचरी।
रागिनी भैरवी ताल १ अष्टपदी॥ ललित॥

16

रा.गी. लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समी
रे। मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजित
कुंज कुटीरे।।१।। विहरति हरिरिह सरस वसं
ते नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहिज
नस्य दुरंते। उन्मद मदन मनोरथ पथिक
वधूजन जनितविलापे। अलि कुल संकुल

कुसुम समूह निरा कुल बकुल कलापे।२।
मृग मद सौरभ रभस वशंवद नव दल मा
ल तमाले। युव जन हृदय विदारण मन
सिज नखरुचि किंशुक जाले। मदन मही
पति कनक दंड रुचि केसर कुसुम विका
मिलि त शिली मुख पाटल पटल कृत।

गी.गो. स्मर तरल विलासे।४। विगलित लजित ज
गदव लोकन तरुण करुण कृत हासे। वि
रहिनि कृन्तन कुन्त मुखाकृति केतकि दन्त
रिताशे।५। माधविका परिमल ललितेन-
व मालति यात सुगंधौ। मुनिमनसामपि
मोहन कारिणि तरुण कारण बंध।६।

स्फुर दतिमुक्त लता परि रम्भण मुकुलित
पुलकित हूते। वृंदावन विपिने परिसर प
रि गत यमुना जल पूते। श्री जयदेव भणि
ते मिदमुदयति हरि चरण स्मृति सारं। स
रस वसंत समय वन वर्णन मनुगत मदन
विकारं॥ ८॥ रागिनी भैरवी ताल श्लोक

गी·गो· दरविदलितमल्लीवल्लिचंचत्परागप्रकटित-

पटवासैर्वासयन्काननानि। इहहि दहति

चेतः केतकीगंधबंधुः प्रसरदसमबाणप्राण-

वद्गंधवाहः।।२।। उन्मीलन्मधुगंधलुब्धमधुप-

व्याधूतचूतांकुरक्रीडत्कोकिलकाकलीक-

लकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः नीयंते पथिकैः

18

कथंकथ मपि ध्यानावधानतत्त्वं प्राप्त प्राण

समा सम राम रसोल्लासै रमी वासराः २२ उरा

लोक लोक स्तव कन वकाशोक लतिकावि

काशः कामारे पवन पवनोयं वाययति प्र

पि भ्रामयङ्गी रणित रमणीयान मकुल प्र

सूति सूनानां माविष्टीवितरणी ये सावयति

स्र

गी·गो· रागिनी भैरवी ताल अष्टपदी॥ निंदति चंद
न मिंदु करण मनु विंदति खेद मधीरं व्याल
निलय मिलनेन गरल मिव कलयति मल
य समीरं १ माधव मा विरहे तव दीना। मन
सिज विशिख भया दिव भावनया त्वयि ली
ना। अविरल निपतित मदन शरादिव भव·

१९

दव नाय विशाले। स्वहृदय मर्म्माणि वर्मक
रोति सजल नलिनी दल जाले २ कुसुम वि
शिख शरतल्प मनल्प विलास कला कम
नीयं। व्रत मिव तव परि रम्भ सुखाय करो
ति कुसुम शयनीयं ३ वहति च गलित वि
लोचन जलधर मानन कमल मुदारं विधु

गी.गो. मिव विकट विधुंतुद दन्त दलन गलिता मृत

धारे ४ विलिखति रहसि कुरंगम देन भवंत

म सम शर भूते प्रण मति मकर मधो विनि

धाय करेच शरं नव चूते ५ प्रति पद मिदम

पि निगदति माधव तव चरणे पतिताहं ।त्व

यि विमुखे मयि सपदि सुधानिधि रपि तनुते

२०

नवदाहे ६ ध्यान लयेन पुरः परिकल्प्य भवंत

मतीव दुरापं । विलपति हसति विषीदति ।

रोदति चंचति मुंचति तापं । ७ श्री जयदेव भ

णित मिद मधिकं यदि मनसा नटनीयं ।

हरि विरहा कुल बल्लव युवति सखी वचनं

पठनीयं ८ ।। रागिनी भैरवी ताल   श्लोक

रा.गी. आवासो विपिनायते प्रिय सखी मालापि जालायते। तापोपि श्वसितेन दावदहन ज्वालाकलापायते। सापि त्वद्विरहेण हन्त हरिणी रूपायते हा कथं कंदर्पोपि यमायते विरचयन् शार्दूल विक्रीडितं॥ रागिनी भैरवी ताल चप्पूपटी॥ स्तन विनिहित मपि हारम

दारं सा मनुते कृश तनु रिव भारं राधिका।
विरहे तव केशव। सरस मसृण मपि म
लयज पंकं पश्यति विष मिव वपुषि सशं
कं २ श्वसित पवन मनुपम परिणाहं। म
दन दहन मिव वहति सदाहं ३ दिशिदिशि
किरति सजल कण जालं। नयन नलिन

गी. गी. मिव विगलित नाले ४ नयन विषय मिव

किशलय तल्पे । कलयति विहित हुताश

न कल्पे ५ त्यजति न पाणि तलेन कपोले

बाल शशिन मिव साय मलोले ६ हरि रि

ति हरि रिति जपति सकामे । विरह विहि

त मरणे व निकामे ७ श्री जयदेव भणित

22

मिति गीते । हावेयत केशाव पदमपनीते

रागिनी भैरवी ताल श्लोक ॥ स्मरगरं दैव

न वैद्य ह्य त्वदंग संगा न्हत मात्र साध्याम

विम्भकवाथो ऊकषेन राया मपेंद्र वज्रा द

पि दारुणो सि । २५। मारो मो चति मीलको

ति विलप त्युत्कमपाते तामपाति ध्यायत्युद्भम

गा. गी. ति प्रमीलति पत त्रुद्याति मूर्च्छत्यपि पतावता

तत्रु ज्वरे वर तत्रु जीवेन्न किंनेरमा स्त्वैंद्य

प्रतिम प्रमीदसि तनस्यको न्यणा हस्तकः

२६. केदर्पज्वर मेज्वरा तरतनो गाक्षर्यमस्या

श्चिरं चेत स्पन्दन चंद्रमः कमलिनी चिंतास

सेतास्पति किंव वोति रमेन शीतलतरंवा

23

मेक मेव प्रिये ध्यायंती रह सिस्थिता कथ म
पि त्वीणा त्वाणे प्राणिति २७ त्वाण मपि वि
रह: प्रतान मेहे नयन निमीलित विज्ञया न
याने। प्वसिति कथ मसौ रसाल शाखे वि
र विरहेण विलोक्य पुष्पितामां २८ साथाम
नय मावागबिंद मधुपमैलोक्य मोलस्थली

ग.गी. नेपथ्ये विन नील रत्न मवनी भारावतारांत
कः। स्वछंद व्रज सुंदरी जन मन स्तोक प्रदो
ष श्चिरं कंस ध्वंसन धूम केतु रवतु त्वां देवकी
नंदनः २५॥ अयमनो गन्तु मशक्तो विर मतु
रक्तो लता गृहे दृष्टा। नश्चिरितं गोविंदे मन
सिज मन्दे सखी प्राह।२०। अंगेषा भरणं क

24

रोति बद्धरा: पक्षेऽपि संचारिणि आमेत्वामपरि

प्रोकते विकनते प्राथ्यापिरे ध्यायति । इत्या

कल्प विकल्प तल्प रचना संकल्प लीला

शान्त्याशाकापि विना त्वया वर तनु नैषा

निश्रोनेष्यति ३१ विपुल पुल कपालिः स्फी

तसीत्कार मन्न ज्ञीनितज डिमका ऊर्व्यांऊ

ग.गी. लेख्या हरेनी । नव किं नव विधाया मन्दक
न्दर्प चिन्ता रस जल निधि मग्ना ध्यान ल
ग्ना मृगाक्षी ३३ ।। रागिनी भैरवी ताल ।
अष्टपदी । पशुपति दिशि दिशि रहसि भ
वंतम वद यर मधुर मधूनि पिवंतम १
नाथ हरि सीदति राधा वास गृहे । वद ।

25

भि घारण रभसेन बलेनी पतति पदानि कि

येति चलेनी २ विहित विषाद विष किश

लय वलया। जीवति पर मिह तव रति क

लया ३ मञ्जर वलोकित मंडन लीला॥

मधुरिपु रह मिति भावन शीला ४ त्वरि

त मुपैति न कथ मभि सारे। हरि रिति व

रा-गी- दति सावी मनवारे ५ स्निघ्धति खेवति जल

धरकले। हरि रूप गत इति तिमिर मन।

ले ६ भवति विलेविनि विगलित लज्जा। वि

लपति रोदति वासक सज्जा ७ श्रीजयदेवक

वेरिट मदिते। रसिक जनन्तनुना मपिम

दिते। ८॥ रागिनी भैरवी ताल श्लोक॥

२६

किं विद्याम्यसि कृष्ण भोगि भवने भांडी रभू

मी रुहे। आतर्यामिन दृष्टि गोचर मितः सा

नेट नेंदा स्पदम्। राधाया वचने नदध्वग म

न्विात्रे नेंदाति के गोपतो गोविंदस्य जयेति

सायमतिथेः शाशास्य गंभीगिरः चर्च भ्रचा

न्तरे व कुटला कुल वर्त्मपाता संजात पात

गी.गो.

27

क इव स्फुट लांछन श्रीः । वृंदावनांतर मदी
पय दंशुजालैर्दिक सुंदरी वदन चन्दन बिंदु
रिंदुः ४४ प्रसरति शशधर बिंबे विहित वि
लंबे च माधवे । विधुरा विरचित विविध ।
विलापं सा परितापं चकारोच्चैः ४५ विरह
पाण्डु मुरारि मुखांबुज द्युति रयं नपि वेद

नो विधु रतीव तनोति मनो भवः सुहृदयेहृ

दये मदन व्यायाम २६ मनो भवा नेदन वे

दनानिल प्रसीदरे दक्षिण मेंच वामता म

तां जगत प्राण विधाय माधवं पुरो म

म प्राण हरो भविष्यति २७ वायोर्विधेहि।

मलया निल पंच बाण प्राणान रक्षणा।

रा॰गी॰ नगरह मुनरा छ्रयिथ्य। किंते कृतोत भगि
नि त्नमया नरँगै रंगानि सिंच मम शाम्पत
देह दाहः॥ रागिनी भैरवी ताल षष्ठपदी।
कथित समये पि हरि रहहन ययौवने म
म विफल मिद ममल रूप मपि यौवने।१॥
यामि हेक मिह शरणे सखी जन वचन।

वंचिता। यदनु गमनाय निशि गहन मपि

शीलितं। तेन मम हृदय मिद मसम श

र कीलितं २ मम मरण मेव वर मति वित

थ केतना किमिह विस हामि विरहानल

मचेतना ३ मा महह विधु रयति मधुर म

धु यामिनी। कापि हरि मनु भवति कृत।

ग·गी·

79

सकृत कामिनी ४ अहह कलयामि वल।
यादि मणि भूषणं । हरि विरह दहन वह
नेन बहु दूषणं ५ कुसुम सुकुमार तनु
मतनु शर लीलया । स्रगपि हृदि हन्ति
मा मति विषम शीलया ६ अह मिह निव
सामि न गणित वन वेतसा । स्मरति मधु

स्हदनो मा मपि नचेतसा ७ हरि चरण शर

ण जयदेव कवि भारती । वसत हृदि यु

वति रिव कोमल कलावती ८ ॥ रागिनी

भैरवी ताल श्लोक ॥ त्वा मप्राप्य मयि-

स्वयं वर परां क्षीरोदतीरोदरे । शंकेसुंद

रि काल कूट मपिव न्मूढो मृडानी पतिः

ग.गी.

30

इत्यपूर्वकथाभिरन्यमनसो विक्षिप्य वक्षो

ञ्चले राधायाः स्तनकोरकोपरि मिलन्नेत्रोह

रिः पातु वः तत्किं कामपि कामिनीमभि

सृतः किंवा कलाकेलिभिर्बद्धो बंधुभि

रन्धकारिणि वनाभ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति।

कान्तः क्लान्तमना मनागपि पथि प्रस्था।

तुमेवाक्षमः संकेतीकृत मंजु वंजुलल

ता कुंजेपि यन्नागतः ५० अथा गतां मा

धवमन्तरेण सखी मियं वीक्ष्य विषादमू

कां विशंक माना रमितं कयापि जनार्द

नं दृष्टव देत दाह ५१ ॥ रागिनी भैरवी ता

ल त्र झंपती ॥ स्मर सम रोचत विर चित

ग·गी·

वेशा गलित कुसुम दर विलुलित केशा १ का
पि मधुरिपुणा विलसति युवति रधिक गु
णा । हरि परि रंभण वलित विकारा । कुच
कलशो परि तरलित हारा । २ । विचल दल
क ललिता नन चंद्रा । तद धर पानरभस·
कृत तंद्रा ३ चंचल कुंडल ललित कपो·

ला। स्खलित रशन जघन गति लोला। ४।
दयित विलोकित लज्जित हसिता। बहुवि
ध कूजित रति रस रसिता ५ विपुल पुलक
पृथु वेपथु भंगा। श्वसित निमीलित विक
सद नंगा ६ श्रमजल कण भर सुभग शरी
रा। परि पति तो रसि रति रण धीरा ७ श्री।

गी॰गी॰ जयदेव भणित हरि रमितम। कलि कलुषं।
जनयतु परिशमितं॥८॥ रागिनी भैरवी स्वरूप
दी सोरठ ताल तीन॥ समुदित मदने रमणी
वदने चुंबन वलित धरे। मृग मद तिलकं।
लिखति सपुलकं मृगमिव रजनी करे।१।
रमते यमुना पुलिन वने विजय मुरारि रधु॰

ना। घनचय रुचिरे रचयति चिकुरे तरलित
तरुणानने कुरुवक कुसुमं चपला सुषमं
रतिपति मृग कानने २ घटयति सुघने कु
च युग गगने मृग मद रुचिरूषिते। मणि-
सर ममलं तारक पटलं नखपद शशि-
भूषिते ३ जित बिस शकले मृदु भुज युग

ग·गी·

33

ले करतल नलिनी दले। मरकत वलय मधु
कर निचये वितरति हिम शीतले ५ रति
गृह जघने विपुल पघने मनसिज कन॰
कासने। मणिमय रशने तोरण हंसने वि
करति कृत वासने ५ चरण किसलये॰
कमला निलयेनख मणि गण पूजिते ॥

बहिरप वरणे यावक भरणे जनयति हृ
दियोजिते ८ रमयति सुभृशं कामपि सु
दृशं खल हलधर सोदरे । किमफल मव
सेचिर मिह विरस वद सखि विटपोदरे ८
इह रस भणने मधुरिपु पद सेवके । कलि
युग चरिते न वसतु दुरिते कविनृप जय

गी.गो. देवके प ।। रागिनी भैरवी अष्टपदी ताल १

34

अनिल तरल कुवलय नयनेन तपति न

सा किसलय शयनेन १ सखि या रमिता

वन मालिना । विकसित सरसिज ललि

त मुखेन । स्फुटति न सा मनसिज विशि

खेन २ अमृत मधुर तर मृदु वचनेन । ज्व

लति नसा मलयज पवनेन।३।स्थल जल

रुह रुचि कर चरणेन। लुठति नसा हिम

कर किरणेन ४ सजल जलद समुदय रु

चिरेण। दहति नसा हृदि विरह भरेण। ५

कनक निकष रुचि शुचि वसनेन। श्वसि

ति न सा परिजन हसितेन ६ सकल भुव।

गी·गी· न जनवर तरुणेन वहति न मानज मतिक

रुणेन ७ श्री जयदेव भणित वचनेन प्रवि

शतु हरि रपि हृदय मनेन ॥ रागिनी भैर

वी ताल श्लोक ॥ ना यातः सवि निर्द्दयो

यदि शठ स्त्वद्दूति किं दूयसे । स्वछन्द स्वङ्ग

वल्लभः सर मते किंतत्र तेदूषणं । पश्यपा

यत्प्रिय संगमाय दयित स्या कृष्यमाणे गुणै

रुत्कंठार्त्ति भरा दिव स्फुट दिदं चेतः स्वयं

यास्यति ॥४॥ रागिनी भैरवी अष्टपदी ताल

निभृत निकुंज गृहे गतया निशि रहसि

निलीय वसन्तं चकित विलोकित सक।

ल दिशा रति रभस वशेन हसन्तं १ सखि

गी.गो. हे केशि मदन मुदारे। रमय मया सह मद

न मनोरथ भावितया स विकारे॥ प्रथम

समागम लज्जितया पटु चाटुशतैरनुकूले

मृदु मधु रस्मित भाषितया शिथिलीकृत

जघन दुकूले २ किसलय शयन निवेशि

तया चिर मुरसि ममैव शयानं कृतपरि।

36

रेभण त्रुबनया परिरम्भ कृता यरणाने ऊम
लस निमीलित लोचनया पुलकावले ल
लित कपोले। श्रमजल प्राकल कलेवरया
वर मदन मदादति लोले। कोकिल कल
रव कूजितया जित मनसिज तंत्र विचारे
श्लथ कुसुमा कुल कुंतलया नाव लिखि

ग॰गी॰ नवघन स्तन भारे ५ चरण रणित मणि नूपु
रया परिपूरित सुरत विताने । सखि वि
शृंखल मेखलया सकच ग्रह चुंबन दान
म ५ रति सुख समय रसालसया दर कुमु
लित नयन सरोजे । निस्सह निपतित तनु
लतया मधुसूदन मुदित मनोजे ७ श्री॰

जय देव भणित मिद मतिशय मधु रिपु
निधुवन शीले । सुख मुत्कंठित गोपिक
या कथितं वितनोतु सलीलं ८ ॥ रागि
नी भैरवी ताल श्लोक ॥ वृष्टि व्याकुल
गोकुला वनवशा दुद्धृत्य गोवर्द्धनं बिभ्र
द्वल्लव वल्लवीभि रधिका नंदा च्चिरं चुंबितः

रा.गी. दयैं गोव नदर्षिता यरनदी सिंहूर मद्धे कि

नो बाहू गों पतनो लनो ठ मतः श्रेयोसि

केसद्धिषः धत्र ग्रथ कथ मपि यामिनी वि

नीय स्मर श्रार जर्जरितापि मा प्रभाते। घ

ठ नय वचने वदन्ते मचे प्रणत मपि त्रि

य माहू माध्य सूर्ये।धध। रागिनी भैरवी।

— ३८

ताल अष्टपदी ॥ रजनि जनित गुरु जाग
र राग कषायित मलसनिमेषं वहति न
यन मनु राग मिवस्फुट मुदित रसाभि॰
निवेशं १ याहि माधव याहि केशव मा
वद कैतव वादं तामनु सर सर सीरुहलो
चन यातव हरति विषादं । कजल मलि

गा॰गी॰ न विलोचन चुंबन विरचित नील मरूपे
३१
दशन वसन मरुणे तव कृष्ण तनोति ।
तनु रनुरूपे २ वपु रनु हरति न व स्मर मे
ग गबरन विरचित रोवे । मरकत शाक॰
ल कलित कल धौत लिपेरिव रति जय
लेखे ३ चरण कमल गलदलक्तक सिक्त

मिरंतव हृदय मुदारे । दर्शय तनीव वहि

मर्दन द्रुम नव किसलय परिवारे ४ द

शन पदे भव दयर गत मम जनयति

चेतसि विदे । कथयति कथ मथु नापि

मया सह नव वपु रेत दभेदं ५ वहिरिव

मलिन तरंतव कृष्ण मनो पि भविष्यति

गा॰ गी॰ न्वते । कथ्य मथ्य वेचयसे जन मनु गतम

४०

मम ग्रारत्वर हृनम् ६ भ्रमति भवान व

ला कवलाय वनेषु किमत्र विचित्रे मय

यति पूतनि कै ववधू वथ निर्दय वाल

चरित्रे ७ श्री जय देव भणित रति वंचि

त खंडित युवति विलापं । श्रृणुत मरा

मधुरे विबुधा विबुधालय तोपि ८॥ रागि
नी भैरवी ताल श्लोक॥ तवेदं पद्मपन्या
भ्रमर दनुराग स्वाहि शिव प्रिया पादा
लक्त स्फुरित महणा द्योति हृदये ममा
य प्राख्यात प्रणय भर भंगेन कितवल्ल
दा लोकः शोकादपि किमपि लज्जाजन

ग.गी. यति ४५ पद्मा पयो धर नदी परि रम्भ ल
ग्न काश्मीर मुद्रित मुरो मधु सूदनस्य।

41

व्यक्ता नुराग मिव खेलद नंग खेद स्वेदा
म्बुपूर मनु पूर यतु प्रियम्व: ४६ कुञ्जा
न्तरे मसृण रोष वशा मसी मनि:श्वास
निस्सह मुखीं सुमुखी मुपेत्य सव्रीडमी

त्रित साक्षी वदने दिनांते सानंद गद्गदपदे
हरि विलु वाच ७ परि हर कृता नेक पो
को त्वया मनते वन स्तन जघनया क्रांते
पगानव काश्चानि विशति वितनो रन्यो
धन्यो नकोपि ममांतरं प्रणयिनि परी
रंभा रंभे विधेहि विधेयतनाम ८ मयरो।

गा॰गी॰ विधेहि मयि निर्दय दंत दंश दोर्वल्लिबंध

42

निबिड स्तनपीडनानि चंडित्वमेव मुदमं

चय पंचबाण चंडाल कांड दलना दस

वः प्रयांतु ९ शशिमुखि तव भाति भंगु

रभ्रूर्युव जन मोह कराल कोल सर्पी ।

तदुदित भय भंजनाय यूनां त्वद धरसी

यु मेधेव सिद्धि मेत्रः ५॰ व्याप्ययति हृष्यामो
ने तन्वि खपेचय पेव मेतकाणि मथुरा ला
पै स्वापे विनोदय हृहिभिः मनाविवि विम
ली भाव नाव ढिमेचन मेचमो खय म
निश्चाय स्निग्ध मगये खयोय मप स्थितः
रागिनी भैरवी ताल झप॥ अष्टपदी॥ वद

गी·गो·

43

सि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी हरति
दरतिमिर मति घोरं। स्फुर दधर सीधवेत
व वदन चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरं १
प्रिये चारु शीले मुंचमयि मानमनिदानं।
सपदि मदनानलो दहति मम मान सं देहि
मुख कमल मधु पानं। सत्य मेवासि यदि·

स्फुरति मयि कोपिनी देहि खर नखर शार।
घाते। घटय भज बंधने जनय रद खंड
ने येन वा भवति सुखजाते २ त्वमसि मम
भूषणे त्वमसि मम जीवने त्वमसि मम
जलधि रत्ने। भवतु भवतीह मयि सतत
मन रोधिने तत्र मम हृदय मति यतने ३

गी·गो· नीलनलि नाभ मपि तन्वि तव लोचनं धा
रयति कोक नद रूपं। कुसुम शर बाण।
भावेन यदि रंजयसि कृष्ण मिद मेत दनु
रूपं ॥ स्फुरतु कुच कुंभयो रुपरि मणि।
मंजरी रंजयतु तव हृदय देशं। रसतु
रसनापि तव घन जघन मण्डले घोषय

न मन्मथ निदेशं ५ स्थल कमल गंजनं
मम हृदय रंजनं जनितरति रंग पर भा
गं । भण मसृण वाणि करवाणि चरण
द्वयं सरस लसद लक्तक रागं ६ स्मर ग
रल खंडनं मम शिरसि मंडनं देहि पद
पल्लव मुदारं । ज्वलति मयि दारुणो मद

गी.गी. न कदना नलो हरत नङ पाहित विकारे। ८

इति चटुल चाटु पटु चारु मर वैरणो राधि

का मधि वचन जाते। जयति पद्मावती र

मण जयदेव कवि भारती भणित मति

शाते॥ रागिनी भैरवी ताल श्लोक॥॥:

वेथुक कति बोधयो य मथुरा: स्त्रिय मधु

क क्वचि: गेहे चंडिचकास्ति नील नलिन श्री

मोचने लोचने । नामान्वेति तिल प्रसून।

पदवी कुंदाभ दंति प्रिये प्रायस्त्वन्मुखेसेव

या विजयते विश्वेस पुष्पा युधः ५। हृच्छ्रो

तव मराल मे वदन मिंडु मेदीपने गति

जेन मनो रमा विजित रंभ मृदुहृदये गति।

ग.गी. स्तव कलावती रुचिर चित्र लेखे भ्रुवा वहो

46

विवुध यौवने वहसितानि दृष्टी गता ५२ भ्रू

पल्लवे धनुरपांगत रंगितानि वाणागुणः

श्रवण पालि रिति स्मरेण। तस्या मनंगज

य जंगम देवताया मस्त्राणि निर्जित जगंति

किमर्पितानि ५३ भ्रूचापे निहताः कटाक्ष

विशिखो निर्माति मर्मव्यधो घृपामात्मा कुटिल :

करोति कबरी भारो पि मारोद्यमे । मोहेनावद

ये च नव्यिनमते बिंबाधरो रागवान सद्धृतः

स्तन मंडल स्तव कथं प्राणे मम क्रीडति ४

मानिनी मान विध्वंसं मदनो जयति सोद्यते ॥

सद्वेगा समग्रतः श्री महीपालकथानिः ५ ५

ग·गी·

47

तामथ मन्मथखिन्नां रति रति रस भिन्नां विषा
द सम्पन्नाम। अनुचिंतित हरि चरितां कल
हान्तरिता मुवाच रहः सखीं ५६ स्निग्धे यत्प
रुषासि यत्प्रणमति स्तब्धासि यद्रागिणि द्वे
षस्थासि यदुन्मुखे विमुखतां यातासि तस्मि
न्प्रिये। तद्युक्तं विपरीत कारिणि तव श्रीखं

ड चर्चा विषे शीतांशु स्तपनो हिमेऽहन वहः

कीडा मदो यातना: ५७॥ रागिनी भैरवी।

अष्टपदी ताल ॥ हरि रमि मदनि वहति

मृदु पवने किम पर मधिक सावे माविभ

वने १ माधवे मा कुरु मानिनि मान मये॥

ताल फला दपि गुरु मति सरसे। किम वि

गी॰गो॰ 48

फली ऊरुषि ऊच कलशी २ कतिन कथित

मिद मन पद मचिरे। मापरि हरि हर मति

धाय रुचिरे। किमिति विषीदसि रोदिषि वि

कला। वहसति युवति सभा तव विकला

४ जनयामि मनसि किमिति गुरु खेदम।

श्रृणु मम वचन मनीहित भेदम ५ हरि

सपयाति बहु मधुरे । किमिति करोषि हृद

य मति विधुरे ६ सजल नलिन दल शी-

तल शयने । हरि मव लोकय सफलय न

यने ७ श्री जयदेव भणित मति ललिते ।

सुखयतु रसिक जने हरि चरिते ॥८॥ रा-

गिनी भैरवी श्लोक ताल ॥ श्री राधिका-

रा-गी॰ जीके वचन विपुविव मावी मेवा सोये मावी

व हिमा निलों विष मिव सथा रश्मि र्यस्मि

नुनोति मनोगते। ह्यदय मदये तस्मिन्नेव॰

पुन बेलते वलात् कुवलय हशा व्यामः

कामो निकाम निरंकुशः ५८ गणयति गु

णायामे श्रामे भ्रमा दपि नेहते वहति च प

49

रितोषं दोषं विमुंचति दूरतः । युवतिषु वल

स्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां विना पुनरपि

मनो वामं कामं करोति करोमि किं ५९ प्री

तिंतनुतो हरिः कुवलयापीडेन सार्द्धं

रणे राधापीनपयोधरस्मरणकृत्कुम्भेन

संभेदवान । यत्रस्विद्यति मीलति क्षणम

ग·गी·

घ तिमे द्विपे नत नाणाङ्के मम्यालमभ्रजि

त मितिव्या मोह कोला हलः ९० सुकृविम

नु नयेन क्षीणायित्वा मृगाक्षी गतवति कु

तवेषे कशवे कुंज शय्यां रचित रुचिर भू

षो हरिमेषे प्रदोषे स्फुरति निरव सादां

कापि राधां जगाद ९१ सा मां द्रक्ष्यति वक्ष्य

50

ति प्रिय कथ्या प्रत्यंग मालिंगनै प्रीतिं यास्य

ति रंस्यते सखिसमा गत्येति चिंताकुलः।

सत्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानंदति

स्विद्यति प्रत्युद्गच्छति मूर्छति स्थिर तमः

पुंजे निकुंजे प्रियः ९२ त्वद्वाम्येन समं स

मग्र मधुना तिग्मांशु रस्तंगतो गोविंदस्य

रा॰गी॰

मनो रथेनव मर्मे प्राप्तेतमः सोद्दतो कोका

नो कमण स्वनेन महेषी दीर्घा मदभाव्य

ना नन्मये विफले विले विलेनममैो रम्या

भि मारतणः ६३ प्राप्लेषा द३ चुंबना द

३नवि लोवा द३ म्वानज प्रोद्धाया द३

मेभ्रमा द३रता रेभाद३ प्रीतयोः प्रन्यार्ये

गतयो र्भ्रमा न्मिलितयोः संभाषणेऽज्ञानतो

दंपत्यो रिह को न को न तमसि व्रीडाविमि

श्रो रसः ६४ अद्येता निक्षिप दंजने श्रवण

यो र्म्लापित्त गुञ्जावली मूर्द्ध्नि प्रणाम सरोज

दाम कुचयोः कस्तूरिका पत्रकं। स्पृष्टो ना

मभि सार सत्वर हृदा विष्वक् निकुंजे मयि

गी. गो.

ध्वांतनीलनिचोलचारुसुदृशां प्रत्यंगमालिं

ते ५५ काश्मीरगौरवपुषामभिसारिका

णामाबद्धरेखमभितो रुचिमंजरीभिः ।

एतत्तमालदलनीलतमं तमिस्रं तत्प्रे

म हेमनिकषोपलतां तनोति ५६ ॥ रागि

णी भैरवी ताल अष्टपदी ॥ विरचितचा

52

टु वचन रचने चरणे रचित प्रणि पाते । सं

प्रति मंजुल वंजुल सीमनि केलि शयन

मनु याते १ मुग्धे मधु मथन मनुगत मनु

सर राधिके । घन जघन स्तन भार भरे द

र मन्थर चरण विहारे । मुखरित मणि

मंजरी मुपैहि विधेहि मराल विकारे ।।२

गी॰ गो॰ स्पृशति रमणीय तरंतरुणी जन मोहन मधु

रिपु रावे । कुसुम शरा सन शासन वंदिनि

पिक निकरे भज भावे ॥ ३ अनिल तरल कि

सलय निकरेण करेण लता निकुरंबे । प्रे

रण मिव कर भोरु करोति गति प्रति मैव

विलंबे ॥ ४ स्फुरित मनंग तरंग वशा दिव

53

हविन हरि परि रंभे । एक्क मनो हर हारवि
मल जल धार मनं ऊव ऊंभे ५ प्रयिगत
मखिल माली भिरि दंतव वपु रयिरति र
ण मजे । चंडि रणित रषाना रव डिंडिम
मभि मरमम लज्जे ६ स्मर प्रार स्वभरा म
विन माली मवलेखा करेण मलीले । वल

गा-गी-
54

वलय क्वणितै रव बोधय हरि मपि निज गा
ति शीले ७ श्री जयदेव भणित मधुरी कृ
त हार मदासित वामे। हरि विनिहित मन
सा मधि तिष्ठत कंठ तटी मविरामे॥ ८॥
रागिनी भैरवी ताल श्लोक॥ मामान्दृत्या
ति वल्पाति प्रियकथ प्रलंग मालिंगनैश्री

नि या स्यति रे स्यति सखि समागत्येति विता

ज्जल: । सत्वा म्यपुपतिवे पते प्रुलकय त्यान

न्दति खिद्यति प्रत्युद्गच्छति मूर्च्छति स्थिरत

मः पुंजे निकुंजे प्रियः ६६॥ रागिनी भैरवी

ताल अष्टपदी ॥ रति सुखे सारे गत मभि

सारे मदन मनो हर वेषे । न कुरु नितंबि ।

गी॰ गो॰

६३

नि गमन विलंबन मनु सरतं हृदयेशं १ धीर
समीरे यमुना तीरे वसति वने वन माली। गो
पी पीन पयोधर मर्द्दन चंचल करयुगशा।
ली। नाम समेतं कृत संकेतं वादयते मृदु वे
णुं। बहु मनुते ननु ते तनु संगत पवन च
लित मपि रेणुं २ पतति पतत्रे विचलित पत्रे

शंकित भवदुपयाने । रचयति शयने सच

कित नयने पश्यति तव पन्थाने ३ मुखर

मधीरे त्यज मंजीरे रिपु मिव केलि सुलोले

चल सखि कुंजे सतिमिर पुंजे शीलय नी

ल निचोले ४ उरसि मुरारे रुपहित हारे ।

घन इव तरल बलाके । तडि दिव पीते रति

गी.गो. विपरीते राजसिंह कृत विपाके ५ विगलित

वसने परिहृत रसने घटय जघने मपिधाने

किसलय शयने पंकज नयने निधि मिव हृ

दि निधाने ६ हरि रभि मानी रजनि रिदानी

मिय मपि याति विरामे । कुरु मम वचने स

त्वर रचने पूरय मधु रिपु कामे ७ श्री जयदे

56

व कृत हरि सेवे भणति परम रमणीयं। प्र
मुदित हृदयं हरि मपि सदयं नमत सुक
त कमनीयं ८।। रागिनी भैरवी ताल श्लोक
सभयचकितं विन्यस्यंती दृशौ तिमिर प
थि प्रति तरु मुहुः स्थित्वा मन्द पदानि वि
तन्वंती कथमपिरहः प्राप्ता मंगै रनंगै तरं

गा॰गी॰ गिरिभिः सम्गवि सभगाः सत्वामपुष्प त्रुपेतकु

तार्थ्यताम ७ हारावली तरल कांचन कांचि

दाम मंजीर कंकण मणि द्युतिदीपितस्य।

द्वारे निकुंजनिलयस्य हरिं निरीक्ष्य ब्रीडा

वती मथ सखी निजगाद राधाम ८८॥ः

रागिनी भैरवी ताल ध्रुपदी॥ मंजतर

57

कुंजतल केलि मदने विलस रति रभ सहसि

त वदने १ प्रविश राधे माधव समीप मिह

नव भवद शोक दल शयन सारे । विलस

कुच कलश तरल हारे २ कुसुम चय रचि

त शुचि वासगेहे । विलस कुसुम सुकुमा

र देहे ३ चल मलय वन पवन सुरभि शीते

ग.गी.

58

विलस रति वलित ललित गीते ४ वितत बहु
वल्लि नव पल्लव घने । विलस चिर मलमपी
न जघने ५ मधु मुदित मधुप कुल कलित
रावे विलस मदन रस सरस भावे ६ मधुर
तर पिक निकर निनद मुखरे । विलसद
शन रुचि रुचिर शिखरे ७ विहित पद्मा

वनौ साव समाजे। भणति जयदेव कविराज

राजे ८॥ रागिनी भैरवी ताल श्लोक॥ सान्द्रा

नंद पुरंदरादिदिविषद्वृंदै रमंदादरा दान

म्रै मुकुटेंद्र नील मणिभिः संदर्शितेंदीव

रे। स्वच्छंद मकरंद सुंदर गलन्मदाकि

नी मेदुरे श्री गोविंद पदार विंद मशुभस्कं

गा.गी.

59

दाय वेदा महे ६९ ग्रह मिह निव सामियाहि
माया मनुनय मह्नवने वानयेयाः। इतिम
धु रिपुणा माबी नियुक्ता स्वय मिद मेत्य।
पुन जैगादरायाम ७० त्वोवितेन विरम्बहे
नय मनि श्रोता भृशा ना पितः केदर्पेण व
पाठ मिछति मया मन्वाय विंवा यरे। ग्र

सो केन दले कुरु त्वाण मिह पुष्पेप लक्ष्मी

लव कीर्ति दाम इवोप सेवित पदां भोजेऊ

नः सेश्रमः ७१ मा ममाध्यमसा नंद गोविं

दे लोल लोचना मिंजान मंज मंजीरे प्रवि

वेशा निवेशानम ७२ प्राति कम्पा पांगे श्रव

ण पथ पर्यंत गमन प्रवासे नेवान्नोण म

गी॰गी॰ बल नव तारम्पति नयोः । तदानी गाधायाः

प्रियतम समालोक समये पपात खेदाम्बु

भ्रमर यिव हर्षाश्रुनिकरः ७३ भजेत्याल

स्याते कृत कपट कराकृति विहितः मित

याते गेहाद्बहिरव हितालि परिजने ॥ प्रि

यासो पश्चेपत्याः स्मरपार समा कृत सभये

60

मलजाया लज्जा वागम दिव हरे मृगदृशः

रागिनी भैरवी ताल ध्रुवपदी ।। राधाव

दन विलोकन विकसित विविध विकार

विभंगम । जलनिधि मिव विधु मंडलद

र्शन तरलित तुंग तरंगम १ हरि मेकर:

सं चिर मभिलाषित विलासं । सादर्श गुरु

गा-गी-

61

हर्षवशंवद वदन मनंग विकासे ॥ हारम
मल तरतार मुरसि दधतं परिलंब्य विदू
रे । स्फुटतर फेन कदंब करंबित मिव य
मुना जल पूरे २ श्यामल मृडल कलेवर
मंडल मधिगत गौर दुकूले । नीलनलि-
न मिव पीत पराग पटल भर वलयितमू

ले ३ तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन
जनित रति रागम । स्फुट कमलोदर खेलि
त खंजन युग मिव शरदि तडागम ४ वद
न कमल परि शीलन मिलित मिहिर सम
कुंडल शोभं । स्मित रुचि कुसुम समुल्लासि
ता धर पल्लव कृत रति लोभम ५ शशिकि

ग-गी

62

रणच्छुरितोदरजलधर सुंदर सकुङ्कुम केशे

तिमिरोदित विधु मंडल निर्मल मलयज

तिलक निवेशे ६ विपुल पुलक भर दंतुरि

ते रति केलि कलाभिरधीरे । मणिगणकि

रण समूह समुज्ज्वल भूषण सुभग शरीरे

७ श्रीजयदेव भणित विभव द्विगुणीकृ

त भूषण भारे। प्रणमत हृदि विनिधाय ह
रिं सुचिरं सुकृतो दय सारे ८ रागिनी भैरवी
ताल श्लोक॥ गतवति सखी वृन्दे मंदत्रपा
भर निर्भर स्मर पर वशाकृतस्फी तस्मित
स्नापिता धरास। सरस मलसं दृष्ट्वा दृष्ट्वा
मुहुर्नव पल्लव प्रसर शायने निक्षिप्तान्ती

गी० गो०

मुवाच हरिः प्रियाम॥ रागिनी भैरवी ताल ३॥ अष्टपदी॥ किशलय शयने तले कुरु कामि नि चरण कमल विनिवेशं। तव पद पल्लव वैरपरा भव मिदमनु भवतु सुवेशं १ क्षणम धुना नारायण मनुगत मनुसर राधिके। ध्रु० कर कमले न करोमि चरण मह्यमागमिता।

63

सि विदूरं । क्षण मुपकुरु शयनो परि मामिव

नूपुर मनुगति शूरं २ वदन सुधानिधि गलि

त ममृत मिव रचय वचन मनुकूलं । विरह

मिवापनयामि पयोधर रोधक मुरसि दुकू

लम् ३ प्रियपरिरंभण रभसवलित मिव

पुलकित मति दुरवापम् । मदुरसि कुच ।

गी. गी.

64

कलशे विनिवेशय शोषय मनसिजतापम

म्। अधरसुधारसमुपनय भामिनि जीवय

मृतमिव दासम्। त्वयि विनिहितमनसंवि

रहानलदग्धवपुषमविलासे ५ शशिमु

खि मुखरय मणिरशनागुणमनुगुणकं

ठनिनादम्। श्रुतियुगले पिकरुत मम शा

मय विरादव सादम ६ मामति विफल रुषा वि
फली कृत मव लोकित मथुनेदम। मीलति
लज्जित मिवनयने तव विरम विसृजरति वि
दम ७ श्रीजयदेव कविरिद मनुपद निगादि
त मथुरिपु मोदम। जनयत रसिक जनेषुम
नोरम रतिरस भाव विनोदम॥ रागिनीभैरवी

रा. गी. ताल श्लोक ॥ अन्तर्हृदः पुलकाङ्कुरेण निविडा

श्लेषैर्नि मेषेण च क्रीडा कृत विलोकितै यत्र

स्तया पानैकपानर्मभिः आनंदाभि गमनेन म

न्मथ कला युद्धेपि यस्मिन्नभू उद्भूतः स तयो

र्बभूव सरला रंभः श्रिये भावुकः ७८ मीलद्दृ।

ष्टि मिलत्कपोल पुलकैः सीत्कार धारा वशाद

यत्का कुलकेलि काकु विक सहेला श्चयौ ना
धरे स्थासोत्काम्य पयोधरे भृशापरि ष्वंगात्
कुरंगीदृशो हर्षोत्कर्ष विमुक्त निःसहतनो
र्यन्वो यय त्याननम् ७७ दोर्भ्यां मे यमितः
पयोधरभरेण पीडितः पाणिजैर्नाविद्धो दशा
नैः तनाधरपृष्टः श्रोणी तटे नाहतः हस्तेना

66

नमितः कवेधर मधु स्यन्देन सम्मोहितः कांतः

कामपि लक्ष्मि माप्तदहो कामस्य वामागतिः

वामांके रतिकेलि संकुलरणा रंभानया सा

हस प्रायं कांतजयाय किंचिदुपरि प्रारंभिय

त्संभ्रमान्निस्पंदाजघनस्थली शिथिलिता दो

र्वल्लिरुत्कंपितं वक्षोन्मीलितं मक्षि पौरुष

रमः श्रीणे कृतः सिध्यति ७९ तस्याः पाटल

पाणि जोकित मरी निद्रा कषाये हर्षो म

निह्नलो परश्रोणिमा विललिता स्वस्तस्वजो

मईजाः कोचीदामदरस्लथांचलामिति ग्रा

न त्रिखातेहर्षोरेभिः कामशरैस्तदद्भुतम।

मन्यत्युर्मनः कीलितम ८० ग्रथकांतेरति

ग॰गो॰ श्रांत मपि मंडन वांतयानिज गाढ निराबाधा

राधा स्वाधीन भर्तृका ८२ इति मनसा निग॰

दंतं शयनांते सानितांत विज्ञांगी राधा जगा

द सादर मिद मानंदेन गोविंदं ८३॥ रागि॰

नी भैरवी ताल तीन अष्टपदी॥ कुरु यदु॰

नंदन चंदन शिशिर तरेण करेण पयोध

67

रे । म्हग मद पत्र कमलं मनो भव मंगल क

लश सहोदरे १ निज गाद मायड नंदने क्री

डति हृदया नंदने । दयर चुंबन लंबितक

जल मज्वलय प्रियलोचने प्रति कुल गो

जन मंजनके रति नायक मोचने ॥२॥ नय

न कुरंग तरंग विकासिनि वामकरे कृति

गी. गी.

68

मंडले । मनसिज पाश विलास करे शुभवेष ।
निवेशय कुंडले २ भ्रमर चये रचयेत मपरि
रुचिरे सुचिरे मम मे मावे जित कमले विम
ले परिकलय नर्म जन कमल कंमावे ४
मृगमद रस ललितं ललितं कुरु तिलकम
लिक रजनी करे । विहित कलंक कलंक ।

मलानन विश्रामित श्रम शीकरे ५ मम रु
चिरे चिकुरे कुरु मानद मानस जध्वज चा
मरे। रति गलिते ललिते कुसुमा निशि खं
डि शिखंड कडा मरे ६ सर सघने जघने म
म शंबर दारण कंदरे। मणि रशना वसना
भरणानि शुभाशय वासय सुंदरे ७ श्रीज

गी·गो·

69

यदेव वचसि जयदे भदये हृदये कुरु मंड
ने हरि चरण स्मरणा मृत कृत कलि कल
ष ज्वर खंडने ८ ॥ रागिनी भैरवी ताल
श्लोक ॥ रचय कुचयोः पत्रे चित्रे कुरुष्व क
पोलयो र्घटय जघने कांची मेच स्रजा क
बरी भरं ॥ कलय वलय श्रेणी पाणौ पदे

ऊरु नूपुरा विति निगदितः प्रीतः पीतांब

रोपि तथा करोति धृत प्रातर्नील निचोलम

च्युत स्मरः सेवीत पीतांशुके राधायाश्चकि

ते विलोक्य हसिति स्वैरं सखी मंडले ॥

व्रीडाचंचल मंचले नयनयो राधाय राधा

नने स्वैरं स्मेर सुधांबुजोत्थ जगदानन्द

गा·गी·

70

य नेदात्मजः ८५ पर्यंकीकृत नाग नायक
फणा श्रेणी मणीनां गणे संक्रांत प्रति विं
ब सं वलनया विभ्रद्विभु प्रक्रियाम् । पादां
भो रुह धारि वारिधि सुता मक्ष्णां दिदृक्षुः
शतैः कायव्यूह मिवाचरं नुपचितो भूतो
हरिः पातुवः ८६ तिर्यक्कंठ विलोलमौलि

नरलोकेसम्यवेशोद्भर कीर्तिस्थानकृता व
धान ललना लक्ष्मेण मेलादिता: श्रेणीक
न्दलिता: समरय मधुरे राधा मावेदे सखा
मारे बो मधुसूदनस्य ददत देमे कटाक्षो
मेय: ८ ।। रागिनी भैरवी ताल च अष्टपदी
मेचर दयर सखा मधुर ध्वनि मावरितमोह

गा·गी·

71

न वेशं । चलित दृगंचल चंचल मौलि कपो
ल विलोल वतंसं १ रासे हरि मिह विहित
विलासं । स्मरति मनो मम कृत परिहासं ॥
चंद्रकचारुमयूर शिखंडक मंडल वलयि
तकेशं । प्रचुर पुरंदर धनुरनुरंजित मेदु
र मुदित सुवेशं २ गोप कदंब नितंब वती

मात्व त्रेबन लेवित लोमे। वेपु जीव मयुरा

धर पल्लव मल्ल मित स्मित शोभे ३ विपु

ल पुलक भजपल्लव वलयित वल्लव युव

ति सहस्रे। कर चरणो रसि मणि गण भू

षण किरण विभिन्नत मिस्रे ४ जलद प

टल चलदिंदु विनिन्दक चेदन विडलला

गा॰गी॰

72

दे। पीन पयो धर परि सर मर्द्दन निर्द्दय हृ

दय कपाटे ५ मणि मय मकर मनोहर कुं

डल मंडित गंड मुदारे। पीत वसन मनु

गत मुनि मनुज सुरासुर वर परि वारे ६

विशद कदंब तले मिलितं कलि कलुष

भयं शमयंतं। मा मपि किमपि तरंग दनं

ग हृषा मनसा रमयंते ७ श्रीजयदेव भणि
त मति सेंदर मोहन मधुरिपु रूपे। हरि च
रण स्मरणं प्रति संप्रति पुण्यवता मनु ह
पम।८। रागिनी भैरवी ताल श्लोक ॥
हसस्वल विलास वेशामन्दज भ्रूवलि म
हहवी हन्दोन्मारिहयांतवीतिन मतिखेदा

गा॰गी॰ द्रीणंतस्थले। मामद्दीत्य विलज्जित स्मित मया

मस्थानने कानने गोविंदं ब्रज सुंदरी गण

हृतमथ्यपामि ह्रघामिव ८८ ध्रेतर्मोहन मै

लिहृणान चलन्मंदारविलंसमनः स्वब्याकर्ष

गाहृद्विर्हर्षणमहा मंत्रेऊरंगीहशां हृष्टा

नवहृयमानादिविषड्वीरऊः स्वोपदो ध्येमः

73

केसरिणो बाणो हयत्न वो श्रेयांसि वेशीभवः ८४

यद्गांधर्व कला सु कौशल मनु ध्यानंच यद्वै

ष्णवं यत्शृंगार विवेक तत्व मपि यत्काव्ये

षु लीलायितं । तत्सर्वं जयदेव पंडित क

वेः कृष्णैकतानात्मनः सानंदाः परिशोधय

न्तु सुधियः श्रीगीत गोविंदतः ९९ साधी

गा-गी-

74

माधीक विनान भवति भवतः शर्करै कर्क
रा सिद्धाते द्रत्येति केत्वा मन्हते म्वत मसि
नीर नीरं रस से। माकंदं क्रंद कोना थर
परागिनले गरुयचुंवति याव ज्ञावं पृगार
सारस्वत मय जयदेवस्य विष्वग्वचासि ॥१॥
श्री भोजदेव प्रभवस्य रामादेवी सुत श्रीज

य देवस्य । पराशरादि प्रियवर्ग कंठे श्रीगी
त गोविंद कवित्वमस्तु ॥ जय श्री विन्य-
स्तै मंहित इव मंदार कुसुमैः स्वयं सिंदूरे
ण द्विपरणमुदा मुद्रित इव । भुजापीड
क्रीडा हत कुवलया पीडकरिणः प्रकीर्णा
सृग्बिंदु र्जयति भुजदंडो मुरजितः ९३॥

गी॰गो॰ इति भैरवी रागिनी गीतगोविंद परिछेदः

शुभमस्तु ॥ ॰ ॥ ॰ ॥

75

रागभैरवी लोरी नाल। । लोरी लालको देऊ माई कबको रोड़ी रोड़ी परवाऊ। कुन किन कु न कार गाऊ बजाऊ अगार चंदनका झूला झु लाऊ। लालको देहो सभी सभ लोरीओ। अगा र चंदनका झूला झुलाऊ रेषाम दीओ बटो डोरी ओ। झूलना। नवल हेदोर ना माई झूलासो

ग॰भै॰ गोकुलचंद। कंचनको दीयस गडाये नगानज

डन बहुरंग। आनंद भये नंदजीके डुआरे सेरा

गंद लियाई मालन। कमल कवरने जनम

लीयोहै नंद महर घर पालना। रागिनी भैर

वी जगलकंद माल। । तेरो अटल रहोलो राज

पियारे महमद शाह पीया जमजम निन निन

नावन वैठके इत मिल काज । गाइन गुणीग्रो नन

द वरीलवा समसषी ग्रन मिल करन जबव सदा

रंग मिल गाऊ वजाऊ नोन नेहर सदील रोमाज ।

रागिनी भैरवी तराना ताल । । दानी उदे नाना

दिरना दीम दिम् त ना ना ना ना ना ना नाना दीम्

दानी नादिर दिर तुम दिर दिर तुम दिर दिरदीम

रा॰ भै

नद्र दानी । यालाली याली याला लोम याला ला

लाले लोम यालाले लोम् यालाली याले दिर नोम

नोम् ननाना नोम् नाना नानानाना ना दिर दिम

ननाना दिम नान नाना दानी ॥ रागिनी भैर

वी सादरा ताल । बजे रन्नुबीर रघुवीर गाड

लेककी मेरा लक्कमन बजे धनुष धारी ॥ पम्म

२

दल ग्रह माहो जोधा वली लीपे एकते एकबल

अधिक भारी । सेस धरनी धसो दृगवादर छ

पिउं हाथ पंवांन लीपे पवोसी । दोर वरू श्री

र जब मार लंका लई सकल संसार जैजैप्रका

री । जन । नवेली अकेली वलो स्याम मध मा

नी लेगार जाये । गागार भरभर धर आवे मोरा

रा॰भैं॰

कछूना बिसाज पीग्रा सहूप सावरे ढोडे नैनन
मैं भरे ॥ रागिनी भैरवी टोना नाल। ॥
टोना कामन कर समझावरे काहू देसना जा
वरे ॥ जंत्र मंत्र डार साबीरी हर्छे नीको पीग्रा
गार लावरे ॥ रागिनी भैरवी लोरी फूलना
जगलछंद नगाना सादरा जनटोना समापते ॥

राग मधु ताल चार ॥ ज्ञानकौ प्रकाश जाकैं

ग्रंथकार भयो नामदेह अभिमान जिनतज्यो

जानि मारथी मोह सब सागर वैरागज्यो जा

के बैन सुनत विलात है विकारथी । अगम

अगाध अति कोउ नहि जानै गति आत्माकौ

अनु भव आपिक अपारथी । ऐसो गुरुदेव

२

रा॰म॰ न्दनीक तिहूं लोक मांहि सुंदर विराजमान

सोभित उपावची ॥ राग मधु ताल चार ॥

सोई गुरु देव जाकैं दरसीन बातहै । काहू॰

सौं नरोष लोष काहूसौं नराग दोष कौंहूसौं

नवैर भावकाहू कीन घातहै । काहूसौं न

वक वाद काहूसौंनकी विषाद काहूसौंन॰

सेयान नो कोउ पक्षपात है । काहूसोंन उष्ट
वैन काहूसोंन लेन देन ब्रह्मको विचार क
छु थोरन सुहावत है । सुंदर कहत सोई
ईसनकों मस्ता ईस सोइ गुरुदेव जाके हू
मरीन वात है ॥ राग मधु ताल चार । गाय
सिष पलटै सो मत गुरु जानिये । लोहेकों

गा.स. जे पारस पषानहू पलटि लेत कंचन छु
वत होत जगमें प्रमानिये। द्रुमकौं जो चं
दनहू पलटै लगाइ बासके समानकै सीत
लता आनिये। कीटकौं ज्यौं भृंगहू पलटि
कैं करत भृंग सोई उडिजाई ताकौ अचरज
मानिये। सुंदर कहत यह सगरी प्रसिद्ध वा

8

न सद्य सिष पलटै सो सत गुरु जानिये ॥

राग मधु ताल चार ॥ गुरु बिन ज्ञान नाही

गुरु बिन ध्यान नाही गुरु बिन आत्म विचा

र न लहत है । गुरु बिन प्रेम नाहि गुरु बि

न प्रीति नाही गुरु बिन सील हूं संतोष न

गहत है । गुरु बिन ध्याम नाहि बुद्धि को ।

ग॰म॰ प्रकाश नाहि भ्रमहूको नामनाहि मेशायर
हतहै। गुरुबिन बाढ़ नाहि कौडाबिन हा
टनाहि मेदर प्रगट लोक बेदयों कहतहै॰
राग मधु ताल चार॥ पढ़िकैन बैठे पास
अन्तर नवाचिसकै बिनही पढ़े मे कैसे आ
वतहै फारसी। जौहरीके मिलै बिनुपारख

नजानै कोउ हाथन गलियें फिरें संशय न
हि टारसी । वैदहू मिल्योंन कोउ बूटिको
बताइदेत भेदबिन पाये वाकें औषद है
झारसी । सुंदर कहत याहि रच कनदेखि
जाई गुरुबिन ज्ञान जैसें ग्रंथरे माहि आरसी॰
राग मधु ताल चार ॥ गुरुके प्रसाद बुद्धि।

ग्रं॰म॰ उतम दसाकौं गृहे गुरुके प्रसाद भव उबा॰

बिसारइये। गुरुके प्रसाद प्रेम प्रीतिउ प्र

यिक वाढे गुरुके प्रसाद रामनाम गुणगाइ

ये। गुरुके प्रसाद सब जोगकी जुगतिजा

नै गुरुके प्रसाद सुन्यमें समाधि लाइये।

सुंदरकहत गुरुदेव जो कृपालहोहि तिन

10

10

के प्रसाद तत्व ज्ञान पुनि पाइये ॥ राग सप्त

ताल चार ॥ जगमैं नकोउ हितकारी गुरु

देवसो । बूडत भवसागरमैं आइकैं बेयावै

थीर पार ऊलेजाय देत नावकौं जौ खेवसो ·

पर उपकारी सब जीवनकौं सारे काज कब

हून आवै जाके गुनिनको छेवसो । बेनउ ·

गा· स· सुनाइ भयभ्रम सब दूरि करे सुंदर दिखाइ
देत अलख अभेव सो । और उ सनेही हमनी
कैं करि देखे सोधि जगमैं न कोउ हितकारी
गुरुदेव सो ॥ राग मधु ताल चार । गुरु ता
त गुरु मात गुरु बंधु निज गात गुरुदेव न
ख सिख सकल सेवा कैयो है । गुरु दिये दि

या नैन गुरुदिये मुखवचन गुरुदेव श्रवन
देशब्द उचालोलोहै । गुरुदिये हाथपाव गु
रुदिये सीसभाव गुरुदेव पिंडमोहि प्राण
आइ डालोलोहै । सुंदर कहत गुरुदेव जु कृ
पाल होहि फिरिया चढिकरि मोहि निहा
लोहै ॥ राग मधु ताल चार । कोउदेत पु

ग॰म॰

12

त्र धैन कोउ देत बलधैन कोउ देत राजसाज

देव विधि सन्योहै । कोउ देत जससान कोउ

देत रिसग्रान कोउ देत विद्यादान जगतमें

गुन्योहै । कोउ देत रिद्धि सिद्धि कोउ देत न

व निधि कोउ देत और कछु ना तैसी मध्य

न्योहै । सुंदर कहत एक दियो जन नाम ।

नाम ग्रह सो उदार कोउ देख्यो है न सुन्यो।
है ॥ राग मध्य ताल चार। ग्रहके अनन
गुन कापै कहे जात है। भूमिहूंकी रेनकी
तो संख्या कोउ कहत है। भारहू अठारह
द्रुम तिनके जो पात है। मेघनकी संख्या।
सोउ रिषिन कहो विचारि बूंदनकी संख्या

रा॰म॰ तेऊ आइकै बिलात है। तारन की संख्या सोऊ
कही है पुरान माहि रोमनि की संख्या पुनि
तितनेक गात है। सुंदर जहां लौ जन सब ही
कौ आवै अंत गुरु के अनंत गुन कापै कहे।
जात है॥ राग मधु ताल चार। गुरु की तौ
महिमा अधिक है गोविंद तैं गोविंद के कि

13

ये जीव जातहैं रसातलकौं गुरु उपदेससो

तो छूटे जम फंदतें। गोविंदके किये जी

व वस परे कर्मनिके गुरुके निवाजे सोतो

फिरत सछंदतें। गोविंदके किये जीव।

बहुत भव सागरमें सुंदर कहत काढे उ

खेडे दैंतें। श्री गुरु कहांलौं कछू मावतैंक

ग॰म॰ इहे बनाइ गुरुकी सो महिमा अधिक कहै गोविं

दतैं ॥ राग मधु माल चार । ऐसी कौन मे

रे गुरुदेव आगैं राखिये । चिंतामनि पार

स कल्पतरु कामधेनु औरहु अनेक निधि

वारि वारि नाखिये । जोई कछु देखिये सो

सकल बिनाशवंत बुद्धिसे बिचार करि ।

14

बहु अभिलाखियै। तातैं अब मन बच कर्म

करि करजोरि सुंदर कहत सीसमेलि दी-

न भाखियै। बहुत प्रकारी तीनौ लोक स

ब सोधे हम प्रेमी कौन भेट गुरुदेव आगे

राखियै ।। राग सबु ताल चार। महादेव-

वामदेव रिषभदेव कपिलदेव व्यासदेव

रा॰म॰

सकहे जयदेव नाम देव जू। रामानंद सु

खानंद कहिये अनंतानंद सुरा सुरनंद हु

कै भ्रानंद ग्रक्कैव जू। रै दास कबीर दास सो

का दास पीपा दास धना दास हु कै दास भा

वहीको देव जू। सुंदर सकल संत प्रगट

जगत माहि तैसे गुरु दाउ दास लागे हरि॥

15

१५

सेवक ॥ राग मधु ताल चार । गुरुदेव सबों ।
पर अधिक विराज मान गुरुदेव सबही तें
अधिक गरिष्ठ है । गुरुदेव दत्तात्रय नारद ।
सनकादि मुनि गुरुदेव ज्ञान घन प्रगट व
सिष्ठ है । गुरुदेव परम आनंद मय देखियत
गुरुदेव वर वरिया नष्ठ वरिष्ठ है । सुंदर क

रा॰म॰ हत कछु महिमा कही न जाइ ऐसे गुरदेव।

दाउ मेरे सिर ऊपर है ॥ राग मधु ताल चार ॥

जोगी जैन जंगम सन्यासी बनबासी बौधी

और कोउ भेष पक्ष सब भ्रम भान्यौ है। ताप

स रिषीश्वर मुनीश्वर कवीश्वर ह्वे सबनि।

को मत देखि तत्व पहिचान्यौ है। बेद सार

16

तंत्रसार स्मृतिसार पुरानसार ग्रंथनिकौसा
र सोई हृदय मांहि ग्रान्यौहै। सुंदर कह
त कछु महिमा कहीनजाई ग्रैसे गुरुदेव।
दाउ मेरे मनमान्यौहै॥ राग मगु ताल चार
जीतेहै जु काम क्रोध लोभ मोह हारिकिये
ग्रौर सब गुनन कौमद जिन मान्यौहै। उपैने

रा.म.

नकोउ ताप सीतल सभा जाकौं सबहीमैंस

मता संतोष उर आनुहै। काहूसौंन रागदोष

देत सबही कौं पोष जीवनही पायो मोष।

एक बल जानुहै। भेदन कहत कछु महि

मो कहीन जाई ऐसे गुरुदाउ मेरे मनमानु

है॥ राग मधु हेमालछंद ताल रूप। राम

17

हरिराम हरि बोल सूवा । तोसही चतर तूजा
न परवीन अतिपरे जिन पिंजरे मोह कूवा॰
पाई उतम जन्म लाइ लै चपल मन गाइगो
विंद गुन जीत जूवा॰ आपही आप अग्यान
नलिनी बंध्यो विना प्रभु विमुख कै भार मू
वा॰ दास सुंदर कहै परमपद तौ लहै राम॰

रा. म. हरि राम हरि बोल रख्वा ।। राग मधु माल के

प ।। हक्कनह हक्कनह बोल तोता नफस खी

तानकौं आपनी कैद करि कौं उनीमैं परा

खाइ गोता । है गुनह गार भी गुनह हीक

रतहै खायगा मार नब फिरै रोता । जिन

नके खोकसौं अजब पैदा किया तू उसैं ।

18

18

कैौं फरामोश होना । दास सुंदर कहै प्यार

म तबही रहै हक्कत हक्कत बोल नाना ॥

राग मधु ताल केप ॥ मीतहीर बोल तू

नी सबकी बद सौगन्द पैदा किया नैन ।

नाव नासिका कर मेजनी । ख्याल ऐसा

करै बही लीप फिर जागि कीर दाव का

रा॰म॰ कैरहती। अलि उस रुविसम कौं काम तैं क्या

किया वै गिदे याद करि भरिनि हती। दास

हेदर कहै सब रुाव तौ लहै भी तेही भीते

ही बोल हती॥ राग मधु ताल फेरो। रा

कन राकन बोल मैंना अवल उस्तादकेक

दमकी त्रोक होई हि रस बुरा जार सब।

छोड़ फैंना । यार दिलदार है साहिब याद-

करिहैं तभी पास न देख नैंना । जानका

जानका जान है जिंदका जिंद है सावन कछु

समझ सैना । दास हैदर कहे सकल घट

में रहे ताकत एक न बोल सैना ॥ राग स

धु ताल केप ॥ कानरा गाने कहा कानसे

रा·म·

20

मे होत मुख नैनन के गणतैं कहो नैन ऐसे पा

इहै। नासिका गणतैं कहो नासिका सुगंध

लेत मुख के गणतैं कहो मुख ऐसे गाइ रा

म है। हाथ कोणतै कहो हाथ ऐसे काम।

होत पांव के गण तैं कहो पांव ऐसे धाइहै·

याहते विचार देखि सुंदर कहत नाहि।

देहके गएतैं ऐसी देह नही आवदहै ॥ राग
मधु ताल तिताला ॥ वारवार कह्यो तोहि
सावधान कौंन होहि नममताकी पोट सि
र काहे कौं धरतहै । मेरो धन मेरो धाम ।
मेरे सुत मेरी बाम मेरे पसु मेरो ग्राम भूल्यौ
फिरतहैं । तू तो भयो बावरो बिकाइगाई

ग॰ म॰

बुद्धितेरी ऐसो ग्रंथ क्रप गृहनामैंके परतहै॰

स्वेदर कहत तोहिनै कहूं नग्रावे लाजकों

कि गारके ग्रकाज कीं करतहै ॥ राग मधु

ताल तीन । तेरे तो कुपेच पर्यो गाठ ग्र

ति तुरि गइ ब्रला ग्राइ छोरे कौहू छुटत

न जबहू । तेल सौं भिजोइ है करिवी घरा।

२१

लपट गालेहु कर की पुछ मथी होइ नहीं न
बहू । मामदेन मीव बहु कीरीके गनन जा
न कहत दिन बीते तात सब हू । हेदर अना
न अैसो छाँडो नहि अभिमान निकसत रा
ण लगि चेत्यो नही कबहू ॥ राग मधु नाल
तीन । याह मोहि तेल नहि नेकत काहू ।

ग॰म॰ विधि पाथरन भीजे बहुवरषन घनहै। पानी
22
के मथेतें कछु घीव नहि पाइयत छकसके
छूटे नहि निकसत कनहै। हलको मटी।
भरेते हाथन परत कछु उसरके बोय कहा
नि पजत अनहै। उपदेश औषध कनविधि
लागे नाहि सुंदर असाध रोग भयो जाके म

नहै॥ राग मधु ताल तीन। वैरी घर मोहि

तेरे जानत सनेही मेरे दारा सुत वितते वै

बोलि बोलि खोहिगे औरउ कुटंब लोक।

उठैं बड़े औरही ते मीठी मीठी बातन कहतो

सौं लपटोहिगे। संकट परैगो जब कोउ न

हि तेरो तब आनिही कठिन वाको बैरि बट

रा॰म॰ मोहिरो। सुंदर कहत यातैं झूठोई प्रपंच य

23 ह सुपनेकी न्याई सब देखत बिलाहिरो ॥

राग मधु ताल तिताला। बालुके मंदिर मांहि।

बैठि रह्यो थिर होइ राखत है जीवनकी आ

सा कोउ दिनकी। पल पल छीजत घटत

जात घरी घरी विनसत बार कहा खबरि।

23

न छिनकी। करन उपाय झूठे लेन देनला

न पान सुमाईत उत फिरे ताकि रही मि

नकी। सेदर कहत मेरी मेरी करि भूल्यो ह

ट चेचल चपल मायाभई किन किनकी॰

राग मयु ताल तिताल। श्रवन लेजाइ क

रि नाद के लेडारे पास नैनां लेजाइ करि ह

ग॰म॰

24

पवन कौ ल्यौ है। नथबाले जाइ करि बहुत
सुंघावै फूल रसना ले जाइ करि स्वाद मदु
ल्यौ है। चरम ले जाइ करि नारी सौं स्पर्शक
रै सुंदर कोउक साधु ठगन तैं डल्यौ है। का
म ठग क्रोध ठग लोभ ठग मोह ठग ठग
नि की नगरी मैं जीव आइ पैठ्यौ है ॥१॥

2A

मधु ताल तिनारा। पायौहै मनुष देह श्रेम
र बैन्योहै ग्राइ श्रेसी देह बार बार कहै करे
पाइहै। भुल्यौ कै बार तू ग्रब कैं सयानो हो
ऊ रतन ग्रमोल यह काहे कौं ठगाइहै।
समझि विचार देखि ठगनिकौ संग माग ठ
ग बाजी देखि कहूं मनन डलाइहै। सेदर

गा·म· कहत तोहि असावधान होहि हरिको भज
न करि हरिमैं समाइहै ॥ राग मधु ताल ति
ताल। घरी घरी घटत छीजत जात छिन।
छिन भीजत ही गरि जात माटीको सो डेल
है। भकतिके द्वारे आइ सावधान कौनहो
ई बारबार चढतन चिर्याको सो तेल है। क

रले सुकृत हरि भजन अवेतन रयाहीमैं प्र
नर पैयामैं ग्रल मेलहै। मानुष जनम य
हजीन भावै हार सब सेंदर कहत यामैं जवा
को सो विलहै॥ रागमधुमाल तिताल। ल
कुटि हथियार लियैनें बनिकी ढालदियें
सेत वार भये नाको नेहु सोतनायोहै। जोव

रा॰म॰

26

न कौ गयो राज श्रौर सब भयो साज श्रपनी

डहाई फिरि दमामो बजायोहै। दमन गये

स मानौं दरबान हरि किये जौं गरी परी स

श्रौर बिछौना बिछायोहै। सीसकर कंपत

स सेदरानिकोहो रिपु देखतहा देखत बु

ढापौ दौरि श्रायोहै॥ राग मधु ताल तीन

देह धरि पग भूमि मैंडे नहि औ लटिया।

पुनि हाथ लईजू। ओ विहू तो कपरे सव

तैं जल सीसह लै कटि बांध नईजू। ईश्वर

कौं कबहू न संभारत डःख परे तब आह

दईजू। सुंदर तौहू विषय सव वेछत धो

रे गये पै वर्गौन गईजू॥ राग मधु माल तीन

27

रा.म. पाइ अमोलक देह इहै नर कौन विचार करै
दिल षेदर। कामहु क्रोधहु लोभहु मोहहु
लूटत है दसहु दिस षेदर। तू अब वैकुन्त
है सुर लोकहि कालहु पाइ परे सु पुरंदर।
छोडि कुबुद्धि सबुद्धिहु दया धरि आतम
राम भजै किन षेदर।। रागमधुमालतीन

इंद्रिन के स्वाद मानत है सठ या हितें बज्र

तै दुःख ज्यौं जल मैं झषमो महि लीलत खा

ट बेध्यौ जल बाहिर आवै। ज्यौं कपि मूठि

न छोड़त है रसना बस बंद परौ विलला

वै। सुंदर क्यौं पहिले न संभार तजो गुड़।

खाइ सकान बिधावै॥ राग मधुमाल तीन

ग॰म॰ कौनक बुडि भई चट अंतर तू अपनी प्रभुसौं

28

मन चोरै। भूलि गयौ विषया सुखमें सठ।

लालच लागि रह्यो अति थोरै। जो कोउ के

चन क्षार मिलावत लकर पाथर सौं नग

फोरै। सुंदर या नर देह अमोलिक तीरल॰

गी नवका किन बोरै॥ राग मधु माल तीन

देखत के नर शोभित है जैसे ग्राहि प्रत्नूपम

केरिकौ खेभा । भीतर तौ कछू सार नही पुनि

उपर झालक ग्रेबर देभा । बोलत हैं पर नो

हि कछू सषि जैौं वे बयार तैं बाजत कुंभा ।

हासि रहैं कपि जैौं छिन माहि सो याही तें स

दर होत प्रवंभा ॥ राग मधु माल निताग ।

रा॰म॰ 29

देखनके नारीमननहैं परि लत्तण तो पशुके
सबहीहैं। बोलत चालत पीवत खातसोवैं
घरमैं वनजात सबहीहैं। प्रात राग रजनी।
फिर आवत संदर यौं नित भार वहीहै ॥
औरतो लत्तण आइमिले सब एक कमी।
सिर सींग नहींहै ॥ राग मधु माल तिताला।

29

प्रेतभयो कि पिशाच भयो कि निशाचरसो

जितही तित डोलैं। तृष्णनी सुधिभूलि

गयो सबतैं कछू श्रौर की श्रौरई बोलैं। सो

ई उपाइ करै जु मरै पचिके थन तौ कबहूं

नहि खोलैं। सुंदर जानतनैं हरि पावत।

सो तन नास कियो मति बोलैं॥ राग मयु

ग॰म॰

नाल निनाग। पेटते बाहिर लो होतनही बालक ग्राइ कैं मात पयो यर पीनो। मोह वढौ दिनही दिन ग्रौर नहत्र भरो विषकौ रस भीनौ। पुत्र कलत्र बंध्यौ परिवार सुप्रेमीही भांति गए पनतीनौ। सुंदर राम कौ नाम बिसारि सु ग्रापही ग्रापकौं बंध

30

३०

न कीनौ ॥ राग मधु ताल तिताल। मातपिता

सुतभाई कैथो ज्ववनी के कहे कहा कानक

रैहै। चोरी करै बटपारी करै किरषी बनिजी

करि पेट भरैहै। सीत सहे सिरघाम सहे क

हे सुंदर सो भ्रम माहि मरैहै। बांधि रह्यो म

मता सब सों नर नाही ते पास बंध्योई फिरैहै॥

रा॰म॰ तेरीही चाकरी तोहिलेबौरे। ठेठगाकें धन

औरकौं लावत तेरो हतो हर औरइ फोरे।

आगि लगें मनरी जरि जाई सु तू दमरी दम

री करि जोरि। हाकिम कौ डर नाहिन सू

झत सुंदर या कहि बार निहोरे। तावर वें

नही आपन खोट सु तेरीही चाकरी तोहि।

3/

31

लेबेरे ।। राग मधु मनहर छंद ताल तीन ।
करत प्रपंच इन पंच इनके बस परो पर
दारा रत मध ग्रानन बुराई कौ । परधन हरे
परजीवन की करत घात मधमांस खात ल
वलेस न भलाई कौ · होइ गोहि सावनव ·
सावतैं न आवै न्याव सेदर कहत लेखो ले

ग·म·

32

त गाई गाईकौ। इहां नौकरे विलास जमकी
नमानै जासयौं मतिजानै उहां राज पोषणब
ईकौ॥ गगमधु नाल निनारा। इनिधाकौं
देखताहै औरतकौं लेरताहै औन्नदकौं मो
रताहै बटोइ मराईका। म्बरगीकौ मोमताहै
बकरीकौ गोमताहै गरीबांकौं खोमताहै।

32

बेमहरगाईका। जुलमकौ करनाहै धनीसे
नडरनाहै जोजगकौ भरनाहै खिजानाबला
ईका॥ राग मधु ताल तिताला। कर कर ख्या
यो नव खिर खिर काटौ ताल भर भर जोडि
ल घर घर मान्योहै। दर दर दौरी जाइनर
नर आगे दीनबरवफतन नैक ख्नल मान्यौ

रा॰म॰ है। मन मन मोधे यन तन तन तोरे पानजन

33

जन काटत अधिक मोह मान्यो है। फरफ

र फूल्यो फिरे डर डर पे नमूढ हर हर म

तन संदर मकान्यो है॥ राग मधु ताल ३।

जनम सिरानो जाइ भजन विमाख मठो है

को भवन क्रूप विन मीच मरि है। गहन ग्र

33

विघा जानि मक नलनी जो मूढकरम वि

करम तनहो डरिहै। ग्रापुहिते जान ग्रंथ।

नरकन बार बार ग्रजहे नसेक मनमोहि म

व करिहै। अवको समह ग्रव लोकि कैन।

मास होइ केंदर कहत नाग पास नर परि

है॥ राग मधु माल तिताल। जग मग पग

रा० म०

34

तजि सजि भजि राम नाम काम क्रोध तनम
न चेरि हेरि मारिये । ऐंठ मेंठ हठ त्यागि ।
जागि भागि मत्त पुनि गुनि ज्ञान ध्यान बार
बार डारिये । जाहि ताहि जाहि सेष ईस सी
स स्वर नर ओर वान हेत तान फेरि फेरि जा
रिये । खेदर दर द खोड घोड वार वार मार

34

मेरा रेरा श्रेरा हेरि हेरि थारिये ॥ राग मध्र
डुमिला छेद ताल तिताग । हठ जोग धरे
तन जात भया हरि नाम विना सब धूरिप
रे । सठ सोग हरो छिन गात किया चरिचा
म दिन भव पुरि जेरे । भट भोग परो गान
खात पिया अरि कामा किनो सब झुरि मरे॰

रा॰म॰ 35

मठ रोग करो चन ग्यान दिया परिराम बिना

डबि हरे ॥ राग मधु ताल जत । गुरु ग्यान ।

गहे भ्रति होइ ग्यवी मन मोहत जैतव का

नमरे । धुरि ध्यान रहो पति खोइ ग्यवी र

नलोह वजे तव लाज परे । हर नान बहे

हति होइ हावी तन छोर मजे श्रब श्राज

मरे। पुरप्यान लहे मतिधोइ डारी जनबीर
रमै जब राज करे॥ रामा मथुरा इन्दब छेदना
लजनत। मंदिर माल बिलाइतहै गज ऊंट
दमामे हैं नाइक दो है। नानहूं मात पिया
सुत बेपब दो वयों पामर होत बिछोहे।
झूठ प्रपंच सों राचि रह्यो मठ काठ की पुत

रा॰म॰ रीज्यों कपि मोहे। मेरीही मेरी करै नित खेद

र ग्राहि लगी काहि कोन को कोहै ॥ राग म

थ नाल जन। ये मेरे देस विलातहै राजये

मेरे मंदिरहा मेरी धानी। ये मेरे मातपिता

पुनि बेध बधे मेरे पुत्रसुधे मेरे नानी। ये॰

मेरी कामिनी केलि करे नित ये मेरे सेव

36

कहैं दिन राती। सुंदर वैसेंहि छाडि गयो

सब तेल जर्यो बुझी जब बाती ॥ राग म

धु ताल जत। भूलि कहैं नर मेरी ही मेरी

है· दिन चार बिश्राम लियो सठ तेरे कहे

कछु है गई तेरी। जैसेंही आपदवागये।

१·१· छाडि सबै तैसें ही तू जानिहै पल फेरी। मारि

रा॰म॰ है काल चपेट अचानक होंइ चपी महिमाव

37

की ढेरी। हेदर लेन चले कबहु मेरा सबू

बलि कहे नर मेरी ही मेरी॥ राग मधु ता

ल तिताल। के यह देह जराह कै क्षारिकि

या कि किया किया कि किया कि किया है॰

कै यह देह निमी मेहिरबो दिदिया किदि

37

या किदिया किदियाहै। के यह देहरा है दि

न चार जिया किजिया किजिया किजियाहै।

सुंदर काल अचानक आइ लिया किलिया

किलिया किलियाहै॥ राग मधु ताल फे

संतसदा उपदेस नावत केस सबै सिर से

न भराहै। व ममता अजहू नहि छांडत सो

रा॰म॰ तहे याइ सदेस दगाहै। आजकि काल चल

उठि मरववितेरीही देवत केते गए कहै।

हेदर कौनहि राम सेभालत याजगमें क

हो कौन रहाहै॥ राग मधु ताल तिताला।

देह सनेह न छोडतहै नर जानतहै न रहै

थिर गहा। छीजत जात घटै दिनही दिन

38

दीसतहै घटका नित छेहा। काल प्रधान
क आइ गहे करडाहि गिरा इक रेतन गेहा॥
सुंदर जानि यहै निहचैं धरि एक निरंजन
सौं करि नेहा॥ राग मधु ताल तिताला॥
तू कछु आर विचारतहै नर तेरो विचारय
रो ह्वैरहैगो। कोटि उपाय करै धनके हित

31

रा॰म॰ भाग लिखो तिन नौ ईला है गौ। और के सोफ
घरी पल सोफ सकाउ अचानक आइ गैहै
गौ। राम भजो न कियो कछु सकृत सुंदर
या पछिताइ कहैगौ॥ राग मधु माल ३॥
भूलि गयो हरिनाम कौं नमठ देखियेकौं
न सेंजोग बन्यो है। काल अचानक आइग

31

ई केठ पेषियो केहो सो नानो तन्यौहै। ब्या

र करे सब चामकोलटें ज आदिकों ग्रैसे

ही जीव हन्यौहै। कोऊन होत सहाइकों

कहै ग्रानाको संदर याते मन्यौहै॥ राग

मथु नाल तिनारा॥ बीतिगए पिछिले

सबही दिन ग्रावतहैं ग्रगलो दिननेरे॥

रा॰म॰ काल महाबल बेन बडो रिपु सो थिर हेरो
सिर ऊपर तेरे। एक घरी महिं मार गिरा
वत लागत नाहिं नहिं कछु बेरे। हेट
र सत पुकारि कहैं सबहू पुनि तोहि।
कहौं पुब टेरे॥ राग मधु नाल धीमा॥
सोइ रहो कहो गाफिल होइकै तोसिर

40

4-0

उधर काल दहारे। च्यामम चुमम लागि

रह्यो मठ आइ अचानक तोहि पछारे।

नैनों बनमें मगकुदत फोदत चित्रकले

नाव सोच उरफारे। भेदर कालडरैरनि

हि कोउ उरना प्रभुकों कहि कौनसे

भारे॥ राग मधु ताल धीमा॥ चेतन।

रा॰म॰ कौंन अचेतन ह्वैजात कालसदा सिरऊ

पर गाजै। रोकिरहे गढके सब द्वारनन

व कौन गली ह्वै भाजै। आइ अचानक के

सग है जब पाकरिके पुनि तोहि फुलाजै॰

सुंदर कौ न सहाय करै जब सेउ ही सेउ

भरा भर बाजै॥ राग मधु ताल तिताला

41

त अति गाफिला होइ रह्यौ सठ कैजर

ज्यौं कछु सेकन माने। माइ नही तन

मै अपने बल मत्त भयौ विषया सुख

ठाने। खोवत खात सबै दिन बीतत

नीति अनीति कछु नही जाने। सुंदर

के हरि काल महारिपु देत उपारि कै

रा॰म॰ म ख्याल भावे ॥ राग मधु ताल धमार।

42

मातपिता जुवती सुत दख्याब आइ मि
ल्यो इनमे मे बेथा। स्वारथके अपने अ
पने सब सोइहि जानत नाहिन ऐथा॰
कर्म विकर्म करै तिनके हित भारधरै
निज अपने केथा। ऐन बिछुर भयो।

42

सब सौं पुनि नैं मेदर हैं जग थेया ॥ रागम
थु ताल चार मनहर छेद ॥ करा करत
थेय कछु वन जाने ग्रेय ग्रावत निकट
दिन आगि लोच पाकदे । जैसे बाज ति
तर कौं दाबन अचानक जैसें बक मछ
री कौं लील नल पाकदे । जैसें मल्लिका

रा॰म॰ की घात भरी करत आइ जैसें सांप मूसा॰

को ग्रसत गपाकदे। चेतरे अचेत नर हे

दर मे भजि राम ऐसें तोहि काल आइ ले

हू गोट पाकदे॥ राग मधु ताल चार॥

मेरो देह मेरो गेह मेरो परिवार सब मेरो॰

धन माल मैं तो बहु विधि भारो हों। मेरे म

व मेवक हुकम केउमेटे नाहि मेरी जुवती

कौ मे तो अधिक पियारी हौं। मेरो बेम ऊ

चो मेरे बाप दादा ग्रैसे भये करत बडाई।

मे तौ जग उजियारी हौं। सुंदर कहत मे

रो मेरो करि जाने मट ग्रैसे नही जानै मैं तो

कालही को चारो हौं॥ राग मधु ताल ध।

ग्रा.म. 44

जबते जनम धरो तबही तें भूलि पस्यो बा
लापन मोहि भूल्यो समकोन हावमें। जो
बन भयो है जब काम बस भयो तब जुव
ती सै एकमेक भूलि रह्यो ख्यावमें। वृत्ध
पौत्र भए भूल्यो तब मोहि पोथि चिंता क
रि करि भूल्यो जानेनही डावमें। हेदरक

44

हत सठ तीनो पनमोहि भूल्यो भूल्यो जाइ

परे काल ब्यालही के मुखमें ॥ राग मय

गाल चार ॥ उठत बैठत काल जागत सो

वत काल चरत फिरत काल काल उरध

ह्येहि । कहत सुनत काल खातउ पीवत

काल कालही के गाल मोहि हर हर हरो

रा॰म॰ है। तात मात बंधु काल सुतदारा गृहका

45

ल सकल कुटंब काल काल जाल फसो

है। केदार कहत एक रामबिन सबे का

ल कहीको कृत किये ग्रेन काल ग्रहो

है॥ राग मधु ताल चार॥ जबते जनम

लेत तबहीते आयु घटे माय तो कहत

45

मेरे बडो होत जात है । आज और कालओ
र दिनादिन होत और दोरो दोरो फिरत
खिलत अरु खात है। बालापनवीत्यो ज
ब जोबन लग्यो है आइ जोबनहू बीते
बूडो ढोकारादि खात है । सुंदर कहत
ऐसें देखतही बुझिगयो तेल घटगयो

रा॰म॰ जैसें दीपक बुझातहै ॥ राग मधु ताल ष

सब कोउ ऐसें कहै काल हम काटत हैं

काल तो खावेउ नाम सब को करतहैं ॥

जाके भय ब्रह्मा पुनि होतहै केपाय मान

जाके भयष्ण सुर सुर ईन्द्रउ डरतहैं । जाके

भय सिव ब्रह्म सेषनाग तीनो लोककैउ

46

क कलप बीते लोमस ऊपरत हैं। सुंदर
कहत नर गर्व गुमान करै है तो सठ प
कई सु पलक में मरत हैं॥ राग मधुमाल
चार॥ कालसोन बलवंत कोउ नहि।
देखियत सब को करत ग्रेत काल महा
जोर है। कालही कौ डर मानि भागे पा सु

रा॰म॰ सो पैगंबर जहां जहां जाइ तहां तहां वा

कौ मारै है। काल है भयानक भय भीत

सब कौ ए लोक स्वर्ग मर्त्य पाताल मैं का

लही कौ मारै है। सोदर काल कौ काल।

एक अकाल है अखंड वासौं काल डरै जोइ

बलौ उह बीर है॥ राग मधु ताल चार।

47

बरषा भए तें जैसें बोलत भंभीरी स्वर खे
ड़त पवत कहूं नेकहूं नजानिए। जैसें
कोई गुडीकों चढावत गगन मांहि ता
ड़े की तो धुनि सुनि तैसेंही बखानिए।
जैसें पैंगी बाजत अखंड स्वर होत धुनि ता
ड़ मैंन अंतर अनेक गगनानिए। सेदरक

रा॰म॰ हत ऐसे कालको प्रचंड वेग रातदिन च

ल्यौजाहि अचरज मानिए ॥ रामभ्रयुता

ल चार ॥ माया जोरि जोरि नर राखत जत

न कर कहतहे एक दिन मेरे काम आइ

है। तोहितो मरत कछु वारनही लागे।

मट देखतही देखत बबूला सो विलाइ

48

है। यनतौ यनतौ यरौई रहै चलतनको

डीगहैरी नेरे हाथन जैसें आया तैसें जा

इहै। करले सुकृत यह बात करे बावरे

जौं देते बाया लागत बोरानोहै। माया

कौ उपाय जानै मायाकी चाकरा ठानै।

मायामैं मगन अति माया लपटानोहै।

विरचंत आवेकीनिदरखकरत घमिमक्षैपाखिनाईहै॥ कावरोतेमभगोवोकिरवावरीहैं
पं.२कुंडि.॥

रा.म. जोबनको मदमातो गिनतन कोऊना तो
कामबस कामिनी के हाथन बिकानो है
ग्रतिही भयो बिहाल सूझत न माथे काल
सेदर कहत ऐसे बारको दिवानो है ॥
राग मधु ताल चार ॥ फेटोघन फेटोया
म फेटोकुल फेटोकाम फेटोदेह फेटो

नाम धरिकैं बुलायो है ।। झूठो नात झूठी
मात झूठे सुत दारा भ्रात झूठो हित मा
न झूठो झूठे मन लायो है । झूठो लेन झू
ठो दैन झूठे सब बोले बैन झूठे झूठे ।
करे फेर झूठे ही कौं धायो है । झूठे ही
में रातो भयो झूठे ही में पचि गयो सुंदर

रा॰म॰ कहत मोच कबहेन प्रायोहै ।। राग मधु

माल चार ।। दीरघ पतर झूठे हाथी झूठे

घोरा झूठे आगें झूठा दोरा झूठा बेथ झू

ठा छोरा झूठा राज रानीहै । झूठीकाया

झूठीमाया झूठे झूठे घेघालाया झूठा

मृवा झूठाजाया झूठीयाकी बानीहै ।झू

50

50

ठा सेवै झूठा जागै झूठा झूठे झूठा भागै
झूठा पीछे झूठा आगै झूठे झूठी मानी
है। झूठा लीया झूठा दीया झूठा खाया
झूठा पीया झूठा सोदा झूठी कीया ऐसा
झूठा प्रानी है॥ राग मधु ताल चार॥ झू
ठसो बैठ्यो है लाल नाही नेत सतकाला

रा०म० काल विकराल व्याल सबही कौं खात है०

नदी का प्रवाह चल्यौ जात है समुद्र मो

हित मैं जग काल ही के भाव मैं समान

है। देह सौं ममत्व ताते काल कौ भय।

मानत है ज्ञान उपजे तें वह काल ऊबि

लात है। सुंदर कहत परब्रह्म है सदाय

बेद आदि अंत मध्य एक सो ठहरातै है।
राग मधु ताल चार इंदव छंद । कालउ
पावैत काल खबावत काल मिलावत
है गहि मांटी । काल हलावत काल।
चलावत काल सिखावत है सब ओटी·
काल बुलावत काल झुलावत काल

ग॰म॰

मलावत हे बनचारी। मेदर कालमिटे त

बही पुनि ब्रह्म विचार पढे नव पाठी॥

राग मधु ताल चार ईदब बछेद॥ बोलत

हो म कहो गयो पंखी बे श्रवना रमना॰

मखवेमही बेसे नामक बेमही ब्रेखी।

बेकर बेपरा बेमब द्वार म बेनाव सीमहें

रोम ग्रसे षी । वैसेंही देह परी पुनि रोमन

एक विनास वलागत षेषी । हेदर को-

उनजानमको यह बोलत हो हकहो ग

यो पेषी ॥ राग मधु माल चार ॥ बिलग

यो एक षिलसो ष्याली बोलत चोलत

पीवत षात ह सीचत हो तुमको जैसे ।

रा॰म॰

साली। लेतहू देतहू देखत रीझत ना रत
नान बनावत नाली। जामहि कर्म विक
र्म किये सबहूं यह देह परी सब खाली।
हेदर सो कहतहू नहि देखत खिलगयो
एक खिल सो ख्याली॥ राग मध नाल
वार॥ मातपिता जुवती सुतबंध बला

53

53

५३

गात है सबकौ अति प्यारी। लोक कुटंब स
गेहित गावत होइ नही हमतें कड़े न्या
री। देह सनेह तहो लगि जानहु बोलत
है सब शब्द उचारी। सुंदर चेतन शक्ति
गई जब बेग कहै घर मोहि निकारी ॥
राग मधु ताल चार। रूप भैलो जबही।

रा॰म॰ लगरही मन जो लगि बोलन चालन आगैं।
पीवन खान मने ग्रह देखत सोइ रहे उ
ठिकैं पुनि जागैं। मात पिता भैया मिलि
बैठन प्यार करै जबती गल लागैं। मदे
र चेतन शक्ति गई जब देखत नाहिं सबै
डर भागै॥ राग मधु ताल चार मनहरके

द। कौन भांति करतार कियौ है शरीर।
यह पावक के मध्य देखो पानी कौ ज
मावनौ। नासिका श्रवण नैन बदन र
सन बैन हाथ पांव अंग नख सिख कौ
बनावनौ। अजब अनूप रूप चमक द
मक ऊपर सुंदर सोभित अति अधिक

सहावनौ। जाही बिन चेतन शक्ति जब
लीन होइ नाहि बिन लगत सबन कौं
अभावनौ॥ राग मधु ताल चार॥ मत॰
का कौ पिंड होत नाहि मैं जगति भई॰
का नयन नाक श्रवण बनायेहै। सीस
हाथ पांव अरु अंजली विराज मान अंग

लीके नखेउ लगाये हैं। पेट पीठ छाती
कंठ चिबुक अधर गाल दसन रसन ब
हु वचन सुहाये हे। मेदरकरत नव चे
तन शक्ति गई बहे देह जारि बारि छार
करि आये हे॥ राग मधु ताल चार॥ देह
तो प्रगट नह ज्यौं की त्यौं ही देखि यत।

रा॰म॰ नैनके करोवि मोहि श्रोकनन देखिये।

नोकके करोविह मोहिनैकन सुवासले

त कानके करोवि मोहि स्रननन लेखि

ये। मुखके करोवि मैं वचन उचार होत

जीभहू को षट्‌रस स्वादन विसेखिये।

भेदर कहत कोउ कौन विधि जानेताहि

56

कारें पीरें काहू द्वार जातो हू न पेखिये ॥
गग मधु ताल चार ॥ माय तौ पुकारि ।
छाती कुट कुट रोवत है बाप हू कहत मे
रो नैदन कहां गयो । भैया हू कहत मे
री बोह प्राज उरि भई बहन कहत मेरो
वीर दुःखि है दयो । कामिनी कहत मेरो

रा॰म॰ सीस सिर ताज कहो उन ततकाल हाथ
मैं सीयो राहैलयो। सुंदर कहत नाहि।
कोउ नहि जोग मनिमके बोलतहै तोस
यह छिनमें कहोगयो॥ राग मधु ताल
चाल॥ रन ग्रह बीरन को प्रथम सेजो
ग भयो चेतनाशाकाति तब कौन विधि

ग्राई है। कोउ एक कहे बीज मधही कियो

प्रवेश किनहू तो पंचमास पीछें कें मना

ई है। देहको वियोग जब देखतही होइग

यो तब कोउ कहा कहां जाइकें समाई है।

पंडित रिषीश्वर तपीश्वर मनीश्वरहू भेद

र करत इह किनहू न पाई है॥ राग मध्

ग.म.

नाल चार॥ तबही लौं कृत सब होतहैं वि

विधभांति जब लगि घट माहि चेतन प्र

काशहै। देहके प्रमता भये क्रिया सबघ

कि जात जब लगि स्वास चलै तब लगि

प्रासहै। स्वासहू थकौहै जबपोवन लगै

हैं तब सब कोउ है परभयो घट नासहै।

58

58

५८

काहू नही देखो किंहि बेर कोन कहे।ग

यो सुंदर कहत यह बडोई इत मासहै ॥

राग मधु ताल चार ॥ देहतो स्वरूप जैोले

है अरूप माहि सब कोउ आदर करत स

नमानहै। ढेठी पाग बांधि बार बार हीमे

गेरी मोंछ बाह ऊस कोरे प्रति यरन गमा

रा॰म॰ नहै। देसदेसहीके लोग आइकैं हजूरहीं

हि वैठकै नवेन पैं काहाव सुलतानहै

सुंदर कहत जब चेतनशक्ति गई वहेदे

हताकि कोऊ मान तन आनहै॥ राग म

धु ताल चार इंदव छंद॥ त्वलाकोश्रेण॰

नैननि कि पलही पलमै छिन आय छरी

घटका ज्ञ गईहै। जामगयो ज्ञगजामग

यो पुनि सोक गई तव राति भईहै। भ्रा

जगई ग्रह कालहगई परसो तरसों कछू

ग्रौर ठईहै। सेंदर ग्रैसेही ग्राजगई त्ल ला

दिनही दिन होत नईहै॥ राग मधु माल

चार॥ कनही कनकौं विललात फिरै॰

रा॰म॰ मटजाचतहै जनही जनकौं। तनही तन
कौ ग्रति मोचकरै नराखात रहे ग्रनही ग्र
नकौं। मनही मनकी हल्मान मिटी पुनि
यावतहै यनही यनकौं। छिनही छिन
सुंदर ग्रायुघटी कबहू नगयो बनही।
बनकौं॥ रागमयु ताल चार॥ तेरीतो

60

भुवन कैतौं हूं मेगैगी॰ जौ दस बीस पचा॰
स भए सत हौंहि हजरन लाख मेगैगी।
कोटि अरब्ब खरब्ब असंख्य पृथ्वीपति होन
की चाह जगैगी। स्वर्ग पताल कौ राज॰
करौं तृस्ना अधिकी अति आगि लगैगी॰
सुंदर एक संतोष बिना सठ तेरी तो भूख

रा॰म॰ न क्यौं हूं भगीगी ॥ राग मधु ताल चार ॥

लाख करोर ग्रब्रनि नीलपद शतहो।

लाख खोटी। जोरही जोर भेडार भरे स

ब डोरही स जमीनतर डाटी। तो इन तो

हि संतोष भयो सउ संदर नै ल्टसा।

नहि काटी ॥ ❖ ॥ ❖

61

सकत नाहिन काल सदा सिर मारिहै या

य मिलाईहै माटी ॥ राग मधु ताल चार

भूवलिए दसंडे दिस दोरन नाहि तें नेक

बहेन पचेहै। भूष मेडार भरे नही केसे

उ जो धन भर कुबेर पैहै। ते सब आगे हि

हाथ पसारन नाही तें हाथ कछु नहि ये

रा॰म॰

है। सेदर कौन संतोष करै नर खात कि
खातही तो इक बिहै ॥ राग मधु तालष
भूखन चावत रंकहि राजहि भूखन चा
इकैं बिष बिगोइ। भूखन चावै इंद सुरा
सुर और अनेक जहां लगि जोइ। भूषन
चावै है अध अरु उरध तीनहु लोक गने

कहा कोइ। सेंदर जाई तहां दुखही दुख
ज्ञान बिना न कहूं सुख होइ।। राग मधु
ताल चार।। हे रसना अजहूं नहि धापी।
पेट पसार दियो जितही तित तें यह मु
ख कीनी एक पापी। वारन छोर कछू
नही आवत मैं बहु भांति भली विधि मो

रा॰म॰

पी। देखत देह भयो सब जीवन ते निनको
तन आहि अघापी। सेदर तोहि सदा सब
कवतहै ल्ला अनंदेनहो थापी॥ राग म
धु ताल तितारा॥ हे ल्ला अजंदेन अवा
नी। तीनडं लोक अहार कियो फिर सात
समुद्र पियो सब पानी। और जहा तहा।

ताकत डोलत काछत श्रीविंद्रावन गो
नी। दोत दिखावत जीब हलावत याही
तैं मैं यह डाइन जानी। सुंदर खात भए
कितने दिन हे लला कहैन सयानी॥
गग मधु ताल तिताग॥ हे लला कछु
हे बूझन नेरी। पाउं पताल पैरे गयो नि

रा॰स॰ कसी सीस गयो असमान अहेरो। हाथद
सों दिस कौं पसरे पुनि पट भरेन समुद
समेरो। तीनहूं लोक लिए सब भीतर।
ओविहूं कानबेधे चहूंफेरो। सेंदर देह
धरो प्रतिदीरघ हे लला कछु बूझन।
तेरो।। राग मधु ताल तितारा।। हे लला

64

राग विभास ताल ॥ षट्पदी । जागो जागो

हो गोपाल । इनिद्रस्याई । नाहिन प्रति सोईये

भयो प्रात परम सुचिकाल । इस्पेतरा । फिरिफि

रि जात निरखि मुख छिन छिन सब गोपन के

बाल । बिन बिकसि मन कमल कोंस तें ने मधु

करकी माल । जो तुम मोहि न पत्याउ सूर प्रभु से

वि॰ग॰
७६

76

दव स्यामसनमाल । मोउ हिये मागुन सब लोकि
ये नंजिनिश नयन विसाल ।। इतिश्रीओवाः ।।
रागा विभास ताल ।। अष्टपदी ।। जागिये ब्रजरा
ज कुंवर कमल कोस हले ।। इतिश्रुस्थाई ।। उग
दिशि मालि मञु विरही अंगलना हले । इस्येनरा
नम उवगवगो रसनियें बोलन बनराई । सोमन

गो मधुर नाद वछरा हित धाई। विधु मली नय वि

प्रकास गावति ब्रजनारी। सूर श्रीगोपाल उदैपा

रस मंगल कारी। इति प्रबोधः॥ राग विभा

स ताल ॥ पद॥ भयो पाछलो पहर। इति

प्रस्याई। कान्ह कान्ह कहि टेरन लागे बाबा ने

द महर। अंधनता। ब्रज महूरत भयो सोवे राम

वि·रा
८८

नलागीयेंन । उठेवलभद्र वद्धकर वाफी ललनगो
पन हरेवेंन । गोपवधू दधि मंथन लागी विश्रम
फन लागे वेद । परमानंद रामको ठाकुर गोक
लके उदवछेद । इतिग्रामभोगः ॥ रागविभास
ताल ॥ षट्पदी । प्रातसमै उठि सोवत नंद
कौ वदन उघारोनेद । इतिग्रस्थाई । शहिनमके

घृतिसे प्रफुलावैं नैननि ताके ८८ । इत्यंतरा । शुभ
सेज मधिपैं स्याव निकस्यो गए निसर मिरिमेद ।
मानहु पय निधि मथन फेन फटि दई है दिखाई चं
द । स्वनन चकोर स्वर उदिया ए सखी जन राखा
ह छेद दीन स्याँ मनीषथी रमन्न पिव्नन किरन
मकरंद । इति प्रभोगाः ॥ रागविभास ताल ।

बिं॰रा॰
७८

78

भोर भयो नंदलाल जसोदा जी बोलत जागो जागो मेरे
गिरिधर लाल। रतिप्रसाद आई। धनम जागिन सिं
आसन पर बैठे देखन कौं आई ब्रजबाल। इत पेरि
रा॥ जियरे जाउ सघेनी खैवन बजरको हरिको प
न बदन रसाल। हुय दही अरु मोदक मेवा भामि
नि भरि ल्याई है थाल। तब हरि हरषित गोद उठि

ध-३

हैहै करत कलेउ तिलकदै भाल । देवीरा आरती

वारतहै बनभंज गावत गीत रसाल । इतिश्रामोगः

रागविभास ताल । षट्पदी । आतसमै उठि व

लऊ नंदराइ वलराम हलसाव दैरिवये ॥ इति

शुस्याई । आनंदमैं दिन जाइ सखी री जनम सफ

ल करि लेरिवये । इतोजरा । प्रथम कालहरि आ

वि॰रा॰
७९

नंद कारी पाछे भवन काज कीजिये । राम कृस्न
कनि वनहिं जाइंगे चरण कमल रस लीजिये ॥
कोउक गोपिका ब्रजमें सयानी स्याम मह्मानम
सोई है जाने । परमानंद प्रभु जग्यप बाल नारायण
करि सोई माने ॥ इतिश्रीभैरव ॥ राग विभास
ताल ॥ षट्पदी ॥ शोभमान समें उठि आई क

मल नयन देखन नद्यारो सखि । इतिअस्थाई ॥
गोरस बेचन चली मधुपुरी लाभ होइ मारग पाउ
सखि । इत्यंतरा ॥ करत कलेउ श्याम मनोहर नै
ऊधिनै कीजे हमनन हाव । तुम सपनैं मोहि मि
लिकैं बिछुरे कासौं कहौं इह रजनी जनितउख
प्रीति जु एक लाल गिरिधर सौं इह मिस करि सब

वि॰रा
८.

वात जनाई । परमानंद दास वड़ नागरि ना
गर सौं मन सा ग्रह जाई ॥ इति श्री भोगः ॥
राग विभास ताल । षट्पदी ॥ गोवर्द्धन
गिरि सघन कंदरा रैन निवास कियो पीय
प्यारी । इति श्रीय्याई । उठि चले भोर सुरति
रसभीनें नंदनंदन वृषभान दुलारी । उनयेन

रा ॥ उत विगलित कचमाल मरगजी अटप

टे भूषण मरगजी सारी । इतहि प्रथम मसि पा

गरहीं धसि उहै दिसि छवि लागत प्रति भा

री । ह्यमन श्रावत रति रनन जीते करनी सेग

गज वर गिरि धारी । वनभेंजं दास निरखि

दंपत्त सोभा तन मन धन कीनों बलिहारी ॥

राग विभास ताल । षट्पदी ॥ राधेजूहा
स बलि हूटी । इतिप्रश्याई । उरज कमल
दल माल मरगजी वेस कपोल अलक लट
छूटी । इत्यंतरा । वर उर उरज करज कर
षे किन बाहू जुगल वलया वलि छूटी । के
शुकि चीर विविधरंग रंजित किंविधर अधर

माधुरी छूटी । आलस वलित नैन अनियारे

अरुण उनींदे रजनी छूटी । परमानंद प्रभु

सुरति समै रस मदन नृपति की सेना लूटी ॥

इति श्री भोगः ॥ राग विभास ताल । चट

पटी ॥ काहेकों उराव करति हेरी देखिये

फूल प्रकट होये । इति श्री स्याई । नेबरमध

वि॰रा॰
८२

पटिय सखिकमल आई मकरंद पियें । इनौ

नया । सिथिल अंगानि सिके जागे बिखुरी

अलक खोउलियें । जोवनके मद मानीगवा

लिन डगन चरण धरनी दियें । नूपुर अरसा

न कहानि मानौ रति केलि कियें । कृसदा

स स्वामिनी गिरि धरण रसिक रसियें ॥ इति

आभोगः ॥ राग विभास ताल । षट्पदी ।
आज कन्हु देखियत हेरत मरी काहेन सभा
रति छूटेई अलक । रति अरस्याई । अधर निरे
रंग केत्र की बेद दूटे नयन राते आई आयेई ति
लक । इत्यंतरा ॥ मरकत खंभ बाहु नेद नेद
न मिलि रही री हेम मलक । रतिर नरस जीमो

83

काम क्रत पतिनारी तैं तैरे फूल किलक। कु
सदास स्वामी को प्यारी लीन्ही तैं सुरति रति हि
दोले फुलक। मोहन लाल गोवर्द्धन धारी व
दन कोटि चंद मलक ॥ इति श्राभोग: ॥
राग विभास ताल षट्पदी ॥ आइ नैं ति
लक मिटायें। इति प्रस्थाई। रति रन गोपाल

संग नाख मरलाये । इत्येतरा ॥ कपोलन पर
पीक लागी नैनकषाए हरिसौं मिलि मदन
जीत्यो दाउ उपाए । कृष्णदास प्रभुसौं मिलि नि
सान बजाए । ऐसीको निमिषनते गिरिधर
पाए ॥ इतिश्राभोगः ॥ राग विभास ताल
घट्पदी ॥ कंचुकीके बंदन तरकि तरकि टूटे

बि॰रा॰
८४

देखन मदन मोहन घनस्यामहिं ॥ इत्यस्थाई ॥
काहेकों डरात करति हेरी नागरि उमगात उर
जडरत नकौं या महिं । इत्यंतरा । कछु मम का
नट सम छवि सुंदर हसत कपोल लोल भ्रूमा
महिं । रवि ससि जुगल परे रचि फंदन श्रवणा
नि पालक ना टंकके नामहिं । वदन कमल प

र अलक मधुप वर विजन नैंन लेना विश्रामहिं ।

हनि कमलदाम रसिक गिरिधर रंग रंगिन हमवि

लजावति कामेहिं ॥ इति विश्रामोगः ॥ रागविभास

ताल षट्पदी ॥ कहीनपरे नेरे वदनकी ओप

इति अस्थाई ॥ जलकनि नवमोतिनहि लजाव

ति निरावत ससि सोभा भई लोप । इत्यंतरा । प

वि-रा.
८५

85

त्मन लागति बाइनि पिय नैन उन्नत भौंह चढा
टौंप । चपल कटाक्ष ऊसम सरतानति फ्रत ध
यर कछु प्रेम प्रकोंप । प्रान सबै आपस्याम म
नोहर तुमही लडावत अपनी चोंप । कृष्ण दास
प्रभु गोवर्द्धन धर अति नागर बरपरे वेष गोंप ॥
इति श्री भोगः ॥ राग विभास ताल षट्पदी ।

राधारंग भरि नहि बोलति । इति अस्थाई । मो
हन मदन गोपाल लालसौं अपनौं जोवन मो
लति । इत्यंतरा । चाहति मिलन प्राण प्यारे
कौं मेरोई मनट कटोलति । छाडहि बडन
वावरी भामिनि कहत हमसौं जक झोलति
प्रातहोत लग्यो खानि सजनी अवहीं नम तुरवो

कि॰रा॰
८६

86

लति । कमलदाम प्रभ गिरिधर पिय छिन सारंग
नैन सलोलति । इति श्रीआभोगः ॥ राग विभास
तालजप । षट्पदी ॥ श्याम सिंधु अंग चंदना
दि गंध हजिन पट पीट मदन ललजवन सोभ
गत रंगिमा । इति श्रुवपाई । जवनी सरिता श्र
नेग संमिलित शोभासि मंत गंगा गरिह भाव

भाव सिंधु में गिमा । इत्येनरा । वदन कमल
अलक मधुप नैन खंजरीट वीव अद्भुत तिल
कु सुमनाकभो हेंगिमा । श्रवण श्रुति विमो
हन चल कुंडल लता टेक गंड मंडिन मकरकनिस
पर रंग रंगिमा । नख सिख भूषण अमोल
मन हर नाटक सबोल वैजयंती भूषित ग्रीव

वि· रा·
८७

87

रउतेगिमा । कृष्णदास प्रभु गिरिधर रवैतना
या राधा वरवेष गान तान शब्द रंग रंगिमा
राग विभास ताल छट्पदी ॥ तेरेवभा
वते गोपाल प्यारी बोलत वन । इतिग्रस्यार्ई
चलहि मिलहिन राधिका नवसत साजें सिं
गारतन । इन्यनरा । नवदेही विद्युत लता

नैद सुबन सावलघन । सोइहि किन केटला

गिरति विलास उलसित मन । नवति कंज

कुजन कल वेणुजवनि नापहरान । कुसलरा

स प्रभनट वर मोइन गिरि राज धरन ॥ इति

आभोगः ॥ राग विभास ताल छटपली ॥

गोपाले देखहि किन आईरी । इति प्रस्थाई ॥

वि॰ग॰
८८

आज़ बने गोविंद नव कमल नयन तोकों सैं ले
न पठाई री । इति पनत्रा । नरनि नरनया भुलिन
विम शरद निसि जुन्हाई री । राका पति कर दे
जित डुमलत नाभीमि सुहाई री । गोवर्द्धन धर
न लाल गान सों बुलाई री । कृष्णदास प्रभु को
मिलन जुवतिनि न्हाव दाई री ॥ इति श्रीभोगः

ष॰ १३

राग विभास ताल षट्पदी ॥ सुंदर नंदनंद

न जोइ हो पाउं । इति ग्रस्थाई ॥ प्रेम सेवा लागि म

दन मनोहर या जाउं कौं रे सनि कारे दिवाउं ॥

इन्यनरा । म्रग मद अगरु कपूर कुम कुमो मि

ले धरग नादेह चपकाउं । विविध सुगंध सुमन

वै सुनु सखि सघन निकुंज में सेज बिछाउं ॥

वि॰रा॰
८९

8?

राग रागिणी उरप स्तलप सब तान नरेंगकै मध्य

रे ह्रिगाऊं । ह्रूसदास प्रभ्म गोवर्द्धन धर रसिक

शिरो मणि ह्रविरिपि रिझाऊं ॥ इतिश्रस्याई ॥

राग विभास ताल ॥ षट्पदी । जिहिं वेद

पिउवे गिमिले करहि किन सोई वंद । विरहणी

रत्नरद्भर सिक संदरि संदर गोविंद । इन्पंनग

नें ब्रज सरकी कुमदिनी हरि वृंदावन कौं चंद-
वचन किरनि बिगत श्रमदन पीवहिं करति घट
स्वछंद । नेंकरिनी वर ललना नेंद स्ववन मद
गयंद । कृस्नदास प्रभु गिरिधर रतिरस खेलत आने
कंद ॥ इति आभोग: ॥ राग विभास जतिताल
ल घटपदी ॥ हरिमोहनकी मोहन बातक-

वि॰प॰
९.

१०

इतिश्रीस्याई ॥ मोहन रूप मनोहर मूरति मो
हन मोही ब्रजवानक । इंमनता । मोहन बरह
वेद सिर भूषण मोहन नैन सलोल । मोहन
तिल भौंह मन मोहन मोहन चारु कपोल ।
मोहन श्रवण मनोहर कुंडल मधु मृदु मोहन
बोल । कुंभनदास प्रभु गिरिधरन मनोहर न

खेसिले श्रम कपोल ॥ राग विभास ना:
षट्पदी । रंगीले नैनों नागरे हो कब देखों गि
रि धरन । रतिश्रम्याई । यावट ह्याव हंदर ब
र त्रिविध तापहरन । रंपनरा । श्यामखेन
प्रतिपारे भाव विविध वरन । मीन कमल
खंजन अलि मगराज भए मारन । श्रीराधा व

वि.रा.
५१

सलंपट ऊव सरोज वरन । गाइक हूमदा
स स्नेन मरलि तान फरन ॥ इति आभोगः
राग विभास ताल षट्पदी । इह मनकै
सैंकै रहत रहत राख्यौ । इति अस्थाई ॥
जिहि मधु वन छांड गिरिधर पियको वद
न कमल रसचाख्यौ । इत अंतरा । जकछु

कर्म कीन्ही पर वस होइ मानेही मनसा ख्यो-

वार वार वहु विधि समझायो ऊंचो नीचो भा

ख्यो । के इन मंत्रनि महा हठीली करी न

म्हारी श्राख्यो । कहै हुलसदास कहां लौं वर

नैं पंच चोर मिलि काख्यो ॥ ३ निग्राभोगः

राग विभास ताल षट्पदी ॥ पकाव

वि॰ रा॰
५२

92

जूर जेउ बदरी फल लेहोका छिनिदेरी

हार। इनिग्रस्याई। बालक जूथ सेगा

वल मोहन चौंकै करत विहार। इत्यंत

रा। सेदर कर जननीकैंनो दीयो धाये

नवहेंौकुमार। हीरारत्न आएरिन भा

जन ऐसे परम उदार। उदर भ्रेजालिल

गायकोन खोनवले मीठे परम रसाल ॥
जूठी गुठिली मारत गोविंदको हंसत हंसा
वत ग्वाल ॥ रागविभास ताल घट्प
दी । प्रातसमें उठि जसुमति जननी गिरि
धर सुतकों उवटि न्हवावति । इति प्रष्या
ई । करि सिंगार वसन भूषण सजि फूल

वि॰गी॰
५३

93

नर विरचि पाग बनावति । इसेंगनरा । छूटे
वेद कागो अति सोभित विच विच चोवा घर
गजालावति । हृषन लाल फुंदना सोभित
आजकी छवि कछु कहतन आवति ॥ वि
विधि कुसुमकी माला उरधरि औकर मुर
ली बैंनग हावति । ले दर्पण देखे श्रीमुख

B. 18

को गोविंद प्रभु सरणन सिर नावति ॥
रागविभास ताल षट्पदी ॥ सखिया सिं
गार निरखि मोहनकौं ले दर्पण पियकरहिं
दिखावे । इतिचमुस्याई । आपुननैं ऊनि हारि
ये बलि जाउं आजुकौ छविकछु कहत न
आवे । इत्यंतरा । भूषन बसन रहे ठोर ठोर

कि.रा.
५८

९४

फबि अंग अंग अदभुत चित हिडरावै । मैं
म मैंमत पुलकित नव सुंदर फूलन रचि रचि
पाग बनावै । अंचल फेरि करनमों झावरन
न मन अति अभिलाष बढावै । बल्लभज
प्रभु गिरिधरकौ रूप सुधा पिवत नैन पुट
त्रिपतन पावै ॥ राग विभास ताल ॥

घट्पटी। आजुको सिंगार सुभग सांवरे गो

पालको कहतन बनि आवे देखेही बनिआवे॰

रतिअुसाई। भूषण सबभांति भांति अंग अं

ग अद्भुत कांति लटपटी सुदेस पाग चितकों

चुरावे। अंजन। मकरकुंडल तिलक भा।

लकस्तूरी अतिरसाल चितवनि लोचन वि

वि॰रा॰
९५

माल कोटि कामल जावे । कंठ सरी वन माल
फैंटा कटि कोरनकौं निरषि त्रिभुवन त्रियको
धीरज मन न आवे । मेरे संग चलि निहारि कु
ज मह्ल वैठे हरि हिनकी विन वात कहुंजो
नेरे जियभावे । वनभंज प्रभ गिरि वर धर
कोटि मदन म्हरनि वड भागि वनाहि दीनो

जोजानहील पटावे । तात विमास ताल ।
षट्पदी । कमल नैंन श्याम सुंदर निरिके
जाकेसे श्रालसभरे । इतिश्रस्याई । करनाव
डर राजत मानौं श्रईम सिथरे । इस्यंनरा । ल
ट पटी सिरपा मानौ छिसत बदन निलकट
रे । मदग जीउर कुसम माल भूषण श्रेग श्रे

कपरै । मूरति रंगाउम गिरद्दै रौंम पलकि होत
रवै । परमानंद रसिक राय जाही के भाग नाही
के फरै । राग विभास ताल । सांवरे भलेहो
रति नागर । अबकैं उरायें कौं बडवनहो प्रीति
जभई उजागर । अधर काजर नैंन रंग मयो रवेक
पोलनि पीक । उर नख रेख प्रकट देखियतहैं

परी मदनकी लीक । पलटि परे पट तिलक ग
ये मिटि जहां तहां केकन गाडे । परमानंद स्वा
मि मधुकर गति भली आपनी चाडे ॥ राग वि
भास ताल । आज सगरी निसा कहां जागे
लाल करोज सोंची सुभग सांवरे माथे । लोच
मेंचन शब्द आगमपति रटत रटत रह्यो मोहन म

वि॰रा॰
५०

र प्रकट भयो आयो। कमल विकसित भए व
क्रवाकी हर्षीस नविहल किन मदित निज
पति आयो। विश्वमोहन वदन निरखिन भ
ये हिमास राण लज्जित भयो प्रेम रंग वायो॥
ललित सुंदर राग वर्वरी ताल परिमेष्ठप गाव
त सज्जन पिक निकर सायो। कहैं हृस दासगो

छ॰ २२

वर्द्धन उद्धरण धीर पिय सुंदरी कृपण घनलाधो

राग विभास ताल । भली कीनी लाल गि

रिधर मोर श्राप बोल सोवे । जुवति वल्लव विर

प करियत मोही सें सबह सुविध बोवे । ताही

पैज सिथा रिवे पिय जाही केतम रंग रावे । इ

हा लौकिक हिं मिलापटये मानऊ मेंजो मनेकावे

वि॰रा॰
९८

अथ स्तवन स्वामस्थिर नहीं निसि त्रिया रति वे
यपाहे। सनहिं किन कुमदाम नागरि ज्यों न
वपत्यों ही नाचे ॥ राग विभास ताल । प्र

थिक नीके लागत रंग भरे लाल आधी आधी
वतियां कहत मेरी प्यारी। सो मोहन निसिजा
गेने नारत नारी। मवराज्यों स्याम नद तिलक

माथे पर कंचुक जेभान अ्यरमसिकारे। श्रम

जलकरा कपोल मंडल वर सिंदूर रेग राते भोंर

अनियारे। अभरन वसन पलटि पहिरे अंगान्

पुर क्लाान वरन सोहें भारे। सुनि कृष्णदास

रसिक गिरिधर पीय पाग्हीं नेक करहुन न्यारे।

रागविभास लाल ।सुंदर लाल गोवर्धन

वि॰ग॰
५९

थारी कहो बसमें नवसे मेरे लाल । बालमन
थन चल बोलन छुटे बेद रुग मगनिचाल ॥
सारंग अधर रुचिर वचन विलत ऊच प्रसंगउ
र विललित माल । करि रथहीन मीन पनि
जीत्यो चली धनुष मानों भौंह विसाल । नहीं
सन भाय कहति प्रीतमसो फिरतहो पान पान

डाल डाल । दास मुरारि प्रीति औरनि सो देखति
प्रकट तुम्हारे हाल ॥ राग बिभास ताल ॥
प्रियबिन जागत रैनि गई । औधि बदिह्ग पन आप
बड़ी बेर भई । कछु कहत करत कछु कौन है
सीख दई । सांझ नहीं एको प्रेम कहा रीति लई॰
कैसें कीजे बिसास भ्रम पड़ो बिहई । रसिक प्रीत

म रावरीहैं छिन छिन राति नई ॥ राग विभास

ताल । मैं जानि पिय बातन ह्यारी । भोर भये

मेरे गृह आये ऐसी भोर भारी । झों आये साव पर

मन मेरो हृदै टरत नहि प्यारी । कपट वचन ई ह

विकरै नह अपजस लेन रूसारी । कहां सांच मैं बो

वत कारनै झूठे कहा फबावत । सूर श्याम नागर

नागरि वहुतम नइारे मन आवन ॥ राग विभास ताल । वरन नन उनवने सानि सजनी रंग म गो वेष्ठ वेनों गोपालकौ । रसना जो होहि लाव कोटिक रूप गोवर्द्धन धारी लालकौ । स्यामथों म कमनीय वरन सवि मानो तरुणा यन नक नमालकौ । ज्ञवनीलता मान अरुझोनी पीनक

वि॰ रा॰
१०१

(10)

रन मथु मधुप मालकौ । नवे सिव मदन कोटि
लाबन काविभूषन वनसन नैन बिसालकौ ॥
कमलदाम प्रभ स्तन सध्या निधिनाव हरननिय
बिरहज्वालकौ ॥ राग बिभास ताल ॥ बिर
हैचुड़ छुहानी चंदकी जोति परानी रजनी बिहा
नी प्राची पियरी प्रवानकी । नारिका डरानी

नमस्तोतम त्रुटबोले ष्ववगा भनक परीरा
वा ललितके गेनकी । स्नेग मिले भारजा वि
कुरिजीरीकोक मिले उसरी पतिका अवकोम
केकमानकी । अथबन आये सरद वडुरिडवन
मोन उठे स्रागा नाथ महे जोंनन भणि जोनकी ·
वजनावचाइहै करनव गावलोग बारवार कह

वि॰ रा॰
१०८

102

नि करनि डरनि बरनि परनि पग श्रोनकी । स्हर
दास प्रभु नेदस्वन सिथाते धोम स्नन्त उदेखु
वि कृपाल कृपाके निधानकी ॥ राग विभास
माल । कोउ मैया नेर वैचन आई । स्हननदि
हेर नेदरावरमैं भीतर भवन बुलाई । स्हक
न धोनपरे आंगनमैं कर अंजली बनाई । कुम

क हुमक बलन अपनैं रंग गोपी जनबलिजाई

लिये उठाय रिझाय करि गोपी म्रब हूं बनन

अन्हाई । परमानंद स्वामी आनंदे बहुत ढेर जब

पाई ॥ राग बिभास ताल ॥ झोनकिला पि

रहीसी माई । जब तहमैं नै दपिले निकसे नब

में बांह गहरी माई । हे सिदीनें मेरो स्वाल विन

कि·रा·
१८२

103

यो मोटीसी थानकसीरी माई । दधिगज्जरही ठेटक
सो लागो चरिगाई प्रीति सहेली माई । बैठो नैं ऊ
जाउं वलिहारी लाउं और दहीरी माई । परमानंद
सयानी ग्वालिन सर्वस देनि वहीरी माई ॥
राग विभास ताल । आज प्रभात लता मंदि
रमैं सुख बरषत अति निरखि जुगल वर भोर

स्याम अभिराम रसभरे लटकि लटकि पग धरत ध
वनिधर । उर अंकम भरें जित माला दलि सरन नीर
श्रीस्याम धाम पर । पिया प्रेम के अंक अलेकत किति
त वनन शिरोमनि निजकर । दंपति अति अनुराग
मोदित कल गौन करत मनहरन परसपर । हित ह
रिवंस अंस पराइन गाइन अलि हरदेन हरवतर ।

कि·रा
१०४

104

रागविभासताल ॥ जोईजोई प्यारो करै सोइ सोइ मो
हि भावे । भावे मोहि जोई सोइ सोइ करै प्यारो । मोकें
तो भावती ठौर प्यारेके नैननिमें प्यारो भयो चाहे मे
रैं नैननिकों तारो ॥ मेरै तन मन प्रान हूंतैं प्रीतमपी
य अपनै कोटिक प्रान प्रीतमसो मेंहारो । छितह
रि वंस हंस हंसिनी सांमल गौर कहो कौन करे जल

नरेंगा निम्यारो ॥ रागविभास ताल ॥ आज तो
सबनी नेरो बदन आनंद भयो पियके संगमके स
बन सातबैंन । आलस बलित बोल स्वेंग रंगे कपो
ल विथ किन अरुणा उनींदे दोऊनैंन । ललित
लसेकी रत अस्रमकेस सिरसीमंत भूमित सोंनैं
सेन । करुणा कर उदार राखेन करुन सारद सन

वि॰रा॰
१०५
105

बसन लागत जब दैन कारे की उदत मीर पलटे पीत
म चीर तुम कीये श्याम सखी शल मैन । गलित उर
सि माल सिथल किंकिनी जाल हित हरि वेसल ना
दह मैन ॥ राग विभास ताल । यात समैं उठि
हरि नाम लीजे गोविंद नाम ली आनंदमों सुब बेमें
दिन जाय । चक्रपाणि करुणा मयके सो विघ न

विनामन जसो रामाय। कलिमल हरन तरन भव
सागर भक्त चिंतामणि कामधेनु। एसो सिरन ना
म कमलको वेदनीक पावन पदरेनु। शिव विरंचि
इंद्रादि देवता मुनि जन करत नामकी आस भक्तव
त्सल एसो नाम कलप द्रुम वरदायक परमा नंद दा
स॥ राग विभास ताल । नैनामेरे घुंघट मेने समा

वि॰रा॰
१०६

106

न। सुंदर वदन नंद नंदनको निरखि निरखिन अ
घात। अनि रस लब्ध मद्या मधु लंपट जानत न प
कोवात। कहा कहौं दरसन सुखमातैं श्रोटभये
अकुलात। वार वार वरजन हौं हारीन उठेवनहिं
जात। सूरदासिक गिरिधर विन देखे अलपक
लप सतजात॥ राग विभास ताल । अेविय

ख ३१

नवहैटैवपरी । कहा करौं वारिजमुख उपर ला
गतज्यौं भंवरी । विन वनि रहति चकोर चंदलौं
नहिं विसरति पकहरी । जद्यपि हटकि हटकि
हौं राखति त्यौं त्यौं होति खरी । तुमि जवरहीनाह
पजलद मैं प्रेमपपी हकभरी । सूरदास गिरिधर
नन परसत लूटत निसि सगरी । राग बिभास

वि॰ रा॰
१०
107

गयेते अलि रंग भरी । मेरे जान मिलि मोहन सों ये
बल पीक धरी । छूटी लट रहीं नकबे सरि मोतिन
की डुलरी । मैं जान्यौं नैं फौज मदन की छूटिल
ई गदरी । अरुण नैन सरद सरद निसि कासन
कुसुम गलित कबरी । सूरदास प्रभु नागर के
सेज स्रवत समुद नरी ॥ राग विभास ताल

स्याम स्याम सेज उठि बैठे परस परस दोउ करत
सिंगार । उरबसी बाकी मोतिन माला उन पह
रो ताको नव सर हार । पैंच संवारे वृषभान ने
दिनी अलक संवारन नेंद कुमार । हँसि हँसि का
य करत दोऊ बातै बदन निहारत बारं बार । ल
टपटी पाग मरगजी माला कहीं न जात सोभा स

वि॰ग॰
९८

108

विस्तार । श्रीभटके प्रभु जुगलकी हलनीमैरे ओना
न करत विहार ॥ राग विभास माल ॥ चले
उठि कुंज भवन तैं भोर । उगा मयान लटकनि लर
छूटी परहैं पीत पटोर । अरुन नैंन आलस जुत घू
मत छवि विथुरि पैंद चकोर । गिरि गिरि परत ग
लित कुसुमा बलि सिथल सीस कचडोर । लप

दिन बसन बसन मनि भूषन कुंडल सोलह कोर ।
परमानंद मिली मिरियरसौं रससागर जकजोर
रागा बिभास लाल ॥ ललामिनि मेरी बोह
गहो ॥ मारगमैंलोग देखे हरि ठाढेरहो ॥ म
नमैंहै कौन बातमाई कौन कहो छीनो कहा
देन ऐसीमैं जलाजलहो ॥ कहैंगीजाइ साथ

वि·रा·
१९

108

ज्ञमें गाटरीकतहौं । कैमेंरम प्रावें जाहिं पनि घट
पमहौं । तमहिनो कछु नहीं विचार लरकाई ब
सहौं । रसिक प्रीतमछोटि देऊ रेमतहूं सबसौं
इति ग्रामभोग: ॥

रागविभास ताल ॥ध्रुवपदी॥ प्रातभयो कृ
ष्ण राजीव लोचन। इततितुम्हआई। संगसखा ठा
ढेगो मोचन। इन्संतरा। विकसत कमल रटत
अलि सैनी। उठोहो गोपाल गुरु नेरी वेनी। खी
र खांड स्वत भोजन कीजे। सहद्रूध धोरी कोपी
जे। स्वनहित जानि जगावै नंदरानी। परमानंद

बि॰ ग॰
११०

110

प्रेम सब सुख दानी । इति आभोगः ॥ राग बि
भास ताल ॥ ध्रुपद ॥ लाले लोहिन जगाइ
सकति सखिन सवान सजनी । इति अस्थाई । उघ
नैं जान अजहूं कान्ह मानत सुख रजनी । इति अं
तरा । जब जब हौं निकट जाउं रहत लागि लोभा-
ननकी सुधि बिसरि गई देखत सब सोभा । बब

ननको जिय वञ्जन करत सोचन जिय नाफी । नैं
नन नैन विचार परयो निरख्ख हाथि वाफी । रहि
रिथि वद नारविंद जस मति जिय भावे । सुरदा
स सुखकी रास कहत वदन आवे ॥ इति श्री सो
वा ॥ राग विभास ताल ॥ ध्रुपदी ॥
जागो कमल जसोदा जू वोले इह औसर कोऊ सोवे

वि॰स॰
१११

हो । सनिसुखदाई । गावति यश गोपाल ग्वालिनी
हरषित रहो तिलोटेहो । इंद्यंनरा । गोदोहन
धुनि हुरिसि रहो दत्न गोपी दीप संजो वेहो । हरभी
हे कटब्ब र धाज्जागे अनिमष मारग ज्यो वेहो ॥
वेन मधुरधुनि मङ्ग वरठाजन वैनगाहे करसे ली
हो । अपनी गाय सब ग्वाल डहगरैं नन्हरी गाय

ग्रकीलीहो । जाके कमल जगतकी जीवनि ग्रहण

मैन सुखेलो हेहो । गोविंद प्रभु जाउ हनहैं योरी

ब्रज मेंण वधु मनमोहे हेहो । इतिश्राभोगः ॥

राग विभास ताल । अष्टपदी ॥ उठिगोपा

ल सये छाननेहु मात्रेहेहो । इतिझुस्थाई । पा

छेंगरह काज करौं नितनेम मेरो ॥ स्थंपम ॥

बिहिन निसा प्रकटाहि सा प्रकट भयो भोन । कम
ल देखे मधुमंगल जागिये भगवान । देहीजन
द्वार ठाढे करत है केवार । मधुबैन गोनकरत
लीला अवतार । परमानंद स्वामी दयाल जगत
मंगल रूप । वेदपुराण गावत है महिमा अनूप
इतिप्रभोता: ॥ राग विभास ताल ॥ अष्टपदी

प्राजुपपामा जके नैनन के वानैं हनिरी सखीमोपें

बरनीन जाई । छविछ्याई । सुधा किरन विच

जग सुषंजन कीये पान मानौं सेवल प्रचाई ।

सुधेनसा ॥ भ्रेवन राग रंगीले रसमसे कहाकहुं

सुंदरी सुंदरताई । मकरंद बिंदुम कमलकौ ।

सुमैंले मावक कीरत्व बनाई । गुलस निरखे वा

113

हरत विवरही विच कछुक विक मित जब लेति जे भाई । मन मथ जय करि हरिजी ननकों दयो बा नअग्र थनष बफाई । देखि लाल लोचन विष कित भई अति परम चतुरता सब विसराई । सूर श्याम रसरी फिर रहे नहीं नमहम मर चरि कौन बडाई । इतिश्रीभोगः ॥ राग विभास ताल ॥

ग्रष्टपदी ॥ वनी पियराधा मोयोकेलि । इतिरा

स्याई । प्रातसमै सगविन वनि कुंजमै वढी परम

रसवेलि । ध्रुवपदम् । पियको मुरली अपनै अध

र धरिलीनी गावन वेलि । मोहन रीझि बिब स

कै दीनी गाहार वहु मेलि । निरषि कमल मुख

कहत भले जुभले सकल कला प्रवेलि । ऐसोक

वि॰रा॰
११४

114

वहइन मोएँ बाजी कहँ केद मजाउर मेलि।
ललिता निरखैन लाओ औ वइ्दरायो सव
सागर केलि। भाग सहाग कहहन नहि्
वे वओ मन आनंद लेलि। इति प्राभात:
राग विभास ताल । अष्टपदी ॥ करौ
कलेऊ वलराम कृसनचम कहति जसोदा

मैया। इतिअस्थाई। पाछैं बछ ग्वाल संग
लैकैं बलदू चरावन गैया। इत्यंतरा। पाय
मसिना हूत खरभिनको हेत करि भोजन
कीजे। जग जीवन ब्रज राज लाडिले जन
नीकौं छाक दीजैं। सीस मुकुट कटिक
छिका छिनी पीत बसन तन धारें। लेइ

वि॰रा॰
११५

115

कुल अरु मुरली कर मोहन मन मथ दर्पनि
वारे । मृग मद तिलक श्रवण कुंडल मणि
कौस्तुभ कंठ बनावो । परमानंद दासको
ठाकुर व्रज जन मोद बढायो । इति श्री भोग:
राग विभास ताल । अष्टपदी । प्रावन व
नै सुंदर नंद नंदन लट पटी पाग उगामबाति

प्र॰ ६

बाल । इतिग्रस्याई । ग्रहणा कपोल ग्रथरम
सिकारे ठपल नयन ग्रसरीपे लाल । इत्यंन
गा ।। रति जय लेत्र लिखिव उरपट नव जी
यो मदन गोपाल वन ग्रलिमाल । नजिन
स कन मौर भरम लेपट जव कंजम रंजिन
वनमाल । पलटिपरे पट कहज कहाने सि

थिल गेथि कटि किंकिणी जाल । छूटे वेद
स्वेद कणिका तनकाइकौ लजात विरहीर
ग्रसाल । कुसुम दाम ग्रभ किन वडरनहो स्ट
गमद तिलक मरग जोहै भाल मोहन लाल
गोवर्द्धन धारी प्रकट भयो पिय स्वजस विसा
ल । इतिसंभोगः ॥ राग विभास ताल

अहरनी। अरुण उदय सुरत केलि रतलालनी
की वनी नवनि कुंजनै आवनी। इति अष्टपाई।
वनमाल रसमस मेरा अलि मेडली नासौंमिले
श्री मुख हिं मरम गावनी। इस्यनरा॥ चरणन्
अर दौनि कटि क्षुद्र घंटिका मधुर सुरे विनती
ल पट पर सुहावनी। रग मगी ओढनी साण

वि॰ दा॰
११८
११७

प्यारीकी सरन अभि रामनन देह बिसरावनी ॥
कोमजय पचरस उरसि कोमिनि लिख्यो नव
श्रेक पंगि रसिकनि हृदय भावनी । सिथिल
अलका वली गालिन वरहा पीड अहण लोचन
भौंह मन्मथन चावनी । श्रमस्वेद कण गातला
लगिनि यरणाके निसिकथा सुमिरि मन रुचि

र म्हसकावनी । मदनरसरहसि गाइक कल

दास कह्रो आपूने पीन पट दिये पहरावनी ॥

राग विभास ताल अष्टपदी । चेद्रावलिये

म श्याम भोर भयें आये । इतिअष्टपाई । अतिरि

स करि रहो वांमेरैनि जागि कारि जोम देखे

जो हार कान्हहठफे सावदाये । इत्पीनवा । मेरि

वि॰रा॰
११८

118

रंनै रहीनि हारि मनहीं मन देति गारि ऐसे कपटी
कठोर आये निसि बीतैं । रिसनहीं सकी समझा
रि बैठि चाहि द्वार बारि ठाढे गिरिधारी निरखि
छवि नारि सिर ढीतैं । बिनगुण बनि हृदय
मालना बिचनारि कुनर भाल लोचन दोउ दरसि
लाल जैसी छवि बाढी । जावक रंग लग्यो भा

ल चंदन भुज पर बिसाल पीक पलक अधर जल

क कोम पीत गाफी । क्यों आये कौन काज ना

ना करि अंग साज उलटे भूषण सिंगारि निरख

न हो जानें । नाही के जाहु श्याम जाके निसि बसे

धाम मेरे घर कहो कोंम सूरदास गानें ॥ इति

आभोगः ॥ राग बिभासताल । अष्टपदी

काहेनसेइये गोकुल नायक । इतिप्रश्नस्थाई ।। भ
क्तनिकौ ठाकुर भगवान सकल सुखनिकै दा
यक । इत्युत्तर । ब्रह्मा महादेव इंद्रादिक जाके
आज्ञाकारी । सुरतरु कामधेनु चिंतामणि व
रुण कुबेर भंडारी । ऐसैं नृपति कहा सब मा
नैं मनभाव विनती कीजे । राम प्रभु श्रेनरजा

मी व्यापक इनिय माहि कोंदीजै । जनम कर्म
औतार रूप गुण नारदादि गण गावै । परमानं
द दास श्रीपति जस्र ग्रथम भले विसरावै ॥
इति श्रीभोगः ॥ राग विभास ताल ग्रष्ट
पदी ॥ बलिहारी पद कमल की जिन मह
धान लछण । ध्वज वज्रां कुस जवरेखाध्या

वि-रा
१२-
120

न करत विवहणा। इंस्यंतरा। नेविंतत चैना
पहरत सीतल सुखदायक। नखमणिकी
देहिका जोति उज्वल व्रजनायक। हेदाव
न गोसेया फिरत भूतल कृत पावन। गंगा
दिक तीरथ प्रसाद भक्तन मन भावन। भक्त
यंम कमला निवास माया गुण बादक। पर

मा नंदनैं धन्य जन्म जेम गुण अरायक ॥ इति

आभोगः ॥ राग विभास ताल ध्रुपदी-

माई हो आनंद गुण गाउं । इति अस्थाई । गोकु

ल की चिंता मणि माधो जो मांगे सो पाउं । इ

ंतरा । जबनैं कमल नयन ब्रज आए स

कल संपदा वाढी । नंदरायकें द्वारें देखो अ

वि॰रा॰
१२१

121

छमहा सिथिटाफी । फल्यो फल्यो सकल हेदा
वन कोसर्यैन डुरिलीजे । मंगे मेह देद विरषा
वे हमल कुप्ता हरख जीजे । कहति जसोदा स
रिवियन आगें हरि उतकरष जनावे । परमा
नेद दासकों टाकुर मरली मनो हर भावे ॥
इति श्रीभोगः ॥ राग विभास ताल ध्रुपदी

चलोरी मुरली सुनियें कान्ह बजाई जमुनातीर
हैति सुरत्याई। तजि लोक लाज कुलकी कांनि
गुरजनकीभीर। अंतरा। जमुना जलथ कि
नभयो बछान पीवे छीर। सुर विमानथकि
नभए थकिनको किल कीर। देहकी सुधि
बिसरिगई बिसर्यो तनकौ चीर। मान तान

वि॰रा॰
१२२

122

विसरिगए विसरह्यो वाल कवीर। मुरली धुनि
मधुर वाजे कैसे कैं धरे धीर। सूरदास मदन
मोहन जानतहो परपीर॥ इतिश्रस्थाई॥
राग विभास ताल ध्रुपदी॥ सांवरीयो
र खानद्रु पकवान। इतिश्रस्थाई॥ आजगोपा
ल हमारे आए उठन आनदी यान॥ इत्यंतरा

कहूंकैं नैन उनीदे मोहन अपनैं घरकौं जात·

आगैं हार नेदङ्गैं ढाछे जानैं गएन सकात·

लट परी पाग अटपटे भूषन आलसजुत जे

भान मानौं मार दंडले छांडे दे दे चुहटी गात

ऐसी भांत कहांडेतैं मोहन मैं हूकै मसि कान·

तातैं कछु उतर न हि आयो सूर स्याम सकुचान·

वि·गी·
१२३
123

रागविभास ताल अष्टपदी । गोविंद
दर्पिन विलोकनदेहि । अतिसुरस्याई । वा
रवार पाइपर निजसौंदा कान्ह कलेउलेहि·
इंधनरा । बांधि कटि पट न्हइ छेटिका म
दिन नेदन्हकी तांनी । कंचन वीरह्हारउर
मणि गण वलय घोष मडवांनी ।। पक

एकनहो देव दैत्य सब कमठ मंदराचल

जोनी ॥ देखत देव लछमीकेंपिजगव

ही गोपाल मथ्योनी ॥ कूर्मभेद ब्रजरा

ज रमापति भूतल भार उतारे ॥ परमानं

द दासकौ ठाकुर ब्रज बसि जगत उधारे ।

रागबिभास ताल ॥ अष्टपदी ॥

वि॰रा॰
१२४

124

भोरभयो जागो नंद नंद । इतिप्रसयाई । से
गसखो ठाढे जगवंद । इन्पतरा । सुरभिन
पय हित वछ पिवाए । पंछी जय दसो दिस
धाए । सुनि सरन कौन मजुर सुर हाकौ॰
सिथल धनुष रतिपति गहि डाको । निसि
निवटीर विरथ रविराजी । चंदमलीनचक

ईरति साजी। ऊमद निम ऊवीवारिज फले·
गंजत फिरत अलिगन झूले। दरसन देख मु
दित नरनारी। सूरदास प्रभ देव मुरारी ॥
राग बिभास ताल ॥ अष्टपदी। प्रातस
मै भयो सोवलिया हो जागो। हतिश्रयाई
नेद जसोदाके मन आनंद गाय उहरनकोभा

वि॰गी॰
१२५

125

जन मांगो। दधि पनरा। रवि के उदय कमल
प्रकासे। भ्रमर उदिबले नम सुरवासे। गो
पवधू दधि मेथन लागी। हरिजू की लीला
कौं रस पागी। विकसित कमल चलन अलि
सेनी। उठो गोपाल गढ़ नेरी वेनी। परमा
नंद दास मन भायो। चरण कमल रज दोखन

आयो । राग विभास ताल अष्टपदी ॥
सुंदर सांवरे मुरली अधर धरी । इनि ब्रजस्यामि
सुनि सिद्ध समाधि टरी । सुन्यं नर गा ध्रुव ॥
सुनि थके व्योम विमान । सुरवधू चित्र स
मान । ग्रह नक्षत्र तज नत रास । वाहन बं
धे धुनि पास । सुनि आनंद उमगि भरे ॥

कि॰रा
१२६

128

बलयके प्रबल दरै । बल प्रबल गनि विप
रीत । सुनि वेग्र कल पद गीत । करनाऊ
रे पाखान । कंदर्प मोहे गान । सुनि खेग स
ग मोन थरी । फल त्रिणाक्ष की सुधि बिस
री । सुनि येन म्रगाय किरहे । त्रिणादंत
हनहि गहे । बछरा न पीवे छीर । पंछीम

नौं मनि धीर । द्रुमवेली चपलभई । नव अंकु

र प्रकट नई । नहीं विटप चंचल पात । हरिनि

कटकौं अकुलात । अंकुरिन पलकिन गात । प्र

नगागैं न भुवात । मनि चंचल पवन थ्यको ।

सविता जल वलिन मको । मनि थ्यको मंद स

मीर । उलमो जजमना नीर । मनि प्रमिवली

वि॰ गा॰
१२८

127

ब्रज नारि । सतदेह बिसारि । मन मोहन रूपथ
रयो । नव कामकौं गर्व हरयो । नव नील नन
घन श्याम । नव पीत पट अभि राम । नव मुक
ट नव बन दाम । पला वण्य कोटिक काम ॥
मन मोह्यो मदन गोपाल । नन सोमल नैन
बिसाल । श्री मदन मोहन लाल । संग नावारी

नवबाल । नव कुंजजमुनाकूल । देखत सुर
नरसहिं फूल । राग विभास ताल ध्रुपदी
गोकुल गाउं रसीलो पियकों । इतिअस्थाई ॥
मोहन देखि मिटत दुख जियकों । अंतरा ।
मोर मुकुट कुंडल बनमाला । या छबि सों ठाढे
नंदलाला । कर मुरली पीतांबर सोहे । देखत

वि॰ सं॰
१२८

128

रति पति को मन मोहे बाल देखत रति पति
को मन मोहे चक्रित सी डोलत फिरे । और क
छुन सहायननको देढि उठत गिरत फिरे ।
मोहि मदन बान समान लागे पीर नै ऊन आ
वैही । और कछु उपाय नाही श्याम देखु ला
वैही । मैंनो तजी लाज गुर जनकी । सबमो

रि साथिन परैया ननकी। लोक कहे इह भई
मति बोरी। सुनपति छाडि फिरत बन दोरी-
वाल। छाडि सथिन संभारन नकी कम छवि
रिपटे बसी। मदन मोहन देखिभावे विहंसि के
जनमैं पसी। कुंज धाम किसोर टाढेके सर
खोरि वनाइकै। चंद्रिका पर वारि डारौं वलि

कि॰ग॰ गईया भाइकैं । भारपरो इहब्रजबासा । नि
१२५
129
न उदिकौन करे यह त्रास । इन नैंननि बांध्यो
प्रण भारी । निरखत रहत सदा गिरिधारी ।
वाल निरखिवो करे श्याम सुंदर मुहस कन
क प्रकासरी । कालिंदीके तीरठाढ़ो स्रव
ण सुनियें बांसुरी । मदन मूरति श्यामदे

स्र ३॰

खेन मरी मनकी आसरी । सब हरिकों सुज
स गावन सदा चरणनि बासरी । बागा विभा
स नाल गजरी गजरी ससि वदनी से
हरी जोबन वाली । सिर कनक मटु किया
गोरस देवन वाली । छंद चली हथि वेचन
किसोरी कुंवरी है गज गामिनी । नवसिख

वि॰ रा॰
१५

रूप अनूप सुंदरि दसन जनि मानो दामिनी ।
स्यामा पियारी कल उज्यारी विमलकीरति कु
जरी । जोबन वाली सरस सुंदरि चंद वदनी वृ
जरी । वृंदावन भीतर स्याम मनो हरलेयेरी । हौं
है से जानन देहौं लेहौं दाननि वेरी । छंद ॥
लैहौं दान नि वेरि अपनौं करौं नंद उझाइयो ॥

जानि चोरी दैंदि निन प्रति आज्ज पकरन पाइयो ।
बोलि ग्वाल लटाय दैहौं दधि करो जो भावै मना॰
घेरी मनोहर स्याम सुंदर ग्वालिनी हेदा बना ।
छाडहु मेरो अंचरा हठ जिनि करहु गोपाला ।
सुंदर मन मोहन प्यारे श्रवार होत नंद लाला ।
केद । नंद लाल हीन श्रवार प्रति छिन मखन व

वि॰ रा॰
१३१

(3)

नैमें अनिडसौं । मेरे संगाकी सब वैवि बनादीक
हा ऊमर घरकौं । कब कब नह्मागो दान ला
गे वादि ऊगारो दानऊ । बलि जाउ मानोंकशो
मेरो लाल छेबरा छाउऊ । अति बनर वालि
नि अंतर नेह बढायो । स्याम मनोहर जियको
प्यारो पायो । छंद । पायो मनोहर स्याम सुंदर

सरन साव मोनो रली । नव नेह अति रस रंग

वाढ्यो दोन देउ दि घर चली । कहत श्री हरि दा

स नागर कामिनी गुण सागरी । जिनि रसिक

श्री हरि राय मोहे अधिक चातुर नागरी ॥ राग

विभास ताल । अनिही अरुन हरि नैन नि

हारे । मानऊं रतिसों भए रगमगे करत केलि

वि॰ प॰
१३२

132

पिय पलक बिसारे । मंद मंद डोलत संकित कै
सोभित मध्यम हारन नारे । मानहुँ उकसि कम
ल संपुट में उड़िन सकत चंचल अलि बारे । हि
लि मिलि नन गानैं निज नावन रति रसि उगात
भुमत अलियारे । मनहुं सकल जुवा जीतिक
रनकैं कांम बान खर सार संवारे । अट पटा

न घर मात जुगल घटकङे चूमत कङे करत

उचारे । मनङे मन मरकत मनि अंगन रेल

न खंजरीट चट कारे । बार बार सब लोकिक

रीवियन कपट नेह मन हरत हमारे । सूरदास

म देखन मत पावत उराव मोचन नरत नारे ॥

राग बिभास ताल ॥ जो लौं हरि आपुनपो

न जनावै । तो लौं सब सिद्धांत स्रुति ज्ञान पढै सु
नैं तैन थावै । सुनि विरंचि नारायण पैं नारद सौं
कहि दीनौं । नारद कहे वेदव्यास सौं भागवत कौ
ज्ञान कीनौं । वेदव्यास ग्रंथकी नाई पढि मन
नाथन साध्यौं । तिनपै सुनि शुकदेव परीक्षित राजा
केज सुनायौं । जद्यपि नृपति सुनी व्रज लीला

दसम कह्यो श्रुकदेवा । सर्वात्मा भावन उपज्यो
तातें करीन सेवा । श्रीभागवत प्रगट दसमधि
कें श्रीवल्लभ सर्वोत्तम । करिश्रावण हरि व्रजज
नकी हाय दिये प्रगटोत्तम । सिज्या प्रगट सिंगार
भोगराग श्रीवल्लभ प्रकटायो । करि कृपा आप
नैं जीवन पर जगत जीवन स्वाद चखायो ।।

वि॰गा॰
१३४

134

अथश्रीजमुनाजीकेपद । रागविभास ताल

जेजमुना गोपालहिं भावे । जमुना जमुना ना

म उचारे यमराज ताकी न चलावे । जेजमुना

को जानि महातम जेजमुनाजल पानकरे । जे

जमुना अवगाहे निसदिन वितगम लेखोन

परे । पद्मपुराण कथा यह पावन परनी म

प्र॰ ३५
पृ॰ ३३

रवि वराह कही । तीरथ महातम जानि जगत

गुरु शुद्ध प्रसाद परमानंद लही ॥ राग विभास

ताल । दोऊ कूल रविभ तरंग सिढी मानों स्री

जमुना जगत बैकुंठ निसैनि । अति पवन कूल

कलोलनके भर लिये जात हरिके चरणन ल्यावैं

नी । जनम जनमके दुकृत हरके नीकाटन कर

मधरमधार पैनी । क्रीत स्वामि मिदि यरन पि
यारी सेवल गान कमल दल मैनी । गागा विभा
समाल । निरखनही मन अति आनंद भयो
आनही देखि प्रभाकर कम्या । जलपर सतही
सकल अघ भाजे ज्यौं हरि देखि हरिनको सम्या
और जीवकौ औरनकी गति मेरी गति स्यामम

हीअनेन्या । व्रजपतिकी नम अतिही पियारी न

म सेगामतें सुरसुरी धन्या ॥ राग विभास ना-

मैरे जल कमे कलि मुख नासन देखि प्रवाह प्रभा

कर कन्या । बहुदेखो पापजान जिन तिन बहेज्यौं

मृग राज देखि मृगासन्या । देपय फेन पुजलौं पौ

घन जननी कृतार्थ धन्य बहे धन्या । दियो वाहि

वि·गा
१३६
136

गदाधरजूपै चरण शरण अति प्रीति अनन्या ॥

अथ श्रीगंगाजीके पद । राग विभास माल ॥

आगें आगें रथ भगीरथ जूकौ चल्यो जात पाछैं प

छैं आवति तेरे गंगवेग भरि वेग । जल मलान अति

उज्जल जलकि जोति अव निरखति मानों सीसम

रे मोती मेग । जाऊपर मेरे भूपक चकेभ समसहप

ठौर ठौर जागि उठे होत सलिल संग । नंददास मा
नौ अग्निके नेत्र छूटे पैसे सुरशर चले परे देव अंग
रागविभास ताल चर्चरी । जै भगीरथ नंदनि
मुनि चय चकोर चंदनि नरनाग विबुध बंदनि जै
जन्हु बालिका । विस्नु पद सरोज जासि ईस सीस
पर विभासि त्रिपथ गाथ आप पाथ पापक्षालि

वि.प.
१२८
137

का। विमल विपुल बहसि वारि सितल त्रैताप हा
रि भँवर बर बिभंगतर तरंग मालिका। निजज
न पूजोपहार सोभित ससि धवल धार भंजन भ
व भार भक्ति कल्पथालिका। निजतट बासि बि
हंग जल थर चर पसु पतंग कीट जटिल ताप
स सरिस पालिका। तुलसी तव तीर तीर

हमिरन रत्न वंस बीर विचरति मनि मेरु गेरु म
हिप कालिका । राग विभाग नाल । श्री गं
गा जयानारनकौ आई । भगीरथ तपेश्या कीनी
शिवले सीस चढाई । पापिउह प्रजा मिल गा
गाका पतित परम गति पाई । परम पुनीत
प्रीति ब्रह्मादिक वेद आगम मिलि गाई । नाम

लेतनतुध्यान धरनहैं लागन वारन लाई । विश्र गदा
धर भारद्वाज कुल केवल गंगा सहाई ॥ रागविभा
सताल । जो जन गंगा गंगा कहे । जनम जनम
के कोटि दुरूतन सब छिन हौ गंजि दहे । स्नाक
करनतैं मनवांछित तक्षन लरतलहे । ब्रजपति
की प्यारी संगमतैं बहु सावदेव वहे ॥ रागविभा

सुनाल ॥ श्रीवल्लभ गुण गान । प्रात समै श्री
वल्लभ सुतन कौं श्रीविट्ठल प्रभु कौं उठत हीं सुमना
लीजिये नांम । आनंदकारी मंगलकारी असुभ
हरन जन हरन कांम । इह लोक परलोक के बंधू
को कहि सकत निहारे गुण ग्राम । नंददास प्र
भु रसिक सिरोमणि राजकरौ श्रीगोकुल सुखधाम ·

वि॰रा
१३५

139

राग विभास ताल । प्रातसमै श्रीवल्लभसु

तकौ प्रात पवित्र विमल जस गाउं । सेदरस

भग वदन गिरिधरकौ निरखि निरखि दृग

हगन सिराउं । मोहन मधुर वचन श्रीमुखके

श्रवण सुनि सुनि हृदेवसाउं । तन मन प्राण

निवेदि वेद विधि यह सुभजन पोहो सफल क

गाउं । रहौं सदा चरणनके आगें महाप्रसाद उ
छिष्टपाउं । नंददास यह मांगत हैं श्रीवल्लभ
कुलको दास कहाउं ॥ राग विभास ताल ।
प्रात समै श्रीमहाव देवनकौ सेवक जन ठाढे
सबद्वार । जै जै जै श्री वल्लभ नंदन दासन दी
जे धामउदार । सुंदर श्याम सुभगात्म सीलोमे

वि॰ग॰
१५॰
140

च गंभीर मधुर गिरि धार । नैनन निरखत होत
परम सुखबरण मनोप वचन सुफार । श्रवण
मंगल जग भवन मंगल रस छक्योनम लीला श्र
वनार । जन भगवान जाय बलिहारी अवणी
न लीला महिमा नहि पार ॥ राग विभास ता
आनसमै उठिकै जो सदा श्रीवल्लभ नंदनके गु

गावैये । फिरि कर जोरि हरि चिंतन करीउन
ही के चरणन सिरनैये । सब साधनन को सारउ
ई घर बार बार समझैये । कहैं हरि दास मान
सिख मेरी श्री विठल नाथ के दास कहैये ॥
राग विभास ताल ॥ प्रातसमै उठिकें जो
सदा श्री वल्लभ नंदनके गुणगावै । श्री गिरि

141

यरु गोविंदजू कौ नाम ले श्रीबालकृष्णजू कौं सी
स नवाउं। श्रीगोकुलनाथजू कौं प्रणाम करि
रघुनाथजू देखि नैन सिराउं। श्रीजदुनाथजू
सेवा खेलन घन श्यामजू इनकी प्रीतिसौं कहा
सिराउं। यहु अवतार भक्त हितकारन जो गाउं
ते परम पद पाउं। विनति करि कवि मांगत ब

जपति निसदिन इनके दास कहाउं । रागबिश्राम

नाल । शानसुमें हमिरो श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठलना

थ परम हितकारी । भवदुख जान भजन सुखप

देन कलि मल हरन प्रताप महारी । श्रणछोडि

शरण नही कवहूं वांह गहेकी लाज विचारी ॥

श्रोन आशो छाडि भजो पद हरिकेश प्रभुकीव

वि॰रा॰
१४२

142

लिहारी । राग विभास ताल । प्रात समैं श्रीवल्ल
भ सुतकौ परम पुनित विमल जस गाऊं । श्रेउज
वदन सुभग नैंना श्रुति श्रवणनले हिरदे बैठाऊं ।
जवजन निकट बहुत वरण तरफ़नि फ़नि निर
रिव निरखि सुवे पाउं । विस्नुदास प्रभुकरो कृपा
मोहि श्रीवल्लभनंदन दास कहाऊं । राग विभास

नाल । विसद सुजस श्रीवल्लभ सुतको गान उट
न गुन दिन नवगाऊं । कलिमल हरण चित्त पवि
त्रांहूं उपजे परम सुख दुःख बहाऊं । भक्त भेवन्
और भक्ति रस जानैं मानैं मनसौं तिन हूंकों ध्याऊं-
छीत स्वामी गिरिधारीके सुमिरन ग्रह महासि
धि नव निधि पाऊं । राग विभास नाल । श्री

वि॰ग॰
१४३

143

लक्ष्मन सुत कमल प्रफुलित प्रकटे श्रीवल्लभ

कुलको दिनेस । आनंदे तिहुं पुरके सब जन श्रा

नंदे शिव सनक सुरेस । श्रीभागवत विस्तार

करनको निजजन सबको प्रति सुखदेन । ज

गति लोक जाऊं बलिहारी श्रीवल्लभ पद श्रीमुख

निरखत नैन । रागविभास ताल । गायोन

गोपाल मन लायो नरसाल लीला सुनिन सुवो
थ निज साथ संग पायो है । सेयो नम वादकरि
वरि प्रथम तिहारी कबहूंन हरिनाम रसना कहा
यो है । वल्लभ श्री विठ्ठलेश प्रभु की सरण आय
दीन ह्वै के मूढ छिन सीस नन नायो है । रसिक
कहाय प्रबला जक्कन आवे नोहि मन तुम शरीर

वि॰रा॰
१७४

144

यरि कह्यायौं कमायो है ॥ राग विभास ताल
गायो न गोपाल मन लायके निवारि लाज पायो न
प्रसाद साधु मंडली न जायकैं । धायो न यम कि है
दा विष्णु के जन मैं रह्यो न शरण जाइ विठले
श गायकैं । नाथ जन देखि छक्यो छिन हूं छवि
ली छवि सिर पोरि पक्यो नाही सी सहून वाइकैं ।

ग्र॰ ३४

कहैं हरिदास मोहि लाज हूं न आवे सिय जनम गं
वायो न कमायो कछु आइकैं । राग विभास ता॰
रूप रस माधुरी भयो मतो नो पिय सुख देवै प्रभा
न भान कछुक कूर तिरी । अरसात गात औ जे भा
न मिले जाल हरा उर भुज यी का छवि रस उभरानि
री । केरल कपोल अधर अरुन रहे लसि अंग अंग

वि॰रा॰
१४५
145

रंगसों नरंग नाहरनिरी। प्यारे लाल वल्लभरसि
क परनन मनहरि फि हिरि थरिवयांमों छ्वावरि
करनिरी ॥ रागविभास ताल ॥ भोरहीश्री
वल्लभ वल्लभ कहिये। आनंद परमानंद श्रीकृ
ष्ण स्वरूप श्रमिरे थ्रह सिंधि पइये। और स्वामिरो
श्रीविट्ठल विट्ठल श्रीगिरिधर गोविंद द्विजवर

रूप । श्रीबालकृष्ण गोकुलपति रघुपति जदुपति
नवघनस्यामस्वरूप । पाछैं सभार श्रीवल्लभवच
नामृत जपौ अष्टाक्षर मंत्र करि नैम । अरु श्रवण
कीर्तन तजि निसदिन रहौ स्वबोधनी परि जिय
प्रेम । और सेवा सदानंद जसोमति सुत प्रेमभक्ति
सहित जियजानि । अरु आप ब्रह्मसमर्पित लीनो

वि॰रा॰
१४६

146

अमद अलाप अमद संग होति । नैंनन निरखो
श्री कालिंदी श्रीर निरखो सरवद व्रज धांम । इह
संपति श्रीवल्लभनैंपैये हरीजन नहीं काहूसों कांम
रागविभास ताल । प्रातहिं लीजे श्रीवल्लभ
नांम । श्रीविठ्ठल श्रीगिरिधर गोविंद श्रीबाल
कृष्ण सुखधांम । श्रीगोकलना अनाथके तारन

श्री रघुनाथ पति हरन काम । विस्व दास सुमिरो
सुंदर घन स्याम ॥ राग विभास ताल । आनंम
मैं नंद नंदन स्यामा देखे मैं आवत कुंजगली । नव
घन स्याम तरुण दामिनि मिलि राजत रूप अनूप
भली । लटपटी पाग सीस कर मुरली लोचन हंस
नभंगि भली । सिथलीन चीर मरगजी अंगिया

वि॰स॰
२४०
147

कोंम कोंमिनि देखि क्ली आरजोंमनिसि जाग
न बीती उर उमग्यो अनुराग बली । कज्जल ग्रथ
र नैन बीरी रंग मदन न्रपनि कीव मंदली । सुर
बदन पंकज रमणी के अलक मधुपकि पांति ब
ली । प्रफुलित प्रीति परस्पर निरखति नरति उ
दै जैसे कमल कली ॥ राग विभास ताल ॥

३८

उनीदी आंखे रंग भरी इरतननहीं पट ओट। मीनाखे

जन मगहीन भण्हैं ओर कमल दल वारि डारौं लाख

कोट। फुरत मरत ऊपकत अनियारी चंचल कर

तिहैं चोट। चतर विहारि प्यारि की छवि निरख

न कोयत म्हाखकी पोट। राग विभास ताल ॥

पलक पकि ऊपकि आवत उनींदी मस्वियां भई।

बि॰ रा॰
१५८
148

ग्ररबराइ उठे पट पलटि पगे पग पाटन कौं न दई ॥
नैंक करैं बिश्राम बाम बोलि पमें रही धाम सौं करौं
टहल जो तुम सौंहे चोप नई । सकुचो जिनि सांची
मानिये बजर बिहारी गिरिधारी पिय जे नई रिझ
वारि रिझई ॥ रागविभास ताल ॥ सपनैं हू न
बिछुरिये हो हरि सौं मन यौं बाकै । श्याम सुंदर

ग्र ३५

बहु नायक सुख दायक सब छिनकौं मोहि कबहूं
न छुट्टेरी श्राछें । नंद नंदनजू घनतरस कीनैं कों
म जरावनरी मोति माल हूजे नाछें । नेन सैन घभ
के विछुरें जरद भई मोहि रहो रनश्रावेरी जो कोऊ
पाछें ॥ रागविभासताल ॥ श्रान समैं उठि
श्रागेहे मेरे नंद नंदन श्रालस भरे नीके । पीककपो

कि॰रा॰
१४९

149

ल अधरमसि मोहत विन गुण माल विराजत री के।
पागलट पटी भाल महावर पगनपर सेतभ का इती
के। छीन स्वास गिर परत भले नस और विरा
जत वेदन री के ॥ राग विभास ताल । भोरभ
ये नवकुंज सदनतें आवत लाल गोवर्द्धन धारी।
लटपटी पाग मरगजी माला सिथिल अंग डगम

ग गति न्यारी । बिन गुण माल बिराजत उर पर खे

लत देत चंद अनहारी । छीतस्वामि जब गिरिन पेसो

नन नवहैं निरखि गई बलिहारी ॥ राग बिभास

ताल । भोर भये आये मेरे लाल. आज कहो निसि

बसे नेदसुत । कहा कहौं अंग अंगकी सोभा पीक

कपोल नैन आलस जुत । कहानि होरत हौ मोको

वि-रा
१५०
150

श्रव जिनि परसो मोहि चले जाउ ज्ञन । जानिवानति
होरे मनकी छिन स्वामि गिरिधरन वठे भ्रन । राग

विभास ताल । पैंजनी एकर मैंनरही हूरी उपक
र सुनियेयन वैंन व्रजराज व्रजनारीके । सांझही नें
सो पैंकि घोविसमे समझो एकहै काल दासको राजा
नै चरित्र विहारीके । करनके मनोरथ करनकरन

चारु चरणके संगी रंगी श्रुति सुकुमारीके । जानयेन दे
इ सारा पजनमह मुखरहै मावरहै मंदकारे नूपुरणा
रीके । सोथलेत ननदजे ठानी देवरानी मिलि सोइ
वेके मिसन उमासलेत सासहै । काल रामकोउ
रूपरेख देख पावनन यौंरी उनमानी कामकेलकौ
विलासहै । आली वनमाली पैरे एकदिन देखे वि

वि॰ प॰
१५१
(८)

न कियो जातन कासों उपहासमैंहै । इनोमेंरावरसिक

शयादि कोपढ़ै विरहै नारिस ऊमार जोवयारसंगा

दासहै । स्वामीकी करुणाहै सववनाव नन जाईजाके

ली नरवहाई भांतभांतके वडनहै । कालदास ला

ये श्रम पौनके झकोरनतें आपत्त हूं औरनतें व्यापई

नउनहै । जगत जलधि मध्य जेउ दीप रवी विधि

हीय सम काशीनाके गुन श्रदभूतनहै । पंचकोस भ

रजाकों कोस भरभर सब जीवनकों भुजहोत पल

में मुकतहै ॥ राग विभास ताल । छूमेकरकम

ल पश्रमल सन्दुपारे हूपके विधाननेक मोननति

ह्रावदै । कहै काल दास मेरी पास हेमिहेर श्रीपरि

माथे मकुट लकुटगहि डारिदै । ॐवर कन्हैया ख

वि॰ ग॰
१५२

152

ख चंद की जुन्हयानेक मेरी श्रोर लोचन चकोरन वि
चारिदै । मेर करमेंहदी लगीहै नंदलाल मेरी लट
छुटकी है नेक वेसमर सुधारदै ॥ राग विभास ना-
प्यारी नव भूमता में रूपभार सागर है जोवन गंभीर
मुख सोभा को धरति है । दीपत तरंग नैन वारिज
से सोभित है उरगामी वेनी छिय देखत डरत है । कैसे

ग्र ४३

काल दास गाल गाउन स व र मध्य लाल मना बाह
लागै दौर पसारत है । बेसर को मोति मानो करत है सि
केंदर को बार बार डोल मने सो करत है ॥ राग बिभा
स ताल । प्यारी चलो किन लालन पै परी लाल
न को मन लाय पसि रावन । लैकोरी है सैनो हमोहों
लाल की आई है कौं इनको कौं वे लावन । दुष्टिक

हो हरिहै जमुना नटकोहे कबै भई बेरमो सावन ॥
निकेहै श्याम कहै सहजा कवि पाई निकाई कहाम
न भावन । दोवा दसमै नैन एकादस मे ऊच प्यारी क
हां दसमै है दसमै है । नवमे दनै भूषण आटल सैन दि
सानकोऊ घटहै नमतै । मनि पंच सो मध्य कटिवि
नवाक जथा विन वारनथा बिनुतै थटिके रविति

नदेउ मति क्यो इकस्र रहि एकसी कै ह्वनै ॥ राग

विभास ताल । कोइला भई कोईल ऊरंग ननका

रे किये ऊट ऊटके हरी कले कले वड़दली । जव

जव जेहूनद ग्रथरंग विद्रुम भौहिया फाट दाडि

मलचाभे भेगावदली । पेसीवेद मविवेनै कलेको

कियोवंद ग्रवबोले व्रज वेदवैकिसोर आप अदली

वि॰ग॰
१५४
154

काश्मीर औरै गाज राजैं दुबार कौं पुंडरीक हूढ
यौं रीक सर खायो कदली । नवलन बौढा ऊहृ
औढनीन बोढ जानै पीय पास पौढवेकी सारक
हा जानतै हैं । मेरे लायवेकी लाजकीजे आजवल
जांव आनरनङजे रह अवकी अयानी है । ऊहर
मरीन कहा जाननी है मेरे लाल रसकी मरसकी मी

बानैकहै मानिहै । मैनासी पढाई जब पहर प्रभा

ई पवनीतमैं वढाई नवके है केहै मानिहै ॥ राग

विभास ताल । आजलौं प्रभुनी ब्राति काहके

नंदरा रानी जोबनके मदमाती मिटै मनरोनेकी

रवेजनसे नैनरानि हूनरी औबुरी रानी देरव देख

मजबानी बोलनाहिं मैनेकी । केतिक मनौ नी

मैं मानियइ वेद सविहै तो विन चोर ने दलाल वडे
भौनेकी । झूठ नाहि बोलत जड नायकी सो वार
वार याको टगलाई है बियाही विन गौनेकी ॥ से
दी सी जौं करि मेरी सी अंगरिवन जौंनै विलोकही जो
करि गाफो । आपरी आय तिनै कौन देखियहै चि
न चोर तिनै लहै टाको । ब्रह्म भनै माई कान्हके

भौंव चर बाहर वैरीको वारिद काढो । यहै मनभावदेव
कहै डरबिहाई री लाज करौ औरं घूंघट काढो ॥ राग
विभास ताल । प्रिय सांझ समै हरि आवन जानि
सिंगार सवारि महा सुख पावै । अति आतुर दौ वार ध
दार विचार मनों भव चित्त मढै । मणि वेदी प्रकास प
भाकर नाय लखै बककान हिहो नज्जै । निसह दि

वि-रा
१५६

156

नको स्वरव पाप भले वकई इमि बाह्लनि वेंदउंदै ॥

राग विभास ताल ॥ विरह अनल वरी स्वरी प्र

म मंन लूरी वैटपटि पटि बिन हरि अकुलानि है ।

स्वय व्रय हरि जलकानलो कलाजटरी नाय बिन

यरी ग्रास अनि बिल लानहै । हरि वरि दीवव उस्रा

मलै उदासनवील गिढया मरि खेदकेपसभभानहै

नैन जल चलै परी पावस की झरी जैसे रैन भरी चरी

चलि जात दिन रात है ॥ राग विभास ताल ॥

रहवैं रुन हीं रुप देह नहीं नजिगेह वहीं नवही

अटकी । टकि एकनकै करिटेक विवेक ननेकल

जै हटकी छटकी । चढ़ि कैनकि कै छल नैछ

किकेध किनीय विनै रुप मानटकी । फटकी

वि·प्र
१५८

157

मननै जटकी तननै भटकी अलिक्यो लटकी अटकी
सुंदर सरोवर मैं बाके है कमल किधौं हल नरगिस
कैसे नए नए जानै है । हेरै मधुहके मीन देखतउ
रन जलकैधौं खेलै खंजन खरै सैन अनुगानै है ॥ कै
धौं मग नाह सबसीस नाइ नाइ रहे किधौं अलि
गंजमालके नकी सुमनै है । नायइगवाविरनिसे

र नीर सरिल सेवार समें फूलके सखायोहै । भरकुटी
भंवर पात मानों विनपात जानैनै उरतरंग आड अपि
क सोहायोहै । मीनसेन बीन नैन वाणसे करन फूल
नाकोकुक कुक आवे मिमल लखि पायोहै । ललि
ननिको किन बीच फरकत ऐसे मानों मन मथ घेर
जालमें बझायोहै । लागि मन मूढ और उड सी

लगीहै उर औरैकछु गई सुधरहीन सरीरहै । हैहैगयौ
मोहिसो नेह एकनवहैहै कोउ केतको कहैहै नसहैहै
लै लगीरहै । जाहि लागै चेत नाहि केतिक उपाव देत
याके लागे जिअन याते अधिक अधीरहै । परी मेरी
बीर मेरी छाती परपीर नवहो मिटैगी जौपै छाती
परपीरहै ॥ इतिआभोगः ॥

रागिनी भैरवी ताला ३ ।। दोहा । सुखदायोवा

रे म ध प नि प ध म ग रे

व ।। ब्रह्मण जोति सुभावते मेम मनु जग

सा म प ध म ग रे सा नि

माहि । कारण पाइ विकार भज पुनि नि

ध नि सा म ग रे सा नि प

जरूप समाहि । रूप जल ज्यों ले किसान स

नि सा रे ग रे सा म ग रे सा नि

मवें दिपतौ जगमाहि । वेदवेस रूपराज

प नि सा ग रे सा म प नि सा नि प ध

को हरि कियो पुनि ताहि । वेदवेस रूपरा

ग.३. ज हित उदम कीयो गुपाल। मारविरोधी।
थिर कीयो राज गुपाल दिखाई॥ रागनी
भैरवी ताल गीत ॥ सवैया॥ कपालन प्रभेज
न षोभ भयो सवलापति सिथु सभ मेल द
बाई। कृतकारय फेर गहे थिरता निज।
बेलि कि भीतरि आप दयाई। भगवंत के

प्रेम जप नरजे सभ भूतनके हित प्रेम बढा

ई। नर मंडल लै अवतार मही कृत कार-

य ते रस भांति लगाई। रागिनी भैरवी ता

ल २॥ सवैया ॥ भृगनंदन रामको भाम

नि पेष सवार हजवार इकी रुषपाप। नृ

प लोगनतनीर समास बसा बड पंक मई

ग.१. नटनी भटनाए। न्टपनारि कुमार सबडन

लो ककहण बिनुधार कुटार चलाए। धर

भार उतार उधार कुले न्टपमाति भए तप

माहि लगाए॥ दोहरा॥ परमराम जिम धा

हि यह कृत कारय गुपाल। पर परमसाति

निधि भजीर मेमे बडे रमाल। जीत विवेक

स मोहजौं बोध उदे जगकीन जीत करण

बलराज तिसकी रति बरमा दीन ॥ रागि

नी भैरवी ताल। ५ । सवैया॥ बीच किनात

किवात सनी स मनोज बलीयह कानन

माही कोप भरे मधु पद कही नट नीच

स बोलत यो मधमाही। जीवनही हमरे।

ग. ३. जगमै तम मोहकी हारकहे जनमाही। पा

पामिलूष विवेकरूको जडमूल उघार द।

यो भवमाही। ना. गी. सानिवान मिलूष उरयो मन

मै घुनि संभ्रम हेर सनारि बुलायो। रतके

ट भजा चन पीन ऊचा लहर मैगरोमेच ग्र

नेग सुहायो। जग मादन सोभ अपारवनी

२ध २सं २रे २ग २रे २सं २ग २रे २ध २नि २ध

मद घूमत नैन चले खलसाये खव भागव

२प म २ध २नि २ध २प म ग

ले इह डैर हते खनिकै मम बाके मनो।

म ग २रे २रे ग २म २प २ध २नि २ध २प म ग २रे २सं

खुनसाये। इमभाखतजी रंग भ्रमतिनो तव

२नि २ध २नि २सं २ग २रे २सं म २ध २नि ३सं

आइ मनोज प्रवेस कियो। खलिकै करनी

३रे ३ग २रे २सं २नि २ध २प २म २ग २रे २सं ग २रे

ल कपोल लटी रति केटविषे हसि हाथद

२सं २रे ग २म २प २ध २नि २ध २प २म २ग २रे

यो हग कंज चढाई उन्नाइ भजा रति नाथ

रा. ५. महा डर क्रोध छ्यो। भरना धमपाप मजीव

न मेरति नाहि विवेक कह्याभयो। तब लो

मन माहि विवेक रहे सम आगमत उपज

यो इह जोई जबलो नहि नील मरो रहम

हग नारि कटाष लगे मरकोई ॥ रागिनी

भैरवी ताल। ५। सवैया ॥ रूपजीत तजे न

वघेर मही घर नारि भजे कर जोर सदोई थो

ल जहाग्रहउव वने गज दंतन मेच समेज

मवागी माथ विराजत चंदकाला मम बारि

ज नैन सन्तन नारी भूषन चंपक हार

चवे तन चंदन ऊंजम गंथ उदारी चंद उदे

त मदर भप निस माहि धिरी समनोज की

रा. ध्रु. वारी हरह आयुध मोह जयेत सदा हन थावम

5

ले जग ग्राहि बली को इनहोवत कौन बि

वेक ग्रहे पुनि बोध उदे नहि होत कलीको

जन प्रौवनकी जग कौन कथा धृत संयम

जो जन जाइ गलीको हग केज फिराइ पि

घे जवती विन जौ नरफे जन मीन थलीको

दोहरा। सतगुरु सुमति बली भाषे मनी सु
नेक। महा मोह भूपाल को या जग सत्रु वि
वेक॥ रागिनी भैरवी ताल तीन॥ सवैया। नव
नारि सुभावतें मेंक भई ग्रत पषनते हम
नाहि डरे। पिष यदपि फूल सरासन ओस
र मै कर भीतर आप धरे। जन तदपि आहि।

गा॰ घ्र॰ सु मोहि उलेषि महूरति थीरज नाहि थरे स

6

नवाम उनू सर दैत सभै जग भीतर है बस

मोर करे। दोहरा। जानत कामन नारि क

कु मिंटी गिध बन माहि। मो सरवीत भ्रमा

यौ जगायो भूप गृह माहि। तोकी कथा से

तेपते कहो सनो मन लाई। वाम उनू सेमा

मिटै तोहि निषल उरजाई ॥ चौपई ॥ लोमपा
द इक भूपति भारा । जाको जस सभ भौन
मझारा । दशमथ को वह मीत कहीजे ।
जाको हर अंगराज कीजे । ताको देस स
वहु विस्थारा । बरषा होइ न ताहि मझा
रा । ताकी प्रजा दुषी सभ ऐसी । तपत स

ग॰ पु॰ लप जल मछली जैसी। विप्र जोतिकी भूप बुलाय। वर्षा होइ सु कौन उपाय। विप्रन बहु विध कीन विचार। भूपति को यह भाति उचार। सिंङी रिष बन भीतर जोई। आइ इहां तब बरषा होई। वह न्टपेषे महाम नि गयानी। आवे किह प्रकार रज थानी।

7

लेनन ताको कोई जाय। आप अगनिते सभ
उर पाय। तब तिन बार वधू सु बुलाई। दा
न मान कर पास बिठाई। सिंडी विषवन।
जाहि अगारा। तांको ल्यावो नगर मझारा
सुन कर वधू अकुलानी। आप अगनि ते
अति उर पानी। एक भूपति की आर सुजोई

रा॰प्र॰ मेटि सके न कदा चित सोई। तब तिन एक

उपाइ सचीनो। नौका बोध मयंडल कीनो।

तामे रंभा पुंज जराय लाइ करण पूर फल

लाय। कहूं जलवी कहूं प्रपणा। कहू सबे

दी रची प्रसूणा॥ दोहा॥ कुंत मवेलतनहिहै

रची फूल पात बहु माई। लाचीदाणे की त

रो रही सदा षबाराई ॥ चौपई ॥ या विद या
र सुदेर वाला । गई तहो जहि विपन विसा
ला । मुनि आश्रमते किं चित हूरा । नौकाथा
पी नीर गरूरा । षोडश बरषन की बड्डवाला
गई तहो जहि मुनि विसाला । लाडू करणा
एर फल जेते । पात पलास धरे सम तेते १२

रा॰ष्ठ॰ सिद्री रिष तहि नैन मिलाप। ध्यान निहम

ष वेद प्रलाप। पग नूपुर धुनि सुनी सजब

ही। नैन उघारे मुनवर तब ही। मुन वर।

जान वेयना धारी। अरज पाद हित ल्यायो।

वारी। गनिका तब सुष पड़ बषाने। हम।

रिष वर नहि बुहे सयाने। पापो नीहन।

चरन पधारे। हमरे तपवन फल मघडा-
रो करण एव अक लाडूधाप। सिंडी तिष
के मनि विग माप। धाइ जलेबी लाची दा
ने। अहो स्वाद मधो वषाने। मिल कर गा
निका गाइन करे। मनि वर जाने वेद उच
रे। हमरे मघ मनोज मकरंदा। वेद युनी

रा॰ प्र॰ उर जने अनेरा। पद क्रम जटा अपरब पारी

आप पढ़ाई जो सबचारी। ५७। इति भैरवी

रागिनी प्रबोध चंद्रोदय नाटक परिछेदः

10

ग्वालि कालकी ॥ रागिनी भैरवी ताल ॥
कवित्त । चंदन चढाइ चारु अंबर के उर हार ब
सन सिंगार सोहैं आनंदके कंदज्यौं । बीरा कोरि
रति नाथ तानामै बजाय गाथ म्याज मराल
साथ बानी जगबंदज्यौं । चौकि चौकि चकई सी
सौतिनिकी हनी चली सौतै भई दीन अरविंद इति

रा॰भै॰ मेदज्यौं । तिमर वियोग भूले लोचन चकोर फू
ले धाई वक्र चंद चेद्रावलि चलि वेदज्यौं ॥ रागि
नी भैरवी ताल । कवित । उरझत उरग
चपत फनि वदनन देषति विविध निसिवर दि
स धारके । गात तिन लगत मुसलधार हतति
न झिलीगन घोष निरघोष जलधारके ॥ जा

नलिन भूषण गिरन पट फाटनन कंटक छुटक

उरउरज उजारके । भ्रतनकी एछै नारि कौनपै

नै सीख्यौ यह जोग कोसौ सार [illegible] अभि सार

अभि सारके ॥ रागिनी भैरवी ताल । कवि

त । हरिसेहि नसौ भ्रम भूलिहून कीजे मनहो

तो करि हिय हूने होत हानीयै । लोकमै प्रलोक

हित

१३॥ आनि नीके हू को लागत हैं सीताज को हूत गीत
कैसे उर आनिये । आखिन जो देखियत सोई सो
वी केशोदास कानन की सुनी सोवी कवहू न
मानिये ॥ गोपाल की उलटाए यों ही उलटी
वनि है आज लौं तो वैसे ई है काल्हि कौन जा
निये ॥ इति रागिनी भैरवी कवित्ते शुभम्

य बिलाई। संकट में एक संकट उपजो ग्र
रज करे मृग नारी। नोचत कूदत चलिमें रग
नी उवरी शरन बिहारी। उरज्यो थनके मेवा
त्यागे मनकी प्रीत न जानि। मारा बिडर त्यार
भोजन पायो स्वाब मों रैन बिहानि। नरसी।
की हुंडी सकारी भात हार गर लाए। कांक

भै॰ ग॰ ताल बजावन लागे रथ बैठे हरि आप। गोत
५२
म ऋषिने श्राप दियो सतपनी सिला बनाई
गामवेद वरनन रजलागि सो बैकुंठ पठाई
पिया कुंदपरी मा गरमें दरसन दिए कन्हा
ई। छाप लगाय पठायो बाहर निरषत लो
ग लुगाई। कोप्यो इंद्र ब्रजके उपर बरषाकी

नी भारी। गोवर्द्धन करमें प्रभु धारे राखि गिरि
वर धारी। गेंद खिल मचायो मोहनले जमु
ना जी में डारी। कालीदह कूंदे नंदनंदन जा
य जगायो कारी। जिन जिन प्रान राहितें ता
रे नाम कहालौं बरनौं। विस्नदास स्वविज्यौं है
वाहे राम नामले प्रारनौं॥ रागिनी भैरवीताल

भै॰ गा॰ ५२

छपका तिनारा ॥ सभ घट व्यापक ऐसो राम।
भक्ति मोहे दीजिये। अज महेश वेद च्यारनाम
अनंतकों करे उचार नारद शारद शेषनाग
समरन निसदिन कीजिये। बालमीक और
वेदव्यास ध्रुव प्रहलाद बिभीषन दास शि
वरी केवट खग मैं बायस अपनो जन मोहे

16

कीजिये। पारासर पुंडरीक अंबरीषा शुकशौ
नकादि ब्रह्मादिक रिषा पांडवादि भीषम रंत
देवा जनक वशिष्ट सतानंद सेवा ऐसे ध्यान र
र पीजिए। गनका गीध अजामिल श्वपच कु
बज्याके। असदीनो रूपक सदन कसाई औ र
बदसोपाहन होये पसीजिए। नामदेव औ र

भै॰ रा॰ दास कबीरा रेका बेका बाईमीरो द्रोपदी गज

५४

ग्रौर बिदुर सुदामा ऐसो सु जसली जिए। गो

विंद परमाने छित स्वामी कुंभनदास नंददा

स हरि स्वामी। कृसनदास चतुर्भुज दासा ऐसे

रसमें भीजिए। सूरस्याम सूरप्रभु दासा न

रसी मायो वामदेवा सा चरनदास संतनको

सेवग सेवामें चित्त कीजिए। भक्त नाभा मनहै
भवसागरगावे गुदर चरनरज सूरदास गरीबी
तुलसी सूर गिनती कहां लग कीजिए॥२॥रा
गिनी भैरवी ताल तितारा। ३। गंगाजीका स्त
व॥ सगारज तारनी विश्वविलासनी भावनी
देव सुरेंद्र नूते। जल भव जन्म मरारि हरा

भै. रा. ५५

यित पाम सरोरुह हे मगते। कलिकृत कल
मघ नाशिनि तारिनी भक्त जनेष्ट दभावरते।
जय जय हरि मौलि विलासिनि पाई सधाम
ई हे मगते। हिमगिरि नेदिनी नेत्र कटाक्ष
दभंग सलिलित रोवभरे। जलमृत सुपवि
लासनी नीरज विधि कराकर वल गुपरे।

18

सितितल भूषण सागर वेशभागिरथ पवित्र॰

करे। भवभय भंजन दुष्ट निकंदन करुणा॰

भावघ्य भाव गुणे। मद रिपु शोखरि संदर वा

रिणि भव्य कपर्दिनि भावगुणे। शिशुधर घं

ड विदारिन केवल शिरोधर पासधरे। त्रिभ

वन मालनी मतमतेरा कुंभ मदाकुल भृंग

भै॰ गा॰ ५८

बेर। हरवपु गात्र विलेपन कुंकुम कर्दम शो
भित पिंगकवे। हेमगिरि कोन डहल विभू
षित शोभित नायक हार सुभेसित मकरस्थि
त पाद सरोरुह सौरभ षटपद मतन्हुते। क
रि मर कुचाग्र विराजत कंचुक विद्रुम वज्र
युते। सितमकर स्थितपाद रुह सौरभ षट

पद मन्न नुते। करिवर कुंभकुचाग्र विराजि
त कंचुक विद्रुम वज्र युते। भव जल डस्त
र मग्न जनार्चित पाप समूलक उद्धिकृते।
पतित महाज्वर डष्कर संचर तूल महानल
भावगते। अपि करुणा मई विश्व विलासिनि
सारद चेद्रकला भगते। विधिहरि रुद्रसर

भै·रा·

५०

वर किन्नर बाल सकुंकुम पादगते। नव जल

विभ्रिउरत्यय नाशिनि पातक नारिणी केली

रते। सुरवर लोक पवित्र विधायिनि हेमनग

प्रभ भेद प्रभ भेद नुते। जगदुत्ययः स्थिति·

संहृति कारिणी केलि कला भवताप हरे। सु

र हर विभ्रमसोद्भव पातक जाल विलासिनि

मूर्तिवरे। भवजनताप सदा गति पातक जाल
निवारणी शीलकरे। नवतट वसी विलासित
वामन जोगी जनार्पित नीरवरे। स्मर वर कामि
नी कुंकुम चंदन पुष्प फलार्चित नीरयरे।
कलिभव नाशिनी सेवक पोषिणि इष्ट जने।
पित भक्तिकरे। भवे महा वर्ते विषम विषये।

भै. गा.
५८

21

पन्नग गुणि प्रकीर्णितापानो ब्रतय जलथेोभा।

निविसिते। महामोहा धान्त विगत गमने पा

प जटिते महामाये गंगे चरणकमले देहि श

रणे। श्रुतौ श्रयोवच्या गुरुवचने वाचो मृतर

से। मद्रु पीत्वा गंगे परमपदयानाम लिखिते

श्रुवि प्रात माये यदि पठति नित्य नव नटे।

मधुछै रेकाछे सब बन विधिजैं यांति विलषे
रागिनी भैरवी ताल धीमा तिताला। ३। प्रथम
धारनी जै श्रीगंगा दरस परस प्रद्य हूरहोत
है सदा रहत शिवके सर सेरा। बामन च
रन परसके याप सगार वंश पावन भय से
ग। वल्लभ निहाल भए जबहीतैं छबिनिर

भै. रा. खेलत मन उठत तरंग ॥ रागिनी भैरवी ताल।

५४

२२

धीमा तिताला। ३। प्यारी मसकयात लियो म

न मोही। प्यारी आज जोही प्यारी तुमहारी

वोही। प्यारी छबि देखि चाकित भयो चंदा

तो पट तर नहीं है कोई। प्रान जीवन मुरारे

व म प्यारी पिय हिय तो गल माला पोई। प्रेम

कथा जानैं सोई वल्लभ जासर बीती होई ॥ रा

गिनी भैरवी ताल जलद तिताला ॥ ३ ॥ प्यारी

तेरे मनमैं क्या जो सोहाई । रति रति जोडी ब

होत दिनन तैं तोडत लाजन आई । तिरमो

ही हो रही बेदरदी यह सिखकों न सिखाई

तेरे जियकी तू जानैं प्यारी वल्लभ ठौर निभा

भै॰ रा॰ ६। ॥ रागिनी भैरवी ताल तिताला। च। दिल जान
मोरी जानि तोसों लागि छवियो नि मानी। ते
रे ध्यान निशिवासर मेरे ने क्या मन मे ठानी
अपनों जानिके किर्पा कीजे ने कछु दया उ
र आनी। वल्लभ पियकी जीवन कहिये सदा
रहुं गुन गानी ॥ रागिनी भैरवी ताल जलद

अथ रागिनी भैरवी ताल हरिहर परिच्छेदः ता० २

जलधिजा गिरिजा समले कृतौ विदित ।

मार कुमार समञ्जवौ विहित वारण वारण

महाप्रियौ हरिहरौ दिशतां मम ह प्रिय

म १ सजल नूतन नील पयोधर रजतर

म्य महीधर सन्निभौ सदय भक्त निरीक्षण

२ग २सं २रे २मा २गा २मा २रे २सं २नि

गा ह॰ वेत्रुरो हरिहरो दिशातो मम स्व श्रियम। श

दर गदारि कजास्य हि पद्माभी परम्ष मूल

शिलो ऊषा पाशांकैः डमरुणा च म्हचोटि क

योविलो हरिहरो दिशातो मम स्व श्रियम च

मभग केन्नु शिविडि शिरोधर ज्छवि महो

दर केथर रोचिषो मचन जत्तु समन्नत व

त्तमौ हरिहरौ दिशतां मम सु श्रियम् ४ सु
रभि चंदन भूति विभूषितौ कनक कंकण
पन्नग कंकणौ कमन कांचन कुंडलि कुं
डलौ हरिहरौ दिशतां मम सु श्रियम् ५
ग्रथित पीत पटोरु दिगंबरौ स्नाव शशांक
शशि द्युति सुंदरौ विधिकृते धृतशंबर मु

गा. ह. तिकौ हरिहरौ दिशतो मम सुप्रियम्। ६।

प्रसित कुंतल पिंग कपर्दकौ कुटिल के

श पिशंग जटाधरौ मरम विकाग भूषशि

रोरुहौ हरिहरौ दिशतो मम सुप्रियम्। ७

भुजगराज मृगेंद्र महाजिना सनशायोषा

रुण गानवल्ललौ सुरवरा भयदान विधा

यिनौ हरिहरौ दिशतो मम स्त्रियम् ८ कु
न गजेंद्र महेंद्र विमोहनौ कमल कल्पल
म च्छिवि वीतरणौ हृदि परस्पर रूप निरी
क्षणौ हरिहरौ दिशतो मम स्त्रियम् । ९।
विविध रत्न किरीट मनोल्लस न्नव निशा॰
कर शोभित शेखरौ विशद नेत्र युग त्रिक

गी॰ ह॰ शोभिनौ हरिहरौ दिशतां मम स्वश्रियम्।९।
तरल मौक्तिक पन्नग हारिणौ शुभ चन्द्रदश
दोर्वन धारिणौ कनक कौश्याहि युक्कटिहा
रिणौ हरिहरौ दिशतां मम स्वश्रियम्।११।
मधुकरी वितया वनमालया विलसिनानत
रयास्थि झषाखजा उरसि जृम्भनयायिक।

शोभितौ हरिहरौ दिशतां मम सु श्रियम् १२
पद पयोज समन्वितया जटा वनतटी परि
जृंभित धारया दिवि भवापगया शुभ लसि
तौ हरिहरौ दिशतां मम सु श्रियम् ।१३।
शम दमैक तपात्म विचारिणौ सकल लो
क समस्थिति कारिणौ जलधि भूधर राज

रा० ह० विहारिणौ हरिहरौ दिशतौ मम सु श्रियम् १४

जनकराज महीधर राजयो रथिसमाज म

दौन करौवुजौ अपिलवाय मयौ जगदीश्व

रौ हरिहरौ दिशतौ मम सु श्रियम् । १५ ।

अविदितादि मनंत नपोशानौ भ्रम दनेक

जग जनित श्रियं अभिमना मनवे तन मा

श्रिनौ हरिहरौ दिशतां मम स श्रियम् ॥९॥ स

निगमागम गीत गुणार्णवौ प्रकृति निर्गु

ण वास्तव रूपकौ फणिशिरः स्तन सौभग

शालिनौ हरिहरौ दिशतां मम सश्रियम्

॥१०॥ स्मर मद त्रिपुर स्मय हारिणौ मधु मदो

य तरोयक दारिणौ स्मरयता स्मरमोघ्र ।

गा.ह. विधायिनौ हरिहरौ दिशतां मम सुश्रियम्

१८ मथित मम मरीचि महाधरा त्मकन्दगो

धामधा भ्रमया नगौ सुभग वीणा गवीणा

सुपन्नगौ । हरिहरौ दिशतां मम सुश्रियम्

१९ उदयि देवनदी रय रोधकौ सकल त

त्व सनातन बोधकौ स्मृत निजाख्य जना

न्म विशेषयकौ हरिहरौ दिशतां मम श्रियं २०

नियति पूर्वक बुद्ध चराचरौ तदनु कूल कृ

तान्म मरामरौ नियत संविदपात्र परापरौ ।

हरिहरौ दिशतां मम श्रियम् २१ भूयत ।

मान स्वरा स्वर रत्नसा मपि महर्षि मवाल्म

वतो गिरौ अविषयं महिमान मपारगतौ ह

गा॰ हृ॰ रिहरौ दिशतां मम सर्वदा ॥ २२ ॥ अतिसौवि

6

रिहपंचविधे विश्वे रजगतात्म तया रव ए

वैकान विदयतो विषया न्वयितात्मकान ।

हरिहरौ दिशतां मम सर्वदा ॥ २३ ॥ सकल

कल्ल भाव त्रिपुटी परी सद सदात्मक संह

ति भातितौ प्रकसय चय तया पदातितौ ।

हरिहरौ दिशतो मम सुप्रियम् २४ विलस

दत्र मयादि विलसतोणि करण मानस बुद्धि

परीवरौ निज महिम्नि मदायति मत्तणो ह

रिहरौ दिशतो मम सुप्रियम् २५ उदित वि

ष विकल्प विकस्वरौ नदप लाप पटू स्व।

निरीलणौ परम तत्व विकाश विचलणौ

गा.ह. हरिहरौ दिशतो मम सौख्यम् २६ मद विदग्ध

विबोध सवासकौ हरिहरावुदय माप कवि

रहो स्फटि निरूपित केवल विद्धनौ हरिहरौ

दिशतो मम सौख्यम् २७ घनजटोह्य शशि

शनि बिंब ध्रुति मनि श्रफल न्सम विक

लो मनि रिवास्य परे परि वायकौ हरिहरौ

दिशतो मम सुश्रियम् ४८ समपहाय बुधैः

श्रुति नेतिनेत्युरुपदैः परिहृत्य मशेषके

महदादि निश्चित शाश्वत तत्वको हरिहरौ ।

दिशतो मम सुश्रियम् ४९ जलतरंगक र

ज्ज भुजंगम गगनपुष्प वदाहित विश्वको

प्रतिविम्बद तोरोहि निरंजनौ हरिहरौ दि

गा॰ह॰ ग्राते मम ह प्रियम॒ ३॰ अविदितो विषयोन

मृगतृष्णया परि निमीलित बुद्धि विलोचनैः

उपगता वपि नित्य मलत्तितो हरिहरो दिश

तो मम ह प्रियम॒ ३॥ विगत भेद नयो हसि

ते॰ यिकं मनसि तत्व मसी त्युक्त वाकृतः

कविभिः राकलितैका मती निजे हरिहरो

8

दिशांतो मम स श्रियम् ॥ २ ॥ प्रतिदिन मघसी

ह ये पठंति हरिहरयो स्तव महयंता न्नभे॰

दाः सव मविर मिहार्यतो ऽभिदोस्त विग

लित भेद विभावना भवंति स्तत यन म

निमान हृद्ययेयो प्यरि परिवार जयायजे

न कामः परिषदि विद्वषो विजेत कामान

रा॰ ह॰ पठति ममतय मेरंपति सर्व मेतत्त् उष पठति

यो विहिता चरति श्रियतो न्टपति रोग्य जय

त्यरि मेंजमा म विषये रिव पंचभि स्प्णयो

नाहि कटा ण्यरिभिः परिभिः परि भूयते च ५

इति भैरवी रागिनी हरिहर परिच्छेदः ॥ ।

अथ विभास रागस्य अभोनवेदनाटकपरिछेद

२सा २रे २सा २ग २रे २ग

माहताल। तीन। सवैया। रुदुलाछत नानन है

२म २प २धु २म २ग २रे २ग २रे २सा २म २प २नि

दरहे धुनि बाल विषै जस वेदन लावै। भजउँ उद

२सा २रे २ग २रे २सा २नि २प २धु २म २ग २रे २सा २सा

रै उरकेट उरु धुनि उटन वेदन टीक बनावै। दग

२रे २सा २ग २रे २ग २म २प २धु २प २म २ग २ग २रे २ग

नैन कपोल हपीट विषै बिबुकी बरु वेदन टेक

२रे २सा २म २प २नि २सा २रे २ग २रे २सा २नि २प

हरावै। जस हट कटे कर कानन मैं हमको यह

वि॰रा॰
ना॰

देमइ सोच मकाप । सुभले प्रवयाहि समेपवलो
इम याखले मनसूष बनेरे । द्विगजाइ डमाइ भ
ले ककौ मख पेडू कही कल्यान खनेरे । प्रति दे
भ हेकार कीया मघने इम वारनेहे नहि प्राउ खनेरे ।
इनने महि प्राइगयो वृद्ध बालक ब्राह्मण बाक ख
नो त्रमभरे ॥ २२ ॥ सवैया ॥ हरहिठाढि रहो दि

जनु इह ग्रामसुकी गति मोहि न जानी । पाद प
षालन ग्राउ करो कर भीतरि जजल लेउ सपानी ।
मैं इह ग्रायम पाउ परे इम कौन वरे वड पड ब
षानी । क्रोप भयो हेकार वडे इह भांति सुनो व
इकी जब वानी । २३ । हेकारउवाच ॥ सवैया ॥
हाविय कौंन जदेस थ्ये जिहि देसन या विथिलो

वि॰रा॰
ना॰

कवमेहै। कोविद लोक प्रसिधवडे ह्रमसे जिन

देमन आयिन भैहै। आसन पादजले अरचाति

नके ह्रिनना गिरही प्रनिलेहै। नाहि कुहे जल

मेडलकोऔर ह्रदेह जाइ वसेहै। २४। कविउवा

च। दोहा। ककी सेनी देभककी नोना प्रसवास

इहै जनावन थिररहो काहे भये उदास। सवैया॥

२

नव बोल मखो वइपङ्क करी गरया विधिने हिन
कीन वषाना। भइउ नव भावन हरहिने हमना
ऊलसील सतोष पछाना। सनिकै इह बात
हैकारबली मखवाषनहै उबमै झनसाना॥
हमरो ऊलसील परीषनके सब लाइक मफ
सनोह प्रमाना।११॥ दोहा॥ सब मूरख सब

वि॰रा॰
ना॰

तोकहो गोड प्रसिध सुदेस । वाका पुरी प्रसिधन
ह्रि पेषत हरै कलेस । कवित । भूरि श्रेष्ठकनाम
धनि ताहिमै प्रसिध धाम ताहि पतिनाम ममलो
कमै वषानेहै । ताहिके मष्टनहै सुष्टनअंकली
न वडे देसन प्रसिध लोक लोक माहि जानेहै ॥
तिनमै विवेक विनय धैरय प्रकार सील सुगाउदा

3

र ममको विट प्रभानेहै । सोई हम आप विधि लो
क किये नये भये भये स्वयंभ जन मोहन पक्षा
नेहैं ।२८।। सवैया । नामखटी वटलै करमै प्रतिरूज
ल वारिमे हरि ल्यायो । नामखटी करलै भगवंतक
ये पदछालन पेड़ भ्रलायो । हंकार कयो हम पेव
करे जगकाहूको नाहि वने सु उघायो । योइकिण

विरा
ना

उ सु आश्रम में वरने हितनाहि सुपाउ उठायो । ३-

सवैया ॥ देस नेस उनि देत ववाइ वफाइ भये म

थपेऊ गुलाये । हरह पाउ गउाइ रहो हिजमुढ

कहा फिर आवन पाये । नेतन सौबे दकि विड

सुने पसरे इनने उनवाझ वलाये । ब्रह्मण इश्वर

व पेऊ पिषी सुहेकार कयो मनमै उतसाये ॥

4 ४

दोहा । वडूर वटूमावे वोलयो व्रह्मण । ऐसो
हीहोहिं उत्तम द्विजया लोकमै कवि कवि पे
खो नेहि ॥ सवैया ॥ भव भारन षंड महीप ज्ञि
ने पद पंकज नाहि छुहे उरपाई । पदकंज सि
वासन भूतलके फिरा थ्रान सभै निज मौल
नवकाई । मकुट मणि की हमरी विनकै पद

वि॰रा॰
ना॰

वारिज आरती दीपजगाए। इनके छिग जाहि
नि संक सुनो मनि भूलवाए हिजनें धन साए ॥
दोहा। सुनि हंकार सुमन विषे कीनो इहै वि
चार। मनो सुयारी देसमै दंभलयो अवसार ॥
भवन तथा रह आसने मै अवकरो निवास। उठ
निवाए नाहिने आसन बैठ नन आस ॥ मैवंमैवं

मैंने बोल वइ जबै कीन प्रकाश । आराध पादशा
सन रहै औरनकरै निवास । सवैया । नविबोल
हैकार सपेडकरै मन भीतर कोप भयो अति गा
ढा । रवण देस प्रसिध तिन भीतर सयपरी इ
कगाढा । सनहो तिन माहि प्रसिद्ध बपयो इकके
ऊलवासकयो अति पाढा । रम जौनहि आसन

वि॰रा॰
ना॰

6

लाइकैहै कडौंते गरको ब्रह्मते काफा । ह्मन मूरष
कान भले परयौ इक औंर ब्रह्मिय कहो नवबाना ।
दिजको विट लोक ब्रह्मिय वडी ह्मवरी तिनकी उ
हिता विख्याना । ऊन ऊजल जान मगालनकी
तिनकी सम नाहि ग्रहे ममताना । तिनके हम
लोकन माहि वडे हमरे सम नाहि ग्रहे ममताना

सम सालिक मित्र सभा तलकी उड़िना एक ठौर
भली जग गाई । तिनकी विभ वारकी कूठक
या सब लोक किने जगमाहि चलाई । तिनके
निजमाहि संबंध पिछे मननाहि समे अतिमे पुन
साई । निज नारि मनो गतजी छिनमे हन मृढ व
इ घरनाहि टिकाई । ३९ । इति विभास रागासप्रभो

कि॰ शा॰
ना॰

नचेद्रनाटकसमाप्तम् ॥ ॥ शुभम् ॥ शु

रागिनी भैरवी ताल ४ प्रथम चंद्रिका परि

म ग रे सा नि ध

छेदः। चतुष्पदी छंद। तिनकौ जग है सा

म प ध नि ध प म ग रे सा म

जगत प्रशंसा मोन समो न सरेता। लोच

ध नि सा ग रे सा नि ध प म

न अग्नि रूपन स्याम सरूपन अंजन अं

ग रे सा म ग ध सा नि ध म प

जत सेता। कालत्रय दरसी निगुन पर

ध प म ग रे सा म ध नि सा

मी होत बिलंबुन लागे। तिनके गुन क

गा॰ गा॰ हिं हीं सब सुखलहि हीं पाप पुरातन भागे

दोहा ॥ जागत जागी जोति जग एक रूप

सुखकंद । तिन रामचंद्रकी चंद्रिका बरनत

है बड छंद ॥ रागिनी भैरवी ताल चरोला

छंद ॥ सुभ सूरज कुल कलस हु नृपति द

सरथ सब भूपति । तिनके सुत सुति चार

चतुर चित्र चाक चाक मति । राम चंद्र भव ।
चंद्र भरण भारण भव भूषण ॥ रागिनी भै
रवी ताल ३ घताछंद ॥ सरजू सरिता तट
न गर बसै बसैबर । प्रवथनाम जसथाम
घर प्रचञेह विनासी भव पुरवासी अमर
लोक मानइ निगर ॥ रागिनी भैरवी ताल ३

रा.री. छौपैछंद॥ गायि राजकौ पुत्र साथि सब शत्रु

2

मित्र बल। दीन कृपान विधान बस्य कीनेभ

व मंडल। कै मन अपने हाथ जीत जग ईदि

य गन अति। तब बल गाढ़ी देह भये क्षत्री

वैरि षति। तिह प्रसिद्ध के सब सम्मति।

काल अतीना गन निगुन। तह अज्ञानेगति

प गृ यारियो विस्वामित्र पवित्र मन ॥ रागि

नी भैरवी ताल च पेहृटिकाछंद ॥ मनि

आये मरन्तृ मराति नीरतर देषे उजल अम

ल नीर । नव निरष निरष इति गति गं

भीर । कछु वरनन लागे समति धीर ॥

अति निपट जटल गति जदपि आग ।

3

मा पा नि सा नि पा धा मा गा रे सा मा गा
रा॰ रे॰ बह देति सड गति सेब नयाग । कछु शाग

रे सा नि पा गा रे सा मा पा नि सा नि
नु ग्रपि गति गति चलेति । कलिपति तन॰

पा धा मा गा रे सा मा गा रे सा नि पा गा रे
को फल फलेत । मदमती जदपि मातेगासे

सा मा पा नि सा नि सा पा धा मा गा रे सा मा गा
गा । ग्रति नदपि पतति पावन तरंग । बङु

रे सा नि पा गा रे सा मा पा नि सा नि पा धा
न्हाइ न्हइ तिह जल मनेह । घन जात स्वर्गा

मा गा रे सा
हकर सदेह ॥ रागिनी भैरवी ताल ३ । नव

ग म ध प म ग रे स

परी छेद ॥ जैहै जहल मत महा मद मत ।

म ध नि स नि ध प म ग रे ग

बल बारन बारन दलनन । अंग अंग वर-

म प म ग रे स ग म प म ग

वैति वेरन भंजनि भर के दषि । लेष अव

रे स म ध नि स नि ध प म ग

घवर बेदन दीह दीह दिया जनके केश

रे ग रे स म ध नि स नि ध प

वदास ऊमार दीन राजा दशरथ हि दिगपा

म ग रे स

लन उपहार ॥ रागिनी भैरवी ताल २ ।आदि

रा. रो. ल खेड ॥ देषिबाग अनुराग उपजियो । बोल

4

ति कोकिल कलधुन जियो । राजतिरति की

सषी सवे मनि । मनो कहत रति पति संदेस

नि । फूल फूल नव फूल बढावत । मोदति

महा मोह उपजावत । उडत परागन विन

उडावत । भवर भवति नहि विन भ्रमावत ॥

रागिनी भैरवी ताल। ।पादाकुलछंद॥

सुभ सर सोभै मन मन छोभै सरसिज।

फूले अलिरस फूले॥ पद्मावतीछंद॥

देषी बनवारी चंचल भारी तदपि तपो य

न मोनी। अतितप मपलेषी ग्रह स्थितदेषी

जगत दिगंबर मोनी। जदपि दिगंबरगुण

गा॰ गो॰ वती नर निरष निरष मन मोहै। पुष्पावती घ्र

ति प्रति पावन गर्भ मांहि जल सोहै। पुन गा॰

र्भ संजोगी रत रस भोगी जग जन लीन करा

वै। जग जन लीनन वारिन वीना पियको

जियतैं भावै। पत हिरमावै चित भ्रमावै सो

नन प्रेम बढावै। जो दिन रातनि प्रद्भुत मो

5

तनि कवि ऊल कीरति गावैं॥ छंद ॥जल

वरतेलैं बड़ विथबोलैं। उर ग्रह काहीव

रनी न जाहीं॥ रागिनी भैरवी ताल।

हाकलिका छंद॥ मेरा लिये रिष सिष्य।

नियाने। पावक सेतपते जनजाने देष-

नि सरिता उप वन भले। देषन जेथ पुरी

रा॰रा॰ कड़े चले ॥ रागिनी भैरवी ताल मधुभार

छेद ॥ ऊंचे अवास प्रति पुज प्रकास । सोभा

विलास । सोभै प्रकास ॥ छेड ॥ प्रति सेदर

प्रतिमाधु । थिर नरहत पल प्राधु । सपति

तणे मयमान । देउ धारनी जोन ॥ रागिनी

भैरवी ताल हरि गीतका छेड ॥ सुभद्रा

6

ए गिर गए सिषर पर अति उदित ऊँष

य सीभनौं । बहु बार बारट श्री बहे रहि

उरकिटामनि इति भनौं । कवि प्रचंड प्र

ताप पावक प्रगट सरपरे को चली । कि

किंन मरित सदेस मैं सबकरी दिव षेल

न बली ॥ दोहा ॥ जीत जीत कीरत लई ।

रा० रो० शत्रुन की बहु भांत । पुर परबोधी सो भिजै

7 मान तिनकी पांत । ३५ । इति भैरवी रागिनी

रोम चंद्रिका परिछेदः ॥ ❀ ॥

अथ प्रबंध विश्राम रागस्य संगीत । परमानंदकंद
सिरी रामरे सुर विन मधुर चिन्मकरंद अनंद समा
न सम्यक निर्मलेका कलश मठ सगरी चेतन क
ला नयना वला । अनास्थाये । अथ समताल अ
सवारी । श्रीमन करुणा वरस कल्लोल कला पंच
सवीताल सवला सकला दरकंपयनि ब्रह्म

वि॰रा॰
प्र॰

ताल धध धध मगरी गमे मगरी मगरी सासरिमग
मरिगमगसा धरसा। इत्येनतालः। अथ आभोगः। अ
सवारी। विपरीत पंचताल। धीमधेरम हेकार श्री
तज स्वरता क्रमता। गीतताल। डुम डुम चटा डुम डु
म चटा धारी गिर गिर वेगा धारी गिर गिर वेगा ॥
यमालतारः ॥ कनक कनक कन मन मेघः

त्रयताल: १ कट केकत ऊपगोगिथा २ दोताल: चप
क: ॥ स्ततिमेथा स्ततमेथा ॥ संगीत ताल ॥ त
स्त्रत गुरु रामानंद चरण सरण उदार परमा
नंद कंदे ॥ इति ताल प्रबंध: ॥ ॥
चतुरंग ताल १ ॥ चतुरंग गाइन गुणगाइये
गाइये रिझाइये रघुनाथकों स्वरतान तालसों

वि॰ग॰
५॰

गगाङ्गेह सौं स्वर समसौं मान मनाइये । इत्यष्टाये ।
ननन ननुम दिर दिर नोम नदीम नदीम नादिर दि
र दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर नोम ननोम उद
न टन न्नतनुे यलल यलल लु लाइये । इत्येनगा ॥
प्रथ्यग्रामोगः ॥ सानि पपमगरे सासारेरे गगाम
मम पप पप निनि ममप ममप म्रयाइये ॥

सम सुरन तिन ग्राम एकईस मूरछना गणी
जन मनमान ज्ञान पाईये परमाईये । थेय थेय
थेय थेयाया थिन लोगना थिथि ऊऊ ऊऊ थिकि
टिन थनन थुंथुं मृड मृदंग मिलाईये । परन
प्रति प्रति पयति मन उद्दति यङराइये । पद
नराना पराक्रम प्रेम रंग प्रेवट सुनाईये ॥

वि.रा.
९

इति विभास रागस्य वनरंगः समापनम् ॥

न हरि बारिजिकै मेटै कलमारी ॥ २७ ॥ राग विहागरा ॥

सं नि रे ग म ग

रागिनी भैरवी ताल तीन ॥ २ ॥ हरि तेरो भजन कियो

रे सं ग रे सं प नि सं रे ग म ग रे सं म

न जाइ । कहा करौं तेरी प्रबल माया देत लहरि बहाइ । ज

प नि सं ग रे सं नि प प म प नि सं रे सं

बै आऊं साध संगत कछु कम नव हराइ । जौ गयंद अन्हा

नि प प म ग रे सं म प नि सं ग रे सं

इ सरिता बहुर बहै सभाइ । भेष धरि धरि हर्यौं पर धन

राग विहाग सूरदासकृत ताल तीन । ३ । स नि स ग ग म प म ग रे स । ग रे स नि प प नि स
ग म प म ग रे स । ग म प नि स ग स नि प प म ग रे स । म ग प नि स ग स नि प म ग रे स । ग
म प प नि स ॥

सं:
रा-सं

नि पा पि मे पा नि सां रें सां निपा पि मे ग सां

साधु साध कहाइ । जैसे नट बोल्यो भ कारन करत स्वांग बनाई

मे पा नि सां ग रें सां नि पा पि पा पि मे पा

करे जतन न भज्यो रामको कछुक मन उपजाई । सुरप्रभु

नि सां रें सां नि पा पि मे ग रें सां

की सबल माया देत मोहि भुलाई २८ ॥ राग मलार ॥ ताल ३

सां ग रें

रागिनी भैरवी ताल तीन ॥ ३ ॥ अविद्या वर्नन । माधव जू

सां रें ग रें सां पा पि मे ग रें सां ग मे पा पि मे ग रें सां

यह मेरी इक गाइ । अब आज तै आप आगे लै आइये चरा

गमपानिसांनिपमगरेस । गमपानिसांगमानिपमगरेस । गमपानिसांगमानिपमगरेस ।

गमपानिसांगसानिपमगरेस ॥ राग मलार सुरदासकृत सरगम ताल ३ ॥ मप

मगरेसानिसारेगम । पपानिसानिपपमगरेगम ॥

है अति हरि हारि हट करनेहूं बहुत श्रमा रेगा जाति । फिरत

वेद बन ऊषड खारत सब दिन श्रह सब राति । हित करि

मिलै लेउ गोकुल पति अपने गोधन मांहि । सब सोऊ सुन

वच[illegible]न तुम्हारे देहु कृपा करि वांहि । निर धर करहू सूरके

स्वामी जन मन जाऊं फेरि । मैं ममता हविसो रघु राइ पहिले

मधपनिसंनिधपमगरेस । मधपनिसंनिधपमगरेस । मधपनिसंनिधप । मध

पनिसंनिधपमगरेस । मधपनिसंनिधपमगरेस । मधपनिसंनिधप ।

सू
रा-मं

27

लैजइ निवेरि २९ ॥ राग धनाश्रिरी ॥ रागिनीभैरवी ताल तीन

३ ॥ किते दिन हरि सुमरन बिनखोये । पर निंदारस

ना के रस मैं अपने पर तरु बोये । तेल लगाय कियो रुचि

मर्दन वस्त्र मलि मलि धोये । तिलक लगाइ चले स्वामी

है विषन के मघ जोये । काल बली तैं सब जग कैथौं बसो

मगरेसा ॥ राग धनाश्रिसरी सूरदासकृत सरगम ताल तीन ३॥ मपमगरेसा

गरेस । मगमपनिसनिधपमगरेस । गमपधनिसनिधपमगरेस । मगमप

धनिसनिधपमगरेस । मगमपधनिसनिधप ॥

गा रे सा मा धा नि सा नि धा प मा गा रे सा

दिक हूं रीये। सरस्र प्रथम की होत कौन गति उदर भरे पर सोये

३॥ राग केदारा॥ त्रिस्ला बरनन॥ रागिनी भैरवी। ताल॥ ३॥

मा गा रे सा रे गा रे सा नि धा नि सा रे

तीन॥ माधव जनै जहट को गाइ। निस दिना यह भ्रमत

मा प धा प मा गा रे सा मा धा नि सा गा रे सा नि

रत उत अग रग होन जाइ। कुहत वडत अचानना ही नि

धा प मा गा रे सा मा धा नि सा गा रे सा नि धा प मा गा रे सा

राम डुम दल धाइ। अह दस चट नीर प्रवै लषान जनतुजार

मगरेस। मगमपधनिसनिधपमगरेस। राग केदारा स्वरदास कृत सरगम॥
तीन ताल॥ मगपधपमगरेस। पममगपधपगरेस। मधनिसरेसनिधपमग
रेस। मधनिसरेसनिधपमगरेसा॥

स्नं:
रा·स·

म ध नि सं ग रे सं नि ध प म ग रे सं म ध नि सं ग रे सं नि ध

वहे थरन श्रागौ वहे गेथ मझाइ । और महिन ग्रमंक्क मक्कन

प म ग रे सं म ध नि सं ग रे सं नि ध प म ग

गिरा वरनिनजाइ । श्रोम थरन दसैलकानन इने वरन ग्र

रे सं म ध नि सं ग रे सं नि ध प म ग रे सं म ध

वाइ । फीठनि उरन उरनि काहे विगणहै समझाइ । हैरन

नि सं ग रे सं नि ध प म ग रे सं म ध नि सं

ष बल दनुज मान वसरनि सीस चफाइ । रवि विरवि म्रष

ग रे सं नि ध प म ग रे सं म ध नि सं ग रे

भौहे क्षविलै चलनि चित ज्ञराइ । नील धर जाके ग्ररुन

मधनिसरेंसनिधपमगरेंस । मधनिसरेंसनिधपमगरेंस । मधनिसरेंसनिध
पमगरेंस । मधनिसरेंसनिधपमगरेंस । मधनिसरेंसनिधपमगरेंस । मध
निसरेंसनिधपमगरेंस । मधनिसरें ॥

लोचन सेन सैना समाइ । दिन बजर दस षेत हेद निसु पर

कहो समाइ । नारदा दिसुका दिसुन जनयय के करन उपाइ

नाहि कछु कैसे कृपा निधि सकल सूर बराइ ३१ ॥ राग विहा

डा ॥ रागिनी भैरवी ताल ॥ तीन ॥ २ ॥ माधव जू मन मा

या वस कीनो । लाभ हान कछु समुझत नाही जैा पतंगा त

सनिधपमगरेस । मधनिसरेसनिधपमगरेस । मधनिसरेसनिधपमगरेस ।

मधनिसारेसनिधपमगरेसा ॥ राग विहागडा सूरदास कृत सरगम ताल ॥ ३

मधनिधपमगरेसनिधनिसा । गमधनिधपमग ॥

स्: रा·स

सं म ध नि सं ध नि सं नि ध प म ग रे सं

नदीनो। बदह दीपक धन तेल तूल तिय स्नेत ज्वाला अतिजोर

म ध नि सं ध नि सं नि ध प म ग रे सं म

मे मन हीन मर मन ही जान्यो पर्यो अधिक करि दौर। विव

ध नि सं ध नि सं नि ध प म ग रे सं म ध नि सं ध

सभयो नल नीके स कज्यों विन गुन मोह गह्यो। मे अज्ञान के

नि सं नि ध प म ग रे सं म ध नि सं ध नि

कु मरमन जान्यो पर दुष पेज भर्यो। बहुत दिवस भए या

सं नि ध प म ग रे सं म ध नि सं ध नि सं

जगमे भ्रमत फिर्यो मति हीन। सोर स्याम सेंदर जो सेवै

रेसा। मधनिसंनिधपमगरेसगरेस। मधनिसंनिधपमगरेसगरेस। मधनिसं
निधपमगरेसगरेस। मधनिसंनिधपमगरेसगरेस। मधनिसंनिधपमगरेस
गरेस। मधनिसंनिधपमग॥

२९

नि ध प म ग रे स

क्यों हो बैरागनि दीन ॥२२॥ राग विहागड़ा ॥ रागिनी भैरवी ॥

म ग रे स नि ध ग रे स म

ताल ॥ ३ ॥ तीन ॥ हृदय कोक बड़ नजर न पटी । वि

ध नि ध प म ग रे स ग रे स म ध नि

न गोपाल विथा या मनकी कैसे जात कटी । अपनी रुचि

स रे स नि ध प म ग रे स म ध नि स रे

जित होत तित बिचरत इंद्री ग्राम घटी । होत नहीं उदि चलत

स नि ध प म ग रे स म ध नि स रे स नि ध

कपट लगा बांधे नैन पटी । झूठौ मन झूठी यह काया झूठी

रे सगरे सा ॥ राग विहागड़ा सूरदासकृत सरगम ताल ।३। मगमपनिपमग

रेस । पनिसंमपनिपमगरेस । मपनिसंनिपमगरेस । मपनिसंनिपमग

रेस । मपनिसंनिपम ॥

स्व·
ग्रा·स·

आव भेटी । ग्रह जूठेके वदन निहारत मारत फिरत लटी ।
दिन दिन छीन हीन भई काया दुष जंजाल जटी । विना ग
हेरु भूष भुलानी नींद फिरत उचटी । मगन भयो माया रस
लंपट समुझत नाहि हटी । ता पर मूंड बधी नाचत है मीव
विलीव नटी । षेचत न स्वाद स्वान पातर ज्यौं चात करत नटी

गरेस। मधनिसनिधपमगरेस। मधनिसनिधपमगरेस। मधनिसनिधपमग
रेस। मधनिसनिधपमगरेस। मधनिसनिधपमगरेस। मधनिसनिधपमग।
रेस॥ ॥

सूर जल दसों दै करुना निधि निज जन जरन मिटी ३३ ॥

राग सारंग ॥ रागिनी भैरवी ताल तीन ॥ २ ॥ माधव जू

मन हठ कठिन परयौं । जद्दपि विद्यमान सब निरषत दुः

ख सरीर भरयौं । बार बार निस दिन प्रत आतुर फिरत दसो

दिस धाये । ज्यों सुक सैंभ फल फूल बिलोकत जात नहीं

मपनिसनिधपमगरेस ॥ राग सारंग सूरदासकृत सरगम ताल ॥ ३ ॥ रेमप

निपमरेसनिस । मपनिसरेसनिपमरेस । मरेमपनिसरेसनिपमरेस । मरेमप

निसरेसनिप ॥

स्तु-
गा मं

विन षाये । जग जग जनम मरन ग्रह विछुरन सब सम्र
जन मनि भेव । ज्यौं दिन कर उलूकन मानन परी आन यह
देव । हौं कुबील मति हीन सकल विधि तुम कृपाल जग
जानि । सूर मधुप निसि कमल कोस बस करौं कृपा दिनि
भानि ३४ ॥ राग धनासिरी ॥ रागिनी भैरवी ताल तीन । ३ ॥
मरेस ॥ मपमरेमपनिसंरेसंनिपमरेस । मरेमपमपनिसंरेसंनिपमरेस । म
रेमपनिसंरेसंनिपमरेस । मरेमपनिसंरेसंनिपमरेसा ॥ ❀ ॥

म ग रे स नि प स रे स ग म ग रे स नि प नि स
आछौ गीत प्रकारथ गायौं । करी प्रीत कमल लोचन सौं ज

ग म ग रे स म प नि स नि प प म
नमज वाज्यौं हास्यौं । निसदिन विषय विलास मन विल

ग म रे स ग रे स म प नि स नि प प म ग
सत छूट गई नव चास्यौं । अब लाग्यौ पछ तान पाइ उघदी

रे स ग रे स म प नि स नि प प म ग रे स
न दई को मास्यौं । कामी कृपन कुचील कुदर सन कोन कृ

ग रे स
पाकर तास्यौं ३५ ॥ राग विहागरा ॥ रागिनी भैरवी ताल ३ ॥

रागिनी [illegible] धनाश्री सूरदासकृत मरगम ताल । ३ ॥ गमपमगरेमगरेसा । मप
निपपमगरेमगरेसा । मपनिसंनिपपमगरेमगरेसा । मपनिसंनिपपमगरेमग
रेसा । मपनिसंनिपपमगरेमगरेसा ॥

सू:
रा-स

रागिनी भैरवी ताल तीन। माधव जू मन सबही विधि पोच। अति
उन्मन निरा ऊसमै गाल विना रहित सलोच। महा मूढ़ अ
ज्ञान तिमिर मै मगन होत सुष मान। तेली के विरष भज्यो
भरम्यो भजनन सावेश पान। गीध्यो प्रीति है मन सकर ज्यों
श्रुति भारत मति मंद। लव ध्यो आन मीन आमिष ज्यों अव
राग बिहागड़ा सरगम सूरदासकृत ताल तीन॥ मपनिसंनिपधपमगरेसांनिपनिसं।
मपनिपधपमगमगरेसंनिपधपनिसां। मपनिसरेसंनिपधपमगरेमपनिसां। मपनि
सरेसंनिपधपमगरेमपनिसं। मपनिसरेसंनिपधपमगरेमपनिसं। मपनिसरेसंनिपधम

प म ग रे स । म प नि सं रें सं नि प प म

लो कौ न ह्री फंद । ज्वाला प्रीत प्रगट सन्मुख हृदि ज्यौं पतंग

ग रे स । म प नि सं रें सं नि प प म ग रे

न न जा रहौं । विषय प्रसक्त भ्रमित भ्रम व्याकुल नव हृम

म ग रे स । म प नि सं रें सं नि प प

कछुन संभारहौं । ज्यौं कपसीन ढुगा मन ग्रंजा सिमट होत

म ग रे स । म प नि सं रें सं नि प प म ग

लि वलीन । त्यौं मद विद्या तजत नहीं कबहू रहत विषय

रे स । म प नि सं रें सं नि प प म ग रे स

आधीन । भैंवर फूल सुरंग लक निरख मुदित होत घगाभूप

गरेसपनिस। मपनिसरेंसनिपपमगरेसपनिस। मपनिसरेंसनिपपमगरेसपनिसा।
मपनिसरेंसनिपपमगरेसपनिसा। मपनिसरेंसनिपपमगरेसपनिसा। मपनिसरें
सनिपपमगरेसपनिसा ॥

स्रु:
रा·सं·

३३

म ध नि सं रें सं निध प म ग रें सं म ध नि

परसत चौंच तूल उधरत सुष परत दुषके कूप। और कहां

सं रें सं नि ध प म ग रें सं म ध नि सं

लोंकहों एक सुषया मनके हतकाज। सूर पतित तुम प

रें सं नि ध प म ग रें सं

तित उधारन गहौं बिरद की लाज ३८॥ राग सारंग॥

मेरो मन मतिहीन गु

साई। सब सुष निधि पद कमल छाडि श्रम करत स्वान

मधनिसंरेंसंनिधपमगरेमधनिसं। मधनिसंरेंसंनिधपमगरेमधनिसं। मधनिसं
रेंसंनिधपमगरेमधनिसं॥ ॥

को आई । फिरत वृथा भाजन अवलोकत सूने सदन अ

ज्ञान । तिन्हिं लालच कबहूं कैसेहूं विपतिनहूं पावन थान

जहीं जहीं ज्ञान नहीं भ्रमवासन अम मल ऊटपट ज्ञान ॥

द्वार द्वार कारन कउन्हि जड किते सहित अपमान । सम

सरवग सबही विधि पूरन अखिल भवन निज नाथ । तिनै

सू॰
रा॰सं॰

ब्राडि यह सूर महा सठ भ्रम न भ्रमनि के साथ ३९ रागगौरी

करुणामैं तेरी गति लषी

न परै । धर्म अधर्म अधर्म धर्म करि अकरन करन करै । जय

अरु विजय करम कहा कीनो ब्रह्म सराप दिवायौ । असुर

ज्योंनता ऊपर दीनी धर्म उछेद करायौ । पिता वचन षंडैसो

पापी सो प्रह्लादहि कीनो । निकसे षंभ बीचते नरहरी तारि

अभय पद दीनो । दानधर्म बङ किये भानु सुतसो नम विप्र

ष कहावै । वेद विकथ सकल पंडव सुतसो तमरे मन भयो ।

जज्ञ करन वैरो चनको सुत वेद विमल विधि कर्मी । सो बल

बांध पताल पठायो कौन कृपा निधि धर्मी । द्विज कुल

सू॰
सा॰

315

पतति अजामिल विषई गनका नेह लगायौ । सुतहित
नाम लियौ नारायण सो वैकुंठ पठायौ । पति हुता जालंधर
ज्ञ वती सो पति हुतनै टारी । उष्टेस्वली अथम सुगनका
सुवापढ़ा वन नारी । भक्त हेत जोगी भ्रमकीनो अमर वि
वेथहि पावै । अवि गत गति करुणामय तेरी सूर कहा कहि

सुकदेव कह्यो सुनोहो राव जैसेहै

हरि भजन प्रभाव। हरि को भजन करै जो कोई। जग सुष पाइ मुक्त लहै सोइ। च्यमन रिषी सुर वड़ तपकि यो। तासम और जगत नहि वियो। वांवीता कौ लियो छुपाइ। ताते रिष नहीदई दिषाई। ताआश्रम सर्जीत न्र

स्र॰
रा॰स॰
३५

पगयौ। तहां जाइ कै डेरा दयौ। छाडित ही सब राज स।
माज। राजा गयौ अषेटक काज। न्रप कंन्या तहां षेलन
गई। रिषि न्रग चम कन देषन भई। पैतिहिं रिषि हग
जाने नाहि। षेलन स्रूल दयेना माहि। रुधिर धार वि
ष श्रोषन फरी न्रप कंन्या सो देषन डरी। स्रूल विया।

गावै ॥ ३८ ॥ राग सोरठा ॥

अब गत गति जानेन परै । मन बच अगाम अगाथ अगोचर

केहि बिधि बुधि संचरै । अति प्रचंड पौरुष बल पायेके हर भू

ष मरै । बिन आसा बिन उद्दिम कीने अजगर उदर भरै ॥

रीते भरै भरै उनफारै वाहे फेर भरै । कबहू कानन बूडे

सू-रा-स

पानी मै कबहूं सिला तरै। बागर तै सागर करवावै चडू दिस
नीर भरै। पाहन बीच कमल विगसाहीं जलमै अगनि जरै
राजा रंक करे रंकनै राजा लै सिर छत्र धरै। सूर पतित तर जाइ तनक
जो मै जो प्रभु नैक ढरै ॥ ३९ ॥ राग केदारा ॥

अपने भक्त देउ भगवान। कोटि लाल

व दिषावो नाहिं नै रुच ध्यान । जरत ज्वाला गिरत गिरतैं रवक
र काटत सीस । देषि साहस सकुच मानत राषस कैन ईस ।
कामना करि कोपि कीनो करत करपह ध्यान । सिंहि सावक
ज्ञान गहि हित जि ईद्र अधिक डरात । जादिना तै जनम पायौ
यहै मेरी रीत । विषय विष हठि घात नाही टरत करत प्रतीत

सू॰ रा॰ सं॰

यके किंकर जूथ जमके दासौ टहलन नेक । नरक कूप नि जाइ जमपुर पर्यौ वार अनेक । महा माचल मारवे को सञ्ज व नाहीं मोहि । पर्यौ हौं अन लियें हारे लाज अन की तोर । ना हिनैं काचौ कूपा निधि करौ कहा रिसाइ । सूरन वङ्गन द्वार छाडि जरिहौं कि फराइ ५ ॥ रागधनासिरी ॥

३८

जनके उप जत दुष किन काटत। जैसे

प्रथम अ्रसाढके हृब्ध निषित हृल निरष उपादत। जैसेमी

न किल किला दरसत ग्रैसे रहो प्रभु डाटत। पुनि पाछै शत्र

सिंध वफतहै सूर घार किन पाटत ॥४९॥ राग कान्हरा ॥

कीजै प्रभु अपने विरद की

सू॰
सा॰स

38

लाज । महा पतित कबहूं नहीं आयो नेकु तुमारे काज । मा
या सबल धाम धन वनिता वाध्यो हौइ सिहाज । देषत सुनत
सबै जानत हौं तऊ न आयो वाज । कहियत पतित वहुत तुम
तारे श्रवणनि सुनी अवाज । दईन जात षार उतराई चाह
त चढ्न जहाज । लीजै पार उतार सूर कौ महाराज ब्रजराज

नईन करत कहित प्रभु तुम सौ सदा गरीब निवाज ॥४२॥

राग मलार ॥ महा प्रभु तुमें

बिरदकी लाज । कृपा निधान दीन दामोदर सदा सवारन का

ज जब गज ग्राह चरन गहि राख्यौ तबही नाथ पुकार्यौ ॥

तजिकै गरुड छाडि पुनि आतर पकर चक्र कर मार्यौ ॥

सू॰
ए॰स॰

निस निसहीं रिष लिये महेस दल उरवासा परा थास्यौ। ना
न काल नव प्रगट भए हरि राजा जीव उवास्यौ। हरिनाकुस
प्रह्लाद भक्त कौं बहुत सासन जास्यौ। रहिन सके नर सिं
घ रूप धरि गहिके प्रसुर पछास्यौ। दुःसासन गहिके
स द्रौपदी नगन करन कौ ल्याई। सुमिरन ही ततका

ल कृपा निधि वसन प्रवाह बढ़ाए। मागद पति बऊ जीत
मही पति कछु जिय मै गरवाये। जीत्यौं जरासंधि रिपु
मार्यौ वलकरि भूपछुडाए। महिमा अति अगाध करु
णामय भक्तहेत हितकारी। सूरदास पर कृपा करो
अव दरसन देहु मुरारी ५२ ॥ राग धनासिरी ॥

स्०
ग०स्०

मरन आयेकी लाजजीय धरीयै ।

सथ्यैानहीं धर्म सच सैलपति ह्नकछु कहा सषलैन
मे विनतीकरेयै। कछुचाहो कहो सोच मनमे रहोंक
रम अपने जान त्रास आवे। यहै निजसार आधारमेरे
यहै पतित पावन विरदवेद गावे। जनमनै एकटक

कलाग ग्रासारही विषयविषषानतनही त्रिपनमानी ।

जैपां छियाछरद कर सकल संतन तजीतास मति मू

फरस मीनठानी। पापमारग जितितेवकी नेतिते व

चौानहीं कोऊ जहा सरन मेरी । सुरछोगुन भयौं

आई हारेपसौंनकी गोपाल अब सरन तेरी ॥ ४४ ॥

सू॰
रा॰ सा॰

रागु धनासिरी॥ प्रभु मेरो गुन औगुनन विचारो। कीजै लाज सरन आये की रवखता त्रास निवारो। जोग जग्य जप तप नहीं कीनो वेद विमल नहिं भाखों। अति रस लुब्ध स्वानि झूठन ज्यों कहूं चित राख्यो। जिहिं जिहिं जोन फिरों संकट वस तिहिं तिहिं यहै कमा

५८

यो। काम क्रोध मद लोभ ग्रसत मैं विषय परम विष

षायो। जो विधि पति मम होर उदधि मैं ले हरनहु नि

जहाथ। मम कृत दोष लिषै वसुधा भरित कुनहीं मि

तनाथ। कामी कुटिल कुचील कुदरसन अपराधी म

तहीन। तोहे समान और नहीं हरौ जाहि भज्यो हैं

स॰ दीन। अखिल अनंत दयाल कृपा निधि अविनासी स
रा॰स॰ घराम। भजन प्रताप नाहिमैं जान्यौं बध्यौं मोहकी फां
सं। तुम सरवज्ञ सबही विधि समरथ असरन सर
नमरारि। मोह समुद्र स्तूर ड़ुडितहै लीजै भजापसार।
राग केदारा॥ ॥अबकै ना

य मोहि उवार मगन हौ भव अंवु निधि मै कृपा सिंधु म
रार। नीर अति गंभीर माया लोभलहरि तरंग। लिये
जात अगाध जलमै गहें ग्राह अनंग मीन इंद्री अनही
काटति मोहि त्वर सिर भार। पगन इत उत धरन पावत
उरक मोहि सिवार। कामक्रोध समेततिस्ना पवन अति

सू॰ ऊककोर। नाहिविनवन देतनिय सूतनामनाकाओर।
रा॰स॰ घकैंा वीच विहालविहवल सूनो करुणामूल। स्याम
भुजगहिकाढिलीजै सूरब्रजकेकूल ४८॥ राग सारंग॥
॥ तुमहरि सां करैके साथी। सुनत
उकार परम आतुरव्है दौर छुडायो हाथी। गरवपरी

छिन रत्नाकीनी वेद उपनिषद साषी। वमन वउाइ डुपद

नन याके सभामांक पनिराषी। राजर वनिगाई व्याकुल

कैदै दैसनकों धीरक। मागथहनिराजा सवक्षोरे ऐसे

प्रभुपीरक। कपट मरूपथसैा जवकोकिल न्दपमनी

निकरमानी। कठिन परीनवही नमभगटे रिवहनि

सू॰ रा॰स॰ सबसुषदानी। ऐसे कह्यो कहां लोगुनगान लिषत ग्रंथन
हीपैये। कृपासिंधु उनही केलेषें समल जानिरवहीये।
सूरन मारी ऐसीनिवही संकट मैं नमसाथी। ज्यौंजा
नौं त्यौंकरौं दीनकी सकल वाननमाहाथी ॥ ४७ ॥
राग भैरो ॥ ॥ नमविनसांकरेकोका

A 4

को। नम विन दीन दयाल देव मुनिनाम लेऊ थोका

का। गरभ परीछित रछाकीनी ऊतोनहीं वसमांको

मेटीपीर परम ऊफषोनम ऊषमेटौं उहॄयाको। हा

करुना मै जंजरटेहौं रहौंनही वलजाको। लागि

ऊकार नरन छुटकागेकाटौंवंधन पाको। अंबरी

स्‍र॰ रा॰स॰

षकों आपदैन गयो वज्र पदायो ताकों। उलटी गाध

परी डरवाषहि दहृत सदर सनजोको। नियरकहो

इ पंडुसुत जोलेझ्तोनहीं डरकाको। चारोवेद चतुर म

एव बह्मा जस गावन है जाको। छोरीविंद विदाकीयो

राजा राज्य होइ करांको। जरासंधिको जोरउहरैसो फा

रिकियौकैफांकों। सभामांक द्रोपदी पतिराषी पति
पान पगुन जाको। वसन ओटकरि कोटि विसंभर
परनन पायौ फांकौ। भीरपरे भीषम प्रनराष्यो अज
नकोरथ हांको। रथतें उतर चक्र करि लीनो भक्तव
छल प्रनताको। गोपीनाथ सूरके स्वामी है समद

सू॰ करुणाको। नरहर हरिहर नाऊ समाहैं कामपरैं।
रा॰स॰ ह्लोवंको ५८ ॥ राग कान्हरा ॥

तुमरी कृपा गुपाल गुसांई हौ अपने न अज्ञानी जा
नत। उपजत दोष नैन नहीं सूझत रवकी किरन उ
लूक नमानत। सवसुष निध हरि नाम महातम पा

५६

ये है नांही पहिचानत। परमज्ञ बुद्धिन छ रसलंपट कौ

उ वदलै मग रज छानन। सिवको धन साधनको सर

वस्त महिमा वेद पुरान वषानन। इतेमानि पहस्हर ६

महा सठ हरि नग वदल विषय षल आनन ४९ ॥

राग विलावल॥ ॥अपने जा

स्तु. नमैं बहुत करी। कौन भांत हरि कृपा तुमारी सो स्वामी
रा.स. समुझी न परी। हरगयो दरसन के नातें व्यापक प्रभुता
सब बिसरी। मनसा वाचा कर्म अगोचर सो सुमरन नहीं
नैन अरी। गुन बिन गुनी स्वरूप रूप बिन नाम लेत श्रीस्या
महरी। कृपासिंधु अपराध अपार मिन छमो सुरने सब

विगरी ५० ॥ राग विलावल ॥

त्नम गोपल मोसो बहुनकरी। नरदेही स्नमरन कोदी
नी मोपापीने कछुनसरी। गर्भवास अतित्रास अधोमष
त्नहांन मेरीमथ विसरी। पावक जठरजरन नहिंदी ।
नो कंचन से मरीदेहकरी। जगमै जनम पाप बहुकी

सू॰ नै आदअंतलों सब बिगरी। हरपतन तुम पतित उधा

रा॰स॰ रन अपने बिरदकी लाजधरी ॥५१॥ राग धनासिरी ॥

माधवजू जो जननें बिगरै। तऊ कृपा

ल करुना निधि के सबप्रभु नहीं जी पथरै ॥ जैसै जननी

जठर अंतरगति सुत अपराध करै। तऊ जतनि जननक

४८

रै अरु पोषै निकसे अंकभरै। जद्यपि मलय वृक्ष जड ट
काटत कर ऊठार पकरै नऊस्वभाव सुगंध सुसीनल
रिपुतन नाशहरै। ज्योहलगह धर धरन कृषी वलवा
रि वीज विथरै। सहि सनमुष त्यौ सीन उस्न को सोई सु
फलफरै। द्विज रसना जो दुषित होइ वहनो वरि सक

सू॰
रा॰सा॰

ह्माकरै।जहपि अंगविभंग होतहै लैसमीपसचवै।कार
न करन दयाल कृपानिध निजभ पदीनउरै।इहिकल
काल व्याकुल मृष ग्रासत स्हरसरनउवरै।५२॥ रागका
न्हडा॥ ॥दीनानाथ अव वारन
मारी।पतित उधारन विरध जानकै विगरीलेहु सधा

४५

री। वालापन षेलनहीषोयो जो वाविषैरसमाने। वृथ
भये सुधि प्रगटी मोको दुषित पुकारन लाने। सुतनि
न ज्यानि पनज्यो भ्रात तजित नतेंलचाभई न्यारी। श्रव
नन सुनन चरन गतियाकी नैनभये जलधारी। प
लितकेस कफकंठ विरोध्यो कलन परै दिन रानी

सू॰ रा॰स॰

50

माया मोहन छाडै विसा पदो ऊउषदाती । अवया विथा

हर करिवेकौ औरन समरथ कोई । सूरदास प्रभु करु

णा सागर तुमते होई सुहोई ५२॥ राग असावरी ॥

॥ पतितपावन सरन आयौ । उद

धि संसार सुना मन वकान रति अटल अस्थान निज

निजनिगम गायौ। व्याध अहगीध गनिका अजामिल दि
जचरन गौतम नार परस पायौ। अंत औसर अर्थ नाम
उच्चारकर सनत गज ग्राहतै नम छुडायौ। अवल प्रह
लाद वल दैत्य सषहीं वचनदास ध्रुव चरन चिनसीस
नायौ। पांडुसुतन विपत मोचन महा दासलषि द्रौपदी ची

सू॰ रनानावढायौ। भक्त वछल कृपानाथ असरन सरन

रा॰स॰ भार भूतल हरन जससयौ। सूरप्रभु चरन चित चैन

चैनन करन ब्रह्म सिव आदिक सेस गायौ ५४॥ राग

धनासिरी॥ ॥श्रीनाथसारंग

धर कृपाकर दीन पर उरन भव त्रासते राषिलीजे।

57

नाहिजप नाहिंतप नाहिंसुमिरन भक्तसरन आपकी

लाजकीजै। जीवजल थल जिनभेव धरिधरि तिनेरचे

लघुदीर्घ वक्र अचल भारे। सबल मदगार हननवि

विधिकरम नगनन मोहदंडन धरम हनहारे। वृषभ

केसी मलधेन करहन नारजकचानरसे उषहनारे।

सू॰ अजामिलतै कहा मै कहा त्रुट कियो तुमजु अब सूरविन
रा॰स तै विसारे ५५॥ राग धनासिरी ॥

कवहूं नांही गहर कियो। सदास्वभावसुलभ सुमिरन
वस भक्तनि अभयपद दियो। गायगोपगोपीजन कारन गिरि
कर कमल लियो। अघअरिष्टकेसी कालीनथिदावान॥

५२

लहिपियो। कंसवंस वधि जरासंधि हति गुरु सुत आ
नदियो। करषत सभा द्रुपद तनया को अंबर अक्षय कि
यो। सूरस्याम सरवज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो
का की सरन जांऊ करुणामय नाहीं और बियो ५६ ॥
राग सारंग॥ ॥नां ते नमा

स्. रा. स.

रोभरोसोप्रावै। दीनानाथ पतितपावन जसवेद उपनि षदगावै। जोतुम कहो कौन लषनारे तौहोवालेसाषि। पुत्रहेत हरि लोक गयो द्विजसकोऊ न कोऊराषि। मन का किया कौन व्रत संजमस्व कहितनाम पढ़ावै। मन साकर स्रमसौं गज वपुरे ग्राह परम गतिपावै। वकी।

53

५३

जगईघोषमे छलकरि जसुधाकी गतिदीनी। औरक
हत कलिवृषभ बाधकी जैसीगति तुमकीनी। द्रुपद
सुता दुष्टदुरजोधन सभामाहि पकरावै। ऐसो औरको
न करुणामय वसन प्रवाह वहावै। दुषित जानकै
सुत उमेरकेनें हलग आपबंधावै। ऐसोको ठाकुर ज

सू·
रा·स·

54

न कारन उषमह भलो मनावै। उरवासाउर जोथन प
ठयो पंडव ग्रहिन विचारी। सुमिरत तीनोलोक ग्र
चापन्हान भजैपा ऊसउरी। देवराज मघ भंग जानकै
वरसैपा ब्रजपर आई। सूरस्याम राषे सवनिज कर
गिरलै भए सहाई।५७॥ रागधनासिरी॥

रि पसाउ। नौऊरहोउमोकहूं सब भायमानिन प्रसाउ॥

रागिनी भैरवी ताल३॥ मे ग रे सा नि ध ग रे सा मे ग ग रे

चौपई॥ वंदौं अवध पुरी अति पावनि। सरजू सरि कलि

सा नि ध ग रे सा मे ग मे ध नि सा नि ध प मे

कलुख नसावनि। प्रणऊं पुर नर नारि बहोरी। मम

ध प मे ग रे रे सा मे ध नि सा नि ध

ता जिन पर प्रभु हिन थोरी। सिये निंदक अघ ओघन

प मे ध प मे ग रे रे सा मे ध नि सा नि

साये। लोक विशोक बनाइ वसाये। वंदौं कोशल्यादि

26

रा॰ शिवाकी। कीरति जासु सकल जगमाही। प्रगटे उजहं र

रा॰ स॰ घुपति शशिचारु। विश्वसुखद खल कमलन षाचू। द

78 शरथ राउ सहित सवरानी। सुकृत सुमंगल मूरति जा

नी। करौं प्रणाम करम मनवानी। करहु कृपा सुन से

वक जानी। जनहिं विरचि बड़भयउ विधाता। महिमा

प्रवधि राम पितु माता ॥ सो० ॥ बंदौं अवधभुआल सत्य

प्रेमजेहि रामपद । बिछुरत दीन दयाल प्रियतन तृण

इव परिहरेउ ॥ चौपाई ॥ प्रणवौं परिजन सहित विदेहू ।

जाहिराम पद गूढ सनेहू । योगभोग महंराखेउगोई ।

रामविलोकत प्रगटेउसोई । प्रणवौं प्रथम भरतके च

२प म प २प म ग २रे २स म प २नि २स २नि प

रा॰ रण। जासुनेम ब्रत जाइन बरणा। रामचरण पंकज मन

२प म २प २प म ग २रे २स म प २नि २स २नि

रा॰स॰ जासु। लुब्धमधु पइवन जैन पासु। बंदौं लछण पद ज

२प २प म प २प म ग २रे २स म प २नि

लजाता। शीतल सुभग भक्त सुखदाता। रघुपति कीर

२स २नि प २प म प २प म ग २रे २स म प

ति विमल पताका। दंडसमान भयो यशजाका। शेषस

२नि २स २नि प २प म प २प म ग २रे स

हस्त्रवीस जग कारण। जो अवतरेउ भूमि भय टारण।

२७

म प २नि २सं २नि प २प म २प २प म ग २रे २सं

सदा सो सानकूल रहम्मे पर । कृपासिंधु सौमित्र गुणाकर ॥

म प २नि २सं २नि प २प म प २प ग रे सं

रिपुसूदन पद कमलन मामी । सूरसुशील भरत अनुगामी

म प २नि २सं नि प २प म प २प म ग २रे २सं

महावीर विनऊं हनुमाना । रामजासु यश आपु बखाना ॥

ग म प नि २सं २रे २सं २नि प २प म ग २रे २सं म प

सो॰ ॥ वंदौ पवन कुमार खल बन पावक ज्ञानघन । जासु

२नि २रे २सं २सं नि प २प म ग रे २सं तीनताल ॥ म ग

हृदय आगार बसहि राम सर चाप धर ॥ चौपई ॥ कपि प

रा॰ नि ऋक्ष निशाचर राजा। अंगदादि जेकीस समाजा। बंदौं स

रा॰स॰ बके चरण सुहाये। अधम शरीर राम जिनपाये। रघुपति

चरण उपासक जेते। खगमृग सुरनर असुर समेते। बंदौं

पद सरोज सबकेरे। जे बिनु काम रामके चेरे। सुक सनका

दि भ्रादि मुनि नारद। जे मुनि वर विज्ञान विशारद। प्रण

२ध २नि २सं २रे २सं २नि २ध २प म ध २प म ग २रे २सं

ॐ सन्तहि परणि धर सीसा। करहु कृपाजन जानि मनीशा

२म २ध २नि २सं २रे २सं २नि २ध २प म ध २प म ग

जनक सुता जगजनवि जानकी। अतिशय प्रिय करुणा

२रे २सं म २ध २नि २सं २रे २सं २नि २ध २प म २ध २प

निधानकी। ताकेयुग पद कमल मनाऊं। तासु कृपा नि

म ग २रे २सं म २ध २नि २सं २रे २सं २नि २ध २प म

रमल मतिपाऊं। पुनिमन वचन करम रघुनायक। चर

२ध २प म ग २रे ग २रे २सं म ध २नि २सं २रे २सं २नि २ध

ण कमल बंदो सबलायक। राजिवन यन धरे धनु साय

२सा मा पा २पा मा गा २रे गा २रे २सा मा पा २नि

ग॰ क। भक्ति बिपति भंजन सुख दायक॥ दोहा॥ गिरा अरथ

२सा २रे २सा २नि मा २पा मा गा २रे २सा मा पा २नि २सा २रे २सा

ग॰ स॰ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न। बंदौं सीता राम प

२नि पा २पा मा गा रे २सा रागिनी भैरवी ता॰ २ मा गा रे २सा २रे

द जिनहि परम पद प्रिय खिन्न॥ चौपाई॥ बंदौं राम नाम रघु

२रे २सा पा नि २सा गा २रे २सा मा २पा २नि २सा २रे

बरके। हेतु कृसानु भानु हिम करके। बिधि हरि हरमय

२सा २नि पा मा पा पा मा गा २रे गा २रे २सा मा पा नि

बेद प्रान सो। अगुन अनूप सगुन निधान सो। महा मंत्र

जो जपत महेसू । कासीमुक्ति हेतु उपदेसू ॥ महिमा जासु
जान गणराउ । प्रथम पूजियत नाम प्रभाउ । जान आदि
क विनाम प्रतापू । भयउ शुद्ध करि उलटा जापू । सहस
नाम सम सुनि शिव वानी । जपि जेई शिव संग भवानी ।
हरषे हेतु हेरि हरही को । किय भूषन तिय भूषणती को ।

रा॰ नाम प्रभाउ जान शिव नीके । कालकूट फल दीन्ह अमीके ।

रा॰स॰ ॥ता॰ ३॥ दोहा ॥ बरषा ऋतु रघुपति भगति तुलसी शालि सुदास ।

राम नाम बर बरण युग श्रावण भादौं मास ॥ ॥ता॰ ३॥ चौपाई ॥ आ

खर मधुर मनोहर दोऊ । बरण बिलोचन जन जिय जोऊ ॥

सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू । लोक लाहु परलोक

30

निबाहूं। कहत सुनत सुमिरत सुठिनीके। रामलषन स

म प्रिय तुलसीके। वरणत वरण प्रीति बिलगाती। ब्रह्म

जीव सम सहज संघाती। नरनारायण सरिस सुभ्राता। ज

ग पालक विशेष जनत्राता॥ भक्ति सुतिय कल करण

विभूषण। जगहित हेतु विमल विधु पूषण। स्वादतोष

ग॰ समस गतिसव थाके। कमठशेष समथर वसथाके। जनम

ग॰ स॰ न मंजु कंज मध करसे। जीहजसो मति हरि हल धरसे ॥

ताल ३॥

दोहा। पकछ्व इकमुकुट मणि सब वरणन पर जोउ।

ताल तीन ३॥

तुलसी रघुवर नामके करण विराजत दोउ ॥ चौपई ॥ स

मुकत सरस नाम अरु नामी। प्रीत परस्पर प्रभु अनुगामी।

२म २प २नि २स २२ २स २नि २प २प २म २प २प २म २ग २२ २स

नाम रूप दोइ ईश उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी।

२म २प २नि २स २२ २स २नि २प २प २म २प २प २म २ग २२

को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुण भेद समुझि हैं सा

२स २म २प २नि २स २२ २स २नि २प २प २म २प २प २म २ग २२

धू॥ देखिय रूप नाम आधीना। रूपज्ञान नहि नाम विही

२स २म २प २नि २स २२ २स २नि २प २प २म २प २प २म २ग

ना। रूप विशेष नाम विनु जाने। करतल गतन परहि प

२२ २स २म २प २नि २स २२ २स २नि २प २प २म २प २प २म २ग

हिचाने। सुमिरिय नाम रूप विनु देखे। आवत हृदय सने

रा॰ हविशेषे ॥ नाम रूप गति अकथ कहानी । समझत सुखद

रा॰स॰ न परे बखानी । अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी । उ

भय प्रबोधक चतुर दुभाखी । दोहा ॥ राम नाम मणि दी

प धरु जीह देहरी द्वार । तुलसी भीतर बाहिरो जो चाहसि

उजियार ॥ चौपई । नाम जीह जपि जागहि योगी । बिरति

32

विरंच प्रपंच वियोगी। ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा। अ
कथ अनामय नाम न रूपा। जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ।
नाम जीह जपि जानहिं तेऊ। साधक नाम जपहि लय लाये।
होहिं सिद्धि अणिमादिक पाये। जपहिं नाम जन आरत
भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी। राम भक्ति जग

रा॰
रा॰स॰

33

चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा। चहूं चतुरन
कहूं नाम अधारा ज्ञानी प्रभुहि विशेष पियारा। चहूंजुग च
हुं श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विशेष नहि आनउ पाऊ॥
दोहा॥ सकल काम नाही नजे राम भक्ति रस लीन॥ ना
मसु प्रेम पियूषहृद तिन्हहु किये मनमीन॥ चौपई॥ अ

गुण सगुण दोउ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अ
नूपा। मोरेमत वड़ नाम दुहूतें। कियेजेहि युग निज वस नि
जहूतें। प्रौढसुजन जन जानहि जनकी। कहहु प्रतीति
प्रीति रुचि मनकी। एक दारुगत देखिय एकू। पावकयु
गसम ब्रह्म विवेकू। उभय अगम युग सुगम नामतें॥

रा॰ कहहुं नाम बड़ ब्रह्म रामतें। व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी
रा॰स॰ जड़ चेतन घन आनंद राशी। अस प्रभु हृदय अछत अवि
कारी। सकल जीव जग दीन आनंद राशी। अस प्रभ हृद
य अछत अविकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी। नाम
निरूपण नाम यतनतें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतनतें।

34

दोहा ॥ निरगुणतें इहिं भांति बड़ नाम प्रभाद अपार । कह
उं नाम बड़ रामतें निज विचार अनुसार ॥ चौपई ॥ राम भक्त
हित नर तनु धारी । सहि संकट किय साधु सुखारी । नाम
स प्रेम जपत अनयासा । भक्त होहिं मुद मंगल वासा ॥
राम एक ताप सतिय तारी । नाम कोटि खल कुमति सुधारी ।

रा॰ ऋषिहित रामसुकेत सुताकी। सहित सेन सुत कीन्ह विवा

रा॰सु॰ की। सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नाम जिमि रवि नि

शि नासा॥ भंजेउ राम आपु भवचापू। भवभय भंजन नाम

प्रतापू। दंडकबन प्रभु कीन्ह सुहावन। नाम सकल कलि

कलुष निकंदन॥ दोहा॥ शबरी गीध सुसेवकनि सुगति

35

३५

दीन्ह रघुनाथ। नाम उधारे अमित खल वेद विदित गुण ।

गाथ ॥ चौपई ॥ राम सकंठ विभीषण दोऊ। राखेशरण

जान सबकोऊ ॥ नाम अनेक गरीब निवाजे। लोक वेद

वर विरद विराजे। राम भालुक पिकटक बटोरा। सेतु

हेतु श्रमकीन्ह नथोरा ॥ नामलेत भव सिंधु सखाहीं।

रा॰ करहु विचार सुजनमन माहीं। राम सकुल रण रावण
रा॰म॰ मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा॥ राजा राम अवध
रजधानी। गावत गुण सुर मुनि बरबानी। सेवक सुमि
रत नाम सप्रीते। बिनु श्रम प्रबल मोह दलजीते। फिरत
सनेह मगन सुख अपने। नाम प्रसाद सोच नहि सपने।

36

३६

दोहा॥ ब्रह्मरामते नामबड़ बरदायक बरदानि। रामचरित

शतकोटि महं लियमहेश जियजानि॥ चौपई॥ नाम प्रसा

द शंभु अविनाशी। साज अमंगल मंगल राशी। शुक

सनकादि सिद्ध मुनियोगी। नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी

नारदजानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हर हरि प्रिय •

रा॰
रा॰स॰

आहू। नामजपत प्रभुकीन्ह प्रसाहू। भक्त शिरोमणि भे प्र
हलाहू। ध्रुवसगलानि जपेउ हरिनामू। पायउ अचल अनू
पमठामू। सुमिरि पवन सुत पावन नामू। अपनेवस करि
राखेउ रामू। अपर अजामिल गजगणि काऊ। भयमुक्त ह
रिनाम प्रभाऊ। कहहुं कहांलगि नाम बडाई। रामनसकहिं

३८

नाम गुण गाई ॥ दोहा ॥ राम नाम को कल्पतरु कलि कल्या
ण निवास । जो सुमिरत भयें भाग तें तुलसी तुलसी दास ।
चौपई ॥ चहूं युग तीन काल तिहूं लोका । भए नाम जपि
जीव विशोका । वेद पुराण संत मत एहू । सकल सुकृत
फल राम सनेहू ॥ ध्यान प्रथम युग मख युग दूजे । द्वापर

रा॰
रा॰स॰

38

पतितो षत प्रभु एजे। कलिकेवल मल मूल मलीना। पाप
पयोनिधि जनमन मीना। नाम काल नरु काल कराला।
सुमिरत शमन सकल जगजाला। रामनाम कलि अभि
मत दाना। हितपर लोक लोक पितुमाता। नहि कलि क
र्मन भक्ति विवेकू। रामनाम अवलंबन एकू॥ कालनेमि

कलि कपट मिधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू॥ दोहा

राम नाम नरकेसरी कनककशिपु कलि काल। जापक
जन प्रहलाद जिमि पालहिं दलि सुरसाल॥ चौपाई॥ भा
यकु भाय अनख आलसहूं। नाम जपत मंगल दिशिदश
हूं। सुमिरि सो नाम राम गुण गाथा। करौं नाइ रघुनाथ।

रा॰
रा॰स

39

हिमाथा॥ मोरि सुधारहिं सो सब भाती। जासु कृपा नहि कृ
पा अघाती। राम सुस्वामि कुसेवक मोसे। निज दिशि देखि
दयानिधि पोसे। लोकहुं वेद सुसाहेब रीती। विनय सुन
त पहिचानत प्रीती। गनी गरीब ग्राम नर नागर। पंडित
मूढ मलीन उजागर। सुकवि कुकवि निज मति अनुसारी॰

३९८

न्पहि सराहत सब नर नारी। साधुस्र जान सुशील न्पा
ला। ईशअंस भव परम कृपाला। सुनिसन मानहि सब
हि सुबानी। भणिन भक्ति मति गति पहि चानी। यह प्रा
कृत महि पाल सुभाऊ। जानिशिरो मणिकोशल राऊ।
रीकत राम सनेह निसोते। कोजग मंद मलिन मति

रा॰

रा॰स॰

मोते। दोहा॥ शठ सेवक की प्रीति रुचिर खिहहिं राम
कृपाल। उपल किए जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि
भालु। हौंहुं कहावत सबकहत राम सहत उपहास। सा
हेब सीतानाथसे सेवक तुलसीदास॥ चौपाई॥ अति ब
डि मोरि ढिठाई खोरी। सुनि अघ नरकहुं नाक सकोरी।

40

५॰

समुझि सहमि मोहि अपडर अपने। सो सुधि राम कीन्हि नहि सपने। सुनि अव लोकि सुचित चखु चाही। भगति मोरि मति स्वामि सराही। कहत नसाइ होइ हिअ नीकी। रीझत राम जानि जन जी की। रहति न प्रभु चित चूक किये की। करत सुरति सै बार हिये की॥ जेहि अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली।

रा॰ फिरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली। सोइ करतूति विभीषण

रा॰ स॰ केरी। सपनेहु सो न राम हिय हेरी। ते भरतहि भेटत सन

माने। राजसभा रघुवीर बखाने॥ दोहा॥ प्रभु तरु तर क

पि डार पर ते किय आपु समान। तुलसी कहूं न राम से सा

हेब शील निधान। राम निकाई रावरी है सबही को नीक।

A

जोयह सांची है सदा तौ नीको तुलसीक । इहिं विधि निज

गुण दोष कहि सवहि बहुरि सिरनाइ । वरणो रघुवर

विशद यश सुनि कलि कलुषन साइ ॥ चौपई ॥ याज्ञव

ल्कजो कथा सुहाई । भारद्वाज मुनि वरहि सुनाई । क

हिहौं सो इसंवाद वखानी । सुनहु सकल सज्जन सुख •

रा॰
रा॰ मा॰

मानी। शंभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उ
महिस्ह नावा॥ सोइ शिव काक भसुंडहिं दीना। रामभक्ति
अधिकारी चीन्हा। तेहि सन यासवल्क्य पुनि पावा। तिन्ह
पुनि भरद्वाज प्रति गावा। ते श्रोता वकता समशीला। सम
दरशी जानहिं हरिलीला॥ जानहि तीनि काल निज ज्ञाना॰

करतल गत आमल कि समाना। औरोंजे हरि भक्त सुजा

ना। कहहिं सुनहिं समुझहि विधिनाना॥ दोहा॥ मैं पु

नि निज गुरु सम सुनी कथा सु सूकर खेत। समुझ नहीत

सु बाल पन तब अतिरहेउ अचेत। श्रोता वकता ज्ञान नि

धि कथा रामकी गूढ। किमि समझौं यह जीव जड़ कलि

रा. रा.स.

मल ग्रसित विमूढ । चौपई ॥ तदपि कही गुरुवार हि वारा ।
समुझि परी कछु मति अनुसारा । भाषाबंध करबमै सोई
मोरे मन प्रबोध जेहि होई । जसकछु बुधि विवेक बलमेरे ।
तसकहि हौं हिय हरिके प्रेरे । निजसंदेह मोह भ्रम हर
णी । करौंकथा भव सरिता तरणी । बुध विश्राम सकल

43

जनरंजनि । रामकथा कलिकलुष विभंजनि । राम कथा
कलिपन्नग भरणी । पुनि विवेक पावक कहु अरणी ॥
राम कथा कलि काम दगाई । सुजन सजीवन मूरिसुहा
ई । सोइ वसुधा तल सुधान रंगिनि । भवभंजनि भ्रमभेक
भुअंगिनि । असुर सेन समनरक निकंदनि । साधु विबुध

रा॰ कुल हित गिरि नंदनि। संतसमा जपयोपिर मासी। विश्व
रा॰ स॰ भार धर अचलच्छ मासी। यम गण महम सिज गज ननासी।
जीवन मुक्ति हेत जन कासी। रामहि प्रिय पावनि तुलसी
सी। तुलसि दास हितहि यहल सीसी। शिवप्रियमे क
ल शैल ननासी। सकल सिद्धि प्रद संपति रासी। सद

44

गुण सरगण मंव स्रदिनिसी। रघुवर भक्ति प्रेम पर मि

निसी॥ दोहा॥ राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चितचारु।

तुलसी सुभग सनेहवन सिय रघुवीर विहारु॥ चौपई

राम चरित चिंता मणि चारु। संतस मति तिय सुभग सिं

गारु। जगमंगल गुण ग्राम रामके। दानि मुक्ति धनधर्म

रा॰ धामके। सदगुरु ज्ञान विराग योगके। विबुधवैद भव भीम

रा॰स॰ रोगके। जननि जनक सिय राम प्रेमके। बीज सकल व्रत

45

धर्म नेमके। शमन पाप संताप शोकके। प्रिय पालक पर

लोक लोकके। सचिव सुभट भूपति विचारके। कुंभज लो

भ उदधि अपारके। काम कोह कलिमल करि गणके।

केहरि शावक जनम नवनके। अतिथि पूज्य प्रीतम पु

रारिके। कामदघन दारिद दवारिके। मंत्र महामणि वि

षय ब्यालके। मेटत कठिनकु अंक भालके। हरण मो

हतम दिनकर करसे। सेवक शालिपाल जलधरसे।

अभिमत दानि देवतरु वरसे। सेवत सुलभ सुखद ह

रा॰ रि हरसे। सुकवि शारदन भमन उड़ु गणसे। राम भक्ति
रा॰ स॰ जनजीवन धनसे। सकल सुकृत फल भूरि भोगसे।
46
जगहित निरुपधि साधु लोगसे। सेवक मन मान सम
रालसे। पावन गंग तरंग मालसे॥ दोहा॥ कुपथ कुत
र्क कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड॥ दहन राम गुण ग्रा
४६

म इमि इंधन अनल प्रचंड ॥ राम चरित राकेश कर सरि
स सुखद सब काहु । सज्जन कुमुद चकोर चित हित वि
शेष बड़ लाहु ॥ चौपाई ॥ कीन्ह प्रश्न जेहि भांति भवानी ।
जेहि विधि शंकर कहा बखानी । सो सब हेतु कहब मैं
गाई । कथा प्रबंध विचित्र बनाई । जिन यह कथा सुनी

रा॰ नहिहोई। जनि आश्चर्य्य करै सुनि सोई। कथा अलौकिक
रा॰ स॰
सुनहिं जे ज्ञानी। नहि आश्चर्य्य करहि अस जानी। रामक
था की मिति जग नाहीं। अस प्रतीति तिनके मन माहीं।
नाना भांति राम अवतारा। रामायण शत कोटि अपारा।
कल्पभेद हरि चरित सुहाये। भांति अनेक मुनी सन

47

४७

गाये। करियन संशाय असउर आनी। सुनिय कथा सा

दर रतिमानी॥ दोहा॥ रामअनंत अनंतगुण अमितक

था विस्तार। सुनि आश्चर्य न मानिहहि जिनके विमल

विचार॥ चौपई॥ इहि विधि सब संशाय करिहरी। सिरध

रि गुरु पद पंकज धूरी। पुनि सबही विनवौं करजोरी।

रा॰ रा॰स॰

करन कथा जेहि लागन खोरी। सादर शिवहि नाइ अब माथा। बरणौं विशद राम गुणगाथा। संवत सोरह सै इकतीसा। करौं कथा हरिपद धरि सीसा। नौमी भौमवार मधुमासा। अवधपुरी यह चरित प्रकासा। जेहि दिन राम जन्म श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहां चलि आवहिं।

48

असुर नाग खग नर मुनि देवा। आय करहिं रघुनायक सेवा॥ जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना। करहिं राम कलिकीरति गाना॥ दोहा॥ मज्जहिं सज्जन वृन्द बहु पावन सरजूनीर। जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम शरीर। चौपई। दरस परस मज्जन अरु पाना। हरै पाप कह वेद पुराना॥

रा॰ नदीपुनीत अमित महिमा अति । कहिनसकै शारदा वि

रा॰स॰ मल मति । रामधाम दापुरी सुहावनि । लोक समस्त वि

दित जग पावनि । चारिखानि जग जीव अपारा । अवध

न जेतनु नहि संसारा । सबविधिपुरी मनोहरजानी ।

सकलसिद्धि प्रद मंगल खानी । विमल कथा कर की

४९

न्ह ग्ररंभा। स्नननन साहि काम मदरंभा। राम चरित मा
नस यह नामा। स्नन्त श्रवण पाइय विश्रामा। मनकरि
विषय ग्रनल विनजरई। होइसखी जोइहिं सर परई। राम
चरित मान समनि भावन। विरचेउ शंभ सहा वन पाव
न। त्रिविधदोष दुखदारिद दावन। कलिकुचालि कलि

रा॰
रा॰ म॰

कलुषघन सावन। रचि महेश निज मानस राखा। पाइ सु
समय शिवा सन भाखा। ताते रामचरित मानस बर। धरे
उ नाम हियहेरि हरषिहर। कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई।
सादर सुनहु सुजन मन लाई। दोहा॥ जस मानस जेहि
विधि भयौ जग प्रचार जेहि हेतु। अब सोइ कहौं प्रसंग

50

सब सुमिरिउ माहृषकेतु ॥ चौपाई ॥ शंभुप्रसाद सुमति
हियहुलसी । रामचरित मानस कवि तुलसी । करहुं म
नोहर मति अनुहारी । सुजन सुचित सुनिलेहु सुधारी ।
सुमति भूमिथल हृदय अगाधू । वेदपुराण उदधि घनसा
धू । बरषहिं रामसु यश बरवारी । मधुर मनोहर मं

रा·
रा·स
81

गल कारी। लीलासगुणजो कहहि बखानी। सोइस्वच्छ
ताकरै मलहानी। प्रेमभक्ति जो बरणिन जाई। सोइ मधु
रता शीतलताई। सोजल सुकृत शालि हितहोई। रामभ
क्त जन जीवन सोई। मेधामहि गतसोजल पावन। सिमि
टि श्रवण मगुचलेउ सुहावन। भरेउ सुमानस शिथिल

५१·

यिराना। सावद शीन रुचिचारु चिराना ॥ दोहा ॥ सठिसं

दर संवादबर विरचेउ वुद्धि विचारि। तेइ यह पावन सुभ

गसर घाट मनो हरचारि। चौपई ॥ सम प्रबंध सुभग सो

पाना। ज्ञान नयन निरखत मनमाना। रघुपति महिमा

अगुण अवाधा। वरण वसोइ बरवारि अगाधा। रामसी

रा. रा.म

य यश सलिल सुधासम। उपमावीचि विलास मनोरम।
पुरइनि सघन चारु चौपाई। युक्ति मंजु मणि सीप सुहाई।
छंद सोरठा सुंदर दोहा। सोइ बहु रंग कमल कुल सोहा।
अरथ अनूप सुभाव सुभासा। सोइ पराग मकरंद सुवा
सा। सुकृत पुंज मंजुल अलिमाला। ज्ञान विराग विचा

82

ग विचार मराला। धुनि अवरेव कवित गुणजाती। मीन

मनोहर ते बहुभांती। अर्थ धर्म कामादिक चारी। कह

व ज्ञान विज्ञान विचारी। नवरस जप तप योग विरागा।

ते सब जलचर चारु तड़ागा। सुकृती साधु नाम गुणगा

ना। ते विचित्र जल विहंग समाना। संत सभा चहु दिशि

रा॰ रा॰ स॰

अंबराई। अद्वारकत वसंत समगाई। भक्ति निन्हपण विविधि विधाना। क्षमादया द्रुमलता विताना। संयमनियम फूलफल ज्ञाना। हरि पदरति रस वेद बखाना। औरौं कथा अनेक प्रसंगा। तेइ शुक पिक बहु वरण विहंगा॥ दोहा। पुलक वाटिका बागवन सुख सु विहंग विहारु। मालीसु

मनसनेहजल सींचनलोचनचाह ॥ चौपई ॥ जोगावहिं

यह चरित संभारे । तेपहि ताल चतुर रखवारे । सदासुन

हिं सादर नरनारी । तेइसुरवर मानस अधिकारी । अति

खलजे विषयी वककागा । इहिसरनिकटन जाहिअभा

गा । घोंघुकभेक सिवारसमाना । इहांन विषय कथारस

३

रा॰ रा॰म॰

नाना। तेहिकारण आवत हियहारे। कामीकाकबलाक विचारे। आवतइहि सरअतिकठिनाई। रामकृपा विनु आइ न जाई। कठिनकुसंगकुपंथकराला। तिन्हके वचन व्याघ्र हरिव्याला। गृहकारज नानाजंजाला। तेइअति दुर्गम शैल विशाला। बनबहु विषय मोह मदमाना।

५८

नदीकुतर्क भयंकर नाना। दोहा। जे श्रद्धा शंबल रहित
नहि संतन कर साथ। तिन कहु मानस अगम अति जि
नहिन प्रिय रघुनाथ। चौपई। जो करि कष्ट जाइ पुनि को
ई। जातहि नींद जुड़ाई होई। जड़ता जाड़ विषम उर लागा।
गयहुन मज्जन पाव अभागा। करिन जाय सर मज्जन पाना।

रा·

रा·म

फिरिआवै समेत अभिमाना। जोबहोरि कोउ पछुन आवा·

सरिनिंदा करि ताहि सनावा। सकल विघ्न आपहिं नहिं

तेई। रामकृपा करि चितवहिंजेही। सोइसादर मज्जनक

रहीं। तेनर यह सरत जहिंनकाऊ। जिनके रामचरित

भलभाऊ। जोनहाइ चहइहिसर भाई। सोसत संग·

56

करौ मनलाई। असमान समान सचष चाही। भैक विशुद्धि
विमल अवगाही। बढ़ोहृदय आनंद उछाहू। उमगेउ प्रेम
प्रमोद प्रवाहू। चलीसुभग कविता सरितासी। राम विमल
यशजल भरितासी। सरजू नाम सुमंगल मूला। लोकवे
दमतमंजल कूला। नदीपुनीत सुमानसनंदिनि। कलि

रा॰ मल त्रणतरु मूलनिकंदनि ॥ दोहा ॥ श्रोता त्रिविधि समा

रा॰म जघर ग्रामनगर दुहुंकूल । संतसभा अनुपम अवध सक

ल सुमंगलमूल ॥ चौपई ॥ रामभक्ति सुरसरित हि जाई ।

मिलीसु कीरति सरजु सुहाई । सानुजराम समर यश पा

वन । मिलेउ महा नदशोण सुहावन । युगविच भक्ति

57

५८

देवधुनि धारा। सोहति सहित सुविरति विचारा। त्रिवि

धताप त्रास कनि महानी। रामस्वरूप सिंधु समुहानी।

मानस मूल मिली सुर सरहीं। सुनत सुजनमन पावन

करहीं॥ विचविच कथा विचित्र विभागा। जनु सरितीर

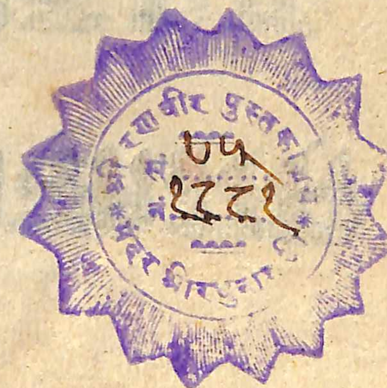
तीर वनवागा। उमामहेश विवाह वराती। तेजल चर

गो॰ अगणित बहुभांती। रघुवर जन्म अनंद बधाई। भंवरतरंग
रा॰स॰ मनोहर ताई॥ दोहा॥ बालचरित बहु बंधके वनज विपु
S8 लबहुरंग। नृपरानी परिजन सुकृत मधुकर वारि विहं
ग। नृपरानी परिजन सुकृत मधुकर वारि विहंग॥ चौ
पई॥ सीयस्वयंवर कथासुहाई। सरित सुहा वनिसोछ

विछ्काई। नदीनाव पटुप्रश्नअनेका। केवटकुशलउतरस
विवेका। सुनिअनुकथन परस्पर होई। पथिक समा
जसोह सरिसोई। घोरधार भृगुनाथरिसानी। घाटसुबं
ध रामवरवानी।' सानुज राम विवाह उछाहू। सोसुभउ
मगसुखदसबकाहू। कहत सुनत हरषहि पुलकाहीं।

रा॰
रा॰म॰

तेसकृती जन मादितन ह्लाही। रामतिलक हित मंगलसा
जा। पर्वयोग जनुजुरे उसमाजा। काईकुमतिके कईकरी
परीजास फल विपत चनेरी॥ दोहा॥ शमन भ्रमित
उतपात सव भरत चरित जपयाग। कलि अघ खल
अवगुण कथन तेजल मलवक काग॥ चौपई॥की



५९